द्विवेदी युगीन गद्यभाषा का अध्ययन

प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिये प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

: प्रस्तुत कर्त्री :

विमला

—: निर्देशक :—

डा० हरदेव बाहरी

१९७३

प्रस्तावना

भारतेन्दु युग का परवर्ती युग निश्चय ही आधुनिक खड़ी बोली गद्य की नींव को दृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। यह युग जहाँ पूर्व में [illegible] का युग रहा वहाँ इसका उत्तरकाल हिन्दी भाषा के लिए स्वर्ण-युग कहा जा सकता है।

हिन्दी भाषा रूपी जिस वृक्ष का बीजवपन इंशा अल्ला खाँ, राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द और राजा लक्ष्मणसिंह ने किया और जो भारतेन्दु युग में पूर्ण रूप से अंकुरित हो कर शाखा-प्रशाखाओं में विकसित हुआ था वह द्विवेदी युग के आगमन के साथ ही साथ पुष्पित एवं पल्लवित भी होने लगा था तथा युग के अन्त होते-होते द्विवेदी जी के अथक परिश्रम के परिणामस्वरूप साहित्यिक क्षेत्र में प्रौढ़, प्रखर, विद्वता-सम्पन्न साहित्यकार रूपी फलों को प्रदान करने में समर्थ हुआ जिनके कृति रूपी अमृत का रसास्वादन करके आज भी हिन्दी प्रेमी नहीं अघाते। वास्तविकता तो यह है कि यह युग साहित्यिक महारथियों के होड़ का युग था। एक दूसरे से बढ़ने की प्रवृत्ति ही लेखकों को इतना प्रौढ़ परिष्कृत, परिमार्जित शैली में लिखने को बाध्य की जिनके टक्कर के साहित्यकार आज भी नहीं मिल पाते, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, पद्मसिंह शर्मा, बालमुकुन्द गुप्त, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', गोविन्द नारायण मिश्र, श्याम सुन्दर दास, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे आलोचक समीक्षक कहानीकार, नाटककार, कवि, उपन्यासकार हास्य और व्यंग्यकार आज तक नहीं मिले, यद्यपि डा० उदयभानुसिंह और डा० शंकर दयाल चौऋषि ने क्रमशः महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग तथा द्विवेदी युगीन गद्य शैलियों का विकास पर थोड़ा बहुत सीमित दृष्टि से प्रकाश डाला है किन्तु इस युग का भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन अछूता ही रहा है, जब कि भाषा-विकास की दृष्टि से इस युग का अभूतपूर्व देन है।

अवधी, ब्रजी तथा भोजपुरी आदि बोलियों का वर्णनात्मक या ऐतिहासिक अध्ययन बहुत या कुछ अंशों में हो चुका है और अभी भी अध्ययन

आदी है। इसी तरह प्राचीन भारतीय आर्यभाषा 'मध्य युगीन भारतीय आर्यभाषा , तथा सूर, तुलसी, कबीर, केशव आदि की कृतियों पर बहुत सीमा तक भाषा - वैज्ञानिक अध्ययन हो चुका है। इसी तरह आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के क्षेत्र में भी इस अध्ययन का क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है किन्तु खेद का विषय है कि आधुनिक खड़ी बोली के इस महत्वपूर्ण युग के ऊपर भाषा- वैज्ञानिक अध्ययन नहीं के बराबर हुआ है। इधर कुछ दिनों पूर्व भारतेन्दु की खड़ी बोली पर कुछ अंशों में हमारे अग्रजों ने भाषा -वैज्ञानिक कार्य करके इस मार्ग को थोड़ा प्रशस्त किया है फिर भी यह पर्याप्त नहीं है । भारतेन्दु युग, अथवा द्विवेदी युग के जिन लेखकों ने गद्यभाषा के विकास में जो योगदान किया है उनका मूल्यांकन किए बिना हमारा लक्ष्य अधूरा ही रहता है ।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में खड़ी बोली का आज सामान्य भाषा , राष्ट्रभाषा, राजभाषा , या साहित्यिक भाषा के रूप में जो महत्व है वह भारत की किसी भी भाषा या बोली को नहीं प्राप्त हुआ है किन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अभी तक इस क्षेत्र में पर्याप्त या संतोषप्रद ढंग से कार्य नहीं हो सका है । ऐसी स्थिति में द्विवेदी युगीन गद्यभाषा का भाषा वैज्ञानिक और कुछ अंशों में शैलीगत अध्ययन प्रस्तुत करके मैंने इस दिशा में थोड़ा-बहुत सहयोग देने का प्रयत्न किया है ।

अध्ययन संबंधी विशेषताएं एवं मेरा प्रयास

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध सुविधा की दृष्टि से दो खण्डों में विभक्त है (1) भाषा खण्ड (2) शैली खण्ड ।

प्रथम खण्ड में द्विवेदी युगीन प्रायः सामान्य लेखकों की गद्य कृतियों से ले कर प्रौढ़ परिमार्जित लेखकों की गद्यकृतियों में उपलब्ध गद्यभाषा का सांगोपांग अध्ययन भाषा - वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। पुनः द्वितीय खण्ड में उन्हीं कृतियों में उपलब्ध गद्यभाषा को शैलीगत दृष्टि से विश्लेषित एवं विवेचित किया गया है । सर्वत्र ही मेरा यह प्रयत्न रहा है कि प्रत्येक कृति के प्रथम संस्करण से ही उदाहरण लिए जाँय । किन्तु जहाँ पर यह

संप्रयोग नहीं मिल पाया है वहाँ पर मात्र सामान्य उदाहरण ही लिए गए हैं।

इसकी भूमिका में द्विवेदी पूर्व हिन्दी गद्य की स्थिति तथा भारतेन्दु युग का थोड़ा बहुत विवेचन करके द्विवेदी युग में युगप्रवर्तक द्विवेदी जी का सरस्वती सम्पादन एवं उनके देवत्व को दिखाते हुए द्विवेदी युग का काल निर्णय तथा अन्य साहित्यकारों के योगदान को दिखाया गया है। अन्त में तत्कालीन गद्यसाहित्य का महत्व एवं उसके स्थान को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। भूमिका के लिए हिन्दी साहित्य के इतिहासग्रंथों तथा उनसे संबंधित अनेकों आलोचनात्मक पुस्तकों के अध्ययन और मनन के उपरान्त ही सामग्री एकत्रित की गई है।

मेरी आलोच्य युगीन भाषा का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है तथा उदाहरणों को रचना के कालक्रम से इस प्रकार रखा गया है कि भाषा के क्रमिक विकास का दिग्दर्शन सुगमता एवं स्पष्टता से हो सके।

अध्यायों का विभाजन भाषा के निर्माण क्रम से अर्थात सब से छोटी इकाई की तरफ से शुरू करके बड़ी इकाई की ओर क्रमशः बढ़ते हुए किया गया है। इससे द्विवेदी युगीन खड़ी बोली के शोध जिज्ञासुओं के मार्ग प्रदर्शन तथा सामान्य साहित्यिक खड़ी बोली के अध्ययन में सहायता मिल सकती है क्योंकि प्रस्तुत शोध-प्रबंध में द्विवेदी युगीन गद्यभाषा के जो सामान्य प्रयोग दिए गए हैं उनकी सामान्यता की कसौटी आधुनिक खड़ी बोली ही है। जहाँ पर विशिष्टताएँ हैं उन्हें अलग से उल्लिखित किया गया है।

ध्वनि तथा वर्णग्रामिक अनुशीलन में इस युग के लेखकों द्वारा प्रयुक्त प्रायः समस्त ध्वनियों का विश्लेषण शब्दों के रूप में दिखाया गया है। हस्तलिखित अधिक सामग्री न मिलने के कारण लिपि संबंधी पहलू पर नहीं के बराबर विचार हुआ है। किन्तु मुद्रित रचनाओं तथा अल्प मात्रा में उपलब्ध हस्तसामग्री में वर्तनी संबंधित जो भी विशिष्टताएँ मिली हैं उन्हें प्रस्तुत अध्याय में रचना के कालक्रम से दिखाने का प्रयत्न किया गया है।

शब्दावली अध्याय में शब्द समूहों का अध्ययन स्रोत के आधार तथा रचना के आधार पर छः वर्गों में विभक्त कर के किया गया है। साथ ही इस अध्याय में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि हिन्दी शब्द समूहों के समान ही

विदेशी शब्द समूहों को भी तत्सम, अर्धतत्सम एवं तद्भव वर्गों में विभक्त करके दिखाया गया है ।

जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता अथवा जिनके विषय में निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि ये तद्भव नहीं हैं उन्हें देशज नाम से अभिहित किया गया है ।

रचना के आधार पर शब्द समूहों का जो विभाजन हुआ है उन्हें मूल और यौगिक न कह कर प्रातिपदिक और व्युत्पन्न नाम से अभिहित किया गया है ।

व्युत्पन्न शब्दों के अन्तर्गत 'द्विरुक्तितादि शब्द' नाम देने का एक विशेष कारण है क्यों कि एक ही शब्द की आवृत्ति के अतिरिक्त सम्बद्ध शब्द, प्रतिध्वनित शब्द अनुकरणात्मक शब्द, समानार्थी विपरीतार्थी, अथवा सार्थक निरर्थक शब्दों के युगल से भी एक शब्द बनता है। इन सभी प्रकार के शब्दों को, द्विरुक्त शब्द में 'आदि' शब्द जोड़ कर एक ही वर्ग 'द्विरुक्तादि शब्द' के अन्तर्गत रखा गया है ।

द्विवेदीयुगीन गद्यभाषा में विभिन्न स्रोतों से आए हुए शब्दों के अनुपात के संबंध में कोई निश्चित संख्या नहीं बताई जा सकती क्यों कि जहाँ एक तरफ शुद्ध तत्समता के पक्षपाती लेखकों ने विदेशी भाषा के शब्दों के प्रयोग से बचने का प्रयास किया है वहीं जनभाषा के पक्षपाती लेखकों ने निःसंकोच रूप से उनका प्रयोग औपचारिक भाषा में किया है फिर भी इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जहाँ पूर्वार्ध की भाषा में विदेशी स्रोतों आए हुए शब्दों की बहुलता है वहीं इस युग के उत्तरार्द्ध की भाषा प्रौढ़ परिमार्जित होती गई है और भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता होती गई है। अतः इन सभी प्रकार के शब्दसमूहों का उल्लेख इस छोटे से प्रकरण में न तो किया जा सकता है न करना यहाँ उचित है। अतः द्विवेदीयुगीन शब्दावली का संक्षेप में ही परिचय दिया गया है ।

व्याकरण अध्याय के अन्तर्गत इस युग में प्रचलित एवं व्याकरणिक कोटियों में विभक्त विभिन्न शब्द-भेद अर्थात संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया क्रियाविशेषण, अव्यय आदि का संश्लेषणात्मक अध्ययन वाक्य-योजना की एक इकाई के रूप में किया गया है, साथ ही वाक्य के परिचयन और अनुशासन

व्यवस्था में वर्गों के योगदान को भी ध्यान में रखा गया है ।

संज्ञा- सर्वनाम तथा कारक प्रकरण से संबंधित मुख्य बात नाम परिवर्तन की है, इन शब्दभेदों में प्रत्ययों के योग से जो परिवर्तन होता है उन्हें मैंने तिर्यक अथवा विकारी नाम से अभिहित किया है तथा प्रत्ययों से रहित शब्दों को मूल या अविकारी नाम दिया है । साथ ही लिंग-वचन, और पुरुष संबंधी जो असामान्य रूप परिवर्तन हुए हैं उन्हें स्थलविशेष पर 'विशिष्ट' शीर्षक रूप के अन्तर्गत विवेचित किया गया है ।

विशेषण प्रकरण में व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार ही रूप परिवर्तन दिखाया गया है किन्तु स्थल विशेष पर असामान्य रूप परिवर्तन को विशेषणों के अन्तर्गत भी दिखाया गया है। विशेषणों में संख्यावाचक विशेषण के अन्तर्गत ' निश्चित संख्यावाचक' विशेषण में वर्तनी संबंधी विशिष्टता के कारण एक ही संख्या के कई रूप मिलते हैं: जो तात्कालिक भाषागत अस्थिरता को प्रकट करते हैं, अतः इन विभिन्न रूपों को दिखाने का यथा साध्य प्रयत्न किया गया है ।

क्रिया तथा अव्यय प्रकरण में भी सामान्य के साथ ही साथ कुछ विशिष्ट रूप भी दिखाए गये हैं । क्रिया के काल रूप को दिखाते समय प्रत्येक काल के विवेचन के पूर्व ही वचन और पुरुष के अनुसार ही एक सूची दी गई है जिससे उनके रूप का सहज ही स्पष्टीकरण हो जाय ।

पदबंध अध्याय में यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि प्रत्येक शब्दभेद से अभिहित पदबंधों के उदाहरणों में छोटे-से छोटे और बड़े से बड़े पदबंध को दिखाया जाय । प्रत्येक शब्दभेदों के पदबंधों को रचना के आधार पर समशब्द भेद मूलक और भिन्न शब्द भेद मूलक पदों में विभक्त करके विवेचित किया गया है ।

मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अध्याय में प्रत्येक का विवेचन प्रयोग, रचना और अर्थ के आधार पर किया गया है ।

मुहावरों तथा लोकोक्तियों के पश्चात् रचना की पूर्ण इकाई वाक्यों का अनुशीलन है वाक्यों के विवेचन में रचना की दो पद्धतियाँ संश्लेषणात्मक (आभ्यन्तरीय) और विश्लेषणात्मक(बाह्य तत्वों) का विशेष ध्यान रखा

गया है । संश्लेषणात्मक पद्धति में वाक्य का भेद रचना और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से दिखाया गया है, तत्पश्चात् विश्लेषणात्मक पद्धति के अन्तर्गत वाक्यों में अन्वय, अक्रम, स्थानान्तरण, अध्याहार आदि का स्थान तथा इनसे संबंधित विशिष्टताओं पर व्याख्यात्मक विचार किया गया है ।

वाक्यों के विवेचन के पश्चात तात्कालीन लेखकों की कृतियों में प्रयुक्त विराम चिन्हों का विवेचन हुआ है । विराम चिन्ह वास्तव में वाक्य के ही अंग है किन्तु भारतेन्दु युग के समान ही इस युग में भी इनके प्रयोग में विविधता है। इनके प्रयोग से वाक्यों के अर्थ में भारी परिवर्तन हो जाता है अतः इन्हें अलग अध्याय में रख कर ही विवेचित किया गया है ।

द्विवेदी युगीन गद्यभाषा के अध्ययन का द्वितीय खण्ड शैलीगत है। इसके अन्तर्गत विभिन्न गद्यविधियों को ले कर उनमें उपलब्ध भाषा की शैली के आधार पर विश्लेषित एवं विवेचित किया गया है। साथ ही गद्य भाषा के क्रमिक विकास को दिखाने का भी प्रयत्न किया गया है ।

प्रत्येक अध्याय में उदाहरणों के देते समय कृतियों के कालक्रम का विशेष ध्यान रखा गया है साथ ही सर्वत्र मेरा प्रयत्न यह रहा है कि अधिक से अधिक पुस्तकों से उदाहरण लिए जाय किन्तु जहाँ पर लगातार एक ही पुस्तक से कई उदाहरण लिए गए हैं वह परिस्थिति वश अथवा ऐसे विशिष्ट प्रयोग अथवा शब्द जो अन्य कृतियों में नहीं मिले हैं, के कारण ही उद्धृत हैं । ऐसे प्रयोग अधिकांशतः व्याकरण तथा वाक्य अध्याय के अन्तर्गत ही आए हैं । उद्धृत शब्द या वाक्यों में किसी प्रकार का संशोधन नहीं किया गया गया है , जहाँ पर सुधार या अर्थ की त्रुटि की सम्भावना है उसे टिप्पणियों में व्यक्त कर दिया गया है ।

प्रबंध का कलेवर अनावश्यक रूप से बढ़ने न पाये , इस दृष्टि से सामान्य प्रयोग के उदाहरणों का उतना ही अंश दिया गया है जितना स्थल विशेष की स्पष्टता के लिए आवश्यक है ।

प्रमाण रूप में इस युग की प्रायः सभी प्रकार की गद्यकृतियों का अध्ययन किया गया है । छोटे से छोटे लेखकों की कृतियों से ले कर प्रौढ़, परिमार्जित गद्य लेखकों की कृतियों का अध्ययन किया गया है । प्रत्येक कृति के १-११-२१-३१ पृष्ठ के क्रम से ही अधिकांश उदाहरण लिए गए हैं तथा पत्र- पत्रिकाओं की सम्पादकीय टिप्पणियाँ तथा इनमें आए हुए निबंधों और लेखों के प्रथम और

विदतीय पृष्ट को ही अधिक महत्व दिया गया है किन्तु इसके अतिरिक्त भी सरसरी दृष्टि से सभी का अध्ययन हुआ है और जहाँ कहीं भी आवश्यक उदाहरण मिल गए हैं उन्हें निःसंकोच लिया गया है। पत्र-पत्रिकाओं में सरस्वती, मर्यादा और प्रभा का ही विशेष उल्लेख है। इसके अलावा 'लक्ष्मी' 'इन्दु' 'माधुरी' 'आज' 'मतवाला' आदि जो भी अंक उपलब्ध हो सके हैं उन्हें यथा स्थान उद्धृत किया गया है।

इस युग की गद्यभाषा के विवेचन के आधार स्वरूप विभिन्न कृतियों के अध्ययन के बावजूद भूमिका तथा शोध प्रबंध की पृष्ठ भूमि के निर्माणार्थ। अनेकों इतिहास ग्रंथों और प्रत्येक अध्याय से संबंधित अनेकों आलोचनात्मक ग्रंथों तथा शोध प्रबंधों के अवलोकन का निर्देशन मेरे पूज्य गुरुवर डा0 हरदेव बाहरी ने दिया। इनके अवलोकन के पश्चात मुझे एक सहज सुलझा हुआ मार्ग दिखाई दिया।

अपनी बात

सर्वप्रथम मैं उन अल्प कठिनाइयों का जिक्र करना चाहूँगी, जिनका सामना मुझे इस शोध के अभियान करना पड़ा। इन्हें अल्प विशेषण से इसलिए अलंकृत की हूँ कि इस शोध की समाप्ति के अवसर पर मैं इन्हें हृदय से कठिनाई न मान कर वरदान ही मानने को बाध्य हूँ। यह निश्चित है कि शुरू - शुरू में जब मुझे इनका सामना करना पड़ता था तो मैं घबड़ा जाती थी और कभी-कभी तो एक दम से निराश हो जाती थी, किन्तु मेरे पूज्य गुरुवर का उत्साहवर्धक सहयोग और यह कथन कि "मैं तुम्हें डा0 बना कर छोड़ूँगा" मुझमें अदम्य साहस और उत्साह को पैदा कर देता था जिससे मैं धीरे धीरे इन कठिनाइयों का सामना करने की अभ्यस्त हो गई, साथ ही मुझमें इस युग की भाषा के गंभीर परत तल तक पहुँचने की उत्सुकता हुई। ज्यों-ज्यों मैं इनमें सीख ली मेरी जिज्ञासा बढ़ती ही गई और एक समय ऐसा आया जब मुझे यह स्वयं ही महसूस होने लगा कि कहाँ किस चीज की कमी रह गई है, कहाँ अभी क्या जोड़ना या घटाना है। अतः इन कठिनाइयों को शोध का आधार मानकर मैं इन्हें वरदान ही मानना अधिक उचित समझूँगी।

सर्वप्रथम और विशेष महत्वपूर्ण कठिनाई मुझे हस्तलिखित रचनाओं की खोज में हुई, क्यों कि इनके बिना किसी भी युग की भाषा का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययनपूर्ण नहीं होता। हस्तलिखित प्रतियों की विशेष आवश्यकता वर्तनी और

निरामिकों के लिए होती है। किन्तु खेद का विषय है कि तात्कालीन युग की प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' की प्रकाशन संस्था 'इंडियन प्रेस' अथवा प्रयाग में भी किसी भी लेखक की हस्तलिखित कोई भी रचना उपलब्ध न हो सकी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मुझे अवश्य ही कुछ हस्तलिखित पत्रसाहित्य को देखने का अवसर मिला जिससे मुझे इस दिशा में कुछ प्रकाश मिल सका किन्तु यह सामग्री इतनी अल्प मात्रा में है कि इससे कुछ निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता फिर भी इस अल्प सामग्री में जो भी मद्यभाषा का रूप मिला है इससे मैं निश्चित रूप से कह सकती हूँ कि इनमें व्याकरणिक त्रुटियाँ नहीं के बराबर हैं।

अधिकांश पत्र - पत्रिकाओं की अनेक प्रतियाँ ही नहीं मिल सकी, इस युग में इतनी पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुई किन्तु उनका कहीं भी समुचित सिलसिलेवार क्रम नहीं मिलता। 'इंडियन प्रेस' में भी सरस्वती की कुछ प्रतियाँ नहीं हैं तथा जिन संस्थाओं में जो प्रतियाँ हैं भी उनमें से कितने ही लेखों तथा निबंधों के आवश्यक अंश गायब हैं। इसी तरह 'इन्दु' की मात्र एक या दो प्रति ही मुझे भारती भवन प्रयाग संस्था में देखने को मिली। जिसमें भाषागत विशेषताएं पर्याप्त मात्रा में हैं। इसमें यह संदेह नहीं कि यदि इन पत्र- पत्रिकाओं की आरम्भिक प्रतियाँ मिल जाती तो भाषा- शोध कर्ताओं को काफी सहायता मिल जाता, किन्तु खेद का विषय है कि हमारे हिन्दी के संरक्षकों ने इस ओर न कोई विशेष ध्यान दिया है न देने की ही सोचते हैं, हस्तलिखित प्रतियाँ जिनसे इस कार्य में बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है, मुद्रित करने के उपरान्त कूड़े की टोकरियों में समर्पित कर दी जाती हैं।

शब्दों की द्विरूपता के कारण उनके गुण और दोष का निर्णय करना बहुत ही कठिन हो जाता है। वर्तनी और व्याकरण अध्याय में इस प्रकार की द्विरूपता को देखा जा सकता है। संज्ञा के लिंगों, 'सर्वनाम' के वचनों तथा गणनात्मक - संख्यावाचक विशेषणों शब्दों में निहित वर्तनी में यह द्विविधता बहुत अधिक मात्रा में पाई गई है।

किन्तु संघर्ष ही जीवन है, जब इन कठिनाइयों के कारण इतने बड़े शोध कार्य का सृजन हुआ है तब इन्हें कठिनाई न मान कर वरदान ही मानना उचित होगा।

इस सम्पूर्ण विचार-विवेचन में कठोर गुरु किन्तु स्नेहिल अभिभावक मेरे श्रद्धेय गुरुवर डा० हरदेव बाहरी का पग-पग पर मिला निर्देशन ही मेरी शक्ति रहा है। सामग्री के अभाव के कारण जब मैं कभी-कभी निराश हो कर कार्य में रुचि भी नहीं लेती थी उस समय अन्यमनस्क हो कर जब उनके पास जाती थी तो मात्र उनके दर्शन से ही मेरे मन चक्षुओं को तीव्र ज्योति मिलती थी फिर उनके सफल एवं विद्वत्तापूर्ण निर्देशन के मिल जाने से तो मैं दुगुना क्या चौगुना उत्साह से कार्य करती थी जिससे कभी-कभी मुझे स्वयं पर ही आश्चर्य होने लगता था। यह मैं अपने सच्चे हृदय से कह रही हूं इसमें कृत्रिमता या बनावट का लेशमात्र भी अंश नहीं है। उनके स्नेहिल निर्देशन और अमूल्य विचार विमर्श ने मेरे निराश होते हुए मन को उत्साहित किया है तथा विशृंखलित होतेहुए विचारों को सही दिशा का अनुसरण करा कर मेरे मानस-चक्षुओं को खुलने का अवसर दिया और मुझे इस शोध प्रबंध के सृजन के योग्य बनाया है। कार्य समापन के इस अवसर पर मात्र कथन 'धन्यवाद' के दो शब्दों से मैं उनसे उऋण नहीं हो सकती इसके लिए मैं उनसे यही आशा करूंगी कि भविष्य में भी उनका निर्देशन सहयोग और उत्साहवर्धक स्नेह मिलता रहे।

आदरणीय गुरुवर डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी की मैं विशेष रूप से आभारी हूं जिन्हों ने मुझे विषय-चुनाव में विशेष सहायता दी थी।

विषय से संबंधित सामग्री मुझे सब से अधिक प्रयाग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन 'प्रयाग' से प्राप्त हुई। इन संस्थाओं के कर्मचारियों ने निर्विघ्नरूप से मेरे कार्य में रुचि लेते हुए सभी प्रकार की सहायता की उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती हूं। 'इन्डियन प्रेस' और भारती भवन पुस्तकालय के अध्यक्ष और कर्मचारियों ने 'सरस्वती' और 'इन्दु' की प्रतियों को जिसके लिए मुझे बहुत परेशान होना पड़ा था देने में जो उत्साह एवं रुचि दिखलाई उसके लिए मैं कृतज्ञता स्वीकार करती हूं। यद्यपि मेरी दृष्टि में मात्र कृतज्ञता और धन्यवाद के दो शब्द उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं की तुलना में नगण्य ही लग रहे हैं।

जिन महानुभावों की कृतियों से मैंने आनन्द लाभ किया उनके प्रति मैं विशेष अनुगृहीत हूं। मैं डा० श्रीमती श्याम कुमारी श्रीवास्तव के नाम को नहीं भूल सकती, जिनके शोध प्रबंध, का भारतेन्दु की खड़ी बोली का भाषा-

इस सम्पूर्ण विचार-विवेचन में कठोर गुरु किन्तु स्नेहिल अभिभावक श्रद्धेय गुरुवर डा० हरदेव बाहरी का पग-पग पर मिला निर्देशन ही मेरी शक्ति रहा है। सामग्री के अभाव के कारण जब मैं कभी-कभी निराश हो कर कार्य में रुचि भी नहीं लेती थी उस समय क्लान्तमनस्क हो कर जब उनके पास जाती थी तो मात्र उनके दर्शन से ही मेरे मन चक्षुओं को तीव्र ज्योति मिलती थी फिर उनके सबल एवं विद्वत्तापूर्ण निर्देशन के मिल जाने से तो मैं दुगुना क्या चौगुना उत्साह से कार्य करती थी जिससे कभी-कभी मुझे स्वयं पर ही आश्चर्य होने लगता था। यह मैं अपने सच्चे हृदय से कह रही हूँ इसमें कृत्रिमता या बनावट का लेशमात्र भी अंश नहीं है। उनके स्नेहिल निर्देशन और अमूल्य विचार बिन्दुओं ने मेरे निराश होते हुए मन को उत्साहित किया है तथा विशृंखलित होतेहुए विचारों को सही दिशा का अनुसरण करा कर मेरे मानस-चक्षुओं को खुलने का अवसर दिया और मुझे इस शोध प्रबंध के सृजन के योग्य बनाया है। कार्य समापन के इस अवसर पर मात्र 'धन्यवाद' के दो शब्दों से मैं उनसे उऋण नहीं हो सकती इसके लिए मैं उनसे यही आशा करूँगी कि भविष्य में भी उनका निर्देशन, सहयोग और उत्साहवर्धक स्नेह मिलता रहे।

आदरणीय गुरुवर डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी की मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे विषय-चुनाव में विशेष सहायता दी थी।

विषय से संबंधित सामग्री मुझे सब से अधिक प्रयाग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन 'प्रयाग' से प्राप्त हुई। इन संस्थाओं के कर्मचारियों ने निर्विघ्नरूप से मेरे कार्य में रुचि लेते हुए सभी प्रकार की सहायता की उसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। 'इण्डियन प्रेस' और भारती भवन पुस्तकालय के अध्यक्ष और कर्मचारियों ने 'सरस्वती' और 'इन्दु' की प्रतियाँ को जिसके लिए मुझे बहुत परेशान होना पड़ा था देने में जो उत्साह एवं रुचि दिखलाई उसके लिए मैं कृतज्ञता स्वीकार करती हूँ। यद्यपि मेरी दृष्टि में मात्र कृतज्ञता और धन्यवाद के दो शब्द उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं की तुलना में अल्प ही लग रहे हैं।

जिन महानुभावों की कृतियों से मैंने ज्ञान लाभ किया उनके प्रति मैं विशेष अनुगृहीत हूँ। मैं डा० श्रीमती श्याम कुमारी श्रीवास्तव के नाम को नहीं भूल सकती, जिनके शोध प्रबंध, भारतेन्दु की खड़ी बोली का भाषा-

( )

भाषा- वैज्ञानिक अध्ययन के अवलोकन के उपरान्त ही मुझे अपने विषय की रूप रेखा के निर्माण में बहुत - अधिक सहायता मिली । इस शोध प्रबंध के अवलोकन के पूर्व में किसी भी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने में असमर्थ हो रही थी ऐसे ही अवसर पर मेरे पूज्य गुरुवर ने इस प्रबंध के अवलोकन का सुझाव दिया जिससे मुझे अपने मार्ग पर चलने का एक सही मार्ग मिला । मैं टंकण अधिकारी श्री अमरबहादुर सिंह जी की हृदय से आभारी हूँ कि इन्होंने अल्पावधि में उत्तरदायित्व पूर्ण ढंग से इस शोध प्रबंध का टंकण कार्य सम्पादित किया ।

इन सब के साथ ही मैं अपने बंधु- बांधवों तथा अपने परिवार के सदस्यों को, विशेष कर अपनी पूजनीय माँ तथा पिता जी को कदापि नहीं भूल सकती जिनका अगाध स्नेह और सहयोग मुझे हमेशा ही प्राप्त होता रहा ।

यद्यपि यह प्रबंध मेरे पूज्य निर्देशक डा० बाहरी द्वारा संशोधित एवं निज द्वारा भी कई बार परिमार्जित, परिष्कृत और सम्पन्न बनाने की चेष्टा की गई है साथ ही टंकण संबंधी भूलों को भी सुधारने का यथा सम्भव उपाय किया गया है किन्तु विषय की गहनता एवं जटिलता तथा कुछ सूक्ष्म त्रुटियों के दृष्टिगत न होने के कारण कुछ कमियों की सम्भावना हो सकती है उसके लिए मैं क्षमा - प्रार्थिनी हूँ ।

अन्त में मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रति विशेष श्रद्धा प्रकट करती हूँ जिसके तत्वावधान में मेरा यह शोध प्रबंध सम्पन्न हुआ ।

***

प्रयाग | विमला
अक्टूबर, 1973 ई०

-0-

विषयानुक्रमणिका

-0-

भूमिका

2-ख-1-ख- देशी शब्दावली

2-ख-1-ख-1- शुद्ध देशी , 2-ख-1-ख-2- अनुकरणात्मक शब्द

2-ख-1-ग- विदेशी भाषा के शब्द

2-ख-1-ग-1- अरबी फारसी के शब्दः-

क- अरबी- फारसी तत्सम् शब्द, ख- अरबी-फारसी अर्द्ध तत्सम् शब्द , ग- अरबी फारसी तद्भव शब्द, 2-ख-1-ग-2- अंग्रेजी शब्द3- क- तत्सम शब्द, -ख, अर्द्ध तत्सम शब्द, ग- तद्भव शब्द

2-ख-2- यौगिक शब्द

: 101 - 156 :

क- आर्य भाषा के यौगिक शब्दः- 2ख-2-क- पूर्व प्रत्यय युक्त शब्द , 2-ख- 2-क-1 तत्सम् शब्द, 2ख-2-क-2 पूर्व प्रत्यय युक्त तद्भव शब्द ·

ख — विदेशी यौगिक शब्द : 2ख-2-क-पूर्व प्रत्यय युक्त अरबी- फारसी शब्द, 2-ख-2 -ख-पर प्रत्यय युक्त शब्द, 2-ख-2-ख-1- पर प्रत्यय युक्त तत्सम् शब्द, 2-ख-2-ख-2-पर प्रत्यय युक्त तद्भव शब्द, 2-ख-2-ख-3- संकर शब्द उपसर्ग, ख-2-ग- समास- क-अव्ययीभाव समासीय, ख, तत्पुरुष, ग- कर्मधारय-घ- द्वन्द्व समास, ङ- पूर्वपद संख्या वाचक कर्मधारय या द्विगु समास, च- बहुव्रीहि, 2-ख-2-घ- द्विरुक्तादि शब्द: 1- 2-ख-2-घ-1- एक ही शब्द की आवृत्ति - क- शब्द के अनुसार , ख- प्रयोग के अनुसार अन्य शब्द भेद रूप में 2-ख-2-घ-2- सम्बद्ध शब्द द्वारा आवृत्ति, 2-ख-2-घ-3- प्रति ध्वनित शब्द,

3

व्याकरण

:157 -331 :

3-1 - संज्ञा

: 157- 179:

3-1-क- संज्ञा के भेदः- 1- व्यक्तिवाचक, 2 - जाति वाचक, 3- भाव वाचक 4- द्रव्य वाचक, 3-1-ख-लिंग, 3- 1-ग- वचनः-1-पुल्लिंग -2-स्त्रीलिंग,-3-बहुवचन सूचक शब्दों का योग-4- विशेष

3-2- सर्वनाम

: 180- 197:

(1) सम्भाव्य भविष्यत (2) सामान्य भविष्यत (3) प्रत्यक्षविधि काल (4) परोक्ष विधि काल

3-5-ग-ख-2- कृदन्त -क- वर्तमान कालिक कृदन्तों से बने काल (1) सामान्य संकेतार्थ कर्तरि प्रयोग (2) सामान्य वर्तमान काल (3) अपूर्ण भूत काल (4) सम्भाव्य वर्तमान काल(5) संदिग्ध वर्तमान काल, ख- भूत कालिक कृदन्तों से बने काल (1) सामान्य भूत काल (2) आसन्न भूत काल (3) पूर्ण भूत काल (4) संदिग्ध भूत काल(5) पूर्ण संकेतार्थ काल(6) सम्भाव्य भूत काल
3-5-ग-ख-कर्म वाच्य, 3-5-ग-ख-1 धातु से बने काल (1) सम्भाव्य भविष्यत काल (2) सामान्य भविष्यत काल(3) प्रत्यक्ष तथा परोक्ष विधि काल, 3-5-ग-ख-2- कृदन्त, क-वर्तमान कालिक कृदन्त (1) सामान्य संकेतार्थ काल(2) सामान्य वर्तमान काल (3) संदिग्ध भूत काल, ख- भूत कालिक कृदन्त (1) सामान्य भूत '2) आसन्न भूत (3) पूर्ण भूत काल

3-5-घ- वाच्य- 3-5-घ-1- कर्तृवाच्य, ~~3-5-घ-2-~~
3-5-घ- 2- कर्म वाच्य:-(1) कर्तृ कर्मणि प्रयोग (2) कर्म कर्मणि प्रयोग, 3-5-घ-3- कर्तृकर्म वाच्य, 3-5-घ-4- भाव वाच्य(1) कर्तृ भावे प्रयोग (2) कर्म भावे प्रयोग(3) भाव भावे प्रयोग

3-6- अव्यय

(303- 330)

3-6-क- क्रिया विशेषण

-3-6-क- -1- प्रयोग के आधार पर (क) सामान्य क्रिया विशेषण (ख) अन्य शब्द भेद क्रिया विशेषण रूप में (ग) निश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण, (घ) अनिश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण
3-6-क-2- रचना के आधार पर(क) रूढ़ क्रिया- विशेषण (ख) यौगिक क्रिया विशेषण ,ख-1- उपसर्ग के योग से निर्मित , ख-2,- प्रत्ययों के योग से निर्मित, ख-3- भिन्न शब्द भेदों की द्विरुक्ति से निर्मित, ख-4- विभिन्न शब्दों के संयोग से निर्मित
3-6-क-3- अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों का भेद -क- स्थान वाचक ख- काल वाचक ग- परिमाण वाचक, घ- रीतिवाचक क्रिया विशेषण

3-6-ख संबंध सूचक अव्यय

3-6-क-2- प्रयोग का आधार, 3-6-ख-2- अर्थ का आधार

3-6-ग- समुच्चय बोधक अव्यय

~~3-5-ग-1- प्रयोग का आधार, 3-6-ग-2- अर्थ का आधार~~

3-6-ग-1- समानाधिकरण-क- संयोजक ख- विभाजक ग- विरोध दर्शक घ- परिणाम दर्शी, 3-6-ग-2- व्यधिकरण समुच्चय बोधक क- कारण वाचक ख- उद्देश्य वाचक संकेत वाचक घ- स्वरूप वाचक

3-6-घ- विस्मयादि बोधक अव्यय

3-6-घ-1- प्रयोग के आधार पर क- मुख्य रूप में भावों के अनुसार बोधक ख- विभिन्न शब्द भेदों के अनुसार बोधक के रूप में प्रयोग, 3-6-घ-2- रचना के आधार पर -क-शब्द ख- पदांश ग- वाक्य

4

पदबंध

: 332-35 :

4-क- 1 संज्ञा पदबंध

4-क-1-क-नाम शब्द भेद मूलक, 4-क-1ख- विभाम शब्द भेद मूलक, 4क-2 सर्वनाम पदबंध 4-क-2-क- समभेदमूलक, 4क-2ख विषम भेद मूलक 4-क-3- विशेषण पदबंध

4-क-3-क- सम शब्द भेद मूलक, 4-क-3-ख- विषम शब्द भेद मूलक

4-क-4- क्रिया पदबंध

4-क-4-क- सम शब्द भेद मूलक, 4-क-4-ख- विषम भेद मूलक

4-क-5- क्रिया विशेषण पद बंध

4-क-5-क- सम शब्द भेद मूलक, 4-क-5-ख- विषम शब्द भेद मूलक, 4-क-5-ग- विभिन्न शब्द भेदों से बने क्रिया विशेषण पदबंधों के कुछ विशिष्ट रूप

4-क-6 परसर्ग पदबंध

4-क-6-क- सम शब्द भेद मूलक, 4-क-6ख- विषम शब्द भेद मूलक

4-क-7- लिंग भावबोधक अव्यय पदबंध

4-क-7-क - सम शब्द भेद मूलक, 4-क-7-ख- विषम शब्द भेद मूलक

5

मुहावरें तथा लोकोक्तियाँ

: 352 - 393 :

5-1- मुहावरें

: 352- 384:

5-1-क- मुहावरों के उपादान की दृष्टि से भेद:-
: 352-369:

5-1-क-1- अंग तथा उनके व्यापार संबंधी, 5-1-क-2- मानव जीवन से संबंधित उपकरण वाले मुहावरे, 5-1-क-3- मानव निर्मित वस्तुयें, 5-1-क-4- प्राकृतिक पदार्थ संबंधित मुहावरे, 5-1-क-5- मार्ग तथा स्थान संबंधी, 5-1-क-6- संख्या, माप, तौल संबंधी, 5-1-क-7- मनुष्येत्तर प्राणी संबंधी, 5-1-क-8- भाव मनोविकार एवंअनुभाव संबंधी उपादान, 5-1-क-9- गुण आदि से संबंधित, 5-1-क-10-क्रिया, प्रतिक्रिया तथा व्यापार संबंधी

5-1-ख- रचना की दृष्टि से मुहावरों के भेद

: 369- 378

5-1-ख-1- संज्ञा+ संज्ञा, 5-1-ख-2- विशेषण + संज्ञा,

5-1-ग- अर्थ की दृष्टि से मुहावरों के भेद

: 378- 384:

5-1-ग-1शब्दगत लाक्षणिकता, 5-1-ग-2- वाक्यांशगत लाक्षणिकता, 5-1-ग-3 अर्थ तत्व का आधार

5-2- लोकोक्तियाँ या कहावतें

:384- 393:

5-2-क- प्रयोग का आधार, 5-2-ख- संरचना का आधार, 5-2-ख-1- वाक्यांश मूलक, 5-2-ख-2 वाक्य मूलक, 5-2- ग- अर्थ का आधार, 5-2-ग-ग-1 अभिधार्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ, 5-2-ग-2 लक्षणार्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

5-2-ग-3- अभिधा-लक्षणा द्वारा अर्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ, 5-2-ग-4- धार्मिक, काल्पनिक

खण्ड-2

द्विवेदी युगीन गद्य भाषा का शैली गत अध्ययन

: 476- 501 :

1- निबंध विधा, 2- कहानी विधा, 3 उपन्यास विधा, 4- नाट्य विधा
5- समीक्षा , 6- पत्रकारिता

भूमिका

१- द्विवेदी पूर्व गद्यभाषा

क- १९वीं शताब्दी का हिन्दी गद्य :-

द्विवेदी युगीन गद्यभाषा के सांगोपांग विवेचन के पूर्व उसके पूर्ववर्ती गद्य की साहित्यिक परिस्थितियों तथा भाषा पर विचार करना आवश्यक है, क्यों कि पूर्वकालिक - विशेषतः भारतेन्दु युगीन भाषा तथा साहित्यिक परिस्थिति का अध्ययन किए बिना द्विवेदी - युगीन गद्य -भाषा का ठीक- ठीक मूल्यांकन नहीं हो सकेगा ।

द्विवेदी - युगीन गद्य-भाषा किसी एक युग अथवा किसी विशेष परिस्थिति की देन नहीं है, वरन् जन-भाषा के रूप से विकसित हो कर साहित्यिक रूप ग्रहण करने में इसे शताब्दियाँ लग गईं । उद्गमकाल से इस काल तक आते आते इसे कई स्थितियों को पार करना पड़ा, किन्तु स्वतंत्र रूप से आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास का प्रथम सोपान ईसा की १९वीं शताब्दी से मानना चाहिए । भाषा -विकास की दृष्टि से यह युग अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । हिन्दी गद्य की अखंड परम्परा का सूत्रपात करने वाले सदासुखलाल नियाज, सैयद ईशा अल्लाखाँ, लल्लू लाल सदल मिश्र और मथुरा प्रसाद जैसे लेखक हैं जिन्होंने हिन्दी में खड़ी बोली गद्य की नींव डाली । इसके पूर्व तो हिन्दी गद्य धार्मिक टीकाओं , सरकारी आज्ञापत्रों और राजसीघोषणा पत्रों तक ही सीमित था । अभी तक हिन्दी की प्राचीन और प्रौढ़भाषा ब्रज का ही साहित्यिक क्षेत्र में बोल बाला था। किन्तु कालान्तर में सभ्यता के विकास

के साथ ही भावों और विचारों की प्रौढ़ अभिव्यक्ति में ब्रजभाषा अनुपयुक्त प्रतीत हुई जिसके परिणामस्वरूप जनभाषा के रूप में बढ़ते हुए उत्तरदायित्व को वहन करने के लिए हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का समावेश हुआ ।

19वीं शताब्दी का पूर्वार्ध स्वतंत्र साहित्य रचना की दृष्टि से मात्र ईसाई धर्म प्रचार तथा पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित रहा अन्यथा इसका पूर्वार्ध विभिन्न आन्दोलनों सभा-सोसाइटियों , मिशनरियों और साम्प्रदायिक संस्थाओं के निर्माण में ही व्यतीत हो गया । दूसरे शब्दों में हिन्दी गद्य-विकास का यह काल'सुप्तावस्था' का काल कहा जा सकता है ।

हिन्दी गद्य-विकास के इस सुप्तावस्था में भी राजा शिवप्रसाद'सितारेहिन्द', राजा लक्ष्मण सिंह, और दयानन्द सरस्वती जैसी कुछ महान विभूतियाँ उत्पन्न हुईं जो अपने ढंग से इसमें चेतनता लाने का प्रयास करती रहीं । हिन्दी और उर्दू का जो संघर्ष इस समय छिड़ा वह अनवरत रूप से भारतेन्दु के आगमन तक चलता रहा । उर्दू के बढ़ते हुए आधिपत्य की तुलना में हिन्दी की दयनीय स्थिति का दिग्दर्शन कराते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखते है——

'' सरकार की कृपा से खड़ी बोली का अरबी-फारसीमय रूप लिखने-पढ़ने की अदालती भाषा हो कर सब के सामने आ गया, जीविका और मान मर्यादा की दृष्टि से उर्दू सीखना आवश्यक हो गया । देश-भाषा के नाम पर लड़कों को उर्दू ही सिखाई जाने लगी। उर्दू पढ़े लिखे लोग ही शिक्षित कहलाने लगे । हिन्दी की काव्यपरम्परा यद्यपि राजदरबारों के आश्रय में चली चलती थी पर उसके पढ़ने वालों की संख्या भी घटती जा रही थी । ऐसे प्रतिकूल समय में साधारण जनता के साथ-साथ उर्दू पढ़े-लिखे लोगों की भी जो थोड़ी-बहुत दृष्टि अपने पुराने साहित्य की ओर बनी हुई थी वह धर्मभाव से।''1

उर्दू के रोआब-दाब और तड़क-भड़क के सामने भी हिन्दी का प्रभाव कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष रूप से सतत् बढ़ रहा था यद्यपि इसकी गति बहुत ही मंद थी, बाबू बालमुकुन्द गुप्त के शब्दों में ——

'' जो लोग नागरी अक्षर सीखते थे फारसी अक्षर सीखने पर विवश हुए और हिन्दी भाषा हिन्दी न रह कर उर्दू बन गई । हिन्दी उस भाषा का नाम रहा जो टूटी फूटी चाल पर देवनागरी अक्षरों में लिखी जाती थी । ''2

हिन्दी और उर्दू की यह समस्या हिंदू मुसलमानों की मजहबी समस्या बन गई जिससे 1940 ई0 में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम रखने का सरकारी विचार बदलना पड़ा। भाषा संबंधी इस समस्या में अंग्रेजी कूटनीतिज्ञों ने आग में घी का काम किया। फलस्वरूप इसका प्रभाव न केवल उर्दू लेखकों तक ही सीमित रहा वरन् खेद का विषय है कि अपने अथक परिश्रम से न्यायालयों में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने वाले राजा- शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' भी कालान्तर में — "Urdu is becoming our mother tongue" [1] का नारा बुलन्द करने लगे।

इसी समय हिन्दी में राजाशिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' की अरबी-फारसी शब्दों से भरी-पूरी आमफहम और खास पसन्द तथा अरबी-फारसी शब्दों को बहिष्कृत करने वाली राजा लक्ष्मणसिंह की संस्कृतनिष्ठ शैलियाँ भी मान्यता तथा स्वीकृति के लिए प्रतिद्वन्द्विता कर रही थीं।

संक्षेप में भारतेन्दु के पूर्व का युग भाषा समस्या और भाषा निर्माण का युग था जिसमें आधुनिक साहित्य की भावी रूप, रेखा का मात्र आभास हो रहा था।

ख - भारतेन्दु युगीन भाषा तथा साहित्यिक परिस्थिति

हिन्दी साहित्य की ऐसी ही शोचनीय और अव्यवस्थित स्थिति में भारतेन्दु का पदार्पण साहित्यिक क्षेत्र में नई आशा और नई चेतना का सूचक था। उन्होंने अपने आगमन के साथ ही अपनी प्रतिभाकुशलता, विदग्धता तथा चतुर्मुखी व्यक्तित्व से साहित्यिक परिस्थिति का सिंहावलोकन कर के यह अनुभव किया कि उक्त दोनों शैलियों के संकीर्ण मार्ग से चलने पर किसी भी भाषा का विकास असम्भव है अतः उन्होंने दोनों ही शैलियों के एकांगी मार्गों का समन्वय कर के एक नई विस्तृत मध्यम मार्गवाली तथा संस्कृत और अरबी-फारसी के अतिवादों से मुक्त शैली की नींव डाली जिसमें लेखकों का प्रयत्न यही रहता था कि कठिन तथा अपरिचित शब्दों के प्रयोग से अधिकाधिक बचें, साथ ही अरबी फारसी तथा संस्कृत के मात्र उन्हीं शब्दों का प्रयोग करें जो किसी निश्चित उद्देश्य-पूर्ति

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- पृष्ठ 409

2- ,, ,, ,, पृष्ठ-409

के लिए आवश्यक हो। अर्थात् इस शैली का मूल आधार दैनिक व्यवहार की भाषा थी जिसे परिमार्जित करके गद्यभाषा के रूप में अपनाया गया। इसी युग में एक नई व्यंजना पद्धति की स्थापना हुई जो पुनर्जागृतिकाल की विभिन्न प्रवृतियों, विषयों, तथा विभिन्न साहित्यिक विधायों की अभिव्यक्ति में समर्थ थी।

भारतेन्दु के पूर्वकालीन हिन्दी गद्य साहित्य का धरातल असमतल तथा उसका स्वरूप अमूर्त था जिसे भारतेन्दु ने एक मूर्त-रूप दिया। भाषा के परिमार्जित शुद्ध रूप देने के लिए अनेकों शैलियों का प्रचार किया गया। खड़ी बोली गद्य के साथ ही साथ पद्य के क्षेत्रों में भी पदार्पण करने लगी। पत्रकारिता तथा रंगमंच के विकास ने विभिन्न विधाओं के विकास में ऐतिहासिक योगदान किया।

इतना होने पर भी विधाओं में जितनी नवस्फूर्ति और नवजागरण की अपेक्षा की जाती थी वह देखने में नहीं मिलती। संक्रान्तिकालीन भाषा होने के कारण काव्यशास्त्रीय परम्पराओं और भाषा की व्याकरण सम्मत एकरूपता के प्रति विशेष ध्यान न दे कर साहित्य में मात्र जनभावनाओं की अभिव्यक्ति को ही लक्ष्य बनाया गया। फलस्वरूप इस युग के साहित्य में अभिव्यक्ति की निश्छलता और यथार्थता का मनोरम रूप तो मिलता है किन्तु बनावट के लिए कोई स्थान नहीं।

इस युग के प्रायः समस्त लेखक किसी न किसी पत्र के सम्पादक थे। सम्पादक होने के नाते इन लेखकों को पत्रों की सफलता के लिए हर सम्भव प्रयत्न से लेखन क्रम बनाए रखने की आवश्यकता थी इसके लिए विषय प्रतिपादन में गंभीरता और प्रौढ़ता की अपेक्षा सजीवता उत्साह आदि गुणों को ही अधिक प्रश्रय दिया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति में कहीं कहीं प्रान्तीयता का दोष भी आ गया है किन्तु इससे उनकी व्यवहारिकता तथा प्रभावमयता में कहीं भी कमी नहीं आई है क्यों कि व्यवहारिक विषय के चुनाव के साथ ही साथ उनकी अभिव्यक्ति का ढंग भी सहज और व्यक्तित्वगुण सम्पन्न ही है।

निष्कर्ष रूप में भारतेन्दु युगीन साहित्य में मुख्य रूप से तीन बातें विशेष उल्लेखनीय हैं — भाषा का संस्कार, साहित्य की विभिन्न विधाओं का प्रयोग तथा साहित्य को संघर्ष और अन्धकार के गर्त से बाहर निकाल कर लोकक्षेत्र पर स्थिर और अव्यवस्थित रूप से स्थापित करना। निर्माण के इन समस्त सूत्रों के सूत्रधार भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र थे जिनके पथ का अनुगमन तात्कालीन अनेक लेखकों ने किया जो बाद में भारतेन्दु मंडल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

ग - भारतेन्दु की भाषानीति तथा उसका विकास :-

साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण करते ही भारतेन्दु ने अपनी भाषा- नीति का आधार जनता मान्य की भाषा को बनाया। साहित्य के क्षेत्र में वे एक ऐसी गद्य शैली का प्रचार करना चाहते थे जिसे जनता अपनी समझे । अपने नेतृत्व में प्रकाशित 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्र में उन्होंने अपनी इसी भाषा नीति तथा शैली पर बल दिया है, जैसा कि आचार्य शुक्ल जी कहते हैं-

'' हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले पहल इसी चन्द्रिका से प्रकट हुआ जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपनी विभूति समझा जिसको जनता ने उत्कंठापूर्वक दौड़ कर अपनाया उसका दर्शन इसी पत्रिका में हुआ ।''

स्वसंस्कृति के अनन्य प्रेमी होने के बावजूद भी भारतेन्दु अपनी इसी भाषानीति के माध्यम से गद्य एवं पद्य दोनों ही रूपों को सशक्त, समृद्ध और युगानुरूप बनाना चाहते थे । जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दी शब्दों के साथ विदेशी और विजातीय शब्दों को दाल में नमक के समान ग्रहण किया । उनका राष्ट्रप्रेमी-हृदय स्वाभाविक रूप से संस्कृत के प्रति आकर्षित होने पर भी भाषा के क्षेत्र में उदार रहा । फलस्वरूप एक तरफ उन्होंने लोकोक्तियों, मुहावरों, संस्कृत तथा प्राचीन साहित्यों के उद्धरणों को स्थान दे कर भाषा का व्यावहारिक, शिष्ट तथा प्रौढ रूप प्रस्तुत किया तो दूसरी और अरबी-फारसी शब्दों के नीचे नुक्ता को हटा कर शब्दों का राष्ट्रीयकरण कर के तथा उर्दू -फारसी के भावव्यंजक एवं प्रचलित शब्दों को सहृदयता पूर्वक ग्रहण करके भाषा द्वेष की प्रवृत्ति को दूर किया ।

किन्तु कालान्तर में भारतेन्दु के अवसान के बाद उनकी इसी भाषा-नीति को विकसित करने में कुछ भारतेन्दु मंडल के लेखक ही उदासीन हो गए जिनमें विशेषतः प्रताप नारायणमिश्र की प्रान्तीयता, बैजेन्द्र किशोर की कृत्रिमता और भीमसेनशर्मा की उर्दू-फारसी शब्दों तक का संस्कृतिकरण ने न केवल भाषा के स्वभाविक विकास में बाधा डाली वरन् भाषा के स्वभाविक सौन्दर्य को एक दम से नष्ट करके शब्दाडम्बर और क्लिष्टता की अलंकारिता से जोड़ कर दुरूह बना दिया। जिसके फलस्वरूप भारतेन्दोत्तरकाल में भाषा में सर्वत्र ही अशिष्टता और असंयतता का साम्राज्य छा गया। भाषा विकास की इस ~~दुर्द~~ दुर्दशा का चित्रण डा० उदय भानुसिंह ने बड़े ही सशक्त और प्रभावशाली

हिन्दी साहित्य का इतिहास - पं० रामचन्द्र शुक्ल पृ० 438

शब्दों में किया है —

'' भारतेन्दु और प्रतापनारायण मिश्र के बाद हिन्दी साहित्य प्रभंजन पीड़ित पतवार हीन नौका की भांति ऊभ-चूभ होने लगा। निरंकुश लेखक बगदूदू घोड़ों की भांति मनमानी सरपट दौड़ने लगे। उन्होंने भाषा की शुध्दता का ध्यान रखा न शैली को। सभी की अपनी-अपनी तुंबड़ी थी और अपना-अपना राग था। हिन्दी भाषा और साहित्य में चारों तरफ अराजकता फैल गई ''।

घ- भारतेन्दोत्तर कालीन हिन्दी गद्य:—

विगत विवेचन में यह बताया जा चुका है कि भारतेन्दु युगीन गद्य जो धार्मिक टीकाओं और व्याख्याओं तक ही सीमित था, उसे भारतेन्दु ने सामान्य क्रीड़ा भूमि पर उतार कर विभिन्न विधाओं के माध्यम से विकसित किया। फिर भी गद्य के रूप में स्थिरता और प्रौढ़ता का अभाव खटकता ही रहा क्यों कि भारतेन्दु काल से चली आ रही हिन्दी की अपनी दुर्बलताएं यथा— व्याकरण की व्यवस्था का अभाव, शब्द भंडार का संकोच, वैज्ञानिक शब्दावली का दुर्भिक्ष क्षेत्रीय भाषाओं का परस्पर कलह आदि कुछ ऐसी समस्याएं थी जिसे संवारने, सजाने तथा स्थिरता देने के इच्छुक हिन्दी के कर्णधार शैलियों को प्रौढ़ता और परिष्कार न दे सके। फिर भारतेन्दु की मृत्यु से तो हिन्दी गद्य में एक प्रकार की अराजकता सी आ गई।

भारतेन्दोत्तर युग में हिन्दी गद्य शैली के प्रयोगों, वैयक्तिक रुचियों और बंगला उर्दू के अनुकरण मात्र तक ही सीमित रह गई। भारतेन्दु द्वारा प्रचलित सामान्य भाषा शैली का अस्तित्व प्राय: मिटने सा लगा। नेता के अभाव में भारतेन्दु- मंडल तथा इस युग के समस्त लेखक किसी भी लक्ष्य के अभाव में किसी भी प्रकार की उच्चकोटि की साहित्यिक कृति की रचना में असमर्थ रहे। श्रीधर पाठक, बदरी नारायण चौधरी किशोरीलाल, बालमुकुन्द गुप्त, देवकीनन्दन खत्री, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे साहित्यकार भी अपनी-अपनी ढफली और अपना अपना राग अलाप रहे थे। दूसरे शब्दों में भारतेन्दोत्तर युग वस्तुत: प्रतिभा के संघर्ष तथा नेतृत्व के परीक्षण की घड़ियों का युग था। साहित्यिक क्षेत्र में इसी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को लक्ष्य कर के डा० उदयभानु सिंह ने कहा है —

---

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग - उदयभानु सिंह पृ.- 32-33

'' कोई किसी की सुननेवाला न था, सभी वक्ता गुरु या नेता बने थे, श्रोता, शिष्य या अनुगामी कोई न था अतएव वह अराजकता का युग था।''[1]

भारतेन्दोत्तरकालीन गद्य में अराजकता के कारणों में कुछ सीमातक पूर्वकालीन आन्दोलन तथा विभिन्न भाषा- भाषी लेखकों का आगमन भी था जो गुण की अपेक्षा गणना को अधिक महत्व देते थे। जैसा कि डा० भोलानाथ ने कहा है ——

'' साथ ही आत्म-त्याग समझकर लोग हिन्दी में लिखते थे और मातृभाषा समझकर उसे सीखने की आवश्यकता बिल्कुल ही नहीं समझते थे।''[2]

व्याकरण संबंधी एकरूपता तथा उसके प्रति लेखकों की अज्ञानता के कारण हिन्दी अपनी स्वाभाविक लिंग, वचन, तथा वाक्य विन्यास भी खो बैठी। एक ही शब्द किसी की दृष्टि में पुलिंग तो दूसरे की दृष्टि में स्त्रीलिंग था। वचन के संबंध में भी यही धारणा थी। कहीं कहीं तो एकही लेखक एकही शब्द को कहीं पुलिंग तो कहीं स्त्रीलिंग कहीं एक वचन तो कहीं बहुवचन मानता था।

यद्यपि भारतेन्दु के समय से ही अनेकों भाषाओं के शब्द, पद, मुहावरों के प्रयोग तथा विभिन्न भाषाओं से अनुवादों का कार्य होता रहा किन्तु शब्द भंडार की कमी के कारण विवशतावश उन्हीं भाषाओं के शब्दों को अपनाना पड़ा। भारतेन्दु के समय में जो भी व्यक्तिगत प्रयास हुए वे इस समय रूक गए। पथ प्रदर्शक के अभाव में लोकप्रियता के इच्छुक लेखकों में हठवादिता दुराग्रह और मिथ्याभिमान की भावना इतनी अधिक बढ गई थी कि उचित अनुचित न्याय- अन्याय, सत्य-असत्य जो भी उनके मानस पटल पर प्रतिबिम्बित होता उसे लेखनी के माध्यम से साहित्य रूप में प्रकट कर दिया जाता।

निष्कर्षतः भारतेन्दोत्तर युगीन गद्य में विभिन्न प्रकृति के शब्दों, पदों तथा वाक्यों के स्वच्छन्द एवं अबाध प्रयोग के कारण सर्वत्र ही एकरूपता का अभाव रहा।

- -

1- महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग - उदयभानुसिंह पृष्ठ 265

2- हिन्दी साहित्य - डा० भोलानाथ गुप्त पृष्ठ- 42

साहित्य की यह स्थिति बौद्धिक ज्ञान की क्षुधा -तृप्ति में पूर्णतया असमर्थ रही । हिन्दी की इस दैन्यीय दशा का एक कारण हिन्दी लेखकों की दैन्यीय आर्थिक दशा भी थी जिसके कारण वे हमेशा ही हिन्दी के प्रति उपेक्षाभाव रखते थे यथा——

'' क जिन विद्वानों से हिन्दी के भंडार को भरने के लिए कहा जाता था तो वह स्पष्ट कह देता था कि 'क्या करें मुझे तो हिन्दी आती नहीं।''।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भारतेन्दुोत्तर युग में हिन्दी गद्यसाहित्य में घोर निराशा और दैन्यावस्था का साम्राज्य छाया हुआ था ।

2- द्विवेदी युग

भारतेन्दोत्तर कालीन हिन्दी भाषा की अराजकतापूर्ण और अव्यवस्थित स्थिति की परम्परा द्विवेदी जी के साहित्य में पदार्पण के पूर्व तक चली आई थी। इस समय तक भाषा का मार्ग तो स्थिर हो गया था किन्तु उसमें सौष्ठव नहीं आ सका था। गद्य क्षेत्र में अनेक विधाओं और शैलियों के विकास के बावजूद भी उनमें शिथिलता, और परिपक्वता का अभाव था । भारतेन्दु युगीन लेखकों का एकमात्र उद्देश्य येन-केन प्रकारेण हिन्दी का एक निश्चित रूप प्रस्तुत कर के प्रचार और प्रसार करना था न कि परिमार्जन और परिष्कार। भारतेन्दु के बाद हिन्दी में दैनिक -मासिक साप्ताहिक , पत्रों का विकास अधिकाधिक मात्रा में होने लगा था । अनुवादों की परम्परा की गति में भी तीव्रता आई । भाषाप्रेम की जागृति के फलस्वरूप ग्रामों और नगरों में अनेक सभा और सोसाइटियों की स्थापना हुई जिसमें श्यामसुन्दरदास के प्रयत्न से स्थापित काशी नागरी प्रचारिणी सभा विशेष उल्लेखनीय है । अनेक उत्साही लेखक और कार्यकर्ता हिन्दी के समुद्धार में संलग्न हो चुके थे तथापि सामान्य जनता और साहित्यिक क्षेत्र में यह अनुभव किया गया कि मराठी , बंगला और गुजराती साहित्य की तुलना में हिन्दी साहित्य दुर्बल है । उधर भारतेन्दु काल में व्याकरणिक ज्ञान के अभाव तथा शब्द भंडार में कमी के कारण हिन्दी में मनमाना प्रयोग शुरू हो गया था ऐसी स्थिति में हिन्दी के निजी स्वरूप की रक्षा के लिए और उसकी प्रकृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए

- -

1- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य राम चन्द्र शुक्ल पृष्ठ 448

व्याकरण के अनुशासन की अत्यधिक आवश्यकता थी , ऐसे ही समय में द्विवेदी जी जैसे एक महान प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व का उदय हुआ जिसने शीघ्र ही अपने परिश्रम, अध्यवसाय और लगन से हिन्दी भाषा और साहित्य पर अपनी धाक जमा लिया ।

साहित्य क्षेत्र में पदार्पण तथा 'सरस्वती' सम्पादन कार्य-भार के वहन के साथ ही साथ द्विवेदी जी ने अपने युग के सम्पूर्ण साहित्यिक क्षेत्र का नेतृत्व कर के अपने व्यक्तित्व को अमिट छाप लगा दिया जिससे बीसवीं शताब्दी का प्रथम चतुर्थांश द्विवेदी युग से अभिहित हुआ । व्याकरण, शब्द प्रयोग के प्रति सावधानी तथा विभिन्न विषयों की अभिव्यक्ति हेतु भावद्योतन की विभिन्न मनोवैज्ञानिक शैलियों का विकास और कलात्मक गद्य का आरम्भ इसी युग की देन है ।

क. काल निर्धारण

द्विवेदी जी युग का काल निर्धारण बहुत ही द्वन्द्वात्मक है । जहाँ तक इसके पूर्व सीमा निर्धारण का प्रश्न है उसके लिए प्रायः सभी इतिहासकार एक मत हो कर 1900ई० से इस युग का आरम्भ मानते हैं । इसके लिए वे इस युग की आधारभूत पत्रिका '' सरस्वती का प्रकाशन तथा युगप्रवर्तक द्विवेदी जी के द्वारा उसका संपादन इन दोनों ही घटनाओं को प्रमुख कारण मानते हैं जो बहुत सीमा तक उचित भी है ।

किन्तु इस युग का उत्तर-सीमा निर्धारण बहुत ही विवादास्पद है । कुछ इतिहासकार युगगत विचारधाराओं तथा प्रवृत्तियों को दृष्टि में रख कर द्विवेदी युग का आरंभ 1903 ई० से और उसका अन्त 1920 अर्थात् सरस्वती सम्पादन कार्य से द्विवेदी जी के अवकाश ग्रहण की अवधि तक मानते हैं किन्तु इस सीमित अवधि के घेरे में द्विवेदी युग को बाँध देना उचित नहीं प्रतीत होता क्यों कि सरस्वती सम्पादन के पूर्व सन् 1896ई० से ही द्विवेदी जी की प्रखर प्रतिभा का आभास साहित्यिक क्षेत्र में होने लगा था । श्री शंकर दयाल चौऋषि ने अपने शोधग्रंथ '' द्विवेदी युगीन गद्य-शैलियों का अध्ययन'' की भूमिका में द्विवेदी युग का काल निर्धारण करते हुए लिखा है —

'' द्विवेदी युग का कम से कम पूर्व सीमा 'सरस्वती प्रकाशन । जनवरी 1901 मान सकते हैं और उत्तर सीमा उनकी हिन्दी का प्रथम अभिनन्दनग्रंथ समर्पित करने का समय सन् 1933 तक न ले कर द्विवेदी युग के परिपक्व फैल' आचार्य शुक्ल की अद्वितीय रचना' हिन्दी साहित्य का इतिहास' के रूप में नवयुगागम की सूचना देने वाली प्रतिनिधि रचना के प्रकाशनकाल सन् 1930 की मान सकते हैं । इस प्रकार द्विवेदी युग की

1900 से 1930 तक की सुदृढ़ युगान्तरकारी घटनाओं से भी बांधा जा सकता है ।1

पं0 जगन्नाथ शर्मा ने भी द्विवेदी जी के साहित्यिक काल की सीमा उनके सम्पादन कार्य से मुक्ति को न मान कर सन् 1925 तक स्वीकार किया है स्वयं उन्हीं के शब्दों में इस विचार की पुष्टि हो जाती है यथा ---- --

" यदि उनके सम्पूर्ण साहित्यिक जीवन का विचार किया जाय तो यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि ई0 सन् 1925 तक हिन्दी में उनका राज्य था । वे निर्माता थे , नियामक थे , और साथ ही कठोर शासक भी थे , हिन्दी की गद्य निर्मिति में उनके व्यक्तित्व का एक विशेष महत्व है । "2

गद्य शैलियों के विकास का सिंहावलोकन करने से भी द्विवेदी युग का काल सीमा उपर्युक्त विचारकों से समर्थित लगभग इतने ही समय का ठहरता है ।

सन् 1921 ई0 से प्रारम्भ राष्ट्रीय आन्दोलनों के साथ ही भावनाओं और कल्पनाओं में स्वच्छन्दता और उन्मुक्ति की प्रवृत्ति दिखाई देने लगी जो परवर्ती 8-9 वर्षों में पुष्पित तथा विकसित हो कर सन् 1930 के लगभग स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति के रूप में प्रकट हुई । इससे साहित्य तथा भाषा शैली में नए विषय तथा नए प्रयोग गद्य के विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ने लगे । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी परम्परावादी प्रवृत्तियों के अग्रगामी नेता थे , फलतः साहित्य में इन स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों के आगमन होते ही उनका नेतृत्व समाप्त हो जाता है ।

उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द की अन्तिम रचनाएं तथा जैनेन्द्र की प्रथम महत्वपूर्ण उपन्यास रचना 'परख' में क्रमशः भावव्यंजक शैलियों का प्रयोग हुआ । 1930 की रचना 'परख' सर्वप्रथम स्वाभाविक ,सरल, तथा अलंकारविहीन पाश्चात्य ढंग की भाषा शैली से परिपुष्ट थी जिस परम्परा को परवर्ती काल में अज्ञेय ,निराला आदि के अनेक लेखकों ने परिपुष्ट किया ।

सन् 1930 ई में कहानियों के क्षेत्र में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, जैनेन्द्र ,

---

1-द्विवेदी युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन- शंकर दयाल चौऋषि -आमुख पृ0-च

2- हिन्दी गद्य के युग निर्माता — जगन्नाथ प्रसाद शर्मा - आमुख -पृष्ठ-6

भगवतीचरणवर्मा आदि ने एक नया मोड़ ला कर द्विवेदी युग का पटाक्षेप तथा नवयुग का प्रारम्भ किया ।

नाट्यक्षेत्र में 20वीं शताब्दी के तृतीय दशक के उत्तरार्द्ध में बदरीनाथ भट्ट, जगन्नाथ प्रसाद, 'मिलिन्द' जमनाप्रसाद मेहरा, जयशंकर प्रसाद जैसे नाट्यकारों की कुछ अन्तिम आदर्शवादी ऐतिहासिक कृतियों का प्रकाशन हुआ। इसके बाद नाट्य क्षेत्र में लक्ष्मीनारायण मिश्र के आगमन के साथ ही एक नए युग का विकास होता है । इनकी कृतियाँ 'सन्यासी', 'राक्षस का मंदिर'' 'मुक्ति का रहस्य' और 'राजयोग' में भाषा शैली, टेक्नीक और विचारधारा की दृष्टि से एक नए युग का उद्घाटन होता है। द्विवेदी युगीन आदर्शवादी नाटकों की प्रतिक्रिया नए युग के नाटकों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगी । लेखकों ने यह अनुभव किया कि वर्तमान की प्रवृत्ति के लिए यथार्थ को महत्व देना होगा । इसी धारणा के विकास से द्विवेदी -युग की परिसमाप्ति होती है तथा यथार्थवादी धारा के श्रीगणेश होने के साथ ही यथा- तथ्य चित्रण की प्रवृत्ति सामने आई।

युग चेतना- जन-विचार एवं भावों के क्षेत्र में श्री रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी की सन् 1928 में प्रकाशित ' युवक' मासिक पत्र ने ओजपूर्ण गद्य का समीचिक विकसित स्वरूप उपस्थित किया । स्वतंत्रता आन्दोलन के फलस्वरूप इस पत्रिका में ओजपूर्ण और भावात्मक गद्य शैली का विकास हुआ ।

समीक्षा के क्षेत्र में द्विवेदी युग की सीमा पर विचार करना अधिक संगत है द्विवेदी युग के काल- निर्धारण में इससे बहुत अधिक सहायता मिलती है । इस दृष्टि से आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने द्विवेदी युग की कालसीमा का जो निर्धारण किया है वह उचित जान पड़ता है । उनके विचार में - - - - -

'' जहाँ तक हिन्दी गद्य और विशेषतः हिन्दी समीक्षा के विकास का प्रश्न है द्विवेदी युग की सीमा सन् 1920 में समाप्त नहीं होती वह कुछ वर्ष और आगे चलती है। जो विचार-धारा और साहित्यिक प्रवृत्तियाँ सन् 1901 ई० के पूर्व पश्चात उत्पन्न हुई थीं वे सन् 1920 में प्रौढ़ और परिपुष्ट होने लगी थीं परन्तु उनका चरम विकास सन् 25 और 30 के आस-पास देखा गया । यही उनके उत्कर्ष की चरम सीमा या अवधि है । हिन्दी समीक्षा के विकास सूत्रों को अच्छी तरह देखने और पहचानने पर हम इसी ... पर पहुँचते हैं कि शुक्ल जी की समीक्षा द्विवेदी युग का ही समुन्नत विकास है , जिस द्विवेदी युग का हिन्दी समीक्षा की सम्पूर्ण गतिविधि शुक्ल जी के साहित्यादर्श में ही अपनी चरम- परिणति प्राप्त करती है । अतएव हमें समीक्षा के क्षेत्र में द्विवेदी -युग की

सीमा सन् 1901 से 1930 ई० तक माननी पड़ेगी । सन् 1930 में शुक्ल जी का हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशित हुआ था जिसमें उस युग की की समीक्षा का सम्पूर्ण समाहार दिखाई देता है ।''।

निष्कर्षतः द्विवेदी जी का साहित्यिक शासन सन् 1925 ई० में ही समाप्त हो गया था किन्तु उनके प्रभाविष्णु व्यक्तित्व तथा कठोर संयमित अनुशासन का प्रभाव उनके कुछ वर्ष पश्चात् 1930 तक रहा । विभिन्न गद्यविधाओं के विकास के अध्ययन के फलस्वरूप मैंने भी अपने शोध प्रबंध में द्विवेदी युग का काल सन् 1900 से 1930 तक ही मानना उचित समझा हूँ क्योंकि लगभग इसी समय हिन्दी के बाह्य शिल्प और वर्णनात्मक शैलियों में नवीन प्रयोग दिखाई देने लगा था ।

ख-- द्विवेदी जी का सरस्वती सम्पादन एवं उसका उद्देश्यः-

द्विवेदी जी के साहित्यिक क्षेत्र में आगमन के पूर्व ही हिन्दी साहित्य में कुछ नई शक्तियाँ उत्पन्न हो गई थीं यथा---

(1) न्यायालयों में हिन्दी को प्रतिष्ठा ।
(2) नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना तथा नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन
(3) नागरी प्रचारिणी सभा की संरक्षता में सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन ।
(4) सन् 1903 ई० में द्विवेदी जी का सम्पादन भार ग्रहण करना ।

भारतेन्दु तथा भारतेन्दु मंडल के अथक परिश्रम के फलस्वरूप सार्वजनीन भाषा में एक सुव्यवस्थित, अतिमयता, नियमितता और सुधारवादी दृष्टिकोण लाने में सरस्वती पत्रिका और सम्पादक ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । भारतेन्दोत्तर कालीन स्वच्छन्दता और अवांछनीय प्रयोग के प्रति लेखकों का ध्यान आकर्षित करने का सर्वप्रथम प्रयास 'सरस्वती' पत्रिका द्वारा ही किया गया। साथ ही व्याकरणिक त्रुटियों के प्रति सचेत रहने और विरामादि चिन्हों के प्रयोग पर बल भी दिया गया । वस्तुतः द्विवेदी जी ने इसी पत्रिका के माध्यम से हिन्दी गद्य को परिनिष्ठित रूप दे कर भाषा के शब्द भंडार तथा अभिव्यंजना शक्ति को आगे बढ़ाया ।

1- नया साहित्य - नए प्रश्न- नंद दुलारे वाजपेयी- द्विवेदी युग की समीक्षा देन पृ० 32

राष्ट्र-भाषा प्रेम के फलस्वरूप भारत के विभिन्न भागों में अनेक लेखक उत्पन्न हुए जिन्होंने अपनी कृतियों में अपने क्षेत्र से संबंधित अनेकों उर्दू, बंगला, मराठी गुजराती, अवधी, भोजपुरी, बुन्देली, ब्रजी के प्रान्तज और देशज शब्दों को प्रयुक्त किया जिनकी अधिकता से हिन्दी में गवाँरूपन का रूप झलकने लगा। सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने शुद्धभाषा लिखने और लिखाने का आन्दोलन आरम्भ किया।

व्याकरणिक स्थिरता लाने के लिए सरस्वती में व्याकरण संबंधी अनेक लेख प्रकाशित हुए जिसमें एक तरफ शुद्ध गद्य का रूप प्रस्तुत हुआ दूसरी तरफ भाषा मर्मज्ञों को हिन्दी का एक सुव्यवस्थित वैज्ञानिक व्याकरण लिखने की प्रेरणा मिली। शब्दभण्डारों में वृद्धि के लिए द्विवेदी जी ने व्यापक शब्दों की महत्ता तथा उनके प्रयोग पर बल दिया। विभिन्न क्षेत्रों से ज्ञान-विज्ञान संबंधी अनेक लेख सरस्वती में प्रकाशित होते थे जिससे उन विषयों से संबंधित भाव प्रकाशन के लिए अनेक नए शब्दों का प्रयोग होना स्वाभाविक था। अनेक शब्द जो नष्टप्राय हो रहे थे उनका उद्धार और अनेकों नए शब्दों का निर्माण किया गया साथ ही विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपना कर इस पत्रिका ने लेखकों के सामने से शब्द भंडार की सीमितता को दूर किया।

सरस्वती में प्रकाशनार्थ आई समस्त रचनाओं को भाषा एवं व्याकरण की कसौटी पर कस कर प्रकाशित किया जाता था आवश्यकतानुसार उसमें काट-छाँट भी किया जाता था। तत्पश्चात् प्रकाशित रचना के आधार पर लेखक अपनी भाषा में सुधार और व्याकरण संबंधी नियमों के प्रति सचेत हो जाता था। 'सरस्वती' के इसी भाषा संस्कार के कारण ही परवर्ती द्विवेदी युग में हिन्दी जगत के ऐसे ऐसे साहित्यकारों का जन्म हुआ जिनकी टक्कर का साहित्यकार मिलना आज भी दुर्लभ है।

ग- युग प्रवर्तक द्विवेदी

साहित्यिक धरातल पर आते ही द्विवेदी जी ने एक आलोचक, सम्पादक और शैलीकार के रूप में अपने युग को एक नया मोड़ दिया। सरस्वती का कार्यभार सम्भालने के पूर्व ही वे एक निष्पक्ष और साहसी समालोचक के रूप में काफी प्रसिद्ध हो चुके थे। सरस्वती की सम्पादकीय टिप्पणियाँ प्रायः देश की सामाजिक, राजनैतिक सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों की आलोचना से परिपुष्ट रहती थीं ये आलोचनाएँ गहन चिन्तन,

सहृदयता और आचार-पुष्टता से युक्त रहती थीं जो कर्तव्यपालन के साथ ही साथ साहित्य में निर्माण और परिष्कार के लक्ष्य से लिखी जाती थीं ।

अपनी सूक्ष्म तथा गहन आलोचक शक्ति के आधार पर द्विवेदी जी ने हिन्दी में प्रौढ़ तथा पुस्तकाकार समालोचना का श्रीगणेश किया। इसके अतिरिक्त विवेचनात्मक , विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक आलोचना का सूत्रपात करने में भी वे ही अग्रणी रहें । लेखकों को उनकी त्रुटियों से अवगत कराने तथा भविष्य में उनके प्रति सचेत रहने के लिए उन्होंने अपनी आलोचना की भाषा, सरल, प्रखर, स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण रखा।

आलोचक रूप में द्विवेदी जी कर्ता की अपेक्षा नियामक ही अधिक रहे । अपने इसी नियामक और आलोचकीय व्यक्तित्व से उन्होंने हिन्दी को न केवल परिष्कृत, परिमार्जित और गतिशील बनाया वरन् ऐसे उच्च कोटि के कलाकार उत्पन्न किए जिन्होंने अपनी कृतियों से हिन्दी साहित्य में चार-चाँद लगा दिये ।

सम्पादक रूप में द्विवेदी जी ने सर्वत्र अपनी लौह लेखनी से नियमन का कार्य ही किया । उनके अथक परिश्रम के कारण बस पन्द्रह वर्षों से घुटने टेक कर चलने वाली खड़ी बोली सरपट दौड़ने लगी । उनके नियमन और परिष्कार के कारण ही उनके युग में निर्दोष और प्रशस्त लेखन कला का विकास हुआ ।

एक आदर्श और साहित्य प्रेमी सम्पादक की हैसियत से सरस्वती को आदर्श एवं सफल पत्रिका बनाने के लिए उन्होंने इसमें कई नवीन स्तम्भों की स्थापना भी की साथ ही सम्पादन कला के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उन्होंने बंगला, अंग्रेजी, आदि उन्नत भाषाओं की पत्रकारिताओं से सरस्वती के लिए पाठ्य सामग्री का चयन करके, उसे आधुनिकता के साँचे में ढाल कर परवर्ती पत्रकारिता के विकास के लिए पथ प्रदर्शिका बनाया।

हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने सरस्वती के माध्यम से अनेकों लेखकों को हिन्दी के प्रति आकृष्ट किया यद्यपि ऐसा करने में उन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता था । उन्होंने विषय की विभिन्नता के प्रति भी लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया ।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी के आलोचक रूप के भीतर भी उनका सम्पादकीय रूप ही छिपा था । सम्पादन कला की अपनी लेखनी की

शक्ति से सबलित करके दृढ़ दृढ़ आधार तथा आदर्श रूप प्रस्तुत करके समुन्नत तथा प्रौढ़ बनाया परिणामस्वरूप उनकी पत्रकारिता अपने युग से बढ़ कर भावी समस्त पत्रकारिताओं के लिए अनुकरणीय हुई । शैलीकार के रूप में भी द्विवेदी जी को विषयानुरूप शैलियों के स्वरूप को निश्चित करने में अथक परिश्रम का सामना करना पड़ा । भाषा के समान ही शैली के क्षेत्र में भी कोई अंग्रेजी की सरस व्यंजनामयी, तो कोई संस्कृत की आडम्बर और अलंकरणप्रधान, तो कोई बंगला की सरस पदावली पर मुग्ध हो कर उसी ढंग की शैली में रचना करने लगे थे। इन लेखकों का मुख्य उद्देश्य कृत्रिमता तथा आडम्बर प्रधान शैली द्वारा किसी भी प्रकार से रचना में चमत्कार उत्पन्न करना मात्र रह गया था जिससे शैलियों में भावव्यंजकता प्रवाहमयता और स्वाभाविकता जैसे गुणों का ह्रास होने लगा था। वाक्यों के क्रम में भी कोई निश्चितता नहीं थी । भाषा में व्याकरणिक त्रुटियाँ तथा विरामचिन्हों की उपेक्षा ने शैली के स्वाभाविक विकास में बाधा डाली ।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रख कर स्वयं गद्यविधायक के नाते द्विवेदी जी ने अपने सम्पूर्ण निबंधों की रचना शैली के निर्माण और उसके विकास की दृष्टि से ही की । शैलीकार के रूप में उन्होंने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से ओत-प्रोत परिचयात्मक, और आलोचनात्मक और गवेषणात्मक जैसी तीन शैलियों को अपनाया जो बहुत ही सरल सुस्पष्ट और उनके तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग की गई हैं ।

परिचयात्मक शैली का उद्देश्य हिन्दी का प्रचार प्रसार करना था जिसमें एक शिक्षक की भाँति विषय की गुत्थियों को सुलझा कर बार बार समझाने का प्रयत्न किया गया है ।

आलोचनात्मक शैली में उनका उद्देश्य अपने पूर्ववर्ती हिन्दी भाषा के नाम पर फैली हुई स्वच्छन्दतावादी विचारधारा को दूर करना था जिसमें उन्होंने आवेश व्यंग्य और ओज जैसे अस्त्रों को भी अपनाया है ।

गवेषणात्मक शैली में साहित्यिक या गंभीर विषयों की विवेचना बहुत ही विशद संयत और गंभीर रूप में की गई है । अपनी इस शैली में वे एक गंभीर विचारक, दार्शनिक और चिन्तक के रूप में दिखाई पड़ते हैं ।

निष्कर्ष रूप में भाषा-भाव, शैली तथा अर्थ व्यंजकता सभी दृष्टियों से द्विवेदी जी ने अपने युग का नेतृत्व किया। एक युगप्रवर्तक की भाँति उन्होंने हिन्दी के अव्यवस्थित रूप को व्यवस्थित कर उस उज्ज्वल भविष्य की नींव डाली जो आज पुष्पित और पल्लवित

हो रहा है। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने उनके इसी प्रभावशाली व्यक्तित्व कृतित्व तथा युग प्रवर्तन की प्रशंसा करते हुए लिखा है ——

"विचारों के क्षेत्र में नई और बहुमुखी सामग्री एकत्र करने का श्रेय आचार्य द्विवेदी का है जिन्हों ने हिन्दी के लिए भाषा संबंधी एक नया प्रतिमान भी प्रस्तुत किया है। नए विचार और नई भाषा, नया शरीर और नई पोशाक दोनों ही नई हिन्दी को द्विवेदी जी की देन है। इसी कारण वे नई हिन्दी के प्रथम और युग प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। द्विवेदी जी और उनके साथियों का महत्व नव निर्माण के प्रचुर और पुष्ट सामग्री भेंट करने में है साहित्य के क्षेत्र में किसी एक व्यक्ति पर इतना बड़ा उत्तरदायित्व इतिहास की शक्तियों ने कदाचित पहली बार रखा और पहली ही बार द्विवेदी जी ने इस उत्तरदायित्व के सफल निर्वाह का अनुपम निदर्शन प्रस्तुत किया।"।

इतना होते हुए भी एक तरफ द्विवेदी जी के नेतृत्व में हिन्दी भाषा परिष्कृत हो कर अभिजात्य रूप धारण करने लगी वहीं दूसरी तरफ उसने आरम्भ से चली आती हुई अपनी एक महत्वपूर्ण जातीय विशेषता को खोना प्रारम्भ कर दिया। अर्थात् हिन्दी अपनी सहज ग्रहणशील स्वभाव को त्याग कर संकुचित दृष्टिकोण वाली हो गई जिससे उसके सहज स्वाभाविक रूप में बाधा पड़ी। साहित्य में रीति कला के परिपालन पर विशेष बल देने के परिणामस्वरूप साहित्य में से सरस शृंगार का तो बहिष्कार हुआ ही साथ ही साहित्यकारों की विषय चयन की स्वतंत्रता भी जाती रही। साहित्यकार बँधे बंधाए विषयों पर नीरस रचना लिखने लगे जिसमें उनकी भावना भाषा परिष्कार और उसके प्रचार तक ही सीमित रह गई जिसका परिणाम यह हुआ कि न तो स्वयं द्विवेदी जी ही कोई श्रेष्ठ रचना कर सके और न उनके अनुयायी साहित्यकार ही क्यों कि उनका भाषा सुधार का आन्दोलन व्याकरण शुद्धता का आन्दोलन था। उससे व्याकरण विशुद्धता की रक्षा तो अवश्य हुई परन्तु भाषा से शिथिलता और लचरपन का परिहार न हो सका।

1- आधुनिक साहित्य - नन्ददुलारे वाजपेयी- भूमिका - पृ0 13

घ- युग के अन्यगद्यकार तथा उनकी भाषा- शैली की सामान्य विशेषताएं--

बीसवीं शताब्दी का आरम्भ हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । दूसरे शब्दों में यदि यह कहा जाय कि यह युग विभिन्न प्रकार के शैलीकारों और साहित्यकारों का जनक रहा है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। खड़ी बोली हिन्दी गद्यभाषा को परिष्कृत और परिमार्जित रूप देने वाले तथा एक नये युग के अधिनायक द्विवेदी जी के समकालीन साहित्यकारों में बाबू बालमुकुन्द गुप्त, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पूर्णसिंह, गोविन्दनारायण मिश्र, माधवप्रसाद मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, मिश्रबंधु, श्यामसुन्दरदास, रामचन्द्रशुक्ल, प्रेमचन्द्र , अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' राधिकारमणसिंह चण्डीप्रसाद हृदयेश, बदरीनाथभट्ट, गोपालराम गहमरी, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव चतुरसेनशास्त्री आदि मुख्य हैं । इन लेखकों ने अपने व्यक्तित्व के अनुसार ही भाषा तथा शैली को अपनाया जो इनकी भाषाशैली की सामान्य विशेषता ही है । उदाहरणार्थ जहाँ बालमुकुन्दगुप्त, पद्मसिंहशर्मा, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव आदि ने अपने स्वभावानुसार हास्य-व्यंग्य और व्यक्तित्व प्रधान भाषा को अपनाया वहीं आचार्य रामचन्द्रशुक्ल, जयशंकर प्रसाद, श्याम सुन्दर दास, पूर्णसिंह, गोविन्द नरायणमिश्र आदि ने गंभीर गंभीर व्यक्तित्व के अनुसार गंभीर आलोचना और विवेचनात्मक भाषा शैली को अपनाया ।

सामान्यतः इन लेखकों की भाषा जहाँ तत्सम प्रधान है वहीं गुप्त , पद्मसिंह शर्मा , प्रेमचन्द्र और गंगाप्रसाद श्रीवास्तव आदि ने व्यवहारिक जनभाषा को साहित्यिक रूप दिया जिसमें हास्य, व्यंग्य के चुटकुले, मुहावरों आदि की प्रधानता रही । इन लेखकों के साथ ही चण्डीप्रसाद हृदयेश, गोविन्द नरायण मिश्र और चतुरसेनशास्त्री जैसे कुछ लेखकों ने आलंकारिक और दीर्घ -सामासिक भाषा शैली को महत्वदिया।

इस युग के साहित्यकारों की भाषा में एक क्रमिक विकास देखने को मिलता है युग के आरम्भ में भाषा का परिष्कार और परिमार्जन हो रहा था जिससे आरम्भिक साहित्यकारों की भाषा में , उर्दू, फारसी ग्रामीण शब्दों, मुहावरों लोकोक्तियों आदि का पर्याप्त पुट मिलता है । भाषा को जनसाधारण की पहुँच तक पहुँचाने के लिए अधिकांशतः जन सामान्य में प्रचलित शब्दों को ही साहित्यिक रूप दे दिया गया। बालमुकुन्दगुप्त, 'हरिऔध' प्रेमचन्द आदि की भाषा इसी प्रकार की है, किन्तु जैसे-जैसे विचारों में प्रौढ़ता आई भाषा में स्वभावतः ही प्रौढ़ता, गंभीरता, और तत्समता की प्रतिष्ठा होती गई है। पूर्णसिंह गुलेरी, प्रसाद, आचार्य रामचन्द्रशुक्ल, श्यामसुन्दरदास

आदि की भाषा इसी प्रकार की है। ऐसा प्रतीत होता है कि आरम्भ की भाषा में जो जिन्दादिली, सहजप्रवाह, और चटपटापन था वह द्विवेदी जी के कठोर अनुशासन की प्रतिक्रिया स्वरूप गंभीरता में परिणत हो गया।

प्रायः अधिकांश लेखकों ने भाषा में हास्य-व्यंग्य, और सजीवता को उत्पन्न करने के लिए अंग्रेजी, अरबी, फारसी उर्दू तथा कहीं-कहीं ग्रामीण शब्दावलियों को ज्यों का त्यों रख लिया है। फिर भी भारतेन्दु युग में जहाँ लोकोक्तियों, मुहावरों आदि का भाषा में भरमार था वहीं इस युग में धीरे-धीरे इसका प्रयोग कम होता गया। और युग के अन्त होते-होते तो इसका पूर्ण रूपेण बहिष्कार सा दिखाई देने लगा।

आरम्भ में ब्रजभाषा के समान आवेंगे, करैं, जावें गें, जैसे प्रयोग भी मिलते हैं। किन्तु धीरे-धीरे इनका परिष्कार होता गया है। कुछ लेखकों ने संयुक्ताक्षरों से तथा पंचमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार से ही काम चलाया है। बाबू श्यामसुन्दर दास और पद्मसिंह शर्मा की भाषा में यह प्रचलन पर्याप्त रूप से मिलता है।

युग की शैलियों में आत्मकथात्मक वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, आलोचनात्मक व्याख्यात्मक, भावात्मक, हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक, तर्कप्रधान, कवित्वपूर्ण, रूपकात्मक, तथा कथोपकथनात्मक आदि मुख्य हैं। इन शैलियों के माध्यम से ये लेखक मानव मन की अनेक स्थूल सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक बातों का विश्लेषण करने का प्रयत्न किये। बालमुकुन्द गुप्त पद्मसिंह शर्मा और गंगाप्रसाद गुप्त आदि ने जहाँ हास्य-व्यंग्य और व्यक्तित्वप्रधान शैली को अपनाया, वहीं रामचन्द्र शुक्ल पूर्णसिंह, श्यामसुन्दर दास प्रसाद आदि ने गंभीर आलोचनात्मक और विवेचनात्मक शैली को अपनाया।

निष्कर्ष रूप में इस युग के लेखकों ने संस्कृतनिष्ठ, उर्दू, फारसी, मिश्रित तथा व्यावहारिक तीनों ही प्रकार की भाषा शैलियों को अपनाया जिससे इस काल की भाषा में एक ओर जहाँ प्रौढ़ता है वहीं दूसरी ओर उसमें सजीवता, सरसता, प्रवाहमयता और ब्रजभाषा के लक्षण भी है।

४.१० द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य का महत्व और स्थान :-

उन्नीसवीं शताब्दी में विभिन्न आन्दोलनों, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियों के फलस्वरूप जिस नवीन चेतना का अभ्युदय हुआ वह भारतेन्दु युग में जीवन के विभिन्न अंगों को स्पर्श करती हुई कुंठित साहित्य को मात्र गति प्रदान करने की ही कारण बनी। द्विवेदी युग ने अपने अभ्युदय के साथ ही उस साहित्यिक गति को सतत प्रवाहित कर के साहित्यिक क्षेत्र में एक युगान्तर उपस्थित कर दिया। द्विवेदी जी के कर्मठ व्यक्तित्व, सतत परिश्रम और अध्यवसाय के फलस्वरूप इस युग में हिन्दी गद्य की बहुमुखी प्रगति हुई। इसमें संदेह नहीं कि भारतेन्दु काल में निबंध- नाटक, उपन्यास, आख्यायिका और गद्य-काव्य इत्यादि में हिन्दी गद्य अपने स्वरूप को प्रकट कर चुका था किन्तु उसका वह रूप अपेक्षाकृत, निर्बल, असंगठित एवं अमर्यादित था। उसकी नींव इतनी मजबूत नहीं हो पाई थी जिससे भावी साहित्यिक- भवन को खड़ा किया जा सकता। भाषा, व्याकरण, शैली, सभी दृष्टि से उसका क्षेत्र सीमित और लचर था। साहित्यिक क्षेत्र में एक प्रकार की अनुशासन-हीनता और अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग, का स्वर अलापा जा रहा था। साहित्य को इसी शोचनीय और दयनीय दशा को सम्पन्न बनाने के लिए द्विवेदी युग ने अनुशासन संबंधी आधार को अपना कर सर्वप्रथम भाषा और व्याकरण संबंधी त्रुटियों को सुधारने का संकल्प किया। 'सरस्वती' पत्रिका इस युग की इस लक्ष्यपूर्ति में महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुई। भाषा और व्याकरण संबंधी इसमें एक अलग स्तम्भ ही था। इसी के माध्यम से द्विवेदी जी ने अपने लेखों द्वारा और नए लेखकों से प्राप्त लेखों को शुद्ध करके हिन्दी भाषा- भाषियों का ध्यान विराम चिन्हों, पैराग्राफों में विभाजन, शब्दों के शुद्ध रूपों आदि की ओर आकर्षित किया। यह ठीक था कि भारतेन्दु युग में गद्य के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा तथा उसके माध्यम से गद्य के विविध रूपों का जन्म एक महत्वपूर्ण घटना थी। किन्तु इसके शुद्ध रूप की ओर इस युग ने न कोई ध्यान ही दिया और न ऐसा करने की कोई आवश्यकता ही समझी गई क्यों कि येन-केन प्रकारेण' हिन्दी का प्रचार ही इस युग का लक्ष्य था। इसमें संदेह नहीं कि भारतेन्दु युग अपने इस लक्ष्य प्राप्ति में बहुत हद तक सफलता भी हस्तगत कर लिया था। द्विवेदी युग ने साहित्य को अव्यवस्थता और अनियमितता के सीमित घेरे से बाहर निकाल कर मर्यादित और संयमित रूप दिया। अनियमित और अव्यवस्थित भाषा परम्परा को स्थायित्व और समन्वित रूप दिया। निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी और

एकांकी वादि के क्षेत्र में हिन्दी गद्य नवीनता और वैज्ञानिकता की ओर अपना कदम बढ़ाया, द्विवेदी काल में हिन्दी गद्य भारतेन्दु कालीन वर्णनात्मकता के सीमित घेरे से निकल कर मनोवैज्ञानिकता और तार्किकता की ओर क्रमशः अग्रसर हुआ। इस युग में उसकी भाषा और शैली में व्यंजकता उत्पन्न हुई। द्विवेदी युग में शब्दों के प्रयोग और उसके संगठन में शब्दों की आन्तरिक शक्ति और अर्थ-व्यंजकता भी दृष्टि में रखा गया वस्तुतः द्विवेदी युगीन गद्य ने भाव, भाषा और शैली प्रत्येक क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकता और अर्थ व्यंजकता को प्रश्रय देते हुए अभिसार किया।

द्विवेदी युगीन गद्य का ही यह फल था कि इस युग में तथा उसके बाद ऐसे अनेक प्रतिभा-पुंज मनीषियों के दर्शन होते है, जिन्हों ने जीवन की कठोर साधनाओं के बल पर साहित्यकी विविध नवीन शैलियों को जन्म दे कर अपेक्षाकृत अधिक अक्षुण्य कीर्ति और लोकप्रियता प्राप्त की है। बाल मुकुन्द गुप्त, चतुर्भुज औदिच्य, ब्रजनन्दन सहाय, पद्मसिंह शर्मा, प्रसाद, प्रेमचन्द, मन्नन द्विवेदी तथा रामचन्द्र शुक्ल इसी युग के लेखक थे मनोभावी गद्यशैलीकार थे जिन्हों ने अपने अथक लगन और सतत परिश्रम से अनेकों बहुमूल्य मौलिक एवं बोलचाल ग्रंथ रत्नों का प्रणयन किया है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका' सरस्वती' 'मर्यादा इन्दु' 'प्रताप' आदि पत्र- पत्रिकाएं द्विवेदी युगीन गद्य की ही देन है जो प्रकांड और उद्भट लेखकों की रचनाओं से भरी रहती थी। वे भाषा के रूप और विकसित हिन्दी से ले कर राजनैतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक पुरातत्व संबंधी, जैन दर्शक आदि देशी-विदेशी विषयों पर लेख लिख कर अपनी बौद्धिक क्रियाशीलता का परिचय देते हुए हिन्दी गद्य को भी सम्पन्न बनाने में सतत् प्रयत्नशील रहे।

इस युग का गद्य हिन्दी भाषा और साहित्य की सीमित परिधि से निकल कर अपने विभाव और उपादानों के क्षेत्र विस्तारार्थ, भूगोल, राजनीति, नीतिशास्त्र, शिक्षा, धर्म, विज्ञान, जीवनवृत्त, पुरातत्व, यात्रा, नारी लोक संबंधी विभिन्न सामग्रियाँ देश-विदेश से संग्रहित करने मे तत्पर रहा। विषयवस्तु के क्षेत्र विस्तार के साथ ही साथ लेखकों का ध्यान भी प्रस्तुत वस्तु को रुचिकर, प्रभावपूर्ण और आकर्षक बनाने के लिए आकर्षित किया गया।

गद्य के विविध रूपों में कलात्मकता का बीजारोपण करना द्विवेदी युगीन गद्य की ही देन है, कहानी, गद्य गीत आदि रूप तो निश्चित रूप से इसी युग की देन है। द्विवेदी युगीन गद्य का सम्यक् मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इसके विकास

को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है । जहाँ तक इस के पूर्वार्ध गद्य का संबंध है उसके अवलोकन से एक प्रकार का असंतोष ही होता है इसके पूर्वार्ध का गद्य अधिकांशतः सुधारवादी हो रहा है । लेखकों में, जो मौलिक निर्माण में रुचि दिखाने की जगह बंगला, गुजराती और मराठी से अनुवाद करने में अधिक व्यस्त थे, मौलकता का खेद जनक अभाव दिखाई देता है । यद्यपि यह सत्य था कि इन अनुवादों के साथ ही उन लेखकों और भाषाओं की विभिन्न शैलियाँ असंख्य शब्द, मुहावरे, उक्तियाँ, पद विन्यास, वाक्य योजना आदि भी मूलरूप में अथवा परिवर्तित रूप में हिन्दी में आ गए । इन अनुवादों ने जहाँ एक तरफ उपयोगी आदर्श प्रस्तुत करके हिन्दी की शक्ति और सामर्थ्य को बढ़ाने में सहायता पहुँचाई वहाँ दूसरी तरफ इसके चक्कर में पड़ कर अनेकों हिन्दी साहित्यकारों की मौलिक प्रतिभा साधारण दृष्टि से कुंठित भी हो गई । इसका सब से बुरा प्रभाव नाटक और कथा साहित्य पर पड़ा। द्विजेन्द्र लाल राय तथा दूसरे लेखकों के नाटकों के जो अनुवाद हुए उससे तत्कालीन जनता का पूर्ण मनोरंजन तो हुआ किन्तु जिस चिल्लाहट और कोलाहल से ये नाटक परिपूर्ण थे उसके अवांछित प्रभाव से हिन्दी नाटक अछूता नहीं रहा । द्विवेदी युगीन प्रसिद्ध साहित्यकार अयोध्यासिंह उपाध्याय ने यद्यपि 'प्रद्युम्न विजय व्यायोग और रुक्मणी परिणय की रचना कर के नाटक क्षेत्र में अराजकता पूर्ण परिस्थिति दूर करने की असफल चेष्टा की थी किन्तु नाटक के क्षेत्र में प्रसाद के आगमन के पूर्व एक प्रकार से अभाव ही रहा इस युग के मौलिक और उल्लेखनीय नाटक राधाकृष्ण दास कृत 'महाराणा प्रताप' और राय देवी प्रसाद पूर्ण द्वारा 'चन्द्रकला भानुकुमार नाटक' है । इसी तरफ इस युग के पूर्वार्ध में अनेक नाटक कार विविध विषयों से पूर्ण नाटकों की रचना में संलग्न रहे जिस पर कि भावी नाटक का भवन निर्मित हुआ । कथा साहित्य में तो अनुवादों की बाढ़ सी आ गई थी । गोपाल राम गहमरी, ईश्वरीप्रसाद, रूपनारायण, आदि अन्यान्य लेखक बंगला उपन्यासों के अनुवाद से हिन्दी कथा साहित्य को सम्पन्न कर रहे थे । इन अनुवादों ने कथा साहित्य के प्रति जहाँ एक ओर जनरुचि को जगाया वहाँ दूसरी ओर इन्हों ने जीवन की ऐसी झाँकियाँ प्रस्तुत की जो हिन्दी पाठकों के लिए अपरिचित थीं । फलतः ये जीवन का सहज बोध कराने में सहायक न थीं। परिणामतः इस युग के पूर्वार्ध में उपन्यास लेखन में अधिक प्रगति न हो सकी, पूर्वार्ध

के अधिकांश उपन्यास तिलस्मी ऐय्यारी, और मनोरंजन तथा कल्पना प्रधान है । कहानी लेखक भी इस युग में अधिक सक्रिय थे विशेष रूप से उल्लेखनीय है । हिन्दी कहानी का आविर्भाव परम्परागत कल्पित कहानी, अंग्रेजी लघु कहानी तथा बंगला गल्प के सम्मिलित प्रभाव से हुआ । इस युग में ही इसका जन्म हुआ और अकल्पनीय प्रगति को प्राप्त हुआ ।

निबंधों की दृष्टि से इस युग का गद्य पूर्वार्ध से ही श्री सम्पन्न रहा । द्विवेदी जी ने बेकन के निबंधों का अनुवाद कर निबंध लेखन क्षेत्र में एक नवीन आदर्श प्रस्तुत किया। माधव मिश्र, रामचन्द्र शुक्ल, बाबू बाल मुकुन्द गुप्त, गोविन्द नारायण मिश्र आदि की रचनाओं में गंभीर विषयों का विचार रहता था विषय विस्तार के साथ-साथ निबंधगत शैलियों की विविधता ने गद्य के इस रूप को सजीवता प्रदान की । उसमें निबंध कला का स्वरूप निखर उठा । समालोचना के क्षेत्र में भी जहाँ इसका पूर्वार्ध मात्र गुण दोष विवेचन तथा तुलना और परिचय तक ही सीमित रहा वहीं उसका उत्तरार्द्ध बहुत ही सुसम्पन्नता गंभीरता, प्रौढ़ता से भी सम्पन्न हुआ । अनेकों उच्चकोटि की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन द्विवेदी युगीन गद्य काल में ही हुआ ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि द्विवेदी युग का पूर्वार्ध उतना महत्वपूर्ण नहीं रहा जितना उसका उत्तरार्द्ध । साहित्यिक दृष्टि से रचना की अतिशयता तो उसमें थी किन्तु उसमें उच्चकोटि की साहित्य सृजन का अभाव था । वस्तुतः भारतेन्दु युग में नवीन और आधुनिक साहित्य का जो बीजारोपण हुआ था वहीं द्विवेदी -युग के पूर्वार्ध में अंकुरित हो कर विकास को प्राप्त हुआ । उसकी अनेक शाखाएं प्रशाखाएं फूट निकली जो उत्तर द्विवेदी युग में पुष्टता और प्रौढ़ता को प्राप्त पुष्ट हुई ।

यद्यपि उत्तर द्विवेदी युगीन गद्य का विशुद्ध साहित्यिक दृष्टि से अपना महत्व है इस समय नाटक के क्षेत्र में प्रसाद, कथा साहित्य में प्रेमचंद और प्रसाद , कौशिक, वृन्दावनलाल, समीक्षा के क्षेत्र में , रामचन्द्र शुक्ल, गुलाबराय, और श्याम-सुन्दर दास तथा निबंध के क्षेत्र में शुक्ल, पूर्णसिंह, गोविन्द नारायण मिश्र बाबू बाल-मुकुन्द गुप्त, श्याम सुन्दर दास पदुमलाल- पुन्नालाल बक्शी जैसे गंभीर समीक्षक , निबंधकार , नाटककार, उपन्यासकार हुए । जिन्होंने अपने सतत प्रयत्नों से हिन्दी को आलोच्य शैलियों का प्रांजल एवं परिपुष्ट स्वरूप विकसित किया । संक्षेप में द्विवेदी

युगीन साहित्य आदर्शवाद का प्रतीक है। इस युग के साहित्यकारों ने अपने साहित्य सृजन का लक्ष्य आदर्शवाद को ही अपनाया। फलतः तात्कालीन समस्त कृतियों का आदर्श समाज में एक सात्विक ज्योति को जगाना था। दीनता और दरिद्रता के प्रति सहानुभूति, समय की प्रगति का साथ देना तथा शृंगारिकता के घोर विलासिता के स्थान पर शुद्ध परिष्कृत संयमित शृंगारिकता का प्रचार यही द्विवेदी युगीन साहित्य का लक्ष्य था। द्विवेदी युगीन साहित्य के आदर्शात्मक रूप को लक्ष्य करते हुए बाबू श्याम सुन्दर दास कहते हैं —

"द्विवेदी युगीन साहित्य का आदर्श समय और समाज के अन्धकार में आलोक की दीपशिखा दिखा कर प्रकाश की व्यवस्था करता है। इस प्रकार द्विवेदी युग को साहित्य के कर्मयोग का युग कहा जा सकता है।"¹

- -

१- द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ— नागरी प्रचारिणी सभा काशी— पृष्ठ -7
सम्पादक श्याम सुन्दर दास, कृष्ण दास द्वारा 'प्रस्तावना' अंश से उद्धृत।

1- वर्ण क्रमिक अनुशीलन (ध्वनियाँ तथा लिपि)

द्विवेदी युग के पूर्ववर्ती काल में हिन्दी भाषा में नागरी हिन्दी की प्रायः समस्त ध्वनियों का प्रयोग मिलता है ।

1- इस युग में भी परम्परागत ध्वनियों का प्रचलन तो हो ही रहा था किन्तु इस युग में संस्कृत ध्वनियों का शुद्ध रूप में प्रचलन विशेष उल्लेखनीय है क्यों कि इसके पूर्ववर्ती काल में संस्कृत ध्वनियों का भी हिन्दीकरण कर लिया जाता था। यहाँ पर क्रमशः द्विवेदी युगीन गद्यकृतियों में प्रयुक्त स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों का उल्लेख किया जा रहा है —

क स्वर तथा उसकी लिपि

क। सामान्य स्वर (अ से औ तक)

ध्वनि		प्रयोग	
अ*	आदि में	अवरोधक(गो0नि013)	अवलम्ब(आत्मदाह -1)
		अहीरो(तुलसीदास 9)	अवकाश(नंदन-निकुंज 25)
		अनुवाद(मर्यादा-1916-289)	असमर्थता(सेवा0 - 177)
		अपनी (उमा- 157)	अनुगामी(प्र0यॉ0 - 96)
	मध्य -	कमनीयता (गो0नि0 13)	जागरण (आ0स0 35)
		वारण (महा0 408)	मुअज्जम (सूर्यग्रहण -224)
		दीनता (बु0वि0-56)	
		उत्पादक(सर01903-99)	
	अन्त-	यौवन(गद्यकुसु054)	दैव (ठ0ठ0गो0141)
			नायक(1636/14 जनार्दन झा)
		मौन (सरस्वती-1912-102)	अधिकारक(वरमाला 21)
		साधन(न0नि0 158)	
		धूम (आत्मदाह -201)	

* विशेष— संस्कृत की संयुक्त ध्वनियों में अन्त 'अ' स्वर स्पष्ट दिखाई देता है किन्तु आधुनिक खड़ीबोली में अन्त 'अन्त' उच्चारणगत दृष्टि से लुप्त हो जाता है।

अ - आदि- आवेग '(मर्यादा, 1916-512) आकस्मिक वत(गल्प मं0 179)
आवश्यकता(कृष्णार्जुन यु0 15) अदि (उमा 156)
आनन्दित (लक्ष्मी 1908-24)
आद्योपान्त (शकुन्तला-114)

मध्य- अवतार(कर्म -96) अनुराग(मोलमणि-114)
अपमान (बन० ना0-2) अवस्था (न0नि025)
अपवाद (पद्म पराग-131) दुआर(ठे0हि0का० 22)
अनुगामी (प्र0या099) रिआयत(सूर्यग्रहण 225)

विशेष
- - -

संस्कृत की संयुक्त ध्वनि में अन्त 'अ' स्वर स्पष्ट दिखाई देता है किन्तु आधुनिक खड़ी बोली में अन्त 'अ' उच्चारण गत दृष्टि से लुप्त हो जाता है।

[illegible]
- - - - - - - - - - - - - -

आ- अन्त - विविधता (अव0कु0178) प्रतिष्ठा(चित्रशाला- 138)
सज्जनता(मवा0 406) छुटकारा(या0स0 59)
आवेग (मर्यादा 1916-512) दुआ (र0र0 42)
तारका (लेवा0 56) हुआ (सूर्यग्रहण -231)

इ-
इ-आदि इतिहास(प्र०ा1913-190) इधर(आत्मदाह -360)
इत्यादि (कोष-24) इतना(नागानंद-42)
इक (तारा -64) इस (शकुन्तला ना0170)
इसकी (सूर्यग्रहण -231)

मध्य उत्तेजित(तारा-79) आदमी (गल्प कु068)
अलौकिक(सर01904-121) करावयी (वृ0ले061)
काइया (कोष-89) छेड़ा इस(वु0अ0 83)
लड़ाइयों(तारा-89) कचहरियो(उलट फेर 118)

अन्त- बुद्धि (मालविका 0-6) स्तुति(सर01904-15)
मणि(प्रेम पी0 57)

स्वर	स्थिति	उदाहरण	उदाहरण
ऐ	आदि	ऐसो(शकुन्तला ना0 170)	भैया(द्रौपदी चीर 54)
		बैस(शकुन्तला ना0 98)	पैर (उषा-48)
		कैसे (नवाब ना0 42)	लैने (वि0को 186)
	मध्य-	लगैगा(सर01905-487)	दुबैलो(राजकुमारी(84)
		भुलभुलिया(या0म08)	छेड़ैगा(चौ0ट018)
		कुनैन(रमनी 45)	इंग्लैण्ड(प्रभा 1913-213)
	अंत-	बिचारै(सर01903-15)	कैसे (राजकुमारी 8)
		मिलै(या0म0 59)	लगावै(रायबहादुर4)
		सकै(वि0कसो0 80)	पहिचनतै(रायबहादुर 5)
ओ-	आदि-	ओखल(राजकुमारी 3)	होई (चौ0ट0 25)
		ओचारियन (कु0च0द0 15)	चोखा(प्र0पा0138)
		कोठरी(आत्मदाह।	मोहिनी(अद0 खून 91)
	मध्य-	क डुबोइये(र0र091)	पाओगे(उमा 50)
		जाओ गो(ठ0ठ0गो0139)	
	अंत-	जाओ(उमा 35)	आओ(द्रौपदी चीर60)
		बुलाओ(,, 75)	लाओ(प्रेमयोगिनी-108)
		रोओ(वि0कसो0187)	
औ-	आदि-	चौथौं(सर01904-14)	औकात(मघवा म0 -15)
		और(उमा0 120)	न्योछावर(मर्यादा(1979-526)
		कौतूहल(वि0कुसु0-127)	भौचक्के(सुहागिनी 124)
	मध्य-	सुडौल(वे0ट0'6)	अलौकिक(सुहागिनी-213)
		खिलौने (मर्यादा 1979-363)	बिछौने(वि0कुसु0 146)
		गिलौरियाँ(भारतम प्र0-28)	करौदे(कुछु का कांटा 33)
	अंत-	इसके उदाहरण नहीं मिले हैं ।	

विशेष:- बोलियों तथा दूसरी भाषाओं के प्रभाव से 'ए' और ओ' के ह्रस्व रूप ऍ और (ऑ' भी होते हैं किन्तु लेखन में कोई चिन्ह नहीं होने के कारण स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता कि इस युग में इनका प्रयोग होता था या नहीं।

क-2 अनुनासिक स्वर

अनुनासिकता के लिए अनुस्वार(ं) और चन्द्रबिन्दु (ँ) दो चिन्हों को अपनाया गया है । युग की भाषा में विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि बहुत से लेखकों ने चन्द्रबिन्दु का प्रयोग यथा स्थान उचित ही किया है जब कि बहुत से लेखकों ने इसका पूरा निर्वाह नहीं किया है । संभव है छपाई की कठिनाई के कारण चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया गया हो । दोनों ही प्रकार के उदाहरण मिलने से यह निश्चित रूप से कहना कठिन है

कि कहाँ पर लेखकों ने चन्द्रबिन्दु का प्रयोग का उल्लंघन किया है और कहाँ पर छापे की कठिनाई के कारण अनुस्वार का प्रयोग हुआ है। छपाई के कारण अनुस्वार का आगम उन्हीं शब्दों में हुआ है जहाँ शिरोरेखा के ऊपर मात्रा आ गई है, किन्तु जहाँ पर शिरोरेखा नहीं होती है वहाँ पर चन्द्रबिन्दु के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग निश्चित रूप से लेखकों द्वारा नियम का उल्लंघन ही कहा जा सकता है। यहाँ पर दोनों ही प्रकार के उदाहरण दिये जा रहे हैं:-

स्वनियाँ-

अँ आदि- अँध(छोटी बहू -4) | संस्कृत(सर01904-118)
अँगीठी'' 48) | ठंडो (सर01907-19)
फँसाना(प्रेमयोगिनी -94) | हँसते(मर्यादा-1979-509)
अँग्रेजी(सुखमय जी016)

मध्य- उमँगा(उमा-2) | उमँगने(रजनी-19)
उठँगा(,, 4) | लहँगा(पुष्प का कांटा-32)

अन्त- बहँ-लहँ(ठ0ठ0गी0175)
दवयँ(रजनी 39)

आँ आदि- पाँच(उमा 108) | आँसू(नागानंद 80)
बाँसी(छोटी बहू -3) | काँटा(कौमो तलवार-26)
गाँव(मर्यादा-1979-508) | आँखें(पुष्प का कांटा-42)

मध्य- आकांक्षी(कौमो तलवार-68) | मुआफ़ (महा0 ईसा-18)
यथाँसक(सूर्यग्रहण 233) | अँत

अन्त- माँ (राजकुमारी-15) | यहाँ (छोटा बहू -19)
कहाँ(प्रेमयोगिनी -108) | मक्खियाँ(वि0कसी-430)
पच्चीसवाँ(सुखमय जी0 -15) | हाँ (गल्प कुसु0-6)

इँ- आदि- इँग्लैंड(प्रभा 1913-212) | डिंबा(कु0ब0द074)
सिंह(आ0द059) | किवाड़(वि0कसी0142)

मध्य- खरीद(कौमो तलवार-23)
कपसिंह(सूर्यग्रहण-225)
किरातसिंह(,, -230)

अन्त- नाहिं (राजकुमारी-7) अन्य उदाहरण नहीं मिले।

ईं - आदि- सींच(नागानंद -15) | मींच(सर01903-421)
ईंट(राजकुमारी -35) | सींपासानी(मर्यादा-1911-509)
भींच(उमा-24)

ईं- अंत

नहीं (छोटी बहू-19

नाहीं (,, -89)

लाईं (छोटी बहू-129)

बाईं (नागानंद -76)

भूलीं (संसार-204)

नाईं (प्र०या० -15)

साईं (कुछ का काटा)

बाईं (सूर्यग्रहण- 364)

ऊं-

आदि कुँआ (छोटी बहू -19)

हुँकार (छोटी बहू -158)

मुँह (नागानंद - 53)

कुंभकनी (राज्य श्री - 43)

उँगली (उसने कहा था -53)

कुँआरा (सावित्री-3)

मध्य पहुँचाया (प्रेमयोगिनी- 95)

राजकुँवरि (~~[illegible]~~ नागानंद- 52)

चिहुंक (राजकुमारी- 68)

अंत- उदाहरण नहीं मिले हैं

अं- त उदाहरण नहीं मिले हैं

ऊँ- आदि- ढूँढ़(नागानंद -80)
ढूँट(छोटो बहू 21)
सूँड़(वनमोर ना017)
ऊँ r(या0त018)
लूँगा(प्रेमयोगिनो-108)
पूँछ(वि0क्यो-143)

मध्य- बढ़ाऊँ ग(प्रेमयोगिनो-108)
समबूँगा(राजकुमारो(-69)
बुलाऊँगो(वि0क्यो-428)
कसूँगो(नागानंद-52)
जाऊँगा(सूर्यग्रहण-233)
पाऊँगा(बह0बू0-91)

अं- त- हूँ-(सर0-1904-8)
करूँ(छोटो बहू 172)
आऊँ(सूर्यग्रहण(238)
चलूँ (नागानंद(41)
जाऊँ(प्रेमयोगिनो-94)
हूँ (मर्यादा-1979-33)

ऐं- आदि- ऐंईमान(या0त0-31)
पैंसिल(चो0ट0-12)
लैंगे(सूर्यग्रहण-228)
मैं (छोटो बहू -19)
सैंध(रजनो-100)
कैंट(सूर्यग्रहण-239)

मध्य- मिलेंगे (छोटो बहू-170)
चकराएँगीं (चो0ट0-86)
हमैंका(संसार-112)
आमैं गे(आ0वि0-82)

अं- त- चलें(नागानंद-40)
चाएँ(सूर्यग्रहण -228)
चाहिएँ (,, -237)
जाएँ (या0त062)
फूएँ(बुध्दू का कांटा -32)

ऐं- आदि- पैंतालिस(राजकुमारो-69)
ऐंने (छोटोबहू-4)
बैंक(बुध्दू का कांटा-20)
बेंचातानो(या0त0-8)
मैंयो(बुध्दू का कांटा-43)

मध्य- करेंगे(अंधकारता-190)
रहेंगे (वि0क्यो0-312)

अं- त- विचारें(सर0-1903-15)
हुए हैं (सर01905-486)
करावें(बु0वि0-32)
हैं(वि0क्यो0-380)

औं- आदि- औंधकर(या0त0-25)
सौंचतो(संसार-203)
हौंग(कोमोललचार-24)
पौंछने(रजनो-118)

मध्य- पहौंच(संसार -81)- अधिक उदाहरणनहीं मिले ।

अं- त- कबरौं(सर0-1904-138)
मित्रौं(छोटोबहू-18)
रईसौं(मर्यादा-1979-25)
छोटौं(राजकुमारो-85)
मेवौं(कोमोललचार-27)
कुलाओं(भारत दर्पण-97)

औं -आदि - औंसले(राजकुमारो-8) — सौंप(छोटो बहू-141)
चौंधियाइ(संसार- 81) — डौंग(,, 106)
चौंधो(चो0ट0-12) — कौंड(रजनी- 91)
मध्य- - उदाहरण नहीं मिले हैं।
अन्तः- बुढ़ौं- सर01903-92) — लौं(माधवानल ना0-45)
नवोनौं(सर01904-88) — बातौं(सर01905-217)

क-3- संयुक्त स्वर

संयुक्त स्वरों के उदाहरण मूल शब्दों में नहीं के बराबर हैं। अतः संयुक्त स्वर या स्वर संयोग के जो रूप मिले हैं वे व्याकरणिक प्रत्यय के योग से निर्मित यौगिक व्याकरणिक रूपों में ही उपलब्ध हैं जैसे:-

संयोग	प्रयोग	
अ+ इ	गवइया(संसार-10)	गवइया(कोश-म-89)
	गइ (संसार-61)	पइहो(बु0अ083)
	तुरइ (,, -86)	कइठारैयो(उलटफे0-118)
अ+ ई	बकई(या0स0-32)	बकई(उमा-97)
	लड़कई(संसार-204)	कई(गप कुसु0-68)
	हाई(प्र0पा0-15)	रईस(मर्यादा-1979-366)
अ + ऊ	गऊ (संसार- 85)	कऊ (सर0-1920-262)
	लखनऊ(प्रेमाश्र- 387)	
अ + ए	अलग्ए (या0स0-37)	गए(दुर्गावती-43)
	गए (कु0ब0क0-1)	कएन(उलटफेर-131)
अ +ओ	करावयो(कु0नि0-61)	आइयौं(गप कुसु0-68)
	हटावयो(अब0बु0-289)	छौआइब(बु0अ0-83)
आ +ई	बबराई(ठे0कि0ठा0-37)	आई(तारा-88)
	बुखाई(मोतमणि-107)	दियासलाई(आत्मदाह-311)
	दिठाई(प्र0पा0-60)	कार्रवाई(पद्मपराग-161)
आ +ऊ	गरवाऊँ(राजकुमारो-19)	बसाऊ(घमघोर ना0-14)
	जड़ाऊ(संसार-41)	उपजाऊ(कोमोलसयार-26)
	गुलवाऊओ(बुद्धू का कादा-33)	

ओ + ई   रसोई (उषा-72)   होई (चौ०ट०-25)

नन्दोई (उत्तर रामचरितमा०-7)   बोई (र०र०-67)

कोई (प्रेमाश्रय -207)

दो से अधिक स्वरों का संयोग

आ + ई + ए   उठाइए (अ०वृ०-289)   पकराइए (चौ०ट०-61)

कराइए (,, 289)   आइएगा (,, -77)

अ+उ+ओ   गउओं (दुर्गावती-99)

ओ + आ + ए   दोआए (प्रेमयोगिनी-19)

विशेषः- खड़ी बोली के समान ही संयुक्त स्वरों में / इ + आ/ तथा आ + ओ के बीच में नियमानुसार य और 'व' श्रुति का प्रयोग इस युग की भाषा में भी मिलता है। यथाः-

यश्रुति-   कराइयो (नु०से०-61)   अंगड़ाइयाँ (सु०वि०-104)

सीढ़ियाँ (वि०कसौ-382)   भाइया (भो०म-89)

दुनियें (गल्प कुसु०-95)

व श्रुति   पवन्न (वेनिस नगर व्या-77)   आवो (ठे०ठि० ठ०-34)

कुवा (संसार -65)   करायें (सु०वि०-32)

आवता है (संसार-16)   आवे (मर्यादा1979-89)

क- 4 विसर्ग (ः)

विसर्ग के प्रयोग में इस युग की प्रारम्भिक कृतियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। वस्तुतः इस समय लेखकों ने हिन्दी और संस्कृत शब्दों के अलावा अरबी फारसी के शब्दों में भी विसर्ग का प्रयोग किया है संभवतः विदेशी शब्दों में विसर्ग प्रयोग की यह प्रवृत्ति लेखकों द्वारा फारसी ध्वनि के अन्त्य (ह/ को विसर्ग रूप में सुरक्षित रखने की सतर्कता को ही परिलक्षित करती है जिसका वर्तमान हिन्दी में / आ/ हो गया है:-

संस्कृत :-

दुःख (आ०म०35)   पुनः (मूल भार-46)

निःसंदेह (सम मो-1908-24)   अन्तःकरण (आ०हि०-232)

संभवतः (माधुरी-1923-700)   प्रायशः (गौ०मि०-15)

हिन्दी-शब्द-

हिन्दी :

छिः छिः (नागानन्द-78) | ओः (संसार-65)
हँः (रायबहादुर-67 | अः (,, -134)
ऊँः (,, -14) | उः (संसार-178)
छः (आ०हि०-82) | ऊहः (वि०कुसुम-19)
हः हः (सूर्यग्रहण-278)

उर्दू :

हमेशाः (राजकुमारी-71) | परवानाः (या०स०-67)
रवानाः (र०बेगम-83) | जिन्दः (पू०हे०-45)
तौबाः (,, -23) | ब्रह्मानः (र०बे०-28)

ख - व्यंजन

ख-1 - सामान्य व्यंजन

उच्चारण प्रयत्न और उच्चारण स्थान की दृष्टि से व्यंजन ध्वनियों की सूची बहुत ही विस्तृत हो जाती है अतः सुविधा की दृष्टि से उच्चारण प्रयत्न के आधार पर व्यंजन ध्वनियों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया जा सकता है :-

खः 1 क - स्पर्श व्यंजन (अल्पप्राण)

क- आदि
कटा (सर०1904-8) | कपाल(नागानंद-69)
कप्तान(बी०द०-83) | कमल(नो०व०च०-92)
कवि(र०र०-24) | कटार(वरमाला-21)

मध्य-
चमकना(तारा-74) | चकवा(सर०-1905-261)
चपकन(नवाब नंदिनी-12) | ढलकना(आ०हि०-21)
अन्तःकरण(वि०कसौ-31) | कंकण(अप कु०-62)

अन्त-
अलौकिक(सर०-1904-122) | एक(मालविका-3)
नाक (दुर्गावती-34) | ग्राहक(गल्प कुसु०-33)
बालक(मर्यादा-1979-310) | श्लोक(माधुरी-1925-207)

ग- आदि-
गाना(ठ०ठ०गी०98) | गरिमा(चन्द्रप्रभा-1)
गमछा(नवाब नंदिनी-38) | गुण(सरस्वती-1904-14)
गहना(अब०कु०-47) | गाल(सर०-1905-21)

मध्य-
कागजात(नागानंद-97) | अंगरखा(बी०द०-15)
झुमका(मर्यादा-1979-85) | पगड़ी(,, -15)
स्वागताध्यक्ष(माधुरी-1925-420) | सुगन्धित(गो०नि०-8)

अन्त - भाग (नागानंद-77) — कुरंग (शकुन्तला ना0-8)
लँग (सरस्वती-1904-137) — पंचांग (मालविका-5)
डिगमिग (लक्ष्मी-1910-167) — त्याग (मनोरमा-29)

च - आदि चरण (नागानंद-76) — चकवो (सर0-1905-361)
चमड़ा (मालविका0-49) — चंचल (आत्मदाह-341)
चाल (प्रेमयोगिनी-65) — चतुर (गो0नि0-15)

मध्य- खिचड़ी (तारा-51) — आँचर (नवाब नंदिनी- 39)
अचम्भो (सर01904-122) — आचार्य (मालविका -23)
उचित (गद्यमाला-196) — ब्रह्मचर्य (प्र0या0-58)
अन्त- यथायथ (कु0सै0-72) — सोच (प्रेमयोगिनी-4)
नोच (प्र0या0-8) — नाच (,, 106)
चाचा (सर0-1920-262)

ज-आदि- जल (कु0च0व0-2) — जब (वि0क्षी-395)
जोल्हा (अ0व0 बू0-47) — जड़ाऊ (सती चिन्ता-51)
जहाँ (र0र0-24) — जन्म (माधुरी-1925-207)
मध्य- राजभवन (शकुन्तला ना0-118) — राजकुँवरि (नागानंद-21)
राजपूत (तारा-90) — राजधर्म (सर0-1907-127)
उजाड़ (प्रेमयोगिनी-88) — भोजन (म0ना0108)

अन्त- पूजा (चन्दोर ना0-2) — बोज (कु0च0व0-2)
तेज (पद्म पराग- 20) — राज (भो0म0- 24)
आज (माधुरी-1925-261)

ट-आदि- टपाटप (पू0ड01) — टीपो (चौ0ट0-24)
टका (प्रेमयोगिनी-67) — टक्कर (विवाह कुसु0-7)
टूटकर (आरण्यबाला-112) — टाल (प्र0या0-36)
मध्य- घुटना (नागानंद-89) — टाँटसो (नवाबनंदिनी-37)
छुटकारा (य0त0-59) — रटना (आ0हि0-144)
पटनाम (मुडागिनी-43) — कटाक्ष (गद्यमाला-6)
कटार (वरमाला-21) — कटाई (मान सरोवर-74)
अन्त - झंझट (भूतनाटा - 68) — बूँटी (उमा-10)
लोटा (चन्द्रधर -4) — चोट (आत्मदाह (341)
ऊँट (दुर्गावती-40) — संकट (प्र0या0-22)

ड- आदि- डिगमिग (लक्ष्मी-1910-167) — डाँट (रावबहादुर-157)
डाल (विवाह कुसुम-75) — डकैत (आत्मदाह-61)
डकारना (प्र0या0-71) — डोरी (लेखा-39)
मध्य- पनडब्बा (उमा-11) — हिंडोला (अव0 बू0-91)
कडुआ (रजनी-33) — अंडिम (गो0नि0-3)
अन्त- डंडा- दुर्गावती- 74) — ईड (श्रीमती मंजरी-33)

ब- आदि- बुआ(तारा-64) बल(मल्लिका-35)
बरू त(विवाह कुसु0-10) बाबा(गल्प कुसु0-62)
बालक(मर्यादा-1979-510) बोझ(1673/14लक्ष मोप्रसाद)
मध्य- दबदबे(नवाब नंदिनी-55) बबराय(जु0ते042)
दुबले(अ0हि0-26) गड़बड़(मर्यादा-1916-239)
बड़बड़ (नीलमणि-3)
अन्त- पूरब(ठे0हि0ठ0-27) बेढब(नवाब नंदिनि-11)
पंजाब(कौमोतलवार-97) बाबू(ठ0ठ0गो0-163)
मतलब(आत्मदाह-201) साहब(उसने कहा था-54)

ख:1 : क :2(महाप्राण ध्वनि)

ख- आदि- खिचड़ी(तारा-51) खचाखच(जु0ते0-73)
खिलखिला(आत्मदाह-23) खोर(तुलसीदास-94)
खेत(अ0हि0-16) खदेड़ना(प्र॰ा-1913-214)
मध्य- ओखध(ठे0हि0ठ0-25) देखिये(लाल-88)
माखन(मालविका-35) दुखदाई(नीलमणि-107)
देखते(आरण्यबाला-114) लखनऊ(प्रेमाश्रय-387)
अन्त- ओख(राजकुमारी-130) दुख(य0स0-35)
मुख(महा0वि0-8) भूख(संसार-28)
साख(प्र0या0-36) सुख(प्रेमाश्रय-7)

घ-आदि- घबड़ना(नवाबनंदिनी-33) घराना(संसार-209)
घुंघुराले(ब्र0बु0-91) घर(आत्मदाह-61)
घमण्डियों(सुहागिनी-4) घनिष्ट(पद्मपराग-105)
मध्य- रघुनाथ(सूर्यग्रहण-216) उल्लंघन(ग्राम प्रतिभा-88)
सुघर(गो0नि0-3) घोघापन(बुद्ध का काटा-39)
आघात(प्र॰ा-1924-407) क
अन्त- सांघ(संसार-224) बो घे(प्रेमयोगिनी- 84)
मेघ(कु0व0व0-15) अनर्घात(ठ0ठ0गो0-30)
बाघ(महा0वि0-8) जाँघ (बुद्ध का काटा-44)

छ-आदि- छमाके(राजकुमारी-141) छेड़(ग्रीषली चोरहरण-60)
छुटकारा(य0स0-59) छलांग(मर्यादा-1911-192)
छातो(आत्मदाह-41) छपा(सूर्यग्रहण(194)
मध्य- मृगछौना (शकुन्तला-ना0-106) पिछले(चन्द्रधर-10)
उछलना(गल्प कुसु0-25) चिकते(ने0व0व0-92)
बछड़ा(सूर्यग्रहण-205) मछली(लम्बोदादी-117)

अन्त	गमछा(नवाब नंदिनी -38)	कुछ(सावित्री-4)
	पूछताछ(प्र0या0-5)	मूँछ (कृष्ण अर्जुन युद्ध-25)
	पोछे(सूर्यग्रहण-210)	
झ- आदि-	झकाझक(सर0 1907-119)	झलकना(आ0डि0-21)
	झलक(पो0द0-84)	झटपट(प्र0या0-118)
	झुलनो(घु-घू का काटा-22)	झुरमुट(अजातशत्रु -142)
मध्य-	झमाझम(संसार -37)	झंझट(फूलनादा -68)
	झुझलाते(पो0दा0-81)	उलझन(आरण्यबाला-99)
	समझाई(1637/14 जगन्नाथप्रसाद	मझलो(उत्तर राम चरित्र ना0-1
अन्त-	समझ(अव0बु0-177)	बेसमझ(आत्मदाह-130)
	बूझ(सर0-1920-263)	मुझे (सूर्यग्रहण -348)
@	बोझ (1673/14 लक्ष्मीप्रसाद)	
ठ- आदि-	ठगने (तारा -16)	ठिकाना(राजकुमारी-45)
	ठकुरसुहाती(उषा-96)	ठोकना(अव0बु0-116)
	ठीक(प्रभा-1922-85)	ठट्ठा(घुग्घू का काटा-27)
मध्य-	गठकटे(शकुन्तला ना0 115)	अठवारे (तारा-99)
	पाठक(मर्यादा-1911-10)	अठपहला(संसार-33)
	पठन(प्र0या0-5)	ढिठाई (भीष्म प्र0-9)
अन्त-	उठा(राजकुमारी- 91)	झूठा(बु0सै0-83)
	सेठ(रायबहादुर-3)	काठ(आरण्यबाला-145)
	मोठा(मनोरमा-28)	आठ(सुखमय जीवन-19)
ड- आदि-	डकोडाड(वनवीर ना0-15)	डाकूस(पो0द0-60)
	डलते(आरण्यबाला-111)	ढीठपन(घु-घू का काटा-16)
	डूडना (प्र0या0-47)	डाई (,, -24)
मध्य-	बेडब(नवाबनंदिनी-11)	
	डकोडाड'(वनवीर ना0-15)	
अन्त-	उदाहरण नहीं मिले हैं ।	
ड़ -आदि-	उदाहरण नहीं मिले हैं ।	
मध्य-	मुड़ना(र0बेगम-6)	घुड़ीतो(कोमो तलवार-24)
	चढ़ाई (संसार-209)	चढ़िया(प्रेमयोगिनी-79)
	बुढ़ापा(आ0डि0-16)	चिढ़ाना(घुग्घू का काटा-39)
अन्त-	मूँड़े(द्रौपदी चीर हरण-7)	गूढ़ (मालिनी बाबू-16)
	मेंढ़(पो0द0-53)	प्रगाढ़(मर्यादा-1912-52)
	मूढ़(प्र0या0-38)	पढ़ो(1652/14पद्मसिंह शर्मा)

मध्य-	बयार(ठे0हि0छा0-37)	शयन(मल्लिका-32)
	प्रयोग(सर0-1904-181)	उपयुक्त(या0स0-6)
	छिमायस(1652/14 पद्मसिंह)	
अन्त-	कसमय(नवा बन्दिनी-16)	अतिशय(मल्लिका-35)
	ॐ याय(हेमलता-146)	प्रलय(कु0व0व0-15)
	विषय(दुर्गावती-34)	अभय(न0नि0158)
र-आदि-	रजनी(मल्लिका-32)	राजपुत्र(सर01909-206)
	राष्ट्र(मर्यादा-1916-239)	रात(मायापुरी-289)
	रोटो(बुद्धू का कांटा-42)	
मध्य-	किरण(सर0-1904-121)	मरीचिका(या0स0-35)
	विरक्त(मर्यादा-1912-52)	परिहास(ने0व0व0-98)
	पराधीनता(प्र0या0-93)	मारकाट(लेखा-56)
अन्त-	पहर(पञ्चदश-10)	बेकार(या0स0-59)
	अगर(मर्यादा-1979-89)	दूर(अन्यथाला-47)
	समाचार(पद्मपराग-110)	प्रचार(गी0नि0-15)
ल-आदि-	लोग(सर0-1904-137)	लाचार(पञ्चदश-22)
	लज्जा(मल्लिका-86)	लक्ष्मी(मर्यादा-1912-53)
	लड़का(वि0कसौ-470)	लाल(न0नि0-47)
मध्य-	कुलाहट(चन्द्रहार-14)	सरलता(मर्यादा-1912-46)
	प्रलय(कु0व0व0-15)	विलय(अव0बू0-279)
	मलिनी(न0नि0-86)	ललित(मनोरमा-68)
अन्त-	गाल(सर0-1905-21)	विशाल(मर्यादा-1911-192)
	केवल(वि0कसौ-464)	मुश्किल(दुर्गावती-22)
	बिजली(अव0बू0-279)	कोकिल(न0नि0-28)
व-आदि-	वक्ष(विश्वाला-49)	विवाह(आत्मदाह-31)
	विन्यास(गी0नि0-3)	वायु(न0नि0-86)
	विविध(गी0नि0-3)	वदन(न0नि0-86)
मध्य-	अवसर(सर01983-137)	किवाड़(मर्यादा-1979-366)
	अवरुद्ध(आत्मदाह-1)	अवकाश(न0नि0-25)
	भगवान(कौरव-24)	नवम(गी0नि0-3)
अन्त-	गौरव(सर0-1905-64)	कौरव(कु0 व0व0-64)
	अभाव(अव0बू0-178)	अनुभव(अरण्यबाला-47)
	कवि(र0र0-38)	अटवा(माधुरी-1925-260)

ऊष्म व्यंजन

श-आदि-	शुभ्र(नवा बन्दिनी-189)	शरद(बौ0द0-83)
	शिखर(मर्यादा-1918-208)	शिव(सुहागिनी-3)
	शुष्क(मत्त कुसु0-84)	शव(माधुरी-1925-260)

मध्य-	वैशाख(राजकुमारी-60)	अभिशाप(मर्यादा-1912-36)
	विशद(पद्मपराग-36)	अशरण(प्र०या०-151)
	संशोधक(गो०नि०-13)	प्रकाशित(1622/14 गंगाप्रसादअग्निहोत्री
अन्त-	विनाश(र०वैभव-6)	वंश(प्रभा-1913-205)
	आकाश(आत्मदाह-301)	देश(प्र०या०-22)
	सर्वनाश(गल्प कुसु०-78)	आशा(1622/14गं०प्र०अग्निहोत्री)
ष- आदि-	षडयन्त्र(तारा-93)	षड्वेद(नागानंद-89)
	षोडशवर्षीय(संसार-39)	षड्रिपु(सावित्री-106)
मध्य-	ग्रीष्म(शकुन्तला ना०- 2)	अभिलाषाओं(मर्यादा-1979-24)
	पोषण(सुहागिनी-20)	भीष्म(गल्प कुसु० -88)
	सम्भाषण(न०नि०-25)	नैषध(1637/14 अ०चतुर्वेदी)
अन्त-	हितैषी(तारा-91)	बुभुक्षा(मर्यादा-1911-241)
	विशेषा(सर०1904-286)	द्वेषा(सुहागिनी-20)
	अभिलाषा(न०नि०-85)	
स-आदि-	सन्नाटा(तारा-19)	सरलता(मर्यादा-1912-46)
	साक्षी(प्रभा-1913-190)	सुवर्ण(मनोरमा-68)
	सम्भाषण(न०नि०-25)	सुजान(गो०नि०-3)
मध्य-	कुसमय(नवाबनन्दिनी-16)	असामयिक(खोमोतलवार-36)
	नापसन्द(गद्यमाला-190)	प्रसूत(माधुरी-1925-260)
	अनुसार(चित्रशाला-19)	नसीब(बुधवार आदमी-91)
अन्त-	पास(मसिनी माकू-28)	प्यास(लक्ष्मी-1908-23)
	आस(तुलसीदास-94)	परिहास(मेढ़ ब०प०-98)
	पचास(बड़ा०ई०-8)	मास(चित्रशाला-49)
ह- आदि-	हड्डियाँ(सर०-1905-21)	हाता(गल्प कुसु०-64)
	हथकड़ी(पु०चि०-19)	हीर(मनोरमा-68)
	हास्य(न०नि०-85)	हर्षोच्छ्वास(पद्मपराग-12)
मध्य-	कुलाहट(चन्द्रहार-1)	कौतूहल(सर०1904-14)
	बाहर(न०नि०-85)	उदाहरण(पद्मपराग-130)
	मर्माहत(आत्मदाह-141)	अपहरण(गो०नि०-14)
अन्त-	उत्साह(रमाबाई-10)	अनुग्रह(गल्प कुसु०-6)
	संदेह(पद्मपराग-36)	प्रवाह(मनोरमा-196)
	मुँह (मनोरमा- 1925-30)	

ख-। ड॰ अरबी फ़ारसी ध्वनियाँ

वर्तमान हिन्दी लिपि में फ़ारसी ध्वनियों के नीचे बिन्दी(॰) नहीं लगाई जाती किन्तु द्विवेदी युग के अधिकांश लेखक उर्दू से हिन्दी की तरफ़ अग्रसित हुए थे अतः ऐसे लेखकों की कृतियों में फ़ारसी ध्वनियों की शुद्धता के प्रति सतर्कता बर्ती गई है:-

क़- आदि-	क़दम(राजकुमारी-81)	क़िस्मत(नवाब नंदिनी-45)
	क़सूर(प्रेमयोगिनी-77)	क़दम(चौ०द०-14)
	क़र्ज़ (रायबहादुर-4)	क़रीब(सुहागिनी-51)
मध्य-	यक़ीन(राजकुमारी-79)	मुलाक़ात(नवाबनंदिनी-8)
	शौक़त(रायबहादुर-138)	फ़क़त(प्रेमयोगिनी)
	इख़्लाक़(सुहागिनी-125)	
अन्त-	आशिक़(नवाबनंदिनी-24)	इस्तलाक़(राजकुमारी-79)
	मुवाफ़िक़(चौ०द०-3)	लायक़(रायबहादुर-5)
	शौक़(सुहागिनी-54)	
ख़- आदि-	ख़बर(नवाबनंदिनी-24)	ख़याल(सुहागिनी-22)
	ख़ून(कृष्ण अर्जुन युद्ध-8)	ख़ाली(सुखमय जीवन-11)
	ख़न्दक(उसने कहा था-56)	
मध्य-	बुख़ारी-(राजकुमारी-76)	कैदख़ाने(नवाबनंदिनी-6)
	आख़िर(सुहागिनी-66)	अख़बार(सुखमय जीवन-11)
	~~अन्त-(~~	
अन्त-	गुस्ताख़ी(या०स०-32)	शोख़(बिखाड़ कुसु०-19)
	शोख़ी(,, -33)	तारीख़(रजनी-69)
ग़- आदि-	ग़मज़द(नवाबनंदिनी-78)	ग़ैर(प्रेमयोगिनी-72)
	ग़ज़ब(चौ०द०-43)	ग़रीब(सुहागिनी-52)
	ग़लती(रायबहादुर-12)	
मध्य-	क़ाग़ज़(राजकुमारी- 76)	दरीग़ाब(प्रेमयोगिनी-17)
	मुग़ल(नवाबनंदिनी-23)	चुग़ली(कृष्ण अर्जुनयुद्ध-10)
	बाग़ीचे(बिखाड़ कुसु०-9)	
अन्त-	चिराग़(तारा-75)	बाग़(राजकुमारी-75)
	तमग़ा(चौ०द०-15)	चिराग़(चौ०द०-29)
	बाग़बाग़(प्रेमयोगिनी-81)	
ज़- आदि-	ज़मीन(नवाबनंदिनी 1)	ज़माना(चौ०द०-2)
	ज़ियारत(रायबहादुर-4)	ज़बरदस्ती(सुखमयजीवन-11)
	ज़बान(उसने कहा था-48)	

मध्य- हज़ार-(आनंदमठ-17) रोज़गार(प्रेमयोगिनी-24)
नज़र(विवाह कुसु0-19) मज़दूरी(रावबहादुर-3)
गज़ब(सुखमयजीवन-11)

अन्त- दरवाज़ा(राजकुमारी-81) नाराज़(नवाब नंदिनी-17)
बजाज़(रावबहादुर-3) आवाज़(सुहागिनी-43)
रोज़(कृष्ण अर्जुन युद्ध-10)

फ़- आदि- फ़िक्र(राजकुमारी- 80) फ़ैसला(तारा-23)
फ़िज़ूल(बी0द0-17) फ़ज़ीहत(रावबहादुर-3)
फ़र्ज़(बी0द0-4)

मध्य- सफ़ाई(बी0द0-3) काफ़िर(राजकुमारी-73)
आफ़त(रावबहादुर-4) सफ़ेद(सुखमयजीवन-12)
मारफ़त(बी0द0-20)

अन्त- तकलीफ़(राजकुमारी-77) शरीफ़(नवाबनंदिनी-11)
तरफ़(रावबहादुर-7) वाक़िफ़(बी0द0-3)
काफ़ी(कृष्ण अर्जुन युद्ध-1)

ख: 1 ब अंग्रेजी ध्वनियाँ

ज़- आदि- उदाहरण नहीं मिले

मध्य- रिज़ोलिउशन(रजनी-46) मैजिस्ट्रेट(ठ0ठ0गो0-154)
सिविलिज़ेशन(कृष्ण अर्जुन युद्ध-5) सेफ़्टीरेज़र(बुद्धू का काँटा-33)
पोज़ीशन(माधुरी 1923-700) कंज़र्वेटिव(माधुरी1923-700)

अन्त- डाईज़(बी0द0-14) कंपोज़(माधुरी-1923-700)
साइज़(माधुरी-1923-700)

फ़- आदि- फ़्रेण्ड(बी0द0-12) फ़ैशन(सुहागिनी-12)
फ़ोटो(बी0द0-15) फ़र्म (माधुरी-1923-700)
फ़ण्ड-(बी0द0-20)

मध्य- न्यूफ़ैशन(बी0द0-2) प्रोफ़ेसर(कृष्ण अर्जुनयुद्ध-5)
प्लेटफ़ार्म(न0नि0-48) फिलासाफ़िकल(मर्यादा-1916-281)
सेफ़्टीरेज़र(बुद्धू का काँटा-33)

अन्त- उदाहरण नहीं मिले ।

ख: 2 संयुक्त व्यंजन

युग की भाषा में संयुक्त व्यंजनों के जो उदाहरण उपलब्ध हैं उन्हें सुविधा की दृष्टि से 2 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

(1) सामान्य व्यंजन संयोग
(2) द्वित्व व्यंजन संयोग

ख/2 क- सामान्य व्यंजन संयोग

मुद्रित या हस्तलिखित पत्रसाहित्य के अवलोकन से सामान्य व्यंजन संयोग में जो पाई वाले व्यंजनों का संयोग है उनमें कोई विशेष उल्लेखनीय बात नहीं मिली है किन्तु बिना पाई वाले व्यंजनों के संयोग में अवश्य ही कुछ उल्लेखनीय तथ्य दृष्टिगोचर हुआ है जिसका यथा अवसर उल्लेख किया जाय गा । यहाँ पर क्रमशः सामान्य व्यंजनों के संयोग विचार जा रहे हैं जैसे :-

ध्वनियाँ	संयोग	
क -	दुक्ख(पू0ब05)	दक्खिन(राजकुमारी-61)
	लेक्चर(उमा0-15)	अक्तर(तारा-99)
	प्रतीक्षा(सूर्यग्रहण-268)	क्या(सावित्री-155)
	क्लान्त(रजनी-103)	शक्ति(~~कु0क0-5~~ ग्रीष्म प्रतिज्ञा-12)
	क्रोध(भिखारिणी-191)	स्वट(कुमार आदमी-9)
ख-	शख्स(पू0ब0-45)	ख्वाहिश(तारा-25)
	सख्त(सर0-1904-23)	जख्म(सूर्यग्रहण-298)
	विख्यात(सुहागिनी-2)	बख्शा(,, 361)
	व्याख्या(पद्मपराग-38)	तख्त(,, 363)
ग -	अभाग्य(चन्द्रधर-1)	विज्ञान(सर0-1904-23)
	ग्वाला(सावित्री-2)	दग्धावशिष्ट(सुहागिनी-4)
	कुलग्न(सावित्री-35)	क्रोधाग्नि (कु0ब0ब0-15)
	ग्लास(लक्ष्मी-1908-23)	दुग्ध(कौमी तलवार-97)
	संग्रहालय(सेवा-10)	रेग्युलेशन(प्रभा-1924-466)
घ-	निर्विघ्न(सावित्री-9)	शत्रुघ्न(उत्तर रामचरित्र भा0 26)
	शीघ्र(प्र0भा028)	विघ्न(,, ,, 32)
ङ-	संकट(वनवीर नाटक-41)	आशंगता(भवानीदनी-7)
	पंखा(संसार-21)	मंगल(सावित्री-11)
	सारंग(रजनी-76)	उमंग(विवाह कुसु0-29)
	पँक्चर(सुखमय जीवन-22)	
च-	परिच्छेद(चन्द्रधर-47)	पच्छिम(राजकुमारी -90)
	गुच्छे(संसार-54)	इच्छा(सावित्री-168)
	गुलगुच्छा-(संसार-124)	
छ-	उदाहरण नहीं मिले हैं ।	

य - पुष्यवर(द्रौपदी चीर हरण-23) ᐧ वर(सूर्यग्रहण-382)
ᐧवाय ᐧद(गद्यमाला-128) साम्राज्य(सर0-1920-84)
उज्यारो(सर01926-141) वाणिज्य(सर01926-134)

ञ- उदाहरण नहीं मिले हैं

ञ - पंचाय(मालविका-5) अञ्जुली(उमा-9)
लांछन(सावित्री-169) प्रभञ्जना(उमा(69)
अनुवांछन(नीलमणि-124) चिरञ्जीव(गौ0नि0-3)

द्वित्व

ट- चिट्ठी(नागानंद-58) नाट्य(मालविका0-6)
अट्ठारह(उमा-18) मुट्ठी(संसार-44)
ठट्ठा(बुड्ढ का काटा-27) लट्ठी(उसने कहा था-48)

ठ- सुपाठ्य(सर01926-118)

ड- बुड्ढे- सुड्ढे (संसार-45)

ढ- धनाढ्य(सुहागिनी-72)

ण- अवगुण्ठन(मल्लिका-88) ब्रह्माण्ड(नवाबनंदिनी-2)
वर्ण्य(र0र0-47) कमण्डल(सूर्यग्रहण-283)
प्रचण्ड(मनोरमा-97) ध्यावण्ट-(गद्यमाला-128)

त- महात्मा(चन्द्रधर-1) सतीत्व'(नवाबनंदिनी-51)
सर्वत्र(चन्द्रधर-22) गरयो(रजनी-21)
उत्फुल(विवाह कुसु0- 33) सत्पदा(सूर्यग्रहण- 293)
प्रयत्न(चन्द्र -1914-103) प्रत्युत्पन्न(पद्मपराग-44)
निस्तब्धो(आरण्यबाला-12) अत्यावश्यक(प्रभा-1922-85)

थ- आतिथ्य(मर्यादा-1978-266)

द- सद्गुण(उमा-6) छद्मवेशी(रजनी-54)
दारिद्र्य (उमा-6) निरुद्यमी(अरण्यबाला-12)
भारद्वाज(उ0रा0च0ना0-13) वृद्ध(मर्यादा-1919-514)
समुद्भासित(मनोरमा-29) प्रतिद्वन्द्वी(चित्रशाला-138)

ध- साध्वी(पा0त0-5) प्रतिध्वनित(मल्लिका-38)
ध्यानी(रजनी-114) मध्यान्ह(उ0रा0च0ना0-31)
अध्ययन(कर्म-96)

न- सन्मान(नवाबनंदिनी-17) कन्या(सूर्यग्रहण-361)
अत्यन्त(कु0च0व0-85) सम्बन्ध(विवाह कुसु0-20)
उपन्यास(बुड्ढ का काटा-27) आनन्दमयी(गद्यमाला-8)

प- प्राप्त(चन्द्रधर-1) अप्सरा(या०स०-11
दुःख स्वप्न(सुहागिनी-17) प्यार(विवाह कुसु०-13)
सप्ताह(सर०1925-139) प्लोडा(विवाह कुसु०-3)

फ- दफ्तरखाना(राजकुमारी-75) इफ्ते(सुखमयजीवन-10)

ब- सब्जकदम(या०स०-9) शब्द(सावित्री-5)
अब्दुल(या०स०-33) निःशब्द(सावित्री-154)
सब्जी(उसने कहा था-49) जब्ता(रजनी-68)

भ- भ्रष्ट(कलयुगी परिवार-7) अभ्यन्तर(मनोरमा-68)
भ्रम(या०स०-73

म- बाम्हन(टे०हि०व०-30) चम्पत(रमाबाई -1)
स्तम्भित(सर०1904-15) प्रतिबिम्बित(गल्प कुसु०-68)
तुम्हारे(मर्यादा-1979-516) कुम्हारें (लम्बोदा०-117)

ख:-1 ख अन्तस्थ व्यंजन संयोग

अन्तस्थ व्यंजनों में /य/ और /व/ संयोगी व्यंजन के रूप में आते हैं स्पर्श व्यंजनों के साथ इनका संयोग ऊपर दिखाया जा चुका है यहाँ पर ऊष्मवर्गीय तथा शेष व्यंजनों के साथ अन्तस्थ व्यंजनों का संयोग दिखाया जा रहा है :-

र- अन्तस्थों में /र/ का संयोग पूर्ववर्ण और पश्च वर्ण /र/ संयोग दो रूपों में हुआ मुद्रित तथा हस्तलिखित पत्र साहित्य के अवलोकन से पूर्व वर्ण/र/ का संयोग इस युग में भी सर्वप्रचलित रीति अर्थात अगले अक्षर के ऊपर 'रेफ'(⌐) लगा कर किया गया है जैसे:-

मार्तण्ड(या०स०-40) दर्शन(वी०द०-83)
राजर्षि (आ०हि०-120) सर्वाप(,,,-83)
मार्ग (आत्मदाह- 201) चतुर्दिक(म०नि०-10)
निर्भमो(मर्यादा-1920-53)

पश्चवर्णी/ र/ संयोग के लिए मुद्रित तथा हस्त लिखित पत्र साहित्य में (↗) तथा (⊼) रीतियों का प्रयोग हुआ है। इनमें से (⊼) रीति विशेष रूप से ट वर्गीय व्यंजनों के साथ प्रयुक्त हुई है आज भी इसका प्रयोग टवर्ग के साथ ही विशेष रूप से होता है किन्तु इस काल में इसका प्रयोग अन्य वर्ग के व्यंजनों के साथ भी हुआ है जैसे:-

द्रोह(पू०ड०-6) समुद्र जन्म(सावित्री-70)
राष्ट्रीय(पद्म पराग-75) मुद्र पत्र (इन्दु-1914-600)
क्रिया(जिल्द(1132/9-1079/8 पत्रसाहित्य प्रफुल्लता(सुहागिनी-195)

स्वरूप(रूपको-42)	सम्भया(सावित्री-34)
कम्भया(रजनी-76)	तत्व(सावित्री-137)
सान्त्वना(सुहागिनी-21)	समुज्ज्वल(न0नि0-185)
लक्ष्य(,, ,,24)	

ग वर्तनी के प्रकार

द्विवेदी युग का आरम्भ भाषा स्वरूप की दृष्टि से अव्यवस्थित ही कहा जायेगा। उस समय तक भाषा का कोई निश्चित रूप स्थिर नहीं हुआ था। भाषागत अनिश्चितता और अस्थिरता के कारण वर्तनी के कई प्रकार दिखाई पड़ते हैं। इन्हें निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है यथा:-

(1) संस्कृत की परिपाटी के अनुसार वर्तनी भेद ।

(2) उच्चारण के अनुसार वर्तनी के भेद

(3) बोलियों के प्रभाववश वर्तनी भेद ।

ग-1 संस्कृत की परिपाटी के अनुसार वर्तनी भेद

इस युग के आरम्भिक काल में संस्कृत शैली के अनुसार /र/ संयोगी व्यंजन के द्वित्व रूप के उदाहरण पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। सम्भवतः यह परिपाटी शब्दों की तत्समता को बनाए रखने के लिए ही प्रचलित थी। इसी प्रवृत्ति के अनुसार संयुक्त स्वर के स्थान पर संयुक्त स्वर न लिख कर उसके बाद के व्यंजन के द्वित्व होने के उदाहरण भी मिले हैं जब कि वर्तमान हिन्दी में वर्तनी के ये दोनों ही रूप प्रचलित नहीं हैं।--

स्वर:-

शय्यार(हेमलता-64)	भय्या(संसार-96)
शय्या(निबन्ध कुसुम-33)	भय्या(मीराबाई -73)

व्यंजन:-

अपूर्व (रमाबाई -25)	सर्वनाश(नलिनीबाबू-19)
भार्य्या(उमा-69)	वर्ष्य(महा0दर्शा-16)
मर्म्म (मायापुरी-55)	कार्य्य(सुहागिनी-73)
चर्म्म(मायापुरी-166)	

ग-2 उच्चारण के अनुसार वर्तनी भेद

उच्चारण के अनुसार तत्सम, तद्भव और विदेशी दोनों ही प्रकार के शब्दों में स्वरगत

मध्य - कहूँगी(संसार-11)   मौजूद(इन्दु-1914-100)

क्रीडसखियां(संसार-39)   इंजीनियर(मर्यादा-1920-54)

परिक्षा(संसार-142)

अन्त्य

बैठूँ हूँ(संसार-11)   मिन्त्र(मर्यादा-1920-54)

ब्याह(संसार-53)   बैठि मैं(पद्मपराग-9)

सत्कार(,, -55)   बीच(,, -40)

आगह(,, -61)   नहि(मर्यादा-1979-33)

भाइ(,, -124)

अनुनासिक दोष
- - - - - - - -

अनुस्वार और अनुनासिकता के कारण जो वर्तनी दोष हुआ है वह सम्भवतः मुद्रण कला के त्रुटिवश हो सकता है अथवा लेखकों की इन चिन्हों के प्रयोग के प्रति असावधानी रही होगी। कुछ पुस्तकों में इनके प्रयोग में अनिश्चितता दिखाई पड़ती है जिससे वर्तनी दोष उपस्थित हुआ है।

अनुस्वार की आवश्यकता
- - - - - - - - - - -

ठंडी सुख भाप भाप कर अपना समय काट रहा है —(पृ०स018)

पर र मा कहती है (संसार- 54)

इतना होने पर भी दोनों (संसार-50)

मैं काला कलकत्ते (संसार-55)

क्यों क्या आप किसी शहर में (संसार -54)

रमेश की आँखों में इस बार आंसू(मर्यादा-1979-366)

निर्मल जल में खिले हुए कमल(चौहानी सत-2।21)

टिप्पणी:- भेद के लिए देखिए व्याकरण अध्याय का विशेषण प्रकरण का निश्चित
गणना सूचक विशेषण का समुदाय सूचक वर्ग —

(3- 4 न-1 -∇)

अनुस्वार की अनावश्यकता
- - - - - - - - - - -

उनके लोग चीख चीख हारा ज्यों उठती और चारों ओर भी चीख चीख पर चीख पर चीख हारा। दूर तक अपनी ज्वाला फैला रही थीं (राजकुमारी-51)

ऐसा कोई औरौ यन्त्र देने वाला ——-- (संसार -53)

जैसो पति'कट तपस्योनें है ------ (संसार-58)

कुशल ---होम पूँछनें *खद ----)(पौ0द0-8)

स्वर लेखन

स्वरों का लेखन उच्चारण के अनुकूल हो हुआ है जैसे वर्तमान पश्चिमी हिन्दी में लिखा तो पूरा स्वर जाता है किन्तु उच्चारण ह्रस्व हो होता है । यहाँ पर ध्वन्यानुकूल स्वरलेखन के हो उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

संज्ञा-

तरवार(या0स0-15)

सवाँर(या0स0-19)

फर्याद(पू0ब0-82)

रुसै(संसार-22)

अवाश्यकता(संसार-93)

पुरुषार्थ(संसार-93)

सिर्झने(मनोरमा-1925-301अ

दर्वाजा(राजकुमारी-76)

वर्षा(तारा-78)

तयार(पद्मपराग-115)

पारखो(सावित्री-10)

मौका(पद्मपराग-129)

फर्याद(पू0ब0-82)

सर्वनाम-

उन्ने(अ0डि0-89)

उसको(2117/9बदरी नरायण चौधरी-

इससे(अब0बू0-399)

कौन(नै0च0च0-73)

क्रिया-

मुर्झाई (पू0ब0-82)

आस-पास(*बैठ कर(संसार-21)

जन्मे(नलिनी बाबू-60)

सकता(मनोरमा-1925-712)

----

*1- पश्चिमी प्रयोग में यह रूप शुद्ध माना जाता है ।

*2- यह हिन्दी का आदर्श रूप नहीं है यद्यपि पश्चिमी हिन्दी में इसका प्रयोग बराबर चलता है । सम्भवतः यह मुद्रण की त्रुटि भी होसकती है ।

स्वरभक्ति

स्वरभक्ति वाले शब्दों को भी उच्चारणगत वर्तनी भेद के अन्तर्गत ही रखा जा सकता है संभवतः ऐसे प्रयोग मुख- सुख अथवा ग्रामीण बोलियों के प्रभावका ही हुए हों।

तत्सम- तद्भव-
--- ---

सम्बद्ध(सर0-1905-121)	जनम(है0डि0ड021)
मदरास(सर01905-121)	करम(,, 21)
चुलाह(संसार-82)	परबंध(दुर्गावती-97)
विद्यारथी(संसार-52)	शोक समबेदना(पद्मपराग-43)
बरस(प्र0पा0-20)	अनपढ़ा(1712-15भगवनोदयाल)
चिन्ता(1712-15भगवनोदयाल)	छिन्दू(,, ,,)
किन्तु(,, ,,)	

उर्दू -

गरमी(सर01905-121)	अदमी(पू0स013)
बरच(संसार-6)	बयास(सुहागिनी-22)
उमर(संसार-24)	कब्रिस्तान(मडा0वं0- 18)
मुसकिल (-,, 58)	बरमीसी(मर्यादा-1939-366)
जलसी(संसार-57)	इसलाम(इन्दु 1927-38)
हरज(भिखारिणी-11)	

अंग्रेजी-

डिपुटी- (नीलमी बाबू-5)	पबलिक(सर01907-149)
डाक्टर(संसार-110)	लेबोरेटरी(नीलमणि-62)
सरटी फिकट(मै0व0ब036)	सेक्रेटरी(मनोरमा-1925-186)

व्यंजनगत

कतिपय कृतियों में अल्प प्राण और महाप्राण व्यंजनों के कारण भी वर्तनी में भेद दिखाई पड़ता है जहाँ पर अल्पप्राण के स्थान पर महा प्राण व्यंजन का उदाहरण मिला है उससे ऐसा लगता है कि उच्चारण के अधिक निकट वर्तनी होने के कारण इसका प्रयोग भी इस काल तक विकल्प रूप से होता रहा है । इसके अलावा महा प्राण के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन के प्रयोग वाले उदाहरण अपेक्षाकृत

कछ अधिक हैं जिससे लगता है कि उच्चारण के अनुसार ही इनका प्रयोग हुआ है जैसा कि पश्चिमी हिन्दी में होता है —

अल्पप्राण का महाप्राण

- - - - - - - - - -

साम्हने (ठेठहि०ठा०-10) | भौन (संसार-13)

*हिट्ठोवल (या०स०-6) | हम लोगों के गाँव को तालै[2]बिटवो अवो-संसार-13)

हाड़ो (राजकुमारी-43) | हँसो ठठ्ठै (नवाब नन्दिनी - 37)

कक-कक कर छ(ठ०ठ०गौ०-38) | धाड़ (प्रभा-1913-194)

महाप्राण का अल्पप्राण

- - - - - - - - - -

बूद (पू०ह०-9) | देहू पहर (संसार-13)

सोगन्ध (वि०कसौ०-71) | ~~गुहर तोयों~~ गुहर तोयों (संसार-58)

पोबा (पद्मपराग-14) | बन्दा (अव०धु०-1)

बीके में (,,, -197) | तब्लोप (चित्रशाला-52)

सर्वनाम

जिनुने (मर्यादा1911-9) | तुमरा (संसार-56)

इनने (प्रभा-1913-209) | उनौने (संसार-86)

उन्ने (आ०हि०-89) | जिने (— 87)

हमौं (अव०धु०-178) | मुझे (सर०1920-263)

तुमारो (सर०1920-263)

क्रिया

तुम्हैं देख कर - - - - (लक्ष्मी -1910-167)

न पढ़ो तब भी पास होई जाओगे (— चौकट०-25)

बालिका तो हई वहाँ जाने - - -(आरण्यबाला-3)

क्या करूं (सर०-1920-262)

- -

* दो महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग एक साथ नहीं होता किन्तु यहाँ पर एक साथ दो महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग वर्तनी की विचित्रता ही लगती है ।

ग-3 बोलियों के प्रभाववश वर्तनी दोष

हिन्दी बोलियों में विशेषकर खड़ी बोली ब्रज, अवधी, भोजपुरी और बंगला के प्रभाववश स्वर और व्यंजन की वर्तनी में दोष उपस्थित हुआ है ।

स्वरगत दोष— युग की प्रारम्भिक कृतियों की स्वर की वर्तनी में पश्चिमी हिन्दी की ब्रज बोली के समान /ए/ और/ओ/ के स्थान पर /ऐ/ और /औ/ का प्रयोग मिलता है यथाः-

संज्ञा—

बुढ़ौ(सर0-1903-92) कबरै(सर01904-137)
सम्पादकौ(,,) बातैं (सर01905-490)
मुसलमानौ(,,) चीजैं (,,)
बातौ (,,) हिकायतै(,, -493)
रूपलौ(,, -103) सबलोकै (,, ,,)

सर्वनाम—

जिन्है(सर0-1905-486) क्यौ(संसार-31)
उन्है(सर0-1905-446) तुम्है(मु0वि0-146)
इन्है(प्रभा-1913-194) इन्हैं(उत्तर राम चरित ना0-18)

विशेषण—

प्राचीनै(सर01904-88) नवीनै(सर01904-88)
हजारौ(,, -91)

क्रिया—

हौ(पू0ह0-20) सकै(सर01905-217)
लावैगा(मनि समाचे अं-48) करै(सर01905-217)
पावैगा(,, ,,) होवै(,, ,,)
मिलावैगा(भु0तै0-24) सुधरै(,, ,,)
मिलैगा(,, -55) रोवै (आ0हि0-120)
देगा(उ0रा0च0ना0-19) मारैगा(आ0हि0-122(
चढ़ै (भु0भ0ह0-15) बचावै(आ0हि0-122)

/उ/ऊ/ के स्थान पर ओ/और औ का उच्चारण तथा /ए/ के स्थान पर /ऐ/ का उच्चारण भी पश्चिमी बोलियों के प्रभाववश ही है —

आप के घर पहुँचाए आऊँगा --- (संसार-30)
बहोत कुछ कह रहता था--- (संसार-140)
सारा प्रेम में ली ---- (संसार-140)
मैं पहुँचा दूँगा (तुलसीदास-130)
मैं बदला नहीं लूँगा(,, ,,)
मैं ले चलूँगा-- (तुलसीदास-129)

विशेष—

कुछ शब्दों में स्वरों के कारण विभिन्नता भी दिखाई पड़ती है संभव है बोलियों के प्रभाववश ही स्वर की वर्तनी में यह विभिन्नता आई हो यथा—

इस कुलाहल के कारण ही ----(पू०ह०-13)
भामभरो के साथ विश्वास कर (प्र०भा-1913-212)
खेलने (मर्यादा- 1979-363)
उम्मेद हुआ (मर्यादा1978-384)
एक रईस मेहमान आने वाले हैं(मर्यादा -1979-366)
उनके सिपुर्द किया --- (सेवा०-92)

व्यंजन गत भेद

बोलियों के प्रभाववश व्यंजन की वर्तनी में काफी भेद हुआ है यह प्रभाव व्यंजन भेद में अधिक दिखाई पड़ता है सुविधा के लिए पूर्वी और पश्चिमी बोलियों के प्रभावों को दिखाया जा रहा है —

पूर्वी प्रभाव—

पूर्वी बोलियों में भोजपुरी और अवधी का प्रभाव व्यंजनों की वर्तनी पर बहुत अधिक पड़ा है यथा—

ण ,न का भेद—

कारन(ठे०हि०ठा०-1)
किरनें (,, ,,)
प्रान (,, ,,)
प्रहन(मर्यादा-1979-2)
गुनी(चित्रशाला-183)

हानियों(लक्ष्मी-1910-166)
पुनर्परिवार(संसार-59)
श्रीचरनसेवा(दुर्गावती-34)
गुन(चित्रशाला-182)

ड़, र अभेद

बवराइट(डे0डि0छा0-27)	बवराय(जु0लै0-42)
बबरा(सर01920-263)	सारो(म0नि0-85)

ब, व का अभेद—

बरखा(डे0डि0छा0-38)	बंध(नवाबरविनो-26)
बिबय(संसार-206)	विजय(लक्ष्मी-1910-166)
बिबाद(रजनी-38)	चोरी(,, ,,)
बिकार(रजनी-110)	विख्यात ,, ,,)
बस्तुऔं(रजनी-102)	बरन्(वि0क0सो0-147)
बस(वश) दुर्गावती-22)	पूछ्बो(भोज्य ग्रा0-13)

टिप्पणी:- भोजपुरी और अवधी में /ण/ के स्थान / न/ और ड़/ के स्थान पर /र/ तथा /व/ के स्थान पर /ब/ का प्रयोग इनकी अपनी विशेषता है ।

ष, ख में अभेद

(ष) उच्चारण की कठिनता के कारण /ष/ का उच्चारण /ख/ रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में होता है । भोजपुरी, अवधी तथा पश्चमी हिन्दी की ब्रज बोली में /ष/ के स्थान पर /ख/ ही प्रयोग होता है —

बरखा(डे0डि0छा0-38)	भाखा(सर01904-118)
औखध(डे0डि0छा0-42)	अभिलाख(कल्पवृक्ष-44)
मानुख(डे0डि0छा0-43)	

र - ल में अभेद—

पुचराये(डे0डि0छा0-38)	आंचर(संसार-20)
चार(,, ,,)	पूर(अरण्यबाला- 47)

श, ष, स में अभेद—

अकास(डे0डि0छा0-42)	शहनाई(वेनिस नगर का व्या-75)
आभास(—,, -2)	कोशिश(संसार-55)
पशु(डे0डि0छाञ-2)	सरीफि(संसार-57)
कष्टी(वि0क0सो0-472)	शिरदार(संसार-50)
खुसी(अद0बु0-185)	मुसकिल(संसार-58)
सौर्य(मर्यादा- 1979-25)	सायद(,,)
असोक(संसार-61)	बृटिस(संसार-195)
अवकास(म0नि0-25)	

टिप्पणी:- र-ल में अभेद पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही क्षेत्रों में पाया जाता है।

इसी तरह पूर्वी बोलियों में विशेषतः भोजपुरी में /श/ और /ष/ का उच्चारण /स/ के समान होता है।

ज - य का अभेद

पूर्वी बोलियों में य/ का उच्चारण /ज/ के समान होता है इस प्रभाव के कारण भी व्यंजन की वर्तनी में अभेद आ गया है —

जोग(दे०हि०ठ०-38)	जमराज(संसार-206)
मरजादा(दे०हि०ठ०-38)	जसोदा(सुहागिनी- 23)
जोवन(भीष्म प्र०-15)	जतन(प्रेमाश्रय-40)

पश्चिमी प्रभाव

पश्चिमी बोलियों में विशेष कर खड़ी बोली में /ड़/ का उच्चारण /ड/ और /ढ़/ का /ढ/ के समान होता है इस काल में भी इस प्रकार के रूप अधिक संख्या में मिले हैं किन्तु निश्चित कारण जानने के अभाव में यह नहीं कहा जा सकता कि यह पश्चिमी प्रभाव के कारण अथवा इस समय इन ध्वनियों में कोई भेद था जैसे:-

ड-ड़ का अभेद

बड़ी बड़ी(सु०वि०-8)	पीड़ा (वि०कसौ०-282)
कड़ी(सु०वि०-58)	मो हे में(भीष्म प्र०-96)
पड़ेगा(,, 120)	गड़रिये(पद्मपराग-13)
उड़ा(सु०वि०-120)	किवाड़े(मर्यादा-1979-366)
लड़ाती(सु०वि०-120)	अड़ियल(लम्बी दा०-69)

ढ, ढ़ में अभेद

पढ़(वि०कसौ०-471)	बुढ़िया(सु०वि०117)
देढ़ा(,, 471)	पढ़कर(1651/14 पद्मसिंह)
चढ़ा(मर्यादा-1979-367)	

पश्चिमी हिन्दी की ब्रजी के प्रभावशक्ष अन्तिम व्यंजन का लोप तथा उसके स्थान पर स्वर ~~का आगम~~ के आगम वाले रूप के उदाहरण भी मिलते हैं।-

तुमको लेके जाऊं(संसार-6)

तुम तो पातकोई जाओगे(बी०द०-25)

समय पाके(संसार-50)   अशीर्वाद देके विदाकिया(संसार-68)
छाती पे(भ्रमर पु0-96)   बालुकापे(पद्यमाला-138)
क्या करुँ(सर01920-262)

महाप्राण व्यंजन के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन का प्रयोग तथा अन्तिम व्यंजन का लोप और उसके पूर्व के व्यंजन का द्वित्व होना खड़ी बोली की अपनी विशेषता है । इस प्रभाव के कारण भी व्यंजन की वर्तनी में भेद हुआ है यथाः-

मूँ(ठे0हि0ल0-27)   बूट(पु0ह0-9)
गुड़ई-सोयीं(संसार-58)   उन्ने(आ0हि0-89)
जिस्सा(संसार-124)   जिन्ने(मर्यादा-1911-9)
सोगन्दे(वि0कौ0-71)   बन्दा(ब्र0बू0-1)
किस्सा(दुर्गावती-85)   करुँ(सर01920-262)
बोके(पद्मपराग-197)   मुझे(,, -263)
तस्लोप(चित्रशाला-52)   समझा(मनोरमा-1925-712)
भुन्न(चित्रशाला-182)

पश्चिमी हिन्दी में बलाघात वाले शब्दों का तो पूर्ण उच्चारण होता है किन्तु अन्यों का या तो अल्पप्राण रूप में होता है या लोप हो ही जाता है जिससे व्यंजन की वर्तनी में भेद होता है । पत्र साहित्य में एक स्थान पर ऐसा ही रूप मिला है । यथाः-

हमारे हाँ भी एक चोबे जी हैं (1693/14 हरिहरस्वरूप शर्मा)

विशेषः-

(1) पश्चिमी और पूर्वी बोलियों के प्रभाव से भिन्न/ स/ के स्थान पर /श/ का उच्चारण पहाड़ी क्षेत्रों तथा बंगला का प्रभाव भी हो सकता है यद्यपि ऐसे उदाहरण बहुत ही कम मिले हैं किन्तु जो मिले हैं उससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इन प्रभावों के कारण भी व्यंजन की वर्तनी में भेद हुआ है ,—

सुबह(गल्प कुसु0-83)   हँसो(गल्प कुसु0-108)
विकास(पद्मपराग-35)   शीशे(प्रभा -1913-209)

2- तद्भव शब्दों की वर्तनी का अपना स्थान है । इस काल में बहुत से तद्भव रूप ऐसे मिले हैं जिनका अब तत्सम रूप मिलता है । तद्भव शब्दों के उच्चारण में भी अनिश्चितता है साहित्यिक वर्ग तथा सामान्य जनता के उच्चारण में काफी भिन्नता है जिससे वर्तनी में भी अनिश्चितता आ गई है यथाः-

मानुष(ठे0हि0ल0-10)   सुपना(चन्द्रहार-10)
बाम्हन(दुर्गावती-40)   दर्श(मर्यादा-1979-29)
किस्ले(दुर्गावती-85)   कर्तव्य(मर्यादा-1979-508)
परमेसर(,, -97)   उद्देश(मे0प0प0-92)

भाग(प्रेमाश्रय-287) | पुन्न(चित्रशाला-183)

3- तद्भव के समान ही विदेशी शब्दों की वर्तनी में भी उच्चारणगत अनिश्चितता है. पढ़े-लिखे व्यक्तियों की वर्तनी तो शुद्ध है जैसे:-

यकीन(राजकुमारी-79) | मियाबड(या0स0-61)
खबर(नवाबनंदिनी-34) | जमाना(चौ0द0-2)
करीब(सुहागिनी-51) | फजीहत(रायबहादुर-3)
बागीचे(विवाह कुसु0-9) | गैर(प्रेमयोगिनी-72)
रोज(कृष्ण अर्जुन युद्ध-10) | जबान(उसने कहा था- 48)

इसके विपरीत साधारण जनता की वर्तनी में भेद मिलता है क्यों कि ये अरबी फारसी की शुद्ध ध्वनियों का उच्चारण भी हिन्दी के अनुसार ही करते हैं जिससे वर्तनी में अनिश्चितता आ गई है जैसे:-

दफे(संसार-32) | साफ(सूर्यग्रहण-223)
खास(संसार-32) | माफ(प्रेमयोगिनी-10)
खूब(संसार-56) | खिलाफ(श्री मती मंजरी-37)
जरा(संसार-154) | तकलीफ(भारती-70)

२

ग० बावला

क- सामान्य परिचय

द्विवेदी युग हिन्दी गद्य साहित्य - विशेष कर भाषा और शैली की दृष्टि से स्वर्ण युग कहा जा सकता है । विभिन्न भाषाओं से अनुवादित कृतियाँ तथा उच्चतम साहित्यिक सृजन इसी युग के साहित्यिक महारथियों का देन है । भाषा को प्रौढ़ और प्रांजल बनाने के लिए लेखकों का ध्यान तत्सम प्रधान शब्दावली के प्रयोग की तरफ ही अधिक रहा है । यद्यपि अनेकों भाषाओं के अनुवाद के कारण उन भाषाओं के शब्द तथा जनसामान्य की दृष्टि में रख कर लेखकों द्वारा तत्सम और अर्धतत्सम शब्दों का प्रयोग भी बराबर हो होता रहा । इसी प्रकार कि हिन्दी-गैर हिन्दी लेखकों ने बोलचाल के शब्द, ग्रामीण शब्दावली और प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी निः संकोच किया है ।

वस्तुतः युग की शब्दावली दो प्रकार की कृतियों से प्रभावित है। प्रौढ़ और गंभीर साहित्यिक कृतियों की शब्दावली तत्समप्रधान है जिसका प्रयोग प्रसाद , द्विवेदी, किशोरीलाल गोस्वामी, आचार्य शुक्ल, गोविन्द नारायन मिश्र, माधवकान्त मिश्र जैसे लेखकों की कृतियों में देखा जा सकता है -- संस्कृतनिष्ठ भाषा शैली का प्रत्यक्ष उदाहरण निम्नलिखित अंशों में उद्धृत किया गया है --

" महाराज की आंखें क्रोध से लाल हो गई है, मानों उनमें से रक्त टपकना चाहता था । ओंठ और मूंछ फड़कने लगी, अंग रोमांचित और कंपित होने लगा, आर्यशोणित अतिशय उष्ण हो कर शिरा- शिरा में प्रवाहित हो कर मस्तिष्क में प्रबल आघात करने लगा और वीरावेश से शरीर में नव बल का संचार हुआ "

(भीष्म तथा देवी-35)

"जब मधुर मदमयी प्रकृति , जब इस ललित लावण्यमयी लवंगलता के मधुर विकम्पन एवं मनोहर विकास को लोलाओं के सामने नाचने लगती है तब परिताप और पश्चाताप की एक और अर्धचन्द्र देकर हृदय की प्रबल वासना उन्हीं की ओर प्रधावित होने लगती है" - - --

(मनोरमा-85)

लम्बे लम्बे वाक्यों और संस्कृतनिष्ठ भाषा शैली का सुन्दर रूप गोविन्द-नारायण मिश्र के निम्न गद्यांश में देखा जा सकता है ।

" परन्तु चतुर सुजान चित्र विचारकों के पक्षपाती सदा अडिग न्याय

के ही सारी सूक्ष्म विचार उसको अनमोल तुला पर धर कर तौल लेखने पर नयनमनमोहिनी विविध रंगसोहिनी आभा छन छन छिटकाते, अपनी अनोखी माया से जग भरमाते, चित्र विचित्र वर्ण विन्यास चतुरवर स्तर- सकल-कला कुशलतर चित्रकार का आसन भी, सरस-रसभाव-पूर नूपुरधुर गुनगुनाते मंजुलतर पद- विन्यासलास- विलास- विलासिनी सहज लीलावती - कवितावलकलम- चतुर चक्रवर्तीशिरोमणि अवनि-तल पर समतल - थल अथर जलधि रत्नाकर अपार परिपूर जाये चित लेश सकुचाये [illegible] बोतल पड़े जहाँ के तहाँ जमाये, अग-जग- सर्वत्र बिछाये हैं भी न समाये आकाश लों छाये अपने अद्वितीय शोभा शुभ्र-सुयश- अमीगुन से निरन्तर अमर नरवर, भार भार सदा सजीव अभिनवतर के नवम् चिरंजीव से सुहाये, परम सुघर, सुकविवरों के सर्वप्रधान, सर्वप्रधान सर्वोपरि विराजमान अविमानवीय, सुरनर अनमोल निराले आसनों की अनन्य, सुलभ- गौरव- गरबीली अति चटकीली सुन्दर सजीली गुनगरिमा की गिनती में सबसे पहली सर्वश्रेष्ठ श्रेणी की परम प्रतिष्ठावली, सजधज में भी निराली शोभावली आदर अनुराग अधिकारित और स्पर्धा से सदा पूजनीय पंक्ति से नीचे ही बिठाया हुआ मानना पड़ेगा।''

(गोविन्द निबंधावली-2-3)

तद्भव शब्दों का प्रयोग साधारणतः व्यंग्यात्मक वर्णनात्मक और हास्यात्मक स्थानों पर हुआ है जहाँ लेखकों का मूल उद्देश्य भाषा को जन सामान्य तक पहुँचाना है द्विवेदी युग के पूर्व वर्ती काल में तद्भव शब्दों का प्रयोग निःसंकोच किया गया उसी तरह परवर्ती काल में भी कुछ इने गिने लेखकों को छोड़ कर अन्य लेखकों ने इस परम्परा को बनाए ही रखा—

'' कलियुग, घोर कलियुग। जिधर देखो पाप। जिस ओर देखो पातक, जुआँ, चोरी, डकैती, छल, कपट, बेईमानी, व्यभिचारी, विश्वासघात, बेहयाई इत्यादि इत्यादि जिधर देखों इन्हीं का राज। पापी आनन्द करते हैं और हमारे पुण्यात्मा भूखों मरते हैं। न जाने ईश्वर कहाँ सोता है। इतना पाप होता है फिर भी खबर नहीं लेता। मालूम होता है कि भगवान भी सठिया गया है जो सारा काम ही उलट-पुलट कर दिया मेरा बस चलता तो पचपनसाला के नियम अनुसार ईश्वर को पेंशन कर देता और सुधारक दल के किसी आदमी को ईश्वर की जगह देता। किन्तु सच है कि भगवान गंजे को पंजे नहीं देता।''

(भीष्म - 23-24)

व्यंग्यात्मक स्थलों पर बालमुकुन्द गुप्त द्वारा प्रयुक्त तद्भव शब्दावली का सुन्दर उदाहरण निम्नलिखित अंश में देखा जा सकता है —

" आप की लम्बी चौड़ी डींगनी बढ़ी हुई बातों को सुन कर लोग घबरा उठे थे कि न जाने हिन्दी वालों को कैसी-कैसी भूलों और व्याकरणविरुद्ध बातें का गट्ठर लाद कर आप लाये हैं । पर देखा तो कुछ नहीं, बस ढोल के अन्दर पोल। कहाँ तो आप की यह घबराहट और बौखलाहट कि जिस अखबार को उठाते हैं सब में वाक्य-रचना का दोष पाते हैं और कहाँ यह फिसड्डीपन कि एक पुरानी पोथी के साढ़े तीन पंक्तियों के विज्ञापन पर गिर कर रह गए/ वाह/ इतनी सी-सी पर यह बेमन की ।

(गुप्त निबंधावली)

इस युग में हिन्दी बोलियों के शब्दों को भी यत्र-तत्र अपनाया गया है जैसे अयोध्यासिंह उपाध्याय ने तो ठेठ हिन्दी में ही अपनी औपन्यासिक कृतियों का सृजन किया है । इस युग के अधिकतर साहित्यकार बनारस और आगरा के रहने वाले थे, अतः उनकी भाषा में प्रान्त विशेष की शब्दावली का आ जाना स्वाभाविक है । ग्रामीण बोलियों में पूर्वी क्षेत्र की अवधी और भोजपुरी तथा पश्चिमी क्षेत्र की ब्रज और खड़ी बोली के अधिकांश शब्दों के उदाहरण मिल जाते हैं यथा—

बड़े चोचले से बच्चे ने कहा- - -(उमा-1)
योगेश्वर की खोह में वह अब इतनी सुन्दरी नहीं दिखलाती- -(उमा-37)
इसमें खिचड़ी किसने मिला दी - - - (अधखिला फूल-4)
चलती बेर डेक्टर ने कहा - - - - -(अध०फू० - 221)
बातचीत करने का ढंग देख कर महेन्द्र बाबू फूल उठे गए - - -(नीलमणिवाबू-22)
आप तो अपनी ही ओटते रहे - - - -(भोरम-30)

" ओहो ! बड़ी लंबी लेक्चर दे डाल्यो ! खबरदार! तैंने किसी काम के हाथ हूँ लगायो तो! अभी या सौं खोपड़ो न फोड़ डारूँ तो मेरो नाम बन्दर नहीं। मोहिं जेलखाने जाइबे में कछु डर नाहीं है । कछु फाँसी तो होयगी ही काहे को ? चार छः महीना काटि आऊँगो पर तेरो तो कल्याण ही समझ । जो बरस छः महीना खटिया पर पड़्यो - पड़्यो न रहै तो मैं बन्दर ही कहाँ?"

(भा०हि०- 82)

संस्कृत के तत्सम् और तद्भव शब्दों के अलावा इस युग की रचनाओं में विदेशी भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है । कहीं-कहीं पर तो इस प्रकार

के प्रयोग पात्र, स्थिति और वातावरण के अनुकूल हुआ है किन्तु कहीं-कहीं इन भाषाओं के शब्द इतने रूढ़ हो गये हैं कि लेखकों ने इनका निःसंकोच प्रयोग किया है --

'' इस कारण, आनरेबल कोर्ट आफ़ डाइरेक्टर्स के ख़ास हुक्म और रज़ामंदी से सन् 1801 ई0 की संधि, जिस पर कि किसी बादशाह अवध ने पूरे तौर से अमल नहीं किया, अब बिल्कुल नाजायज क़रार दो -- (सर0-1904-22)

अथवा

'' जो हमारी समझ में हमारी अक्ल में- हमारी बुद्धि में हमारे जो में- हमारी सेन्स में, हमारे माइन्ड में आया वही हमने लिखा, वही हमने किया। भले बुरे, उचित - अनुचित, न्याय- अन्याय, मुनासिब, बेमुनासिब, सच-झूठ का विचार पाठक, पढ़नेवाले रीडर करेंगे। जो वादी है, जो मुद्दई है, जो प्लेनटिफ है वह विचारक, वह न्यायकर्ता वह मुन्सिफ वह जज नहीं हो सकता। सम्भव है मुमकिन है, पौसिबुल है कि जो बात जो विषय जो सबजैक्ट हमें पसंद है दूसरों को वह नापसंद हो सकता है। ------ (गद्यमाला- 168)

उपर्युक्त अंश में तत्सम, तद्भव और विदेशी शब्दावली का मिश्रित प्रयोग दर्शनीय है यहाँ पर अब क्रमशः विदेशी भाषाओं के अरबी फारसी तथा अंग्रेजी भाषा की शब्दों से युक्त उदाहरण दिये जा रहे हैं।

अंग्रेजी भाषा के शब्दों की सर्वप्रथम गणना करनी चाहिए जिनका प्रयोग हिन्दी में रूढ़ हो गया है अथवा करीब-करीब रूढ़ के समान तो अवश्यही हो गया है।

'' कोई हाईकोर्ट के वकील हैं, कोई किसी बड़े आफिस के बड़े बाबू हैं,,''

---------- आज तो मैं बड़ा बीजी हूँ पर मैं 'होप करता हूँ कि दो एक दिन में फिर अच्छी तरह से मुलाकात होगी और अगर आप मेरा बाग देखा चाहें तो सनीचर शाम को वहाँ आ सकते हैं। एक बड़ी खेल है वहाँ मैं आप को "रिसीव" करके बहुत हैपी' होऊँ गा ---- (संसार-87)

कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों को रोमन लिपि में और उसी शब्द को ज्यों का त्यों नागरी लिपि में भी रख दिया गया है --

'' हम यहाँ मोरलिस्ट (Moralist) महाशयों से माफी मांगते हैं उसी मेजारिटी ( ) में हमारे यह बाबू '-------(ठ0ठ0गी0-154)

इच्छाशक्ति(Will Power) जब डेवलप (Develop) हो जायेगी ----

(ठ0ठ0गी0-200)

इसी प्रकार कहीं कहीं अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी अर्थ कोष्ठक में दिया गया है तो कहीं अंग्रेजी शब्दों को हा रोमनलिपि में ज्यों का त्यों रख दिया गया है —

अतः वेटिंगरूम(Waiting Room)'विश्राम कक्ष' में जा कर- - - -(
(सलिलमोबाकू-29)

' इन के रेसिटेशन(कंठस्थ पाठ) ने लोगों पर- -(बो०ट०-17)

आज सुबह उनके मैथ्स मैथमैटिक्स''(गणित) के इम्तिहान का दिन है
(बो०ट०-49)

'शायद यह वजह हो कि जैसा एक (Liberal)था वैसा ही दूसरा Conservative इसीलिए ठक-ठक रहती हो। पर पंडित जी थे बरा ढार पेर के तगड़े। बहस के वक्त Argumentum ad Baculain बड़ी जल्दी काम में लाते थे ।'' - - - - - - - - - - - - (रूको - बा0- 123)

कहीं-कहीं हिन्दी और अरबी फारसी शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए भी कोष्ठक में अंग्रेजी शब्दों को रखा गया है

"दरख्वास्त का मसौदा(ड्राफ्ट) बनना शुरू हुआ(बो०ट०-12)
एक सप्ताह में एफ०ए० की परीक्षा का फल (Result) प्रकाशित हुआ''(बो०ट०-19)

इसी तरह कहीं कहीं रोमनलिपि में अंग्रेजी शब्द हैं किन्तु कोष्टक में उन्हीं शब्दों का नागरी ~~शब्दों-आधार~~ में अंग्रेजी है -

" बाबू मदनमोहन भी Second Division (सेकेन्ड डिवीजन) में पास हो गए''- - - - - - - - - - - - - '' (बो०ट०- 76)

"मदन ने झट तार का जवाब इस भांति दिया Very much pleased, will see Bombay on Friday मानो बहुत खुशी हुई, शुक्र के दिन बम्बई को रवाना हुए'' - -
(बो०ट०-77)

"कांग्रेस के जितने (Presidents) सभापति हो चुके हैं - -(बो०ट०-85)
उसमें खर्च को दरक लिखा था (good debt Rs 45) अर्थात भलाई वाले उधार 45) रु0 - - - - - - - - - - (बो०ट०-92)

विदेशी शब्दों में अरबी फारसी शब्दों के प्रयोग भी विचारणीय हैं। अरबी फारसी शब्दों का अंग्रेजी रूप उपर्युक्त उदाहरणों में दिया गया है । अरबी फारसी शब्दों के प्रयोग में लेखकों का अपना अलग अलग दृष्टिकोण रहा है । इस प्रकार के शब्दों के

प्रयोग में सामान्यतः एक कारण यह है कि जहाँ पर भाषा की व्यंजना शक्ति तथा उसके प्रवाह में क्षिप्रता उत्पन्न करने और शब्द चयन में लेखकों का उदार दृष्टिकोण रहा है। वहाँ पर अरबी फारसी के अत्यधिक प्रचलित शब्दों को यदा कदा प्रयोग किया गया है। इससे न केवल भाषा जनसामान्य की वस्तु बन गई है वरन् वह जटिलता, दुर्बोधता और अस्पष्टता के बोझ से भी मुक्त हो गई है इस प्रकार की भाषाशैली का उदाहरण निम्नलिखित अंशों में देखा जा सकता है।

"बस? सर्द हो गई। क्यों लोला? अब कुछ जबान से नहीं निकलता? अब जाओ, खुद समझो और अपनी सखी को समझाओ। आज कल के जमाने में मुहब्बत, इश्क, प्रेम कहीं नहीं है किसी में नहीं है। मेरी समझ में तो मुहब्बत का दावा करने वाली दुनियाँ पानी का एक बुलबुला है, जो उठता है और गिरता है, या तो यों कहो कि छल और कपट से भरा हुआ मुखारा है, जो अपर बहुत शोर गुल करता है मगर है अन्दर से बिलकुल ही खाली है------" (प्रेमयोगिनी- 97)

अथवा

"मुझे आप से तनहाई में कुछ राज जाहिर करना है---- अजी सरकार, जरा बंदे की अर्ज तो सुन लीजिए।

× × × ×

जरा तखलिए में तशरीफ लाइए और इसका राज सुन लीजिए---(रायबहादुर- 158)

कहीं-कहीं अरबी फारसी शब्दों का प्रयोग लेखकों की शैली गत विशेषता है। इस प्रकार की भाषा उन लेखकों की कृतियों में पाया जाता है जो पिछले समय उर्दू में लिखा करते थे किन्तु बाद में हिन्दी में रचना करने लगे द्विवेदी युग के अधिकांश लेखक पहले उर्दू में ही लिखते थे और इसका प्रभाव उनके शब्दचयन पर भी पड़ा है प्रेमचन्द की शैली इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है- यथा---

"मालूम हो जाता कि हमारी जिन्दगी का क्या मकसद है, हमें जिन्दगी का लुत्फ कैसे उठाना चाहिए हम कोई भेड़-बकरी तो हैं नहीं कि माँ-बाप जिसके गले मढ़ दें बस उसी के हो रहें। अगर अल्लाह को मंजूर होता कि तुम मुझे औरतें ढेलें तो मुझे परियों की सूरत क्यों देता? यह बेहूदा रिवाज यहाँ के लोगों में है कि औरतों को मुंह दिखाना जलील समझते हैं नहीं तो और सब मुल्कों में औरतें आजाद हैं, अपनी पसन्द से शादी करती हैं"

(सेवासदन-54)

कहीं-कहीं पात्र तथा वातावरण के अनुकूल भी अरबी फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। ऐसे स्थलों पर पात्र मुसलमान हैं जिनकी भाषा पूर्णतया अरबी फारसी की हो गयी है जो वातावरण के अनुकूल भी है। अरबी फारसी शब्दों से सम्पन्न भाषा शैली का उदाहरण निम्नलिखित अंश में देखा जा सकता है —

'' लेकिन मेरी बदकिस्मती की वजह से आते ही ऐसी बात छिड़ी कि अब वह बात आप से कहना गैरमुनासिब मालूम होता है। मैं अभी खेमे के बाहर चला जाता लेकिन रुखसत होने के पहले एक बात आप से कहना चाहता हूँ। बात तो घराऊ है और उसे कहना अपने लिए शर्म की ही बात है तो भी फ़र्ज़, मुनासिबत और इन्साफ़ के ख्याल से आप से कहना ही वाजिब मालूम होता है। क्या आप वह बात सुन सकते हैं?

(नवाबनंदिनी-9।)

ख वर्गीकरण

— 000 —

सामान्य परिचय के अन्तर्गत तात्कालीन भाषा में प्रयुक्त जिन शब्दों को दिखाया गया है उन्हें व्युत्पत्ति या स्रोत के आधार पर तीन वर्गों में रखा जा सकता है।

3- क-1— स्रोत के आधार —

(1) भारतीय आर्यभाषा के शब्द
(2) देशी शब्द
(3) विदेशी शब्द

क-2 रचना के आधार पर पुनः इन्हीं शब्दों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है

(1) मूल या प्रातिपदिक या प्रकृति शब्द

(2) व्युत्पन्न या यौगिक शब्द

~~(3)~~ इस प्रकार स्रोत और रचना दोनों ही आधारों पर विचार करने से कुल छः वर्ग हो जाते हैं।

(1) भारतीय आर्य भाषाओं के प्रातिपदिक

(2) देशी प्रातिपदिक

(3) विदेशी प्रातिपदिक

(4) भारतीय आर्यभाषाओं के यौगिक
(5) देशी यौगिक
(6) विदेशी यौगिक

ख-1-क भारतीय आर्य भाषाओं के प्रातिपदिक*

भारतीय आर्य भाषाओं से तात्पर्य प्राचीन काल से आती हुई भाषा से है जिसे निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

संस्कृत के तत्सम् तथा प्राकृत अपभ्रंश के तद्भव शब्द।

हिन्दी बोलियों के शब्द।

अर्ध तत्सम् शब्द

ख-1-क-1 तत्सम प्रातिपदिक

तत्सम् शब्दों के प्रयोग में तात्कालीन भाषा में हमें एक क्रमागत वृद्धि दिखाई पड़ती है जिसके फलस्वरूप उत्तर कालीन गद्यभाषा में तत्सम प्रधान शब्दावली को ही अधिक प्रधानता रही है यद्यपि इसके पूर्वार्ध में भी अनेक ऐसे लेखक थे जिन्होंने शुद्ध संस्कृत के शब्द को ही अपनाया है। तत्युगीन गद्य कृतियों में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली को शब्दभेदों के अनुसार निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है —

(1) <u>संज्ञा</u>

संज्ञा की दृष्टि से इस युग के तत्सम् शब्दों में वस्तुवाचक संज्ञापद और भाववाचक संज्ञा पद दोनों को ही प्रधानता है जो अधिकांशतः रूढ़ हो गए हैं —

क- वस्तुवाचक संज्ञापद -

(1) व्यक्ति या नामवाची संज्ञापद —

जगत(नागानंद-95) | ब्रह्माण्ड(नवाबनंदिनी-2)
भगवान(,, -97) | ईश्वर(भो॰प्र-24)
विधि(र0बेगम-7) | चन्द्रमा(मर्यादा- 1979-2)

(2) जातिवाचक संज्ञाएं —

कुमुदिनी(सर01904-14) | सर्प (लक्ष्मी-1908-23)
मानव(आरण्यबाला-99) | राष्ट्र(मर्यादा(1916-239)
पुरुष(मनोरमा-177) | बालक(मर्यादा-1979-510)
मूर्ति (लेखा- 39) | सुन्दरी(मर्यादा- ठ0ठ0गौ0163)
गौ(माधुरी-1925-264) | स्त्री (प्रभा 1970-215)

जाति वाचक संज्ञाएं अर्थवान होती हैं। अतः अर्थ के अनुसार जातिवाचक

* प्रातिपदिक से तात्पर्य हिन्दी कोशों में नियत प्रातिपदिक शब्दों से है। यौगिक के अन्तर्गत केवल उपसर्ग और प्रत्यय से युक्त शब्दों को ही रखा गया है।

संज्ञाओं को निम्नलिखित उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

धर्म संबंधी

साधु (चन्द्रधर-58)	ऋषि (सर0-1904-88)
ब्राह्मण (मालविका0-26)	मुनि (कृष्णार्जुन युद्ध-5)
ब्रह्मचारी (ब्र0या0-58)	पंडित (लम्बोदाढ़ी-36)

संबंध संबंधी—

माता (महावीर चरित्र 17-54)	भगिनी (मृच्छक-116)
शिष्य (,, ,, 51)	कुल (नागानंद 34)
पिता (जोहामोतलवार-110)	पत्नी (गौतमबुद्ध-31)
मित्र (अत्याहरण-238)	पुरोहित (मालविका-49)
गुरु (संयोगिताहरण- 2)	कन्या (वीमित्र-13)
सखी (भीष्म-46)	पुत्री-(वैवाहिक अत्या0-36)
पति (मर्यादा-1911-9)	पुत्र (महा0पं0-16)
बंधु (रावबहादुर-160)	वधू (भारती-369)

व्यवसाय संबंधी

विदूषक (नागानंद-14)	वैद्य (प्रेमयोगिनी-46)
राजा (राजकुमारी-144)	अमात्य (चन्द्रशेखर-177)
नायक (दो मित्र-62)	नायिका (,, -3)
कंचुकी (माधवानलकाम-46)	आचार्य (वि0को0गुमिक
सूत्रधार (महाभारतना0-4)	नट (संयोगिताहरण प्रस्तावना)
कवि (र0र0-24)	प्रतिहारी (मालविका0 -1)
	मंत्री (सम्मो-1908-24)

शरीर संबंधी—

कपाल (नागानंद -69)	मस्तक (मल्लिका-25)
कर्ण (स्व0म0को0र0-15)	ओष्ठ (,, -35)
प्राण (चन्द्रधर-10)	शिरा (अपूर्व आत्मत्याग-79)
आत्मा (दुर्गावती-135)	नयन (उषा0-142)
सिर (वि0को0-16)	रक्त (वनवीरना-3)

- -

* प्रातिपदिक से तात्पर्य हिन्दी कोशों में विद्यमान प्रातिपदिक शब्दों से है । यौगिक के अन्तर्गत केवल उपसर्ग और प्रत्यय से युक्त शब्दों को ही रखा गया है ।

जिह्वा(महा०ई०-8)   कुचा(कोष म-41)
मुख(महाभारत ना०-8)   हृदय(मायापुरी-147)
चरण(आनंदमठ-24)   केश(अद०खून०- 91)
दृष्टि(चन्द्र 1927-37)   नेत्र(प्र०या०-58)

शरीर के व्यापार संबंधी--

आंखो(नागानंद-76)   तृष्णा(प्रेमयोगिनी-21)
ध्यान(महाभारत-ना०-11)   बुद्धि(उमा-72)
स्पंदन(प्रेमयोगिनी-5)   बल(मल्लिका-35)
मनोरथ(मालविका-61)   चिन्ता(आ०हि०-146)
धर्म(अद०खू०-43)   कंपित(मनोरमा-68)
क्षुधा(आनन्दमठ-27)   अश्रु(रू० न० की राज०-10)

खाद्य संबंधी--

भोज(कु०व०व०-2)   दुग्ध(कौमी तलवार-97)
जल(आनन्दमठ-8)   मदिरा(,, -137)
मद्य(अपूर्व आत्म०-6)   अन्न(मर्यादा-1912-52)
भोजन(महा०ई०-8)   मधु(गल्प कुसु०-25)
ताम्बूल(माधवानल-47)   तिल(संयोगितास्वयं-112)

परिधान संबंधी--

उत्तरीय (नागानंद-65)   दुकूल(मल्लिकादेवी-128)
अंचल(प्र०या०-58)   कंचुकी(माधवानल का०-46)
वस्त्र(चित्रशाला-49)   अम्बर(,, 166)
उपवीत(माधवानल-166)

धन तथा अलंकार संबंधी--

चूड़ामणि(नागानंद-76)   मणि(प्रेमयोगिनी-57)
शिखामणि(,, -76)   नूपुर(माधवानल का०-47)
कुण्डल(खरा सोना-89)   अलंकार(नलिनि बा०-5)
रत्न(चन्द्रहार-2)   कंकण(गल्प कुसु०- 62)
स्वर्ण(संयोगितास्वयं-113)   सम्पत्ति(रजनी-57)
कर्णफूल(खरा सोना-81)   धन(मायापुरी-258)
मुद्रा- संयोगितास्वयं-116)   मणि-माणिक्य(संयोगितास्वयं-119)

काल संबंधी--

शरद् (आनन्दमठ-47)   ऋतु(ठ०ठ०गौ०-196)
दिवस(संयोगितास्वयं-56)   रात्रि(नवाबनंदिनी-1)

मध्याह्न(मल्लिका-36) — संध्या(अ०च०-10)
काल(कुकुरमुत्ता का काटा-23) — प्रातः (न०वि०-29)
मास(प्रभा-1970-4)

स्थान संबंधी--

मंदिर(स०-1904-14) — आकाश(ठ०ठ०गी०-141)
गुफा(,, -14) — भूमि(नागानंद-58)
पर्वत(महा०ई०-55) — नेपथ्य(नागानंद-48)
स्वर्ग(कुसुमय जीवन-15) — पाताल(संयोगिताहरण-100)
संसार(कर्ण-96) — राज्य(कर्ण- 123)
सृष्टि(स०1926-115)

दिशा संबंधी--

उत्तर(राजकुमारी-68) — दक्षिण(तारा-89)
पूर्व (दो मित्र-14) — पश्चिम(संयोगिताहरण-97)

साहित्य संबंधी--

अक्षर(स०-1903-102) — वेद(महावीर प०न्या०-प्रस्तावना-1)
पुस्तक(स०-1904-141) — शब्द(कु०व०व०-15)
विज्ञान (,, ,, -8) — उदाहरण(पद्मपराग-30)
श्लोक(माधुरी-1925-260) — व्याख्या(,, -26)
ग्रंथ(अधखिला फूल-18) — पुराण(वि०श०-भूमिका-)
शास्त्र(मालविका मित्र-6) — नाट्य(गीतमधुप-88)
साहित्य(महाभारत-4)

जीव जन्तु संबंधी--

कोकिला(मधावनविनो-1) — पक्षी(आनन्दमठ-21)
विषधर(नागानंद-80) — कुंजर(नागानंद-110)
सर्प(मारवाड़ का०-166) — भ्रमर(कृष्णकांत का वा०-110)
नाग(संयोगिताहरण-100) — प्रजापति(,, -102)
पशु(मनमोर न०-11) — अश्व(मल्लिकादेवी-31)

(3) भाव वाचक संज्ञाएं--

जिस संज्ञा से पदार्थों में पाये जाने वाले किसी धर्म का बोध होता है उसे भाव वाचक संज्ञा कहते हैं । 'भाव' शब्द का उपयोग मुख्यतः तीन अर्थों में हुआ है --

(1) गुण या धर्म के अर्थ में ।

(2) अवस्था के अर्थ में ।

(3) व्यापार के अर्थ में ।

इन दोनों हो अर्थों से संबन्धित संज्ञा पद मुख्यतः जाति वाचक संज्ञा, विशेषण और क्रिया शब्द दोनों से ही बने हैं। यहाँ पर इन दोनों ही अर्थों से संबन्धित कुछ भाव-वाचक संज्ञा पदों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

गुण या धर्म संबन्धी

श्रद्धा (सर0 1904-88)	गौरव (सर0 1905 -पृ64)
विषाद (नागानंद-24)	अन्याय (प्रेम लता-146)
क्षमा (सु0बो0-146)	पाप (आ0डि. 188)
सत्य (प्र0च0-58)	कलंक (र0र0-38)
	प्रशंसा (र0र0-38)

अवस्था संबंधी

कुतूहल (सर0 1904-14)	संताप (रूप नगर की राजकुमारी-274)
उन्नति (,, 232)	विषाद (नागानंद-24)
धैर्य ((वि0कर्त0-5)	दुःख (प्रेमयोगिनी-3)
मौन (मणि लता-56)	संकट (आ0डि0-80)
विपत्ति (मर्यादा-1979-34)	परीक्षा (स0वि0-8)
सुख (नो0कि0-44)	आनन्द (भिखारिणी-51)

व्यापार संबंधी

स्तुति (सर0-1904-15)	मोह (उमा-35)
शाप (सर0-1907-144)	पाठ (संयोगिता हरण-2)
सत्कार (प्रेमयोगिनी-73)	परित्याग (मर्यादा-1979-510)
निद्रा (मल्लिका-31)	पूजा (च0ना0-2)
उद्योग (1652/14 पद्मसिंह शर्मा)	नाश (गल्प कुसु0-65)
जन्म (माधुरी-1925-260)	त्याग (मनोरमा-29)

(2) सर्वनाम—

स्वतः (संयोगिताहरण-41)	निज (उत्तर राम0 मानस-22)
स्वयं (सु0वि0-117)	

(3) विशेषण— : द्विवेदी युगीन गद्य में तत्सम् विशेषण शब्द मूल रूप में अधिक नहीं हैं जो हैं वे अधिकांशतः गुणवाचक ही हैं । यद्यपि कहीं कहीं संख्यावाचक विशेषण के रूप में मिलते हैं :-

(क) गुणवाचक:-

नवीन (सर0-1904-88)	उष्ण (मणि लता-35)

प्राचीन(सूर्यग्रहण-32)
निपुण(सर०-1904-15)
विमल(मनोरमा-97)
वृद्ध(मर्यादा-1919-514)
शून्य(गल्प कुसुम०-93)
चतुर(मौ०नि०-15)
मृदु(मर्यादा-1917-308)

ललित(मनोरमा-85)
मधुर(माधवानल-46)
कोमल(वन०ना०21)
महान(प्र०पा०-58)
तेज(प्र०पराग-20)
श्वेत(नागानंद-26)
श्याम(माधवानल-63)
वक्र(संयोगिताहरण-97)

ख- संख्यावाचक:-

संख्यावाचक विशेषणों में केवल गणना के ही तत्सम रूप मिले हैं । अन्य संख्या वाचक विशेषण तद्भव रूप में है या यौगिक रूप में, इनका विवेचन आगे किया गया है (देखिए— २ख-१-२ विशेषण III-२ख - संख्यावाचक)

एक(मालविकाग्निमित्र-3)
द्वय(,, -4)
त्रय(उत्तर राम०मानस-152)
चतुष्पदि(मा० विकाग्निमि०-15)
पंच(मालविकाग्नि-5)
शत(नागानंद-98)
सहस्त्र(मर्यादा-1912-52)

षष्ठ(नागानंद-100)
सप्त(शो०द०-24)
नव(मालविका-2)
दश(वि०क्रो-72)
कोटि(मीराबाई-91)
लक्ष(रोशनआरा-109)

(4) धातु:-

यद्यपि आधुनिक खड़ी बोली में मूल तत्सम धातुओं का प्रयोग नहीं के बराबर होता है किन्तु इस काल में नाम धातुओं के साथ ही साथ मूल तत्सम धातुओं का प्रयोग भी अपेक्षाकृत अधिक हुआ है — यद्यपि परम्परागत प्रयुक्त नाम धातुओं के रूप यौगिक और तद्भवही अधिक रहे हैं । इस काल के कुछ मूल और नाम धातु रूप जिनका प्रयोग आधुनिक खड़ी बोली में कम होता जा रहा है निम्नलिखित हैं :-

क- मूल तत्सम:-

ध्या(धनुष यज्ञ-8)
दाह(माधवानल-144)
त्याग(,, -28)
पूज(मीराबाई-55)

गुहार(मैनिया म०का या-74)
वर्ष(,, ,, -58)
खोद(महाभारत ना०-38)
रच(माधवानल-17)
रुच(रणधीरप्रेम मो०-102)

प्रयोग:-

प्रयोगः-

मुनिगण दिन रात ध्याते हैं (हनुमान्नाटक ना0-8)
अंगार के समान भासतो है(माधवानल-काम0क0-28)
विरहानल देह को दाहतो है (,, -144)
सावधान में रचा होगा (,, -17)
स्वागत करने के लिए आदर से बुलावे(बे0ना0का0न्या0-74)
नियम के अनुसार वर्तता है (,, -52)
छोटे मुंह बड़ी बात नहीं सोहतो(भा0भारत-38)
व्हैं तो यहो कहता है (रायबहादुर-55)

क- नाम धातुएं-

नाम(ऊषा अनिरुद्ध-85)
जन्म(संयोगताहरण-41)
लाज(आ0हि0-116)

प्रयोगः-

हमारो चिन्तायें नसावें गो(ऊषा अनिरुद्ध-85)
जनमो तुम्हारो लाजे गो(आ0हि0-116)
सिंह के कुल में गोदड़ हो कर जन्मा(महाभारत ना0-92)

(5) अव्ययः-

अव्ययों में अधिकांशतः क्रियाविशेषण हो अपने मूल रूप में हैं । शेष अव्ययों की संख्या अपेक्षाकृत कम है यथा-

क- क्रियाविशेषणः-

नित्य(उमा-92)	पुनः (सावित्री-54)
अनेक(विवाह कुसु0-7)	कृपा(न0वि0च0-98)
सुतरां(उत्तर राम0का0'-6)	बहुधा(भारतचोर प्रेम यो0-109)
नितांत(माधुरी-1925-207)	शोघ्र(प्र0पा0-28)
अकस्मात(लक्ष्मी-1908-23)	सहसा(किरातरणी-103)
अब तब(गो0मि0-15)	इतः ततः (चौहानों तलवार-2)
प्रायः (सेवांजलि-10)	

ख- सम्बन्ध सूचक अव्यय-

समेत(शकुन्तला-नाटक-19)	अनन्तर(आ0हि0-132)
अतिरिक्त(चन्द्रहास-2)	समीप(कृष्णार्जुन युद्ध-44)
निमित्त(नागानंद-17)	प्रति(सूर्यग्रहण-67)
विरुद्ध(उमा-56)	हेतु(प्रेमयोगिनी-91)

द्वारा (पद्मपराग-36)
प्रति (कुर्मावती-228)
कारण (चन्द्रशेखर-117)
अपेक्षा (नवाबनंदिनी-5)

पूर्वक (राधबहादुर-114)
उपरान्त (गंगावतरण-23)
निकट (वि०प्रो०-377)

ग- समुच्चयबोधक अव्यय

या (प्रेम प्र०-31)
अथवा (र०र०-38)
अतः (कृष्णार्जुन -युद्ध-66)
किन्तु (नवाबनंदिनी-1)
परन्तु ([illegible]-102)
आदि (गो०नि०-14)
अन्यथा (सावित्री-27)

तथा (उ०रा०च०नाटक-21)
वरन्(या०स०-40)
अतएव (न०म०च०-36)
यद्यपि (सम्मो-1908-23)
एवं (गद्यमाला-141)
अस्तु (माधुरी-1925-261)
किंवा (इन्दु-1917-39)

घ- विस्मयादि बोधक अव्यय :-

अरे! (नागानंद-76)
अरे(मालविका-42)
धन्य! (संयोगिता हरण-45)
छिः छिः! (संसार-168)

आह! (द्रौपदी चीरहरण-35)
अहा! (प्रेम प्रतिमा-18)
हा! (सती चिन्ता-99)

ख -1 - क -2 तद्भव प्रातिपदिक - शब्द

तत्सम् के समान ही तद्भव शब्दों की संख्या भी पर्याप्त है। शब्द भेदों के अनुसार तद्भव रूपों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं —

(1) संज्ञा- वस्तुवाचक—

(1) जाति वाचक—

लोग(सर0-1904-137) गाँव(र0र0-25)

गाहक(गल्पमंजरी-33) बाल(सर01917- -30)

बुढ़िया(सु0वि0117) साँप(वि0कसौ0-377)

अर्थ के अनुसार तद्भव जाति वाचक संज्ञाओं को भी निम्नलिखित वर्गों उपवर्गों में भिन्न विभक्त किया जा सकता है —

संबंध संबंधी—

माँ(नागानंद-79) भाई(चे0ट0-87)

बहू(महावीर च0110) बाप-दादा(आ0हि0-80)

भैया(तुलसीदास-94) भाभी(मर्यादा-1916-265)

बहन(भीष्म-16) चाचा-चाची(सर01920-262)

बहनोई(तारा-95) बुआ(तारा-64)

मामा(कर्ण-96) सास(मान सर0-164)

साला(मान सरो0-156)

व्यवसाय संबंधी—

गूजर(आ0हि0-217) कुम्हार(महाभारत-ना0-2)

तेली(,, 217) चमार(,, -2)

नाई(वि0कसौ0-30) भंगी (,, -2)

ग्वाला(रायबहादुर-3) लोहार(कुमारसंभ0-5)

सेठ(चन्द्रशेखर-153)

शारीरिक अवयव संबंधी—

हाथ(सर01904-119) माथा(नयाचनीतिनो-9)

गाल(सर0-1905-21) दाढ़ी-मूँछ(नयाचबीतिनो-11)

होंठ(चन्द्रधर-1) हड्डी(सर0-1905-21)

सिर(आत्मदाह-311) नाक(दुर्गावती-34)

आँख(अव0बु0-91) दाँत(र0र0-95)

कान(संयोगिताहरण-96) पाँव(कु0उ0पौ0-189)

मुँह(मनोरमा-1925-301) गंगुली(विoकथीo-9)

आंतरिक व्यापार या विकार संबंधी:-

प्यास(लक्ष्मी-1908) नींद(गोoनिo-14)
भूख(आनन्दमठ-4) सवाद(ठoठoगोo-96)
आँसू(मर्यादा-1979-516)

खाद्य संबंधी:-

घी(नवावनीतिनी-25) मद(मालविका-24)
घास(मलिनी-28) माखन(कलयुगोपरिचारक 15)
मिठाई(मालविका-46) गेहूँ(गोदान-10)
भात(मायापुरी-286) खीर-पूरी-(तुलसीदास-94)
धान(आoहिo-217) तेल(सरo1917-30)
दूध(,, 69) दाल(सरo1917-30)
मालपुआ(महाoईo-8) बड़ी(प्रेमाश्रय-68)

परिधान संबंधी—

अंगरखा(वीoदoo-15) धोती(उमा-92)
सारी(मoनिo85) गमछा(नवावनीतिन-38)
आँचर(नवावनीतिनी-39)

धन तथा अलंकार संबंधी—

करधनी(नागानंद-49) पैसा(मनोरमा त नाo-108)
छोरा(तारा-66) रूपया(श्रीमती मंजरी-81)
मोती(उमा-63) अंगूठी(चन्द्रकांता व -17-25)
नग(Hकविकाo56 पदक(हीo दo -25)
घूँघरू (मायाजाल कामकन्दला-47) मड़ो(अवo बुनo-48)
बैंदी(,, ,, -45) माला(मल्लिका-36)
करनफूल(मधुमालती- माo25) कंगन ,,-121)
पैजनी(उमा-35)

स्थान संबंधी—

घर(नीलमणि- 46) राज(...म ग्रीमo-24)
देस(आoहिo-16) गाँव(रoरo-24)
देश(भारo-औo190)

नाम(प्रेम यो0-21)
काम(सूर्यग्रहण-12)
चाल(अपूर्व आत्म-67)
परख(प्रेमयोग-54)
झाड़(तारा-45)
भाँग(दुर्गावती -96)
नाच(चन्द्रशेखर-24)
बात(आनन्द इमठ-8)
उजाड़(गंगावतरण-19)
तौल(वेनिस का व्यापारी-65)
खान-पान(सावित्री-198)

(2) सर्वनाम—

हिन्दी में प्रयुक्त लगभग समस्त सर्वनाम तद्भव ही हैं। इस युग में भी सामान्यतः यही सर्वनाम प्रयुक्त हैं। अतः इसके लिए देखिए व्याकरण अध्याय का 3-2 सर्वनाम—

(3) विशेषण—

तद्भव विशेषण की संख्या भी तत्सम की अपेक्षा अधिक हैं। प्रायः ही तद्भव विशेषण या तो अन्य शब्द भेदों से बने हैं या यौगिक हैं (देखिए व्याकरण प्रकरण-3-3 विशेषण) मूल रूप में उपलब्ध तद्भव विशेषणों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सका है (1) गुण वाचक(2) संख्या वाचक

क- गुणवाचक—

पतला(सर01903-101)
बड़ा (सर0-1904-16)
काला(संयोगिता हरण-79)
नए(हे0 हि0रा0-57)
ऊँचा(मर्यादा-1914-208)
लम्बा(दुर्गावती-58)
छोटा(उषा0-3 इत्यादि-)
कड़आ(प्रेम यो0-54)
मोटा(प्रेम यो054)
बूढ़ा(जु0से0-43)
मोखा(कृष्ण अर्जुन युद्ध-55)
हरा(पौ0रु0-1)
सच्चा(ऊषा अनिरुद्ध-81)

ख- संख्यावाचक—

संख्या वाचक विशेषणों में गणनात्मक, कमिक परिमाणवाचक के ही मूल तद्भव रूप उपलब्ध हैं। व्याकरण अध्याय के विशेषण प्रकरण में इनका विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है (देखिए —— 3.4 - ग संख्यावाचक विशेषण) यहाँ पर मात्र कुछ ही उदाहरण दिये जा रहे हैं।

ख - 1 गणना वाचक पूर्णांक

एक(वनवीरना0-116)
छ(वि0क्षौ0-410)

दो(बुद्बुद का काँटा-25)	सात(बुमवार आ0-15)
तीन(चौ0द0-14)	आठ(सुखमय जीवन)10)
चार(चिमकाल-12)	नौ(रावबहादुर-117)
पाँच(हेमलता-64)	दस(रमा बाई-1)
लाख(नोक-झोंक-42)	करोड़(तुलसीदास-100)

क- (2) गणनावाचक अपूर्णांक।-

सवा(रावबहादुर-118)	साढ़े(बुद्बुद का घाटा -25)
आधा(तुलसीदास-54)	
पौने(वि0कसौ0262)	
ढाई(मिश्र प्रति0-59)	
डेढ़(चौ0द0-24)	

क-(3) परिमाणवाचक ।-

सारा(मातृ्वात्सल्य(कामकन्दन15)
पूरा(सूर्य ग्रहण-14)
बहुत(कम्बखेड़ार-117)

(शेष विशेषणों के लिए व्याकरण प्रकरण - 3-3 विशेषण —

(4) धातु।-

हिवेदी युगीन तद्भव धातुओं की संख्या बहुत ही अधिक है, यहाँ पर न तो उन सब की गणना ही की जा सकती है और न ऐसा करना संभव ही है । अतः प्रतिनिधि के रूप में यहाँ कुछ धातुओं को दिया जा रहा है यथा——

जान(कम्बखर-14)	बोल(मस्तिष्क-25)
पढ़(रमाबाई-1)	बच(पु0ह0-51)
सुन(स01904-8)	बढ़(कु0व0व0-64)
फेर (या0स0-35)	मिल(कृतनाट।-68)
कर(तारा-19)	माँग(तुलसीदास-10)
उड़(ठ0ठ0गी0-108)	खोल(आ0हि0-80)
चढ़(वि0कसौ0-395)	उठ(आत्मदाह-149)
पढ़(बु0वि0-105)	रट(आ0हि0-144)
फूँक(प्र0या0-55)	जा(मर्यादा-1911-192)
खोंच(र0र0-69)	रख(लक्ष्मी-1908-24)
दौ(मर्यादा-1916-169)	के रो(आ0हि0-120)
फैल(गो0नि0-7)	लग(मनोरमा-85)
कह(प्र0या0152)	सुन(दो मित्र-36)
बन(टा0क्ष0कु0248)	कर(महाभारत भा0-20)
चक(रक्तकुरा पीठ-70)	पा(होले-151)

इसी प्रकार की अन्य तद्भव धातुएँ भी बड़ी संख्या में है ।

(5) अव्यय

तद्भव मूल अव्ययों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। अधिकतर अव्यय दूसरे शब्दों से ही व्युत्पन्न हैं । फिर भी विवेच्य युगीन तद्भव प्रातिपदिक अव्ययों के निम्नलिखित रूप हैं :-

(क) क्रिया विशेषण—

आज(जनवीर ना0-81)	सदा(गद्यमाला-147)
कल(माधुरी-1925-261)	अब(प्र0या0-26)
जब (वि0क्वी0-395)	पहले(अशु0-68)
तब(गल्प कुसु0-64)	कब(कु0ब0द0-30)
आगे(नवाबनंदिनी-32)	बार-बार(मल्लिकादेवी-86)
जहाँ(उमा-92)	पीछे(भूलभाद I-6)
कहाँ(महात्माविदुर-109)	यहाँ(कुमार आ0-79)
	परसों(आत्मदाह-10)

(ख- संबंध सूचक अव्यय:-

विभक्तियों और थोड़े से अव्ययों को छोड़ कर हिन्दी में मूल सम्बन्ध बोधक अव्यय कोई नहीं है । अन्य जितने भी संबंध सूचक अव्यय हैं वे या तो यौगिक हैं या अन्य शब्दभेदों के साथ संयुक्त हो कर आते हैं । इनका विस्तृत विवेचन व्याकरण अध्याय के अव्यय प्रकरण में किया गया है । देखिए व्याकरण - 3-5 अव्यय- उदाहरण रूप में यहाँ कुछ मूल संबंध सूचक अव्यय दिये जा रहे हैं —

भर(छोटी बहू-30)	ओर(दुर्गावती-90)
तक(आत्मदाह-41)	पास(चन्द्रकांता-10)
भरोसा(प्रेम यो0-5)	मारे(भीष्म-86)
सामने(मालविका-54)	लिए(कर्म -123)
मध्ये(शकुन्तला ना0-47)	लेखे(जु0ले0-21)
भाई(संसार-4)	पर्दे(प्रभा-1970-190)

ग - समुच्चयबोधक—

और(रणधीर प्रेम मो-100)	सो(राजकुमारी-151)
कि (महावीर चरित्र ना0-60)	तो(राजारियार्ड-37)
यों(वि0क्वी0382)	

(2) सर्वनाम

सर्वनामों के लिए देखिए व्याकरण अध्याय का सर्वनाम प्रकरण का विशेष अंश। साथ ही विशेषण प्रकरण में उल्लिखित सार्वनामिक विशेषण के विशेष अंश भी । इनमें कौशिक सर्वनामों के पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों ही बोलियों के रूपों का प्रयोगगत विवेचन किया गया है यहांपर पूर्वी बोलियों के कुछ सर्वनामों को दिया जारहा है —

मेरे हो ऊपर न जाने किस पाप से यह विपत पड़ी (हत्यारहस्य-204)
लेकिन यह बड़ी बेलज्ज सरकार मार डाले तो ओके देह में लगे नाहीं(,, -205)
जो तोके मरना है तो मर हम इस विवाह में अब नाहीं नहीं करें गें(,, -207)

(3) विशेषण—

सुन्दर रूप को देख कर मोहित था(वनिता वि0 -68)
तुम तो बाबे भाकोस अबूझ हो(हत्या रहस्य-7)
के हाथा लम्बो रहो (, -11)
ये अबलम्ब का टूटर टापर जो बर्बरो नगरी में गिरा(हत्यारहस्य-105)
हमारे कतुनों पुरुत में कचहरी के ((,, 204)
हमारे बाबा बड़े गियानो रहे -(,,204)
सरकार कितनों साफ कह दिया (,,205)
जे दिन आप जियें गें (,,233)
किन्तु थोड़ही उमा ने बाबा की इन बातों को (उमा-26-)
बड़ो बुलन्द लड़को हो (उमा-7)
कोकिला का नोको ध्वनि होतो है (कथायामल -16)
आज बोलिए तो सोने सोने प्रद्युम्न सों कुंवर दोनों साज कर ले आऊं(सुनुरजक-100)

(4) क्रिया

अपने ही हाथ से अपना शोश छिन्न रहे हैं (सु0वि0-18)
आप यहीं बैठें आप की मानसिक व्यथा मैं दूर कर दूंगा(संयोगिताहरण-57)
इस भांट दोनों मेरा जी उकता गया(-,, -75)
जयचन्द्र से बैर बिसाहना ऐसा होता है (--- ,, -74)
सारो सेना सहित कन्नौज की गंगा में बोर सकता हूँ (,,10)
पानी में कचार देना ठीक नहीं (उमा-25)
तीन उघारे-चौको पर बैठे (हत्यारहस्य-1)

कोल्हने को चाहने ही अपना छिपा लिया था (हम्मीरहठ य-11)

होनासिंह अनुरूप पुकारा गया है (,, -90)

महेन्द्र इधायु ढाढुँम गये (नलिनी बाबू-22)

दूसरों को पतियाना ((अधि0 खि0 फू0-168)

बहुत देर से तुम को अगोर रहा हूँ (ठेठहि0ठा0-73)

यह बुढ़राने से सोचा नहीं होगा(,, -65)

हरदेवो को क्या पर लगे हो जो हहरा कर आसमान में उड़गई(ठ0ठ0गे0-8)

वैसे ही सब बिलाय गये (अव0धू0-279)

दुनिया को छील रहे हैं - - -(माधवानल-106)

मनुष्यों के तन झार-झार छार कर दिए(माधवानल-112)

(5) अव्यय:-

अव्ययों के जो कुछ रूप मिले हैं उन्हें अलग अलग न दिखा कर एकही साथ दिखाना उचित होगा —

महेन्द्र को फेर फिर आए देख सत्यानंद बोले फेर फिरे क्यों (आनन्दमठ-27)

टुक उस झरने पर दृष्टि तो डालो(संयोगिताहरण-8)

कोई बात समय बिन अच्छी नहीं लगती (रणधीर प्रेम मो0-141)

बेधड़क घर घर जाती करती अरु यह रागिनी गाती चली जाती हो(माधवानल-19)

आप कृपा द्वारा से दर्शन कर लेव मेरे मति आइयो(धनुषयज्ञ-43)

मेरे धीरे से हट जाओ मुझको बस जाने दो (माधवानल-140)

इस विपत्ति से वेगि बचाओ(,, -145)

(शेष के लिए ' क्रिया के काल रूप एवं प्रयोग' के विशिष्ट रूप को भी देखिए, जिनमें पश्चिमी बोलियों के प्रभाववश क्रियारूपों में उपलब्ध परिवर्तनों को दिखाया गया है। देखिए ---3-5-ग

(5) अव्यय:-

अब रास्ते में इकले आते हुए --(मीराबाई -48)

इस बसंत में अमन कहाँ जाओगे - (संगीतगितारत्न-60)

जब लाई हमारे भावे पे हमारो छल रहेगो तब लाई हयो भूलू को हरन नां-हिदैं ---(रणधीर,प्रेम मो0-120)

आगत्या लाचार हो कर चिथवा विचारो ने (संसार-4)

ऐसा कौन मूर्ख है जो दौरे आ कर हमके फंदे में फंसे (माधवानल का0-35)

इस बात को अलक सलक सलक मेरे पिता के कान में पड़ो(,, -46)

बैर मति करो, करो प्रीत -- (,, -66)

मैं बहुत हौले हौले से आँधे पोलतो -(,, -61)

ख -1- क-4 अर्ध तत्सम शब्द

अर्धतत्सम शब्दों के अन्तर्गत उन शब्दों को रखा गया है जिनका उच्चारण अर्धविकास के कारण अंशतः परिवर्तित कर दिया जाता है। हिन्दीतो युगीन भारतीय आर्य भाषा तथा विदेशी भाषा के अर्धतत्सम शब्दों की यह अपनी विशेषता ठीक कही जा सकती है कि इनमें उच्चारणगत अर्धतत्समता ही पाई जाती है। इस प्रकार के अर्धतत्सम शब्दों -पदों में निम्नलिखित परिवर्तनों द्वारा अर्धतत्समता लाई गई है --

(1) स्वर लोप द्वारा -- (हिन्दी)--

जांत - पांत (नया जमींदार-28) | विपत(अचिलापूल -6)
इ मर्ज (अजब राम0प0मा0-69) | जैत(,, -45)
| विच(,, 174)

विदेशी -

पर्याद(पू0प0-82) | रपेत(संसार-22)
सवांर(पा0म0-17) | दर्बाजा(मनोरमा-1925-301)

(2) -स्वरभक्ति -द्वारा -

(2) स्वरागम द्वारा –

पिआड(इत्या रहस्य-206)	किरिया करम(ठे0 हि0 ठा0-37)
गियानो (,, -204)	विद्यारथो(संसार-52)
धरम(तुलसीदास-94)	अमरित(अथ0 फूल-171)
संकलप(आ0हि0-80)	परबंध(दुर्गावती-97)
पिनता(1712/15त्यागोबयाल)	
हिनदू (,,)	

विदेशी – अरबी – फारसी:-

गरमी(सर01905-121)	मुसकिल(संसार-58)
अयमी(पू0ह0-13)	बरथ(,, -6)
कबरिस्तान(महा0ई0-18)	हरम(मिजरिफ-11)
रसम(मर्यादा1927-24)	उमर(मोहम-16)

अंग्रेजी:-

गिलास(अव0यू0-289)	पबलिक(सर01907-149)
लेबोरेटरी(मोसमणि-62)	सेक्रेटरी(मनोरमा-1925-186)
सरटीफिकट(न0च0च0-36)	

(3) व्यंजन लोप द्वारा:-

जोस(अथ0 फूल-47)	उद्वेस(पद्मपराग-22)
ध्यान(प्रेमाश्रय-287)	परमेसर(दुर्गावती-97)
	हर्ष(मर्यादा-1979-29)

(4) व्यंजन परिवर्तन द्वारा— (हिन्दी)

असाढ(ठे0हि0ठा0-42)	बरखा(ठे0 हि0ठा0-38)
काजा(सर01904-118)	हजानी(लक्ष्मी1910-166)
जोग(नयावनीचिनी-26)	पुरको(कोष्म प्रतिका-13)
आंचर(चौहानो तलवार-16)	सोर्य(मर्यादा- 1979-25)
अभिलाख(गल्प कुसु0-44)	असमय(न0मि0-25)

विदेशी –

विशेष-

फारसी के जिन ध्वनियों का नुक्ता हटा कर हिन्दीकरण कर लिया गया है उन्हें भी अर्धतत्सम के अन्तर्गत ही रखा गया है । साथ ही व्यंजनों के परिवर्तन वाले रूप भी इसी के अन्तर्गत हैं —

आयद(संसार-58) गरीब(उमा-86)
सरमिंदे(—,,-57) बुखो(मानो वसन्त-ना0-12)
खुसी(अव0कु0-185) लास(सर0-1920-263)

ब -2 ब - देशी शब्दावली-

देशी या देशज शब्दों के अन्तर्गत उन शब्दों को लिया जा सकता है जिन्हें संस्कृत से सिध्द संबन्धित नहीं किया जा सकता । विवेच्य युगीन भाषा में उपलब्ध देशज शब्दावली को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

(1) शुध्द देशी शब्द
(2) अनुकरणात्मक शब्द

ब -1 ब -1शुध्द देशी

खिचड़ी(तारा-51) बुआ(तारा-64)
नानी(चौहानी तलवार-21) नाना(महावीर च0ना0-78)
बाबा(गल्पकुसु0-62) लोटा(चन्द्रधर-4)
खूँटो(उमा-10) कड़ी बेड़ी(नवाबनीबनी-28)
चाचा- चाची(सर0-1920-262) बोझ(1673/14लक्ष्मीप्रसाद)

ब -1 ब-2 अनुकरणात्मक शब्द,-

(1) संज्ञा—

गुड़गुड़ा(संसार-35) धड़- धड़(नीलमणि-3)
चीं चीं (प्र0या0-112) खट-खट(भिखारिणी-131)
पीं पीं ,, -114)
ठक ठक(लम्बी दाढ़ी-123)
चीं- चीं(,, ,,)

(2) विशेषण—

कलकल ध्वनि(आरण्यबाला-83)

डिगमिग पैरों(लक्ष्मी-1910-67)

डर डर अ॰ द(स॰ प्रवैचर-132)

(3) क्रिया विशेषण:-

धक- धक(राजकुमारी -48)	यथावथ(मु0सै0-73)
झकाझक(सर01907-119)	चटाचट(,, -73)
तरातर(पु0श0-1)	टरापर(नीलमणि-3)
टपाटप(,, -1)	अटपट(प्र0या0-118)
खटाखट(मर्यादा-1979-516)	चटपट(नवाबनंदिनी-31)

(4) क्रिया-

अकचकाना(रमाबाई-4)	बड़बड़ाना(राजकुमारी-58)
चकपकाना(नवाबनंदिनी-28)	गुनगुनाना(तारा-74)
बुरबुराना(,, -35)	चहकना -(-74)
झलकना(आ0हि0-21)	खिलखिलखिलाना(आत्मवाद-23)
डकारना(प्र0या0-71)	चबाना(अर0औ016)

ख -1 ग- विदेशी भाषा के शब्द:-

विदेशी भाषा के शब्दों के तात्पर्य अंग्रेजी और अरबी फ़ारसी के शब्दों से है जिनके कुछ शब्द भी रूढ़ हो गये हैं।

ख -1 -ग-1 अरबी -फारसी के शब्द:-

द्विवेदी कालीन लेखकों ने अरबी फारसी के शब्दों का विस्तृत में प्रयोग किया है उसे दृष्टि में रखते हुए अरबी फारसी शब्दावली को 3 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है (1) तत्सम (2) अर्धतत्सम(3) तद्भव

(क) अरबी फारसी- तत्सम शब्द' संज्ञा- वस्तुवाची

अध्यात्म तथा धर्म संबंधी

रूह(कैमी तलवार-87)	अखलाक(रा0बेगम-18)
ईमान ,, -134)	कुदरत(नवाबनंदिनी-80)
खुदा(नवाबनंदिनी-11)	कुदरत(सर01909-60)
नसीब(संसार-6)	किस्मत(कैमीतलवार-79)
नमाज़(भारत दर्पण-170)	मज़हब(चित्रशाला-160)
मज़हब (,, -82)	

पद एवं संबोधन संबंधी:-

हजूर(र0वेगम-47) हजरत(बुध0आ0-165)

जनाब: साहिब(तारा-3) जहाँपनाह(मानसोवर-194)

बादशाह(रूपनगर की राजकु0-47) नवाब(रोशनआरा-103)

शासन - संबंधी:-

दरोगा(फूलनाक-122) फौज(मल्लिका-79)

प्यादे(राजकुमारी-56) सिपाही(दुर्गावती-104)

मुसाहब(तारा-3) वजीर(नवाबनंदिनी-88)

स्थान संबंधी:-

दर्बार(तारा-46) सल्तनत(मल्लिका-79)

सर्हद(कुसुम कुमारी-5) मुल्क(बुधवार आ-155)

पर्गना (र0 बेगम – 98)

संबंध संबंधी:-

खसम(जु0ती0-61) औरत(संसार-66)

बुजुर्ग(तारा-92) बीबी(तारा-21)

वालिद(या0स0-74) वाल्दा(बुधवार आ0-119)

शौहर(तारा-85) खाविन्द(रोशनआरा-106)

शरीर संबंधी:-

दिमाग(नवाबनंदिनी-75) दिल(श्यामली मंजरी-4)

कलेजा(र0बेग0-55) नजर(तारा-18)

जबान(तारापार्ट-31) चेहरा(र0बे0-47)

सीना(र0बेग0-87) सर(,, -86)

नब्ज(इन्द्रा रुक्न-118)

धन सम्पत्ति संबंधी:-

जिरायत(कौमोत्सव-83) जिन्स(मल्लिका-44)

दौलत(तारा-72) खजाना(मल्लिका-35)

मकान(फूलनाक-62) अशर्फी(र0बे0-48)

जर(र0बे0-54) जवाहिर(,, -54)

(3) विशेषण (गुणवाचक)

सर्द (नवाबनौबिनो-28) नेक (नवाबनौबिनो-75)
लज़ीज़ (सर01904-119) मइज़ (मामला)(नवाबनौबिनो-176)
ख़ाल (च० अ्पर-58) ~~फ़िज़ूल~~ (सर01909-60)
स्याह (कोमो तलवार-72) हसीन (तारा-51)
नच्छ (दिल) (मल्लिका ी बो-28)

संख्या वाचक-

ज़ियादह (मल्लिका ी बो-80) कम (तारा -15)
काफ़ी (,, 79) खूब (गंगा यतरज-55)

(4) अव्यय (क्रियाविशेषण)

फ़ौरन (मल्लिकाबेबो-81) सिर्फ़ (र0बेगम-86)
ज़रूर (हत्याहरस्य-47) नज़दीक (कुसु0कु0-3)
बिलकुल (रायबहादुर-35) वाकई (रंगमहल में हलचल-62)
अक्सर (तारा-69) ज़रा (लम्बो दाढ़ी-70)
हमेशा (याउस0-19) शायद (,, -123)

संबंध सूचक —

सबब (र0बेगम-47) बाद से (रायबहादुर-16)
स्वरु (रणधीर प्रेम-27) ख़ातिर (भार औ0-86)
बगैर (रणधीर प्रेम-औ0-4) बावजूद (,, -86)
मुताबिक़ (दुर्गावती-24) मार्फ़त (धी0द0-25)
बाद से (रायबहादुर-16)

समुच्चय बोधक-

अगर (सर01907-120) व (उत्तर रा0च019)
औ (रणधीरप्रेम-5) वरना (विवाहकुसुम-65)
या (उत्तर राम0च0ना0-4) लेकिन (मानसरोवर-149)
मगर (लम्बोदाढ़ी-123)

विस्मयादि बोधक-

अल्लाह ((तारा-12) तौबा (तारा-32)
अफ़सोस ! (कमकुल आ0-42) लिल्लाह !(-56)
अल्लाह ((र0बेगम-89) अय !(रंगमहल में-82)

अल्लाह । (मल्लिका -28)   भाई/(मल्लिका-29)

ख- अरबी -फारसी के अर्धतत्सम शब्द:-

इस युग के पूर्व हिन्दीकरण की जो प्रवृत्ति चलपड़ी थी उसी के अनुसार इस युग में भी लेखकों ने अरबी-फारसी के शब्दों में हिन्दी ध्वनि के अनुसार परिवर्तन किया जिससे ये शब्द तत्सम न रहे अर्धतत्सम हो गये , यथा—

बिन्दी(नुक्ता)के लोप द्वारा :

खुदा(श्री मती मंजरी-9)   नजर(चन्द्रधर-22)

खिदमत(प्रमयोगिनी-43)   जिस्म(सर01905-261)

दरवाजा(स्वामिभक्ति-56)   रोज(चित्रकुसु0-62)

जेवर(,,   -112) खबर(नवाबनंदिनी-64)

कब्जा(श्रीमती मंजरी-74)   हजार(श्री मती मंजरी-103)

अन्तिम महाप्राण 'ह' के स्थान पर 'आ' अथवा लोप द्वारा--

साहब(तारा-81)   ज्यादा(मानसरोवर-194)

फैसला(,, 51)   हमेशा(चित्रशाला-160)

गुस्सा(स्वामीभक्ति-76)

ग- अरबी --फारसी तद्भव शब्द:-

इस कोटि के अन्तर्गत उन शब्दों को लिया गया है जिनमें ग्रामीण बोलियों अथवा जन भाषा के अनुसार वर्णागमिक परिवर्तन हुआ है यथा—

फिकिर(मानो व0ना0-78)   अकल(गद्यमाला-168)

अखिबल(नीतिनीचाकु-28)   तकलीफ(चित्रशाला-52)

गुरूरत(तारा-81)   बुस(चित्रशाला-182)

शकोन(सर01917-38)   बखत(प्रेमाश्र-य-198)

मजूर(प्रेमाश्रय-198)

क-1 ग-2 अंग्रेजी शब्द:-

अरबी-फारसी के समान ही अंग्रेजी के शब्द भी हिन्दी में रूढ़ हो गये हैं । इस युग में अंग्रेजी के तत्सम शब्द ही व्यवहृत है यद्यपि कहीं-कहीं अर्धतत्सम और तद्भव के उदाहरण भी मिले हैं जिनकीसंख्या बहुत ही कम है ।

क तत्सम शब्द(-संज्ञा'

पद संबंधी--

डाइरेक्टर्स(सर01904-22)	प्रेसीडेन्ट(श्रीमती मंजरी-38)
प्रिंसिपल(वि0क्षी0-5)	मिस्टर(प्रेमयोगिनी-86)
रजिस्ट्रार(बी0ट0-24)	मैजिस्ट्रेट(मर्यादा-1916-239)
कैप्टन(,, -15)	जेन्टस(अद0यू0-102)
सेक्रेटरी -(,, 89)	रीडर(गद्यमाला-168)
ओवरसियर(मर्यादा-1979-223)	जज(वैवाहिक अत्या०-146)
सार्जेन्ट(रसायोक्तपिन-126)	इन्स्पेक्टर(प्रभा-1924-466)

व्यवसाय संबंधी-

पुलिस(श्रीमती मंजरी-45)	ऐजेन्ट(प्रेमयोगिनी- 87)
डाक्टर(रायबहादुर-111)	मास्टर(लम्बोदादी-69)
प्रोफेसर(माधुरी-1925-288)	क्लर्क(वैवाहिक अत्या0-42)

संस्था संबंधी-

कमेटी(सर01907-149)	कैम्प(सर01903-70)
कोर्ट(भ्रामोपचन्द्र न्या0109)	कालेज(बी0ट0-31)
बैंक(रोशनआरा-103)	क्लब(वैवाहिक अत्या0-9)
मिशनरी(श्रीमती मंजरी-48)	युनिवर्सिटी(,, - 11)
पार्लियामेण्ट(मर्यादा-1911-20)	फिक्रमेशन (श्री० ठ० -35)
	रेजीमेंट (श्री० ठ० – 45)

शिक्षा संबंधी-

लायब्रेरी(रायबहादुर-111)	लेक्चरर(लेखा न0 -97)
मैट्रिकुलेशन(बी0ट0-49)	क्लास(लम्बोदादी-36)
फार्म(माधुरी-1923-700)	कार्ड(वैवाहिक अत्या0-35)

खाद्य तथा पेय संबंधी-

ड्रिंक्स(श्रीमती मंजरी-39)	ब्रान्डी(श्रीमती मंजरी-39)
लेमोनेड(रसायोक्तपिन-110)	सोयर(वैवाहिक अत्या0-19)
	बिस्कुट(,, -15)

परिधान संबंधी -

कोट(मानो यस्त ना० 108)　टाई(रायबहादुर-7)

पैंट(बड़े बाबू-12)　कॉलर(प्रो०इ०-10)

केप(दो मि-33)　पुलोवर(बड़े बाबू-12)

बूट(रायबहादुर-7)　पतलून(रायबहादुर-19)

फ्रॉक(,, -7)

क्रीड़ा संबंधी -

फुटबॉल(प्रो० इ०-15)　हॉकी(प्रो० इ०-45)

बौलिंग(प्रो० इ०-20)　क्रिकेट(मनोरमा-1925-712)

बास्केट(प्रो० इ०-45)

टीम(वि०क्वी० -5)

अन्य-

इस वर्ग में प्रायः वे सभी प्रकार के शब्द जो संख्या में अल्प होने के कारण किसी वर्ग में नहीं रखे जा सके हैं, रखे गए हैं यथा—

स्टाम्प(कुमकार - 9)　मिनट(अर०वृ०-279)

रेग्युलेशन(प्रभा1924-466)　मेडिकल(पौ०द०-19)

कम्पैनी(श्रीमती मंजरी-39)　बैंक(रायबहादुर-86)

ग्लास(लक्ष्मी-1908-23)　डेस्क(,, -86)

सेन्स(गद्यमाला-168)　टेनिस(रोशनआरा-95)

मार्केट(,, 168)　साइज़(माधुरी-1923-700)

बायसिकिल(बराती बा०-64)　नम्बर(कन्नोबाहो-1)

फ़ैन(माधुरी-1925-285)　पैशन(इम्प-24)

लैम्प(वि०क्वी०19)

(2) विशेषण -

चोफ़(कर्नल)(श्रीमतीमंजरी-38)　आनरेबुल(कोर्ट)(सर०1904-22)

ऑल(इण्डिया)(,, -39)　सीनियर (उमा-18)

प्राइवेट(सेक्रेटरी)(पौ०द०-89)　लोअर(इण्डिया)(ठ०ठ०गौ०-196)

न्यू(लाईट) ,, -5)　अपर (,,)(,, -196)

क्वान्ट(स टाफ) (मधुयमाला-128) लिबरल(फिडरेशन)(माधुरी-1925-281)

डिफेन्स(कमेटी)(1952/14 पद्मसिंह शर्मा) रबर (लाविटंग) (इन्दु-1927-38)

पेटेन्ट(लो नौक झौंक-42)

(ख) अर्धतत्सम शब्द -

इस युग के अंग्रेजी शब्दों में अर्धतत्समता दो प्रकार की पाई जाती है -
(1) प्रथम वर्ग में वे शब्द हैं जो वर्तनी में परिवर्तन के कारण अर्धतत्सम लग रहे हैं, इस प्रकार के शब्द ही अपेक्षाकृत अधिक हैं यथा-

लेक्चर(आ0हि0-82) क्रिकेट(श्रीमती मंजरी-38)

कालेज(बी0ट0-76) कोरट(,, -80)

डाक्टर(वैनिस का स्या0-54) डाक्टर(आरण्यबाला-145)

पबलिक(सर01907-149) सेक्रेटरी(मनोरमा-1925-186)

(2) कुछ स्थानों पर यह अर्धतत्समता तत्सम शब्दों में विकार के कारण आयी हैं यथा-

गिलास(विचार कुसु0-65) यी ञ्जिनियर(सर01904-15)

पार्लमैंट(मर्यादा-1920-55) अफसर(लेखांजलि-192)

ग- तद्भव -

आलमारी(राजबहादुर-10) लालटेन(बरासीना- 127)

अस्पताल(विचार कुसु0-65) बोतल(लम्बोदाढ़ी-117)

पिस्तौल(रोशनआरा-87)

क-2 यौगिक शब्द -

यौगिक शब्दों में अधिकांशतः परम्परागत भारतीय आर्य भाषाओं के ही शब्द हैं। सुविधा की दृष्टि से यौगिक शब्दों को चार वर्गों में विभक्त कर के अध्ययन किया किया गया —

क-2 क- पूर्व प्रत्यय वाले शब्द
क-2-ख पर प्रत्यय वाले शब्द
क-2 ग - समास
क-2-घ - द्विरुक्त शब्द

अ- भारतीय आर्य भाषा के यौगिक शब्द

[illegible]

ख-2 क(पूर्व प्रत्यय युक्त शब्द, ख-2 -क -1 तत्सम शब्द)

पूर्व प्रत्यय युक्त तत्सम शब्दों को भी पुनः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है --

(1) उपसर्ग युक्त तत्सम
(2) गति शब्द युक्त तत्सम

(1) उपसर्ग युक्त तत्सम:-

आ- आपत्ति(सर0 1904-137) | आरक्तिम(गद्यमाला-141)
आहार(मल्लिका-151) | आनन्द(भिखारिणी-141)
आतिथ्य(मर्यादा-1978-266) | आक्रमण(चित्रशाला-118)

अति- अतिशय(मल्लिका-35) | अत्यावश्यक(प्रभा-1922-85)
अत्यन्त(कुं0च0द0-85) | अतिरिक्त(माधुरी-1925-260)
अत्युत्तम(मल्लिका-51)

अभि- अभिशाप(मर्यादा-1912-36) | अभ्यन्तर(मनोरमा-88)
अभिलाषा(नौ0नि0-85) | अभिमान(प्रेमाश्रय-352)
अभिनव (गो0नि0-3)

अधि- अधिपति (महावीर चरित भाग -10) | अधिष्ठात्री(मर्यादा-1911-9)
अधिपत्य(कौमोललार-21) | अधिकार(माधुरी-1919-239)
अध्ययन(कर्म-96)

अनु- अनुचर(मल्लिका-38) | अनुवाद(मर्यादा-1916-289)
अनुराग(नीलमणि-114) | अनुगामी(प्र0या0-99)
अनुभाव(आख्यायिका-40) | इत्यादि- - -

अप- अपमान(वनवीर ना0-2) | अपवाद(पद्मपराग-131)
अपहरण(गो0नि0-14) | अपयश(गौतम बुद्ध-98)
अपेक्षा(ब0वि0-8)

अव- अवगुण्ठन(मल्लिका-88) | अवरुद्ध(आत्मदाह-1)
अवकाश(म0नि0-25) | अवतार(कर्म-96)
अवधि(,, -158)

इति- इत्यलम(द्रौपदी चीरहरण-21) | इत्यादि(प्रेम-24)
इतिश्री(बड़े बाबू-171) | इतिहास(प्रभा-1913-190)

उत्-उद् -	उज्ज्वल(चन्द्रधर-1)	उत्तेजित(तारा-79)
	उन्नति(सर01904-233)	उत्कृष्ट(किन्नरो-46)
	उन्माद(नीलमणि-115)	उत्फुल(या0ता0-40)
	उच्चारण(न0नि0-25)	उद्योग-1652-/14 पद्मसिंह)
उप-	उपरिष्टात(मल्लिका-38)	उपदेश(सर01916-102)
	उपन्यास(मर्यादा1916-265)	उपनाम(पद्मपराग-160)
	उपवन(न0नि0-86)	उपयुक्त(सर01920-263)
दुर-	दुर्दशा(हेमलता-152)	दुर्गति(वनवीर ना021)
	दुर्भिक्ष(सोने तलवार-11)	दुर्भाग्य(माधुरी1929-418)
	दुर्बल(रा0यकुटी-60)	इत्यादि - - - -
दुस-	दुष्प्राप्य(सोने तलवार-33)	दुष्काल(धर्म 102)
	दुःस्वप्न(सुहागिनी-17)	दुःसाहस(कृष्णार्जुन-5)
	दुस्साहस(सर01926-149)	दुष्परिणाम(प्र0या083)
नि-	निकृष्ट(सोने तलवार-144)	निपुण(सर01904-15)
	निधि(मनोरमा-37)	निर्गुण(गल्प कुसु0-6)
	निचेष्ट(सुहागिना-18)	
निर-	निर्मूल(भारतदर्पण-39)	निर्बुद्धि(सर01926-103)
	निर्देश(वि0ज्यो0411)	निरापराध(चन्द्रमाला-21)
	निर्दिष्ट(पद्मपराग-24)	निर्विवाद(मर्यादा-1917-210)
निस-	निश्चय(आरण्यबाला-145)	निष्फल(सर01920-84)
	निश्चय(दुर्गावती-117)	निश्चल(सुहागिनी-20)
	निःसंदेह(आरण्यबाला-145)	
परा-	पराक्रमी(चन्द्रधर- 2)	परामर्श(अपूर्व आत्मत्याग-232)
	पराजित(धर्म-102)	पराधीनता(प्र0या0-93)
परि-	परिमल(मनोरमा-158)	परिधान(न0नि0-85)
	परिपुष्ट(गी0वि015)	परिहास(मै0च0च0-98)
	परित्याग(मर्यादा-1979-510)	परिश्रम(च0वि0 -8)

प्र- प्रभावित (अरि लक्ष्य-35) प्रबल (चन्द्रधर-48)
प्रयोग (स०1904-121) प्रबल (मनोरमा-196)
प्रलय (कु०व०ई०-15) प्रयत्न (इन्दु-1914-103)
प्रति- प्रत्येक (स०1905-63) प्रतिबिम्ब (गल्पकुसु०68)
प्रतिच्छाया (भारतदर्शक-43) प्रतिकूल (प्र०या०-38)
प्रतिध्वनि (अरि लक्ष्य-38) प्रतिबन्दी (चित्रशाला-138)
वि- विज्ञान (स०1904-23) विनाश (र०वेगम-6)
विराज मान (मोतमणि-114) विचित्रता (अव०कु०178)
विछन्न (लक्ष्मी1901-167) विहार (म०रा०ई०, 14)
सम- सम्भव (स०1909-60) सम्भाषण (न०नि०-25)
सम्मान (नवाबनन्दिनी-17) संतोषक (गौ०नि०-13)
संकट (घनघोर मा०-41) संग्रहालय (लेखां- -10)

2- एक वैकल्पिक उपसर्गयुक्त शब्द-

व्यापार (स०1904-233) समुद्भासित (मनोरमा-29)
अभियुक्तान (कृष्णा कुंवयुक्त-50) समाचार (पद्मपराग-110)
अत्याचारी (,, -55) प्रतिपुरष्कन (,, -44)
निस्सारी (आरण्यबालक-12) विनियोजित (प्रभा01922-85)
व्यभिचार (भोष्म-24) अतिचार (वरमाला-21)

(3) गति शब्द युक्त शब्द:-

संस्कृत के आचार्यों ने जिन गति शब्दों का उल्लेख किया है उनमें अधिकांश शब्द स्वतन्त्र हैं जिनका दूसरे शब्दों के साथ समास हो जाता है । इस प्रकार के गतिशब्द हिन्दी रूपों में हो गये हैं ।

गति शब्द- व्यंजन के पूर्व -

अ- अलौकिक (स०1904-122) अजगण्य (चन्द्रधर-1)
अयोग्य (नलिनीबाबू-10) अनीति (तुलसीदास-94)
अविकसित (माधुरी-1925-410) अधिकारत (मर्यादा-1917-210)
इत्यादि- इसी प्रकार के और भी हैं ।

स्वर से पूर्व

अन - अनाचार (कर्म-102) अनुदात्त (कुंडू का कांटा-22)
अनिच्छा- र०र095) अनुचित (माधुरी-1925-276)
अनाधिकार-(भिखारिणी-148)

नास्तिक (माधुरी-1925-263) नगण्य (न॰ नि॰ - 95)

नाना- नानाजाति (कोमोतलस्वर-65) नानाप्रलोभन (सावित्री-115)
नानाप्रकार (रमाबाई-41) नानावेश (वरमाला-14)
नानागुण (सावित्री-204) नानातंतु (मानोवर्धन ना0-131)
नानास्थान (,, -28) नानारूप (बड़ेबाबू-131)
नानाविषय (,, -29)

पुनः- पुनर्जन्म (राजकुमारी-136) पुनर्जीवित (सुहागिनी-269)
पुनर्विवाह (बड़ेबाबू-164) पुनर्संशोधित (,, 275)
पुनरुत्थान (वैवाहिक आत्मा०-55) पुनःस्थापना (सर0-1926-136)

पुरः- पुरस्कार (मह0-औ0-3) पुरोहित (मालविका-49)

प्रादु- प्रादुर्भाव (र0र0-24)

बहु- बहुमूल्य (र0वेणम-93) बहुतेरा (वि0क्षौ0-86)
बहुमुखी (र0का0कु0-445)
बहुधा (धीरमणि-50)

यथा- यथास्थान (सर0 1907-149) यथाविधि (गो0नि0 913)
यथोक्त (मर्यादा-1917-209) यथायोग्य (सर0 1926-130)
यथासमय (160/14 पद्मसिंह)

स, सह- सजाति (नवाबनंदिनी 12) सहवास (मनोरमा-34)
सजीवता (आरण्यबाला-145) सहानुभूति (चित्रशाला-19)
सहृदय (माधुरी-1925-818)

सत्- सत्संग (सर0 1912 -102) सच्चरित्र (सुखमयजीवन-19)
सत्कार (मर्यादा-1979-366) सद्गति (प्रेमयोगिनी - 55)
सज्जन (र0र0-24) सत्साहित्य (माधुरी-1925-78)
सदाचार (भारती-226)

सु- सुचरित्र (नवाबनंदिनी 20) सुमधुर (मर्यादा-1911-10)
सुपुत्र (अत्याचार-86) सुललित (प्रभा-1922-85)
सुफल (आ0हि0 -80) सुकवि (गो0नि0-3)
सुप्रभा (कुमारी-56)

स्व, स्वो, स्वयं- स्वतंत्रता (सर0 1907-141) स्वोपकार (दुर्गावती-42)
स्वदेश (मर्यादा-1979-24) स्वयंवर (भो0क0-79)
स्वाधीनता (प्र0च0-93) स्वयंसेवक (भारती- 69)
स्वयंभू (सरंगमाला-141)

अ-2- क -2 पूर्व प्रत्यय युक्त तद्भव शब्द

संस्कृत पर अधिकाधिक निर्भर रहने के कारण हिन्दी शब्दों के साथ प्रयुक्त उपसर्ग तथा गति शब्दों की संख्या बहुत ही सीमित होगई है । इसयुग में उपलब्ध दोनों ही प्रकार के शब्द निम्नलिखित हैं —यथा—

पूर्वप्रत्यय

अ- अग्रामीण(कौमोतलवार-26) — अटूट(पद्मपराग-105)
अजान(वे0-द018) — अडल(सर01920-84)
अगाध(प्र0या0-56) — अडिग(गो0नि0-3)

अन- अनदेखा(राजकुमारी-78) — अनजानते(नवाबनन्दिनी-18)
अनहोनी(कुसुमलता-77) — अनजान(अव0धू0348)
अनकहनी(कुसुमलता-24) — अनसुनी(बुद्धू का कांटा-31)
अनगिनती(दुर्गावती-31) — अनमोल(गो0नि0-3)

अध- अधखिल(राजकुमारी-137) — अधखुला(उमा-8)
अधटूटे(उमा-96) — अधखिला(दुर्गावती-7)
अधजली(आत्मदाह-311)

दु-दुकुला(आ0ह0-36) — दुसर(अव0धू0-92)
दुलारे(सुहागिनी-49)

नि- निठल्ले(मानोवस्र्णल-49) — निपूत(राजकुमारी-63)
निडोरा(अव0धू61) — निगोड़ा(सावित्री-72)
निडरी(दुर्गावती-22) — निकम्मा(अलकपवाला-2)

कु- कसमय(नवाबनन्दिनी-16) — कुचाले(अव0धू0-99)
कुलान(सावित्री-35)

सु-स - सचाव(ठ0ठ0 गो0-98) — सपूत(श्रीमती मंजरी - 5)
सुघर(अव0धू0-59)

बर- बरक़रार(नयायनीतिमो 59 बरखिलाफ़(तारा-100)
बरबास (प्रेमा शक-95)

बिल- बिलकुल(या०ता०-58)

सर- सरगर्मियों(चौमो तलवार-84 सरहद(कुसुम कुमारी-5)
सरअमीन (राजकुमारी-113) सरदार(दुर्गेशनंदी-34)
सरपरस्त(नवाबनन्दिनी-27)

हर हरसाल (संसार-35)
हरवक्त (तारा-89)

हम- हमदर्दी (चौमो तलवार-72) हमराह(राजकुमारी-136)
हमबगल(नवाबनन्दिनी-99)

क-2-ख पर प्रत्यय युक्त शब्द

सुविधा की दृष्टि से पर प्रत्यय युक्त शब्दों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1- पर प्रत्यय युक्त कृदन्तीय शब्द
2- पर प्रत्यय युक्त तद्धितांत शब्द

अ- भारतीय आर्य भाषा के शब्द

क-2-ख-1 पर प्रत्यय युक्त तत्सम शब्द

संज्ञा - भाव वाचक कृदन्त
प्रत्यय

अ गुण सहित-
प्रकोप (संसार-131) दुरुपयोग(मर्यादा-1979-24)
भेद (मनोरमा-29) परिश्रम(पद्मपराग-13)
अनुभव(आरण्य बाला-47) अनुग्रह (गल्प कुसुम-6)
क्रोध (भिखारिणी-191)

वृद्धि सहित

क संचार (मल्लिका-39) व्यभिचार(भीष्म-123)
व्यापार(सरस्वती-1904-233) परिहास(मौ०च०च०-98)
उपकार(भीष्म प्रतिज्ञा-117) परित्याग(मर्यादा-1979-5[illegible])

अन गुण सहित

अयन (मल्लिका-32) स्मरण (भीष्म प्रतिज्ञा-86)
आचरण(सरस्वती-1912-102) बन्धन(म० मि०-85)
अर्पण *(मर्यादा-1979-2) स्वन (मर्यादा-205)

तद्धितान्त

-अ
गौरव(सर०1905-64)
यौवन(गल्प कुसु०-54)
मौन(सर०1912-102)
शैशव(संदेह-17)
कौशल(अपूर्व आत्मत्याग-22)

-इमा
गरिमा(चन्द्रशेखर-1)
लालिमा(चन्द्रशेखर-131)
पूर्णिमा(सूर्यग्रहण-25)
कालिमा(अपूर्व आत्मत्याग-106)
महिमा(सुहागिनी-95)
नीलिमा(चन्द्रशेखर-154)

-ता संज्ञा से-

प्रभुता(सुहागिनी-32)
पशुता(सुहागिनी-96)
मित्रता(महा०ह०-6)
कविता(र०र०-21)
दासता(बड़े बाबू-288)
मनुष्यता(राज्यश्री-58)

विशेषण से-

-ता
मूर्खता(सर०1904-244)
दयालुता(मर्यादा-1912-40)
कोमलता(या०स०-40)
सभ्यता(कोमोलवार-14)
नीचता(मु०सै०-41)
कमनीयता(गो०नि०-13)
(इत्यादि बहुत से रूप बनते हैं)

-त्व
सतीत्व(नवजीवनी-51)
अमरत्व(महा०भा०ना०-94)
परमोत्व(वनवीर ना०-2)
बन्धुत्व(बड़े बाबू - ९५)
कवित्व(र०र०-24)
मनुष्यत्व(राणाप्रताप59)
ब्राह्मणत्व(बड़े बाबू-195)
(इत्यादि और भी रूप हैं)

-य
साहित्य(सर०1912-102)
सौरस्य(र०र०-22)
वाणिज्य(सर०1926 -134)
पांडित्य(नै०च०च०-85)
सौन्दर्य(मनोरमा-67)
आलस्य(मर्यादा-1979-266)
(इस प्रत्यय से बने रूप भी बहुत हैं)

संज्ञा - कर्तृवाचक कृदन्तीयरूप

-अ
सर्प(लक्ष्मी-1908-23)
उपाय(मनोरमा-4)
चोर(भीष्म प्रति०-7)
चर(रजनी-33)
देव(ठ०ठ०गो०-41)

-अक
उत्पादक(सर०1903-99)
पूजक(लेखांजलि-116)
सुधारक(भीष्म-24)
आविष्कारक(वनमाला-81)
पाठक(मर्यादा-1917-211)
दर्शक(उ०रा० ना०-25)
नायक(1636/14 जनार्दन झा)
विधक(मर्यादा-1917-211)

-अन
बंधन(या०स०-158)
मोहन(सुहागिनी-125)

-र	नम्र(कलयुगी परिवार-15)	छिद्र(राणप्रताप-23)
-वर	नश्वर(नवाबनंदिनी-5)	ईश्वर(कौमुदी-33)
	पुंख्यवर(औपन्यासिक(द्वरण-23)	

तद्धितान्त

-इक	भानुशिक(बीसोतल0-20)	वैज्ञानिक(मर्यादा-1979-24)
	नैसर्गिक(नवाबनंदिनी-10)	कारणिक(मे0व0व0-52)
	अलौकिक(राक्षसाङ्गुम-130)	दैनिक(मान सरोवर-61)
	प्रेमिक(कुसुमव जीवन-16)	साप्ताहिक(मधुरी-1925-224)
	इत्यादि अनेक हैं :-	
-आनक	भयानक(नवाबनंदिनी 8)	
-इत	लोहित(मणिका-38)	पुलकित(वि0कुसुम0-310)
	रोमांचित(,, -35)	सुगंधित(गो0नि0-8)
	आनंदित(सं0प्र0-1908-24)	मुकलित(ठ0ठ0गो0-11)
	अविवाहित(कुल कुसुम-170)	इत्यादि अन्य भी हैं।
-इम	अन्तिम(लक्ष्मी-1910-167)	पश्चिम(इन्दु-1927-157)
	अग्रिम(मति सखा-62)	
इय-ईय	क्षत्रिय(राणा प्रताप - 58)	राष्ट्रीय(पद्मपराग-75)
	पर्वतीय(सर0 1904-14)	स्वर्गीय(मे0व0व0-44)
	राष्ट्रीय(पद्मपराग-75)	प्रान्तीय(सर0 1920-84)
	भारतीय(कृष्णार्जुन युद्ध-5)	पूर्वीय(इन्दु-1927-157)
-इल	जटिल(सर0 1917-164)	फेनिल(बरा सोना-167)
	पंकिल(मनोरमा-27)	
-इष्ठ	श्रेष्ठ(सर0 1905-64)	बलिष्ठ(सूर्यग्रहण-11)
	घनिष्ठ(पद्मपराग-105)	पापिष्ठ(चन्द्रशेखर-169)
	कनिष्ठ(युवकयोगी-59)	
-ईन	अधीन(सावित्री-145)	अर्वाचीन(मनोरमा-215)
	प्राचीन(सर0 1904-88)	प्रवीण(सतोषिनता-87)
	मलीन(तारा-38)	नवीन(बड़े बाबू-162)
	कुलीन(संसार-217)	

सहस्रशः (भारतवर्ष-18)　　　　　　नित्यशः (विलासिनी-117)

क्रमशः (लक्ष्मी-1910-167)

क-2 - ख-2- पर प्रत्यय युक्त तद्भव शब्द

पूर्व प्रत्यय युक्त तद्भव शब्दों की भांति पर प्रत्यय युक्त शब्दों के प्रत्ययों में कुछ तो संस्कृत के हैं और कुछ हिन्दी के अपने हैं । इन दोनों ही प्रत्ययों से निर्मित जो तद्भव शब्द हैं उनमें एक की तो प्रकृति और प्रत्यय दोनों ही तद्भव हैं और दूसरे की प्रकृति तो तद्भव है किन्तु तत्सम प्रत्यय लगाने से तद्भव शब्द ही कहलाते हैं , निर्मित शब्दों के अनुसार इनका विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

संज्ञा- भाव वाचक- कृदन्त

-अ　मार(कोमोललता-132)　　　　समझ(अ०पु०-177)

　　पहुँच(कृ प्रहर-22)　　　　जान-पहचान(रायबहादुर-109)

　　अंटि(सारा-94)

-अ　गुणवाचक

　　मोल(दुर्गावती-86)　　　　मैल(तुलसीदास-9)

　　वृद्धि वाचक

　　चाल(कृष्णचन्द्र-72)　　　　बाढ़(तुलसीदास-125)

　　मांग(दुर्गावती-96)　　　　बाँध(दुर्गावती-86)

-आ　घेरा(नवाबनन्दिनी-15)　　　　झगड़ा(मर्यादा-1979-25)

　　छापा(सूर्यग्रहण-194)　　　　नाना(सूर्यग्रहण-292)

-आई　जुताई(संसार-31)　　　　लड़ाई(दुर्गावती-21)

　　बुआई(,,)　　　　ढिलाई(मानसरोवर-79)

　　पढ़ाई(-209)　　　　छुड़ाई(लज्जावती-117)

　　सिलाई(,,)

-अन　रटन(बु०विज्ञान-18)　　　　मुस्कान(मर्यादा-1979-510)

　　जान(सावित्री-198)　　　　चलन(रायबहादुर-40)

　　पान ,,)　　　　लेन-देन(,, 104)

कमाई(कुकुर का काटा-22)   मिठाई(बड़े बाबू -47)

-आका   लड़ाका(राजकुमारी-69)   धड़ाका(पं० ईश्वर-59)
धमाका(संसार-37)

-आटा   सन्नाटा(नवाबनन्दिनी-22)   सपाटा(प्र०पा०-62)
खर्राटा(बे०का व्यापारी-27)   सन्नाटा(अपूर्व आत्मत्याग-263)
घुर्राटा(दो मित्र-56)

-आना   घराना(रूप नगर की राजकुमारी-26)

-आपा   रंडापा(नवाबनन्दिनी-47)   बुढ़ापा(अ०हि०-16)
सुघरापा(वैवाहिक अत्याचार-47)

-आरा   छुटकारा(पा०त०-59)   निपटारा(अंगूठी का नगीना-35)

आहट*   सरसराहट(सर०-1905-119)   घिघियाहट(अव०कु०-130)
कलकलाहट(,,)   झिलमिलाहट(राजकुमारी-64)
चपचपाहट(वनवीरना-2)   घबराहट(,,)
ललचाहट(लम्बी दाढ़ी-71)

-ई   चोरी(कौतुक-23)   उदासी(उसने कहा था-51)
डकैती(,,)   कंगाली(ठ०ठ०गो०-196)

औती   बपौती(हत्यारहरय-101)   बुढ़ौती-(नवाबनन्दिनी-83)
पड़लौती(चोखीतलवार-22)   कसौटी(राजकुमारी-3)

क   महक(अध० फूल-79)   सटक(आत्मदाह-2)
ठंडक(गौतमबुद्ध-7)   फाटक(पद्मपराग-12)

पन   अक्खड़पन(मानो चक्र-134)   सियानपन(गए धर्मवीरो-33)
छोटेपन(हत्यारहरय-19)   लड़कपन(प्र०पा०-42)
साधुपन(तुलसीदास-57)   बंगलीपन(कुकुर का काटा-46)
निठल्लापन(कौतुक-16)   बेशर्मपन(दुर्गावती-48)

पन प्रत्यय से बने बहुत ही अधिक भाव वाची संज्ञाएँ हैं ।

कर्तृवाचक संज्ञाएँ । (कृदन्त)

हिन्दी में कर्तृवाचक संज्ञाओं के रूप बहुत ही कम हैं । फलस्वरूप इस काल में भी इसके बहुत अधिक रूप नहीं उपलब्ध हैं यथा—

अक्कड़   पियक्कड़(वनवीरना-7)   भुलक्कड़(राजबहादुर-111)
घुमक्कड़(चौहानी तलवार-12)   बुझक्कड़(लम्बी दाढ़ी-89)

---

* यह आहट का ही दूसरा रूप है ।

-आर चमार(संसार-203) कहार(गल्प मंदिर-39)
सुनार(सर01912-102) लोहार(कुमहार-5)

-एरा लुटेरा(मणि लता-5)

-ओड़ा भगोड़ा(राम कु0कु0-146) हँसोड़ा(आत्मदाह-10)

-नो रखनो(हत्यारहस्य-209) प्रेमनो(हत्या रहस्य-163)
घरनो(,, 204)

प्रयोग—

उसके पुत्रों का लड़का हो उत्तराधिकारी होगा ।

इस प्रकार के प्रयोग अधिक नहीं हैं ।

-वाला* बोलनेवाला(सर01903-93) पढ़ने वाला-(र0र0-21)
घबराने वाला(कथ्रहार-11) मरने वाला(दुर्गावती-34)
करनेवाला(अरण्यमाला-47) रटनेवाला(गद्यमाला-147)
बिकने वाला-(बुद्ध का काटा-39) इत्यादि और भी हैं ।

करणवाचक (कृदन्त)

-आ घेरा(कुसुम कुमारी-48) ठेला(चन्द्रशेखर-60)
झूला(झोले - 90) पाँसा(महाभारत ना0-86)

-ऊ झाडू(संसार-3)

-ना पालना(संसार-4) बुलनी(बुद्ध का काटा-22)
ओढ़नी(उमा-19) कतरनी(,, -25)
चलनी(रा0का0कु0-68) ओढ़ना(र0बेगम-95)

लघुतावाचक(तद्धितान्त)

-इया कुटिया(संसार-7) डिलिया(माधवा नल का0-19)
हड़िया(,, -29) गठिया (चोखानी तलवार-36)
लठिया(चोखानी तलवार-21)

-ई घाटी(दुर्गावती-120) पहाड़ी-पु0र0-78)
टोकरी(राम का0कु0-86) डोरी(रो0 आरा-55)

-ड़ा चमड़ा(मालविकाग्निमित्र-49) बछड़ा(अपूर्व आत्मत्याग-25)
मुखड़ा(अह0कु0-184) पंखड़ी(अव0पूल-128)

* हिन्दी में सकर्मक क्रिया के द्वारा 'वाला' प्रत्यय जोड़ कर कर्तृवाचक संज्ञा बनाने की पद्धति बहुत ही अधिक है और निःसंदेह इस काल के लेखकों ने भी इसका प्रयोग अधिकाधिक मात्रा में किया है ।

क्रियार्थक संज्ञा-*

कहना(तारा-30) गाना(ठ०ठ०गो०-89)
पढ़ना(गद्य पुष्प०-65) विचारना(गद्यमाला-126)
लिखना(कौमीतलवार-129) सुनना(र०र०-42)
करना(सर०-1904-23) रखना(लैलामजनू-167)

विशेषण - कृदन्त

मूल कृदन्तीय-

-आ फूले(अव०बू०-78) फैले(अव०बू०-78)
मरा(राजकुमारी-144) फटा(दुर्गावती-60)
भूला(ठ०ठ०गो०-164) पढ़ा(कर्म-96)
सूखा(उसने कहा था-51)

आऊ बिकाऊ(कौमीतलवार-37) बढ़ाऊ(संसार-41)
बराऊँ(हत्यारहस्य-14)

-आवना सुहावना(नागानंद-81) डरावना(कर्मवीर ना०-44)
लुभावना(अव०फूल-87)

आलु झगड़ालु(प्र०या०-9) लजालु(अव०बू०110)

इयल सड़ियल(ओरम प्रतिज्ञा-109) अड़ियल(लम्बो दाढ़ी-69)

वर्तमान कृदन्त

-ता बहता(अव०बू०-78) चलता(वनवीर ना०-84)
उड़ती(संयोगिता हरण-18) उछलता(बुद्धू का काटा-37)
हँसती(उषा-11) काँपती(शकुंतला ना०-17)

तद्धितान्त

अक्कड़ उठक्कड़(रायबहादुर-126) भौचक्का(रायबहादुर-188)

-आ ठंडा(अव०फूल-79) भूखा(चन्द्रशेखर-99)
प्यासा(पु०ह०-45) गरुआ(सावित्री-186)
मोटा(अभिनय-140)

* मूलधातु में 'ना' प्रत्यय लगा कर संज्ञार्थक क्रिया बनाई जा सकती है । किन्तु हिन्दी में धातु के स्थान पर इन्हीं का परिचय कराया जाता है अंग्रेजी में भी धातुओं के लिए संज्ञार्थक क्रिया का ही प्रयोग होता है ।

-आऊ	घराऊ(नवाबनंदिनी-91)	पढ़िताऊ(वीरमति-56)
	उपजाऊ(संसार-30)	
-आर	कुआर(संसार-40)	गँवार(दुर्गावती-97)
-आई	चौटाई(बड़े बाबू-197)	
-ई	तेलरी-(तारा-38)	अंग्रेजी(कृष्णार्जुनयुद्ध-5)
	गुलाबी(सु0चि0-11)	जापानी(मर्यादा-1979-177)
	गुजराती(सर01909'61)	विलायती(ठ0ठ0गी0-11)
	बैसाखी(सावित्री-2)	चैती(बड़े बाबू-189)
	इत्यादि बहुत से शब्द बनते हैं।	
-ईला	पत्थरीला(चौहानी तलवार-72)	चटकीली(गौ0नि0-23)
	गठीला(राजकुमारी-69)	छठीला(रायबहादुर-88)
	सुरीला(तारा-74)	नुकीली(बुद्धू का काटा-40)
	इत्यादि इस प्रत्यय से बने विशेषण पद भी अधिक हैं)	
-इया	केन्दुरिया(मर्यादा-1912-36)	कलकतिया(बड़े बाबू-12)
	चारडमलिया(बुद्धू का काटा-20)	दुखितिया(बुद्धू का काटा-20)
-इयल	डड़ियल(उ0रा0ना0-79)	इनके अन्य रूप नहीं मिले हैं।
-ऐला	बनैला(चौहानी तलवार-38)	बघेला(संयोगिताहरण-69)
	चौबैला (,, -91)	बाघैला(गद्यमाला-119)
	सौतेला((ली)(तारा-95)	~~गंजेड़ी(वि0कसौ0-30)~~
-एड़ी	भंगेड़ी(वि0कसौ0-30)	गंजेड़ी (वि0कसौ0-30)
-औआ	घरौआ(हत्यारहस्य-14)	
-हरा-हला	विषहरा(आनोजस्वन न0-21)	सुनहरी(बुद्धू का काटा-42)
	रूपहली(सर01907-19)	सुनहली(नवाबनंदिनी-4)

क्रिया विशेषण (कृदन्त)

-ए (कृ)	बैठे(कृ)(कर्म-132)	लिए(आ0वि0-144)
	पढ़ने(कन्तोई ग्रन्थ-356)	दिले(संसार-20)
	पकड़े (कृ)(विलासिता-49)	समझे(कर्म-96)
-ते(कृ)	हँसते (सूर्यग्रहण-81)	बचते(गौतम बुद्ध-63)

खाते(ठ0का0कु0-66) खींचते(द्रोपदी चीर हरण-68)
देखते(शकुंतला ना0-119) नाचते(प्र0या5-6)
उतारते(अ प कुसुम-66) रटाते(आ0हि-144)
करते(इन्दु-1927-157)

-के, कर, करके,
सोके(संसार-227) देकर(महावीरचरित्र ना0-10)
चलके(नागानंद-32) सुनकर(उमा-146)
मिलकर(पू0ख0-39) रख कर के(र0बेगम-13)
देख कर के(कु0व0ख0-2)

तद्धितान्त

-ए पीछे(मणिलता-38) सामने(दुर्गावती-34)
चोरे(र0बेगम-73) वैसे(द्रौपदीचीरहरण-62)
किनारे(सर01907-119) तैसे(प्र0या0-168)
लड़के(लक्ष्मी-1908-34) ऐसे(इन्दु, 1927-157)
पढ़ते(ठा0का0कु0-57) जैसे(सत्यवादी-71)
-आँ कहाँ(रमाबाई-3) यहाँ(मर्यादा-1911-10)
वहाँ(लक्ष्मी-1908-24) जहाँ(मानसरोवर-194)

स्त्रीलिंग वाची पर प्रत्यय

पुलिंग शब्दों में कुछ परप्रत्यय लगा कर स्त्रीलिंग वाची शब्द बनाये जाते हैं। इन प्रत्ययों से बने हुए संज्ञा और विशेषण दोनों ही प्रकार के शब्द तद्धितान्त होते हैं। यहाँ पर इसप्रकार के परप्रत्ययों से निर्मित स्त्रीलिंगवाची शब्दों को शब्दकोश के अनुसार वर्गीकरण न कर के तत्सम और तद्भव के अनुसार वर्गीकृत किया गया है।

तत्सम-

-आ विवाहिता(शकुंतला ना0-161) विनयशीला(संयोगिताहरण-3)
तेजस्विता(वा0स0-49) चंचला(गंगावतरण-7)
बालिका(उमा-3) प्रौढ़ा(मनोरमा-356)
नायिका(म0नि0-65) पीड़िता(सतीचिन्ता-63)
कुण्ठा(नागानंद-96) विदलोया(1652/14पद्मसिंह

-ई	आन्हनो(रमार्बाई-1)	मोहिनी(गंगावतरण-7)
	कृगवती(नागानंद-98)	युवती(मलिलका-16)
	सुन्दरो(संयोगितादरण-5)	गोरडी(आ0हि0-144)
	राजेश्वरो(न0नि0-58)	पुत्रो(मनोरमा-158)
-इनो	तपस्विनी(शकुन्तलाना0-156)	अर्धांगिनो(मर्यादा-1911-9)
	अनर्थकारिणो- कु0व0व0-2)	कामिनो(गंगावतरण-8)
	सन्यासिनो(कुलिनो-177)	निर्धारिणो-न0नि0-15)
	पापिनो(संयोगितादरण-38)	पुत्रघातिनो(ओ॰म प्रतिज्ञा-31)

तद्भव

-ई-	लड़को(अपूर्व आत्मत्याग-151)	कानो(मनोरमा-108)
	पतलो(स0 1907-119)	लंगड़ो(,,)
	गूँगो(र0वेगम-95)	मैलो(चित्रशाला-49)
	बहरो(,, -95)	चटकोलो(गो0नि0-3)
	कंकरो(बुद्धू का कांटा-36)	गठरो(सतोचिन्ता-100)
-इन	मजदूरिन(मानोबक्षत ना0-141)	सुहागिन(ठ0ठ0गो0-164)
	बाघिन(छोटोबहू-154)	सुहागिनी(आशिनो-131)
	सांपिन(मवाबनीतिनो-98)	आफिनो(ओ॰म प्रतिज्ञा-31)
	रसोयादारिन(,, 84)	भिखारिनो(सतोचिन्ता-100)
-आनो	सेठानो(कौसिल कि मैं-33)	जेठानो(मानोबक्षत ना-29)
	पुरोहितानो(राजसिंह-71)	
-आइन	गुरुआइन(प्रेममोहिनो-4)	पंडिताइन(स0 1917-8)
	ठकुराइयन(भिखारिणी-191)	

व पर प्रत्यय युक्त विदेशो शब्द(अरबो- फारसो)

संज्ञा भाववाचक-

-आना	मेहनताना(स0 1926-138)	नजराना(अपूर्व आत्मत्याग-226)
	जुर्माना(वैनिस म0 का स0या0-69)	
-ई-	दुश्मनो(कोमोलताधर-85)	मिहरबानो(या0व0-77)
	बेईमानो(ओ॰म-23)	खातिरदारो(नोलमणि-103)
	बेहयाई(,, -23)	बर्बादो(ठ0ठ0गो0-164)

इत्यादि बहुत से शब्द हैं।

आर्मिली(गोली-31)

- दार — आनदार(राजकुमारी-12) — दमादार(गल्प कुसु0-21)

इज्जतदार(नवाब-नंदिनी-80) — मज़ेदार(दुर्गावती-24)

दुकानदार(,, 21) — चरोदार(इत्याहरण य-224)

- बाज़ — रण्डीबाज़(उमा-87) — दगाबाज़(सूर्यग्रहण-126)

चालबाज़(वैवाहिक अ-8) — तफ़रीबाज़(महात्माविदु-108)

गुण्डेबाज़(मनोरम लता-64) — निशानेबाज़(चन्द्रशेखर-72)

- दार — खिदमतदार(कोमोलताधार-77) — कसूरदार(नवाबनंदिनी-33)

- बाज़ — दुनियाबाज़(वैवाहिक अत्याचार-79)

परप्रत्यय युक्त अंग्रेजी शब्द

अंग्रेजी के प्रत्ययों का हिन्दी में कोई योग नहीं होता है, ये प्रत्यय मूलरूप से अंग्रेजी शब्दों के साथ ही प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ पर कुछ अंग्रेजी प्रत्यय युक्त संज्ञा और विशेषण के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

संज्ञा:-

डाइरेक्टर्स(सर01904-22) — कमेटी(सर01907-149)

सेक्रेटरी(वी0ह0-79) — मिशनरी(श्रीमती मंजरी-48)

सार्जेन्ट(इयामी मचिन-126) — स्टेशन(वैवाहिक अत्याचार-72)

गवर्नमेन्ट(सर01904 231) — पोजीशन(माधुरी, 1922-697)

लेबोरेटरी(नोलमणि-62) — रेग्युलेशन(प्रभा-1924-466)

रेजिमेन्ट(प्रेमयोगिनी-47)

~~विशेषण~~

विशेषण

रजिस्टर्ड(कुम्भकर्ण का वाम-138) — पैसलेबुल(उमा-18)

सोसियर(उमा-18) — आनरेबुल (सर01904-22)

लोअरइंडिया(ठ0ठ0गौ0-196) — इण्डिपेण्डेन्ट(गद्यमाला-128)

अपर (इण्डिया) ,, -196) — कन्जर्वेटिव(माधुरी-1923-703)

डेम्प्टल(इन्दु-1927-600) — लिबरल(,, -1925-276)

ख-2- ख-3 संकर शब्द उपसर्ग

तत्सम उप0 × तद्भव प्रकृति

अनहोते(शकुन्तला-77) अनदेखा(राजकुमारी-100)

अनकहनी(,, -24) अनजानते(नवायनीतनो-79)

अभिलाष(गल्प कुसु0-44) अनगिनती(दुर्गावती-31)

अरबी-फारसी उपसर्ग × तत्सम प्रकृति

बदनाम(मनोरमा-1912-925) सरपंच(कोमोतलवार-24)

बदचलन(राजकुमारी-147) बेसुध(राजकुमारी-147)

बेअक्ल(हत्यारहस्य-105)

अरबी फारसी उपसर्ग × तद्भव प्रकृति

बदजात(तारा-35) बेसमझ(आत्मदाह-130)

बेखटके(नवायनीतनो-19) बेधड़क(वि0क्षो0-44)

बेकहे(,, -17) सरआँखों(कोमोतलवार-78)

प्रत्यय

तद्भव प्रकृति × अव्यय तत्सम प्रत्यय

जिजमान(तुलसीदास-94)

तत्सम प्रकृति × अरबी फारसी प्रत्यय

भुजबंद(शकुन्तला ना0-57) विश्रामदार(वेनिस का स0ना0-58)

तद्भव प्रकृति × अरबी-फारसी प्रत्यय

चक्करदार(राजकुमारी-98) लठैदार(नीलमणि-8)

पहरेदार(नवायनीतनो-21) मुहावरेदार-(नवायनीतनो-40)

चालबाज़(वैज्ञानिक अ0ना0-8) बैठक खाना(संसार-32)

चौधार(पो0द0-22)

अरबी- फारसी प्रकृति × तत्सम/ तद्भव प्रत्यय

साहबवर(कोमोतलवार-133) बचाव(माधो बहुत ना0-109)

फिक्रमतवर(तारा-17)

संज्ञा -

दिनोंदिन (बनवार मा0-2) | घर-घर (कोमो तलवार-35)
मनोमन (रायबहादुर-92) | किनारे किनारे (राजकुमारी-53)
हाथों हाथ (उमा-130) | गली गली (तारा-51)

क्रिया -

सोचते-सोचते (छोटी बहू -20) | घुसते-घुसते (विवाह-13)
बढ़ो-बढ़ो (राजकुमारी-59) | फूंकते- फूंकते (रायबहादुर-83)
देखते- देखते (आश्चर्यमाला-114) | करते- करते ((दुर्गावती -81)
चलते चलते (नारा0 ओर0-113) | बैठो-बैठो (चित्रमाला-12)

अव्यय-

धीरे- धीरे (छोटो बहू-5) | अकाअक (सर0 1907-119)
चटाचट (बु0 ले0-73) | पहले पहल (रजनी-48)
टपाटप (पु0 ह0-1) | बचाबच (नवाबनंदिनी -22)
सटासट (मर्यादा-1979-516) | बीचो बीच (उत्तररामचरित-14)

कभी कभी द्विरूक्त शब्दों के बीच में 'हो' और 'आ ' लगाकर भी अव्ययोभाव समास बनता है --

मनहोमन (सर0 1907-119)
भीतर हो भीतर (चंचलकुमार चंबवर-22)
एकाएक (रायबहादुर-120)

विदेशी- अरबी फारसी

हरदम (संसार-13) | लाउम्र (तारा-22)
बेखबर (कोमो तलवार-46) | हरवक्त (तारा-76)
बिलकुल (धा0 म0 -59) | बगैर (तारा-1)
हरसाल (दुर्गावती-29) | बखूबी (राजकुमारी-57)

द्विरुक्ति

आहिस्ता- आहिस्ता (नवाबनंदिनी-80) | दर दर (राजकुमारी-130)
खुशीव खुशी (नवाबनंदिनी-59) | रोज़ रोज़ (तारा-90)
एकबयेक (नवाबनंदिनी-44) | रोज़ ब रोज़ (तारा-94)

संज्ञा-

ख-2-ग-समास

तत्समता की दृष्टि से द्विवेदी जी युग अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इस युग के लेखकों में विशेष रूप से प्रसाद, गोविन्द नारायण मिश्र हृदयेश, शुक्ला तथा किशोरी लाल गोस्वामी आदि ने तत्सम प्रधान भाषा को ही अपनाया। संस्कृत निष्ठ भाषा के पक्षपाती इन लेखकों की भाषा में समासिक पदावली आना स्वाभाविक ही है। स्पष्टीकरण के लिये गोविन्द नारायण मिश्र की निम्न लिखित गद्यांश पंक्तियां उद्धृत हैं।—

" मनस्वी मर्मज्ञ, सुविमल आम्र विज्ञान सुरभित सुमनमन सुमन दल ही इन अनोखे शिरमोणिमन अद्भुत मित्र कार कुल उजागर चतुर नरवरकुलकमलकमलाकर दिवाकर कविवरों की सुन्दर सुविशाल सुयोग्य सर्वोत्तम सर्व गुण संपन्न अद्वितीय चित्र पट है। " (गो0 नि0-8)

वस्तुतः एक तरफ भाषा की परिष्कार और परिमार्जन युग होने के कारण ~~ह्रेतु के कारण~~ तात्कालीन कृतियों में तत्सम और सजातीय भाषाओं से बने समासों के उदाहरण ही अधिक हैं। वहीं दूसरी तरफ भाषा पर संक्रमित प्रभाव वश प्रारम्भिक कृतियों में विदेशी भाषाओं से बने समासों तथा संकर समासों के भी कुछेक रूप प्रयुक्त हैं किन्तु यह संख्या में बहुत ही कम है।

क- अव्ययीभाव सजातीय - संस्कृत

यथास्थान (सरस्वती-1907-149)	आद्योपान्त(शकुन्तला-114)
आजन्म (उमा- 127)	अन्तलोगत्वा (1658/14 पद्म सिंह)
प्रति मास(प्रभा-1913-214)	प्रतिदिन (प्रभा-1925-101)
	अहोरात्रि (" " ")

हिन्दी

पास भर(छोटो बहू-23)	भरपेट(छोटो बहू-23)
गाँव भर(" -25)	रत्तीभर(रायबहादुर-88)
निधड़क (उमा-127)	दिनभर (गल्प कुसुम-62)
घड़ीभर(तारा-88)	निबड़क(आरण्यबाला-145)
भरसक(" -72)	निडरो (दुर्गावती-22)

हिन्दी में कई अंशों की-भेदों की निश्चित द्वारा भी अव्ययी भाव समास बनते हैं यथा—

संज्ञा -

संकर-

बेवटके (नवाबनंदिनी -19)
बेकदे ('' '' -17)
बेसमझ (आत्मदाह-130)
बेधड़क (वि० कथा०-44)
बेतरह (1637-14 जगन्नाथ, रत्नाकर)

ब - तत्पुरुष - कर्मतत्पुरुष - संस्कृत

सुरापान (वीरों तलवार -192)
अस्ताचल (महा० ई० 55)
मंत्रदाता (महा०ई० -22)

हिन्दी

चिड़ीमार (शकुन्तला ना०-30)
गठकटे ('' '' -115)

अरबी -फारसी -

गर्दन जबमी ([illegible]-100)

करण तत्पुरुष - संस्कृत

चिन्तायुक्त (लक्ष्मी -1908-24)
पददलित (प्रेमयोगिनी-2)
[illegible] आदित (प्र०या०-58)
तुषाराक्रान्त आदित ('' -58)
मदमर्दित (आत्मदाह-2)
शब्द रहित (सर०-1912-102)
अग्निलिप्त (मर्यादा-1912)-52)
बुद्धिहीन (राजबहादुर-90)

हिन्दी -

मुँह माँगी (राजकुमारी-125)
मुँह बद कट (राजबहादुर-142)
लहूलुहान (नवाब नंदिनी-50)
वर्षामारा (राजबहादुर-83)
मनभावना (प्र०या०-1)

तत्पुरुष - सम्प्रदान - संस्कृत

[illegible] (प्रेमयोगिनी-2)
गृहस्थाश्रम ('' -55)
गुरु दक्षिणा (राजकुमारी -394)
भविष्यवाणी (र०बेगम-73)

पशुशाला (प्र०या०-4) देशहितैषी (पृ०३०554)

ब्रह्मचर्य (महात्माई० -4) कर्णफूल- (नवाबनंदिनी-585)

<u>हिन्दी-</u>

रसोईघर (संसार-52) ठकुर सुहाती -(उमा-96)

छः ककड़ी (राजकुमारी-130)

<u>अंग्रेजी -</u>

वेटिंग रूम (नलिनी बाबू -29)

पब्लिक लाइब्रेरी -(कुरंदू का काँटा-44)

<u>अपादान संस्कृत</u>

जन्मान्ध (वेनिस नगर का०व्या०-30)

<u>हिन्दी</u>

देश निकाला (दुर्गावती -46)

<u>संकर -</u>

अकलमंद (नवाबनंदिनी-90)

<u>संबन्ध तत्पुरुष - संस्कृत</u>

मंत्रणागृह (द्रोपदी चीर हरण-5) राजधर्म (सर०-1907-127)

राजकानन (शकुन्तला-218) राजदरबार (सर०-1909-206)

राजप्रासाद (राजकुमारी -161) मृगशावक (प्र०या०-45)

कूप मंडूक (प्र०या०-61) क्षीर सागर (कु०व०व०-108)

<u>हिन्दी</u>

राजकुमारि (कन्या नागानंद -21) राजपूत (तारा -90)

राजमहल (नागानंद-55) राजदरबार (उत्तर रामचरित ना०-11)

घनश्यामा (उमा-11) मृगछौना (शकुन्तला ना०-106)

<u>अरबी -फारसी</u>

दुख खबरी (राजकुमारी -136) सुलहनामे (नवाबनंदिनी -60)

खासी दरबार (राजकुमारी -137) नवाबजादी ('' '' -70)

घुड़सवार (नवाब नंदिनी-29) दुखनसीब (नवाबनंदिनी-96

अंग्रेजी -

रेलवे-डिपार्टमेंट (रायबहादुर-109)

संकर -

चोर दर्वाजा (तारा-88)

अजायबघर (राजकुमारी -151)

सुधार स्कीम (कौमी तलवार-94)

गोष्ठी (कौमी तलवार-87)

हिरनाज (ठ0ठ0मी0-189)

अधिकरण तत्पुरुष

अ- पुरुष रत्न (नवाबनंदिनी-51)

नरपुंगव (रायबहादुर-148)

निशाचर (मल्लिका-38)

शरणागत (माधुरी-1925-261)

कन्यारत्न (तारा -91)

जगत प्रसिद्ध (मनोरमा-1925-492)

सर्वश्रेष्ठ (यो0 मि0 -2)

हिन्दी -

नायेवध (प्रेमयोगिनी -118)

कानाफूसी (रायबहादुर -123)

ग - कर्मधारय समास - संस्कृत (विशेषण पूर्वपद)

नीलाम्बर (उमा-94)

दिव्य ज्योति (उमा -94)

शुभाशिर्वाद (उमा-108)

निलनभोमंडल (मनोरमा-29)

कृष्णवर्ण (मल्लिका -83)

मुख्याध्यापक (पद्मपराग -110)

परमानंद (र0र0-67)

आत्मज्योति (म0 मि0-158)

हिन्दी -

कालापानी (गुलबोबाक-67)

हँसमुख (संसार-48)

शीतल वायु (आरमवाड -1)

काली नागिनी (उमा-107)

अरबी -फारसी -

बुजुर्ग (तारा -31)

बदतमीज (चौ0 ट0 -13)

बुजदिल (तारा -36)

बुद्धिमती (नवाबनंदिनी-81)

बदनियती -(तारा-34)

नेक सलाह(संसार -48)

अंग्रेजी

प्राइममिनिस्टर (कौमी तलवार- 45)

विशेषण- उत्तरपद

नरवर (गो0 नि0- 3)	अस्थिबहुल (नलिनी बाबू- 10)
मित्रवर (कौमीतलवार 73)	बाहु द्वय (उमा-52)
प्रियवर (कौमीतलवार-94)	मित्र द्वय (खरा सोना- 55)

उभय पद विशेषण— संस्कृत

दीन दरिद्र (कौमी तलवार- 58)	श्याम सुन्दर(कृष्णकांत का दा0-130)
ज्ञानी वृद्ध(प्र0या0-28)	शीतोष्ण (अपूर्व आत्म त्याग-19)

हिन्दी—

थकामाँदा (तुलसी दास-7)	ऊँचनीच(प्र0या0-8)
थोड़ी बहुत (संसार-47)	फली फूली(,,- 20)
छोटा मोटा (नीलमणि-20)	लाल पीला (सु0वि0-61)

उपमान वाचक कर्मधारय - उपमान पूर्व पद

कमलानन (कौमी तलवार-97)	वज्र हृदय(प्र0या0-1)
घनश्याम (उत्तर रामचरित -92)	पाषाण हृदय(प्र0या0-6)
चन्द्रानन (,, ,, -93)	प्राणप्रिय (रावबहादुर-127)
श्री चरण (उमा-94)	मृग तृष्ण(बुद्धू का काँटा- 40)

अरबी-फ़ारसी

दरियादिली (कौमी तलवार-87)

उपमान उत्तर पद—

चरण कमल (प्रेम योगिनी-60)	हृदय कुसुम (कौमी तलवार-100)
स्नेह सागर(उमा-60)	आशालता (रावबहादुर-8)
वीर केसरी(द्रौपदी चीर हरण-6)	उपकार महोदधि(,, -128)
हृदय कमल (प्रभा- 1925-201)	हृदय कुंज (न0नि0-86)

= विग्रह की अन्य पद्धति से यही शब्द अधिकरण तत्पुरुष के अन्तर्गत भी रखे जा सकते हैं ।

अवधारण पूर्व पद

पाप पंक (उमा-100) पुरुष रत्न (नवाबनंदिनी-51)
मोक्ष-द्वार (उमा-103) क्रोधाग्नि (कु0व0व0-15)
प्रेमसरोवर (''-100) किरणमाला (प्र0पा0-58)
आपदाकर (र0र0-24) सौभाग्य लता (म0 मि0-58)

अव्यय पूर्व पद :- कु, सु, निर, का, दुर, दु, नि, आदि उपसर्ग तथा गति शब्दों से युक्त शब्दों को कर्मधारय समास के इसी भेद के अन्तर्गत रख सकते हैं। यथा —

संस्कृत -

कुचरित्र (नवाब नंदिनी-20) सुकवि (गौ0 नि0-3)
कुकर्म (कर्म -96) सुचरित्र (नवाबनंदिनी-20)
कुचक्र (तारा -95) सुस्वादु (सर0- 1926-118)
दुर्दशा (हेमलता-152) निर्विकार (मनोरमा-29)
दुर्भाग्य (माधुरी-1925-418) निस्सहाय (आरण्यबाला-2)
अर्थनाशक (चित्रशाला-49)

हिन्दी-

अधखुला (उमा-8) अधजली (आत्मदाह-311)
अधटूटे (उमा-96) सुघर (अब0 पू0-59)
कुलच्छन (सावित्री-25) कुसमय (नवाबनंदिनी-16)
दुबला-(अंजि-36) कुचाली (अब0पू0-99)

संकर-

बेअदब (संसार-44) बदनाम (मनोरमा-1912-925)
बेकबूलनी (बुधवार अं-165) नाकदर (बीमो तलवार-133)
बदचलन (राजकुमारी-148) बिन मसदर (तारा-17)
बदजात (तारा-35)

घ - द्वन्द्व समास - इतरेतर द्वन्द्व -(संस्कृत)

स्त्री-पुरुष (प्र0पा0-28) माता पिता (लक्ष्मी-1908-24)
छिताहित ('' -28) शान्तिवृद्धि (नवाबनंदिनी-2)
आमोद्मोद ('' -28) मानमर्यादा (बीमो तलवार-58)
अनुत्यगान ('' -137)

हिन्दी-

रात दिन (सर0-1904-120) माँ बाप (तुलसीदास-76)

ऊँच-नीच (प्र0या0-8) चाचा-भतीजा (उसने कहा था-61)

जन्म मरन (प्र0या0-28)

अरबी- फारसी

कलम दावात (राव बहादुर-38) कागज कलम (रावबहादुर-118)

औरत-मर्द (राजकुमारी-88) कायदे बे कायदे (नवाबनंदिनी-65

नफा-नुकसान (तारा-89)

समाहार द्वन्द्व - समानार्थी पदों के योग से

संस्कृत

अस्त्र- शस्त्र (भारत दर्पण-39) कथा वार्ता (रावबहादुर-121)

हृष्ट ~~शिरीष~~ -पुष्ट (" "-142) आदर सत्कार (" "-103)

व्यापार वाणिज्य (प्रभा-1924-403) मान- सम्मान (कौमी तलवार-58)

दीन दरिद्र -(" " -58)

हिन्दी -

अन्धड़ तूफान (नवाबनंदिनी-20) कपड़े लत्ते (नीलमणि-20)

काम-धंधा (" -49) घर -द्वार (नीलमणि-46)

किस्से-कहानियाँ- (मर0आ0 -86) कूड़ा करकट- (सुखमयी जीवन-16)

मारपीट (कौमी तलवार-232) गाजर मूली (दुर्गावती -98)

पता-ठिकाना (रावबहादुर-45)

अरबी- फारसी -

सूरत शकल (राजकुमारी-24) यार दोस्त (रावबहादुर-90)

आर्जू मिन्नत (तारा-3)

मिलते जुलते अर्थ पद योग से - संस्कृत

धन धान्य (कौमी तलवार -43) श्रद्धा- भक्ति (नवाबनंदिनी-48)

भोग विलास (" "-31) नृत्य गान (प्र0या0 -237)

रूप रंग (तारा-63) तर्क वितर्क (राजकुमारी-133)

कला कौशल (प्रभा -1924-403) जरा मरण (किन्नरी-46)

द्वन्द्व

मार-काट(तारा-94)   हँसते बोलते(नवाबनंदिनी-57)

लड़ाई-झगड़ा(,,-94)   खेलते-कूदते(,, -57)

गाना-बजाना(राजबहादुर-129)   हँसो-खेलो(,, -37)

छूटो-पलटो(राजकुमारी-146)   बहू बेटी(संसार-16)

भरकम भड़ती(दुर्गावती-112)   हाड़-मांस(राजकुमारी-148)

लिखा पढ़ी(1652/14 पद्मसिंह शर्मा)

अरबी-फ़ारसी-

फ़लाह इकबाल(चौमोतलवार-74)   मामला-मुकदमा-(संसार-46)

अदब कवायद(तारा-13)   औव्वल गुजारो(राजकुमारी-130)

ऐश-आराम(,, -84)   सलाह-मशविरा(सर01926-132)

परस्पर - विपरीतार्थी पदों के योग से-

संस्कृत-

अस्त- उदय(चौमोतलवार-103)   बाल-वृद्ध(प्र. मा.-10)

हानिवृद्धि(नवाबनंदिनी-3)   हिताहित(अपूर्व आत्मत्याग-186)

जीवो-मृत (प्रमा.-1)   जन्म मरण(प्र. मा.-15)

आकाश पाताल(गल्प कुसुम-84)

द्वन्द्व-

रात-दिन(सर01904-120)   हिन्दू मुसलमान(चौमोतलवार-84)

उतार-चढ़ाव(तारा-19)   घटती-बढ़ती(नवाबनंदिनी-2)

आना-जाना(डाकघर-47)   बाहर-भीतर(राजकुमारी-137)

लेन-देन(राजबहादुर-184)   आगे पीछे(दुर्गावती-421)

ऊँच नीच (प्र0मा0-8)

अरबी-फ़ारसी-

नफ़ा- नुकसान(तारा-89)   फ़ायदे- बेफ़ायदे(नवाबनंदिनी-65)

औरत-मर्द(राजकुमारी-88)

सार्थक- निरर्थक पदों के योग--

हिन्दी-

अड़ोसी-पड़ोसी(तुलसीदास-9) आस पास(तुलसीदास-9)

बुड्ढे सुड्ढे(संसार-45) आमने- सामने(मनोरमा-366)

कोलाहल औलाहल(प्र०था-12) ठाक ठाक(नीलमणि-20)

मिलना जुलना(,, -12) ढीलो ढौली(बुद्धू का कांटा-44)

अरबी- फारसी-

अगल बगल(राजकुमारी-99) अवाजा सवाजा(संसार-40)

इर्द-गिर्द (अ० का ना०-5)

बारा न्यारा(तारा-5)

संकर

अदाब बंदगी(नवाबनंदिनी-93) आदमी-चाकर(राजकुमारी-87)

कागज़ पत्तर(राजकुमारी-34) नाम निशान ,, -24)

नौकर चाकर(तारा-68) हँसी दिल्लगी(नवाबनंदिनी-38)

कवि पेन्टर(गद्यमाला-141) चीज़ वस्तु (नवाबनंदिनी-41)

घर द्वार(नीलमणि-46) उद्योगधन्धा(माधुरी-1925-420)

ङ-- पूर्व पद संख्यावाचक कर्मधारय या द्विगुसमास

संस्कृत -

शताब्दी(सर01903-98) त्रिभुवन(अनो बक्स-113)

त्रिशूल(कोमो तलवार-37) षट्शतिका(संसार-42)

त्रिवेणी(द्रौपदी चीरहरण-31) नौ नवराशि (,, -32)

द्वापर(,, -45) षट्रस(चरखता-41)

अष्टधातु(भीष्म प्रतिज्ञा-12) शतदल(उमा-94)

हिन्दी(

तिगुना(सर01907-194) अठ खेलियाँ(विवाह कुसुम-66)

तिबारा(संसार-26) दुपहरिया(संसार-4)

दोबारा(,,26) दुअन्नी(हत्या रहस्य-5)

चालड़ा(,, -38) चौअन्नी(सर0औ0-51)

चौकोन(,, - 26) चौखूंटे(राजकुमारी-141)

संकर—

पंचमजार्ज(कोमोललवार-98) छमासे(राजकुमारी-47)

दुमंजिला(तारा-57) तीनमंजिला(,, -71)

अठवारों(,, -99) बारहदरी(तारा-46)

चौमासे(वि०च०-44) छदराग(तारा-65)

सतयुग(द्रौपदीचीरहरण-45) तिरपाल(ठ०ठ०गी०-257)

च- बहुव्रीह

संस्कृत

पंजाब केसरी(कोमोललवार-97) निर्मल(शकुन्तला ना०125)

पंचशर(शकुन्तला ना०-50अ नन्दनंदन(प्रेमयोगिनी-78)

चतुरानन(द्रौपदी चीरहरण-9) गिरिधारी(,, -92)

पांचाली(,, -23) वैनतेय (नागानंद-92)

गांडीवधारी (,, -31) चिन्तामन्दन(नागानंद-66)

नीलकंठ(उमा -101) शशिशेखर(नवाबनंदिनी-26)

चन्द्रमौलि(वरमाला-36) चन्द्रमुखी(उ०रा०ना०-96)

वज्रहृदय(च०अ०-1) कुलकुरय(आ०हि०-144)

हिन्दी-

गठपटे(शकुन्तला ना०-115) परकटी(रमाबाई-3)

हंसमुख(संसार-48) बंदरमुंहा(नवाबनंदिनी-37)

पंचहत्थी(संसार-60) दुधमुंहा(उमा-60)

दुनालिया(रायबहादुर-154) कलमुंहा(रायबहादुर-131)

हटाकुट(दुर्गावती-90) मुहचट(,, -131)

संकर

बेदखल(नीलमणि-8)

करोड़पति(नीलदीप-42)

क-2-ख- द्विरुक्तादि शब्द:

प्रत्यय युक्त ~~अव्ययों~~ की द्विरुक्तादि शब्द भी यौगिक शब्द के अन्तर्गत ही आते हैं। सामान्यतः इनमें से अधिकांशतः द्वन्द्व समास युक्त होते हैं जो संज्ञा का भी काम देते हैं किन्तु इनमें एक संख्या ऐसे शब्दों की भी होती है जो द्वन्द्व भाव से संयुक्त अव्ययवत् व्यवहृत होते हैं तथा कुछ युग्मक शब्द व्याकरण के अन्य शब्द भेदों के अन्तर्गत भी आते हैं। किसी भी भाषा में प्रयुक्त इन शब्दों का विवेचन रचना और प्रयोग दोनों की दृष्टि से तात्कालीन भाषा- अध्ययन के लिए अपेक्षित होता है क्यों कि इनके द्वारा भाषा की व्यंजनाशक्ति और क्षेत्र विस्तार में काफी सहायता मिलती है। द्विवेदी युगीन भाषा में प्रयुक्त इन द्विरुक्तादि शब्दों को मुख्यतः 4 वर्गों में विभाजित करके अध्ययन किया जा सकता है।

(1) एक ही शब्द की आवृत्ति

(2) सम्बद्ध शब्द द्वारा आवृत्ति

(3) प्रतिध्वनित शब्द

(4) अनुकरणात्मक शब्द

क-2 ख-1 एक ही शब्द की आवृत्ति -क- (शब्द के अनुसार)

(1) संज्ञा- विस्तरण- विभाग:-

तुम्हें डाले-डाले के लिए भटकना पड़ा (राजकुमारी-48)

नस नस टूट रही है (,, 62)

उसके रोम रोम से यौवन - - (तारा-47)

उनके अंग अंग से लावण्य - - (नवाबनन्दिनी-85)

जाति के रग रग में - - (कौमी तलवार-20)

मेरे रोम रोम में प्रवाहित है (,, -97)

इधर उधर सब पूछे - - - (रजिया बे0-73)

कौड़ी कौड़ी मांग के तो - - (तुलसीदास-9)

वह हर पग पग पर मकान में (विवाह कुसु0-57)

भावविह्वलता-

उसने फिर पुकारा - भोली- भाभी । अरे - (औटो वहू-7)

कभी कुल की बेटा- बेटा कह कर — — (गल्प कुसुम-62)

बल या जोर--

अर्जुन है यह भीम? अधर्मुख् धुधर्मु कहते हैं (द्रौपदी चीरहरण-48)

दुःख से बचने के लिए धुर्म-धर्म नहीं मसाला है (प्रेम योगिनी-7)

हिन्दुओं की तरफ दिल न साफ करने वाला मुसलमान्-मुसलमान नहीं चाण्डाल है (कैसी तलवार-03)

प्रयोग के अनुसारः-

प्रयोग के अनुसार आवृत संज्ञा शब्द अन्य शब्द भेदों के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं यथा--

विशेषण--

बूंद बूंद पानी -- (सरस्वती-1908-23)

गुच्छे गुच्छे घुंघराले केश (संसार-54)

उसका रत्ती रत्ती हाल (राज कुमारी-119)

भारत का राशि राशि गुण संचय (आ०हि०-120)

शरीर को कुण्डो कुण्डो टुकड़े आकाश में (आत्मदाह-311)

हमारी हिन्दी चिन्दी चिन्दी पत्तों में उड़ा देने लायक है (रायबहादुर-152)

क्रिया विशेषणः-

तुम ऐसी पसीने पसीने क्यों हो गई (राजकुमारी-2)

खाने खाने के लिए द्वार द्वार भटकना पड़ा (राजकुमारी-48)

जो घर घर की गली गली घूम घूम कर (तारा-51)

कौमिनी किनारे किनारे चलती हुई (तारा-88)

तुम ऐसी वन-वन भटकने वाली (प्रेम योगिनी-123)

आज सवेरे सवेरे जोरू को (संसार-66)

रोज रोज चिट्ठी भेजते जाना (मानो मस्न्त ना०13)

दुःखों को भूल भूल कर खुशी खुशी बुलाते हो (विवाह कुसुम-8)

दिन दिन यह पुष्ट हो और (आत्मघाती-101)

पानी पानी हो गया (प्र०या०-6)

विस्मयादिबोधक-

शांति ! शांति ! ---- (कोमो तलवार-70)

अनर्थ ! अनर्थ ! अनर्थ ! (द्रोपदी चीरहरण -70)

अरे लाल ! अरे लाल ! ------ (तारा -55)

शिव ! शिव ! (रायबहादुर -97)

राम! राम ! - (प्र0 भा0 -2)

सर्वनाम

जो- जो किया था ---- (नवाब नंदिनी --55)

जो- जो आप लोग चाहे सो - सो करे (द्रोपदी चीरहरण -16)

न जाने क्या - क्या कहती है (राजकुमारी-64)

कौन -- कौन- कौन लड़ रहे हैं --- (दुर्गावती -104)

यह सबोध किनको - किनको हां (तारा -8)

कोई-कोई दूर से उनके समीप आ गया (चन्द्रशेखर-36)

(111)विशेषण (शब्द के अनुसार)

विभिन्नता -

कुल में भांति-भांति वीर ---(भेटो बहू - 11)

भांति - भांति फल आलियाँ (सर01904-15)

भिन्न - भिन्न स्वरूप बनते हैं (कर्ण-47)

तरह - तरह की बीमारियाँ (प्रेमयोगिनी-87)

वितरण -

ऐसे- ऐसे बहुत ढंग है- -- (प्रेमयोगिनी -88)

कोई- कोई मूर्तियाँ ---(सर0 1904-10)

क्या - क्या सुख मिलते ---(तारा 71)

अन्य - अन्य घोर आसुरी कृत्य - (प्रेमयोगिनी - 24)

दूसर - दूसरे कोमों को उत्थान- (आरण्यबाला-99)

संचालन के लिए पृथक- पृथक विभाग (प्रभा 1924-440)

पृथकता-

जो - जो शब्द छपे ---- (सर01903-102)

हर एक ओर तीन-तीन दरवाजे-(राजकुमारी - 91)

गुड़ गुड़ बातें - - - - (प्रेमयोगिनी -65)

खो- खो खाये जमीन - - - (प्रेमयोगिनी -84)

खजाने से हजार - हजार रुपये('' - 81)

मेवा मोटे- मोटे हरफों में - - -(विवाह कु0-62)

उनमें से एक कुम्भ एक हमारे तीन तीन सिपाहियों के - - - - (दुर्गावती-90)

एक - एक पुण्य को - - - - (प्रभा-1922-85)

अपने प्रधान - प्रधान मंत्रियों से (प्रभा - 1925-104)

निश्चय -

आपको पूरी - पूरी मदद करूँगा (राय ब बहादुर -92()

पूरी - पूरी आमिष कथरों में - -(मर्यादा 1979-3)

ठीक - ठीक स्थान पर- - - - -(प्रभा -1922-85)

अनिश्चय अतिशय-

ये बूढ़े - बूढ़े लोग - - - -(डोपड़ा बार-झरना-7)

गरम - गरम दूध- - - - (पू0 हलचल- 35)

झूठी - झूठी बदनामियाँ - -(तारा-25)

आठ - आठ खिलौने - - - - (संसार -5)

काली - काली बड़ी -बड़ी आँखे -(संसार-9)

बहुत - बहुत विनती (छोटी बहू- 13)

मीठी - मीठी बातें - - - -('' -58)

हरे - हरे मैदान के - - -(चो0 द0-1)

बड़े - बड़े वृक्षों - - - --(मर्यादा -1912-30

मंद- मंद चोटों - -- -(मर0 1912-102)

कोरा - कोरा उत्तर- - -(आरण्य बाल-57)

भोरी - भोरी बच्चियों- -(गल्प कुसु -63)

लाल - लाल आँखे- - - -(म0 मि_ -47)

ऐसा- ऐसा विपत्तियाँ - -(मर्यादा 1979-34)

प्रयोग के अनुसार अन्य शब्द जोड़ रूप में

(1)-संख्या -

ब - प्रयोग के अनुसार अन्य शब्द भेद रूप में

(i) संज्ञा -

टुकड़े टुकड़े हो है - - - -)(पानेयक्षात ना0(-110)

उनमें से एक - एक भी छोड़े - - -(1649-14 चतुर्वेदी)

बड़े बड़े हो हैं छोटे छोटे हो हैं (गल्प कुसु0 -62)

क्रिया विशेषण रूप में

सन - सन बयार चलने लगा, झिम - झिम पानी बरसने लगा - - - (ठ0ठि0ठा0-37

प्रथम - प्रथम मिला बुधिष्ठि - - - -(द्रोपदी चीर हरण-45)

हाथ पैर लम्बे- लम्बे हैं (संसार -14)

मैं यो अलग - अलग रहा (मर्यादा -1979-34)

कुछ - कुछ समझ लिया - - - - (आत्म बाध-101)

सब - सब बातें साफ - साफ कहे - - -(विवाह कुसुम-39)

(iii) विस्मयादि बोध

अच्छा, अच्छा ! आचार्य पुत्र - - - -(द्रोपदी चीरहरण-67)

कैसा ! कैसा ! - - - - - - - - -(" " -11)

क्रिया

आग्रह -

आओ - आओ दस्तार - - - -(तारा -48)

भागो- भागो, जल्दी- जल्दी भागो--(राजकुमारी-2)

बचाओ, बचाओ- - - - -(प्रेमयोगिनी -129)

आइए, आइए, - - - -(दुर्गावती - 50)

बैठिये- बैठिये- - - - - (दुर्गावती -105)

कहो - कहो मेरे लिये - - (प्रेमयोगिनी-114)

आदेश-

छेड़ - छेड़ चण्डाल - - - - -(द्रोपदी चीर हरण -64)

घुमों - घुमों - - - - - - - - -(संसार -65)

देखो - देखो - - - - - - - -(महावीर चरित ना0-88)

चलो - चलो - - - - - - - - (सत्य नारायण-114)

ठहर- ठहर- - - - - - - (" " -94

उठ - उठ - - - - - (दुर्गावती -26)

कहो - कहो डरते क्यों हो - - (द्रौपदी चीर हरण-12)

बाल - या जोर-

कहूँगी कहूँगी - - - - - - - - - - - -(संसार - 66)

होगा- होगा हजार दफे होगा- - - - -(राव बहादुर -66)

कृदन्तीय द्विरुक्ति - वर्तमान कालिक कृदन्त

खींचते - खींचते थक गया- - -(द्रौपदी चीर हरण-68)

जाते जातम- देखा- - - - - -(तारा-87)

12 बजते - बजते चला गया (छोटी बहू-23)

घुसते - घुसते कहा - - - (वि. वाड कुसुम-13)

चिट्ठी - लिखते - लिखते ऊषा का (आरण्य बाला-67)

लड़को को मारते - मारते लाया '(मानवीय सन्तान0-22)

बढ़ते - बढ़ते इस खट पट ने (वि0 कसौ0 -402)

चूल्हा फूँकते- फूँकते तेरो - - - - - -(रावबहादुर-83)

भूतकालिक कृदन्त

आदमी बड़ा - बड़ा दरवाजन से (नबाब नंदिनी -37)

हिला - हिला' चमका- चमका कहती (संसार -28)

आया- भया चली- - - - - - - - -(तारा-76)

बिछौने पर पड़ी- पड़ी रात भार - - (छोटी बहू-23)

बैठे - बैठे बातें बनाना- - - - - - - - - -(झाँसी-238

पूर्व कालिक कृदन्त

पूर्व कालिक कृदन्तीय द्विरुक्ति का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में हुआ है -

पौनः - पुन्यः -

रह - रह कर उसका हिया (चंद्र धर- 7)

वह बार- बार आँखें मल- मल कर (राजकुमारी-28 -8)

तवें को उठा - उठा कर - - - - ('' '' -91)

तर्जी-जी

निकाल निकाल कर खाने लगी(नालमणि-3)

लौट लौट कर हमला करें - - (दुर्गावती-109)

छापा लगा लगा कर देखा (आ0हि0-59)

इकार इकार कर कह सकते हैं (प्र0या0 -152)

अतिशय--

बुढ़िया का सुबक सुबक कर रोना जारी रहा (छोटी बहू-3)

माता ने रो रो कर पुत्र से (,, -4)

सुबुक- सुबुक कर रोती रही (राजकुमारी-59)

बादशाह के कान भर भर कर (तारा-44)

जमीन पर लोट लोट कर (विवाह कुसुम-40)

फूट फूट कर रोने लगी (मर्यादा1979-30)

बिलख बिलख कर (प्र0या0170)

फूंक फूंक कर झाड़ा (कुमार आ0-78)

(6) क्रिया विशेषण

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया विशेषण भी संज्ञा और विशेषण आदि की तरह वितरण, अतिशय पौनः पुन्य: आदि वर्गों में विभाजित हो सकते हैं, किन्तु यहाँ पर सुविधा की दृष्टि से इनका विभाजन ' प्रकार' की दृष्टि से किया गया है यथा--

काल वाचक

जब जब बादशाह दारा के अत्याचार से अप्रसन्न होते--तो तब तब - वह - - - - -(तारा-62)

उनसे कभी कभी आ कर - - (राजकुमारी-62)

कब कब हमने नहीं भोगा(मनोरमा त -13)

अभी अभी में संगीत (रायबहादुरस्त129)

स्थान वाचक-

कहीं कहीं बिजली भी (संसार-6)

कहीं कहीं इसे साथ ले जाता(विवाह कुसुम-30)

जहाँ जहाँ चोरी चोरी जाता वहाँ वहाँ ये कुत्ते जरूर जाते हैं(कुमार आ0-79

रीति वाचक:-

डगमगाते पैरों वेग वेग जाता है(शकुन्तला-70)

धीरे धीरे समझाने लगा (छोटा बहू -5)

जैसे जैसे चोर खींच कर छीनना चाहता है तैसे तैसे चोर - -(द्रौपदी चीरहरण-63)

संकुचित मन से शनैः शनैः होरक (विचार कुसुम-60)

ज्यों ज्यों कंचित को जाती है त्यों त्यों यह और भी (राव बहादुर-105)

जल्दी जल्दी छपे तो जल्दी जल्दी भेजें (1649/14 हरिहर प्रसाद)

अरबी फारसी:-

इस तरह आहिस्ता आहिस्ता पर (नवाब नंदिनी -70)

ज़ोर ज़ोर से गर्दन हिला कर (विहार कुसुम-12)

अन्य अव्ययों को निम्नलिखित से भी क्रियाविशेषण बनाया गया है --

यह आगे आगे आया है और लोग पीछे पीछे आते होंगे (नवाब नंदिनी-32)

आज बार बार क्यों होता है (कु0म0द0-15)

बीच बीच में कहीं चम्पोवद् (संसार-6)

(7) विस्मयादि बोधक अव्ययों की द्विरुक्ति:-

शोक:-

हा ! हा। (राजकुमारी-150)

हाय ! हाय! बेटा (नागानंद-90)

आह! आह! इन लोगों (द्रौपदी चीर हरण-19)

ओफ ओफ यह तो और गजब हुआ(चन्द्रकान्ता-41)

घृणा:-

छिः! छिः! तुम पर दया आती है (रावबहादुर-97)

छिः छिः सब लोग (राज कुमारी-90)

राम राम ! (प्र0वा0-8)

हरे ! हरे ! (छोटी बहू -25)

रे रे पिशाच ! (तारा-92)

(अरबी फारसी)

तोबा! तोबा! (तारा-32)

अल्लाह! अल्लाह! (तारा-55)

हर्ष :-

अय! जय ! (महावीर चरित ना07)

वाह! वाह!! वाह !!! (मालविका-61)

धन्य ! धन्य !(द्रौपदी चीरहरण-2)

अहा! अहा! (कृष्णार्जुन युद्ध-86)

आश्चर्य :-

हैं! हैं ! यह बात क्या तुम सच कह रही हो (तारा-85)

कैसा ! कैसा! ----(द्रौपदीचीरहरण-11)

अरे! अरे! आप कहाँ! (दुर्गावती-46)

क्या ! क्या! अमंगल(मल्लिका-39)

हैं! हैं! पितामह जी !(भीष्म प्रतिज्ञा-103)

बल या जोर :-

अच्छा! अच्छा! आचार्य पुत्र(द्रौपदी चीरहरण-67)

शांति ! शांति ! (चौमोसलवार-70)

हाँ ! हाँ! आप घबड़ाइये नहीं (स्वामीभक्ति-87)

दोहाई दोहाई !दोहाई !!! (स०ओम581)

अरबी-फारसी :-

बेशक! बेशक !!(तारा-2)

जरूर! जरूर गवाह दूँगा (संसार-49)

(8) विकृतादि शब्दों में निपातों* का आना ।

(क)- संज्ञा-

ही

मन ही मन (स०-1907-119)

अंधेरा ही अंधेरा(प्र० या०-154)

पुरुष ही पुरुष(मनोरमा-1925-177)

बालू ही बालू (अरण्यबाला-98)

विश्राम ही विश्राम(,, -146)

---

*पदबंध के विवेचन में विभिन्न अर्थों (अर्थ) अर्थों के अनुसार इन निपातों के आगमन हैं. यही शब्द अन्य शब्द भेद के अन्तर्गत भी आते हैं किन्तु यहाँ [illegible] प्रयोग परमात्र शब्द अनुसार ही निपात का योग दिखाया गया है । पदबंध के विवेचन में विभिन्न अर्थ में इनका प्रयोग देखिए - 6 - पदबंध -

अरबो - फ़ारसी-

दिल ही दिल में (तारा-82)

मर्द ही मर्द - - (मानो दस्त न मा०-11)

का, के, को, - -

घड़े घड़े के घड़े (कौमोतलवार-143)

गाँव का गाँव (संसार-15)

लड़कों को लड़कों - (तुलसीदास-7)

बात की बात - - (संयोगितास्वरण-33)

गरीब के गरीब - - (चौडानोतलवार-185)

झुण्ड के झुण्ड - - (मल्लिकादेवी-5)

ढेर का ढेर - - (हा०का०कु०-13)

ब,-पर,

रोज़ ब रोज़((तारा-94)

दिन ब दिन (प्रेम योगिनी-3)

मिसरे पर मिसरा (कौमोतलवार-239)

पैर पर पैर (संसार-12)

दिन पर दिन (प्र०पा०-9)

दलीलें पर दलीला - (तारा-60)

दुवा ब दुवा - (नवाबनंदिनी-95)

सद, रे-

अफसोस, सद अफसोस - कौमोतलवार-75)

बाप रे बाप - - (नीलमो बाबू-19)

दय्या रे दय्या (संसार-66)

ख- सर्वनाम:-

न, व

खुद व खुद - - - तारा-30)

कोई न कोई - - (प्र०पा०-42)

कुछ न कुछ - - (लैलामजनू-22)

ग- विशेषण:-

ही- साफ ही साफ (तारा-83)

हरा ही हरा- - (झा0 का0कु0-387)

अच्छा ही अच्छा (दुर्गावती-59)

प्रणाम ही प्रणाम (विवाहकुसुम-47)

न- कुछ न कुछ वस्तुयें (सर01904-137)

एक न एक (राव बहादुर-109)

व- एक व एक (नवाब नौदिनी-44)

तर व तर (उमा-2)

का, से, टेढ़ो को टेढ़ो (भार0औ0-113)

बुरे से बुरे (कर्जा -96)

महानि से महानि(कौमोतलवार-1)

कम से कम - - (अरण्यबाला-46)

बढ़ियाँ से बढ़ियाँ (प्रेम योगिनी-79)

बड़ा से बड़ा (भारत दर्पण-21)

अधिक से अधिक(प्र0या0-147)

घ- क्रिया:-

जाय तो जाय (राजकुमारी-118)

डूबते न डूबते(रावबहादुर,-110)

देखते ही देखते (अम्प कुसुम-25)

तैरते ही तैरते (चन्द्रशेखर-5)

ङ- क्रिया विशेषण:-

ही- भीतर ही भीतर(चन्द्रधर-32) अन्दर ही अन्दर(तारा-47)

तड़के ही तड़के(संसार-37) धीरे ही धीरे(सरलतरंग-90)

जल्दी ही जल्दी (मृणमयी-44)

क-2-ग-2 सम्बद्ध शब्द द्वारा आवृत्ति

समूह का अर्थ प्रकट करने के कारण ऐसे शब्दों को समाहार द्वन्द्व समास के अन्तर्गत विवेचित किया जा चुका है । (देखिए ख - 2 - घ - द्वन्द समास)

यहाँ पर मात्र स्पष्टीकरण के लिए इन सम्बद्ध शब्दों की आवृत्ति को मुख्यतः दो प्रकारों में वर्गीकृत कर के दिखाया जा रहा है :-

(1) समानार्थी सम्बद्ध शब्दों की आवृत्ति

(2) विपरीतार्थी सम्बद्ध शब्दों की आवृत्ति

क-* :- समानार्थी सम्बद्ध शब्दों की आवृत्ति -

(1) संज्ञा तत्सम-

अन्न-वस्त्र (धौली तलवार-39)
भोगविलास (खरा सोना - 18)
धन-धान्य (भारतदर्पण-43)
अध्याधि (नवाबनन्दिनी-48)
मान-मर्यादा (अंगूठी का नगीना-182)
कथा-वार्ता (रायबहादुर-1 121)
नष्ट-भ्रष्ट (धर्मवीर-104)
जरामरण (किन्नरी-46)
आदर-सत्कार (मल्लिका - 15)
नृत्यगान (प्र०पु० 137)
राग-रंग (मृण्मयी-48)

तद्भव -

ईंट-पत्थर (राजकुमारी-96)
हाड़-मांस (मृण्मयी - 7)
झगड़ा-टंटा (शकुन्तला नाटक-86)
हड्डी-पसली (कृष्णार्जुन युद्ध -85)
तन मन धन (धौली तलवार-58)
बहू- बेटियाँ (संसार-16)
गाजर मूली (दुर्गावती-91)
पता-ठिकाना (पण्डित जी-123)
भाई बन्धु (दुर्गावती-98)
काम-काज (सुलतान-68)

---

* समानार्थी सम्बद्ध शब्दों में एक तो वह होता है अर्थात इस प्रकार के सम्बद्ध शब्द संकुचित अर्थ में एक ही अर्थ के द्योतक होते हैं किन्तु दूसरा सम्बद्ध शब्द प्रथम से कुछ भिन्न होता है किन्तु व्यापक रूप में उसी अर्थ का द्योतक है, यहाँ पर येह दोनों ही प्रकार के शब्द सम्बद्ध समानार्थी के अन्तर्गत ही विवेचित किये गये हैं।

स्त्री-पुरुष(अपूर्व आत्मत्याग-188)

आकाश पाताल(गल्प कुसु0-84)

तद्भव-

रात दिन(सर0 1904-120)

माँ-बाप(तुलसीदास-73)

ज्वार भाटा(कौमोतलदास-72)

लेन देन(रायबहादुर-104)

अरबी-फारसी-

नफ़ा- नुकसान(तारा-89)

औरत-मर्द(राजकुमारी-88)

कायदा-बेकायदा([illegible]-65)

(2) विशेषण-

काला-गोरा(कृष्णकान्त- का0बा0- 128)

बूढ़ा- बुढ़िया(कर्मवीर-124)

लाल हरा(,, -207)

छोटा बड़ा(अंगूठी का न0-95)

(3) क्रिया-

आता-जाता(तारा-79)

आओ-जाओ(शकुन्तला ना0-

मरता-जीता(राजकुमारी-51)

उठो बैठो(रायबहादुर-104)

हँसना रोना (नवाब नंदिनी-2)

(4) क्रिया विशेषण-

दाहिने बायें(राजकुमारी-89)

इधर उधर(आत्मदाह-360)

आगे पीछे(कृष्णमयी-74)

आज कल(माधुरी-1925-289)

बाहर भीतर(अंगूठी का न0-7)

4-2-4-3 प्रतिध्वनित शब्द-

बोल चाल या जनसमुदाय की भाषा से गृहीत प्रतिध्वनित शब्द तद्भव ही होते हैं। समूह का अर्थ द्योतित करने के कारण इन्हें समाहार शब्द के अन्तर्गत भी दिखाया जा चुका है। विवेच्य युगीन भाषा में इन शब्दों के प्रयोग में एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि भाषा के परिष्कार और परिमार्जन के साथ ही साथ इनके प्रयोग में भी कमी होती गई। यहाँ तक की परवर्ती कालीन प्रसाद, शुक्ल, हृदयेश माधवप्रसादमिश्र जैसे संस्कृतनिष्ठ भाषा के पक्षपाती लेखकों ने तो इनका एक प्रकार से बहिष्कार ही कर दिया। फिर भी इन शब्दों का प्रयोग भाव और भाषा की आवश्यकतानुसार होता ही रहा।

इन्हें तीन वर्गों में विभक्त कर के अध्ययन किया जा सकता है:-

उलूल-जुलूल (1652/14 पद्मसिंह)

अंट-संट(,,

गुम-सुम(माँ-383)

तकर-मकर(कलयुगी परिवार-10)

सामना-सामना(माँ-422)

लस्टम-पस्टम(संदेश-68)

तड़क-भड़क(,, -75)

3-व्याकरण

भाषा विशेष के विवेचन और विश्लेषण में व्याकरण सूत्र का काम करता है। क्यों कि व्याकरण का स्वरूप निर्धारण तात्कालीन प्रचलित भाषा के स्वरूप के आधार पर ही होता है। यह दूसरी बात है कि उस विशेष युग की भाषा में शब्दों का आगमन विभिन्न स्रोतों से हुआ हो, किन्तु उसका व्याकरण अपना होता है।

इसी स्वरूप अर्थात व्याकरण के अनुशीलन के आधार पर ही द्विवेदी युग को भाषा परिष्कार और परिमार्जन की दृष्टि से स्वर्ण युग कहा जाता है। वस्तुतः व्यवहारिक दृष्टि से इस युग की भाषा बहुत सीमा तक व्याकरण सम्मत ही है फिर भी कुछ प्रारम्भिक रचनाओं में कालविशेष के प्रभाव वश अथवा लेखकों की प्रगति के अनुसार रूप संबंधी कुछ अनियमितता आ भी गई है। किन्तु युग के विकास के साथ ही साथ भाषा भी अस्थिरता से स्थिरता की ओर अग्रसित हुई।

व्याकरण के अन्तर्गत इस युग में प्रचलित सब व्याकरणिक कोटियों में विभाजित विभिन्न शब्द भेद अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण अव्यय आदि का संश्लेषणात्मक अध्ययन वाक्य योजना की एक इकाई के रूप में किया गया है। साथ ही वाक्य के परिचालन और अनुशासन व्यवस्था में पदों के योगदान को भी ध्यान में रखा गया है।

संश्लेषणात्मक दृष्टि से द्विवेदी युगीन व्याकरणिक शब्द भेदों का अध्ययन निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है।,—

3-1 संज्ञा— 1- कारक, लिंग, वचन की दृष्टि से इस युग में भी संज्ञा शब्दों में प्रत्यय योगमूलक परिवर्तन सामान्य रूप के अनुसार ही हुआ है जैसे—

3-1 क संज्ञा के भेद—*

(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा—

शकुन्तला— अंगुली से सखी को झिड़कती है (शकुन्तला ना0-23)

रात्रि में जङ्गलों में फेरा करता रहा(कृष्णार्जुन युद्ध-28)

महात्मा कौशिक जी आप आचरण के निधि हैं(महावीरचरित्र-13)

~~यह तो राजा भगीरथ को घातो है (महावीर चरित्र-13)~~

यह तो राजा भगीरथ की थाती है(गंगावतरण-32)

भगवन् तो सिर पर हाथ धरे कोने में बैठे थे(बुद्धू का कांटा-45)

सरयू पूजन को आई थी (गौतम बुद्ध-52)

(2) जाति वाचक संज्ञा--

इस देवालय में देवता की आराधना करने वाली कोई सुन्दर नारी वीणा को बजाती है (नागानंद-11)

शीघ्र ही सब कुमारियों को पाठ के लिए भेजो, (संयोगिताहरण-1)

तूने स्त्री के वशीभूत हो कर यह पाप किया है(भीष्म प्रतिज्ञा-11)

इस संसार में सब तरह की प्रकृति के मनुष्य परमेश्वर ने पैदा किये है (पौ0ट0-46)

एक अधेड़ मर्दाविय कुर्सी पर बैठे पुस्तक पढ़ रहे थे(सुखमय जीवन-14)

राज्याकांक्षा के लिए भाइयों और पुत्र, पौत्रों को कटाया है (भारतदर्पण-59)

(3) भाव वाचक--

आपने निष्कपट आत्म प्रदान कर जो कृपालुता दिखाई यही बहुत है (नागानंद-67)

इसी लिए पुत्र पर माता को बड़ा क्रोध होने लगा(छोटोबहू-6)

वहाँ तुम्हें पूर्व से भी अधिक सुख प्राप्त होगा(सतीप्रभा-136)

कोई तो बेचारे ऐसे हैं जो बुराई को बुराई भलाई में देने को उत्सुक रहते हैं और कोई ऐसे हैं जो अपने साथ भलाई करने वालों हो पर कुठार चलाने की तलाश में रहते हैं (पौ0ट0-47)

कल रंग भूमि में हार होने से तुमको लाज नहीं आई और रात को भी होने पर भी तुम्हारा मन डोला न हुआ (रणधीर प्रेम-107)

पर इससे भी क्या बड़ी प्रशंसा की बात हुई (उत्तर राम चरित्र-115)

(4) द्रव्य वाचक--

स्त्रियाँ इन सोने चाँदी के अलंकारों के लिए क्या न करेंगी (मानोवसन्त ना0-53)

मुँह पर पानी छिड़कना(मर0-1920-263)

अपने नेत्रों के जल से मेरे धैर्य को बहा मत दो (महा0ई0-16)

वह आप की डोरी का अमरेश रंगशाला भारम्भ हो गई(द्रौपदीचीरहरण-53)

जर में बहुत पानी मत पियो(वनवीर ना0-110)

सोना ही सोना जितना तपाया जाता है(भारती-249)

---

* दैविक शब्दावली के अन्तर्गत संज्ञा के भेद ।

विशेष :— अर्थ को दृष्टि से संज्ञाओं का जो उपर्युक्त विभाजन हुआ वह रूढ नहीं है वरन् प्रयोग के अनुसार एक ही संज्ञा दूसरे प्रकार की संज्ञा में भी बदल जाती है। (शब्द' प्रकरण के अन्तर्गत इसका विवेचन हो चुका है अतः इनका पुनरावर्तन न कर के संज्ञा के लिंग, वचन, कारक का रूप दिया जा रहा है —

3-1- ख- लिंग :-

लिंग को दृष्टि से इसयुग के शब्दों में सामान्यतया दो मिलती है। अर्थात पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के जो नियम प्रचलित हैं उन्हीं का इस युग में भी व्यवहार किया गया है। शब्द प्रकरण में यद्यपि पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने वाले प्रत्ययों का विवेचन किया जा चुका है तथापि स्पष्टीकरण के लिए यहाँ कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं —

(1) साधारणतः अकरान्त और आकरान्त पुलिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ई' 'इया', 'इन', 'नी', 'अनि', 'आइन', 'आ' आदि प्रत्यय लगते हैं जैसे—

पुलिंग —

बालक का जन्म हो (शकुन्तला-111)

बुड्ढे का यह कौतुक देख कर बैजनाथ को कुछ क्रोध चढ आया (संसार-45)

मैं बूढ़ा मर्दूँ गा - - - - - (रजनी-3)

पेट में चूहे दौड़ने लगे (चन्द्रकान्ता-70)

चाँद सदा कलंकी रहता है(उषा-103)

यह नाग नहीं है(नागानंद-85)

डाक्टर मन हो मन कहने लगा(आरण्यबाला-145)

यही युवक उषा का पति होगा(उषाअनिरुद्ध-142)

सन्यासी का आदेश तुरन्त ही सम्पादित हुआ(सावित्री-176)

कुत्ता चला आता है (भीष्म प्रतिज्ञा-109)

स्त्रीलिंग :-

हरी कमलिनियों से छाये हुए लाल और नदी आवें(शकुन्तला ना0-81)

नागिनी सी चोटी पीठ तक लहरा रही है (भारती-110)

आज गुरुआइन जी ने कहा है (प्रेमयोगिनी-4)

अरी वाह रे चौधराइन(श्री मती मंजरी-26)

लड़की सयानी हो गयी है (सर01916-146)

बालिका का भाग्य फूट गया(सावित्री-27)

छोटी मोटी चुहियों से युद्ध करने की इच्छा करना सिंहों को शोभा नहीं देता - - (दुर्गावती-39)

बुढ़िया कहने को जो कुछ मुँह में आता कहडालती थी(छोटी बहू-11)

चुप चाप बैठानी मां का कुंभापूर्ण वाग्ययाण भी सहना पड़ता है((संसार-4)

गोबरा की माई के साथ बुलाकिन और उसके बालकों को देखा है((छोटी बहू-11)

मालकिनी नैहरा तो नहीं गई है(महात्मा विदुर-110)

अनन्तराम को मास्टरानी जी ने हिन्दी सीख लेने के लिए कहा है(शोले-15)

नायिका का हाथ पकड़ कर (नागानंद -51)

(2):- हिन्दी में कुछ ऐसी संज्ञाएं भी हैं जिनका लिंग पूर्व निर्दिष्ट होता है, अर्थात पुलिंग और स्त्रीलिंग के लिए स्वतंत्र शब्द प्रयुक्त होता है।

मेरे भाई भौजाई ने हम दोनों के दुःख को कुछ निवारण कर सकने के ख्याल से अन्नप्राशन के समय लड़की को कड़ा बनवा दिया(रजनी-70)

अब दुर्गा के लिए पुत्र वधू लाऊँ(उमा-6)

दास -दासी कहाँ ... - - - पूँछ ताछ करने लगे (राम का0कु0-67)

उनसे तीखा बजाना बूढ़ों और बुढ़ियों सेल लड़ना नहीं (दुर्गावती- 20)

सब बूढ़े-बुढ़ियाओं में मुखिया सा मालूम होता है(उ0रा0-79)

सरस्वती या को ले कर, आनन्द से घर को आ रहे थे(सावित्री-9)

पति - पत्नी दोनों आ रहे हैं(सतीचिन्ता-43)

आवस्ती के माता-पिता यही हैं(शकुन्तला ना0-168)

ठीक साँप छुछुन्दर की गति हो गई (भारती-35)

(3) प्रायः हिन्दी में आकारान्त संज्ञाएं पुलिंग और ईकारान्त संज्ञाएं स्त्रीलिंग होती हैं किन्तु इसके अपवाद भी हैं।

ईकारान्त पुलिंगः-

अपने बेटों का पक्ष समर्थन करते हैं(~~महाभारत~~ ना0-5)

सैन्यासी बाहर चले गये (सावित्री-176)

यही सूबे भी हमारी को बातों का अनुमोदन कर गया है(संयोगिता ह0

मेरो विमाता बन्ध्या है (रजनी-76)

तुम उनको परम सुहागिनो होगो(सावित्री-131)

यह स्त्री परम पतिव्रता है (भारती-30)

(6) विशेष रूप:-

संक्रांति कालीन भाषा होने के कारण प्राय: ही लेखकों ने लिंग के प्रति विशेष ध्यान नहीं दिया । कहीं तो पुलिंग का स्त्रीलिंग है कहीं स्त्रीलिंग पुलिंग और कहीं एकही शब्द को पुलिंग और स्त्रीलिंग दोनों में ही प्रयोग किया गया है यथा-

6- क- पुलिंग का स्त्रीलिंग :-

गरोब को लड़को का ब्याह जल्दो नहीं होतो (संसार-12)

योंही मेरो कहन उसके मुंह से निकल गई(रणधोर प्रेम -4)

जिसमें मेरो चित्र है (वेनिस नगर का व्यापारी-35)

योग्यता प्राप्त करने को साहस न कर(,, -36)

मेरो ही शरोर और रुधिर ऐसो विपरीत चले -40)

मेरो वाणिज्य को वस्तु (वे0 का व्या0-2)

आप अपनो भाग्य को अभागो जाने(,, -43)

आज हमारो धन्य भाग्य हुई (मनुष्य यश ना0-14)

किसो बात को संदेह हृदय में न धरो(,, -38)

यश पूर्ण होने हो नहीं पातो(,, -54)

हमारे तप स्थल को दो मार्ग है एक तोन दिन को, एक तोन पहर का (मनुष्य ना0-75)

सुदामा विप्र को समान घर का निपट दरिद्री हूँ (मधवानल का0-15)

स्पर्श से माखन को सम तुल्य है (,, -17)

वियोग से अपनो प्रारब्ध को दोष दे रहो है (,, -94)

राजाओं को प्रोति रेत को बाँध को समान होतो है(मोराबाई-31)

परन्तु कुँवर जो को पता नहीं (मोराबाई -56)

आज मैं जाता हुआ भो मृतक को समान क्यों होता-?() (मोराबाई-60)

आरोग्य रह कर भो महारोगो के समान क्यों रहता है (,, -60)

जो मेरो समान पापो हो (,, -73)

बाबा को ईश्वर को एकता का कारण (वेनिस का व्या0-74)

जो सदा अपनी निमीलित नेत्रों से देखते हुए(वैनिस का कथा0-2)

अंगुलियक लेने के उपाय करूँगी - - - - - - -(,, 72)

6- ख- स्त्रीलिंग का पुलिंग:-

अब तक कौन इतने देर से आई हो (संसार-10)

अतिथि सत्कार का आज्ञा दे कर उसी को प्रतिबाधा निवारने के लिए (शकुन्तला ना0-9)

रूपये पैसे का जुल्म का लड़ाई है (कौंसिल की मैं-28)

मन से परीक्षा करना चाहिए(,, -15)

इश्क के दरिया को पार करने के लिए(,, -10)

सूर्य भगवान को किरणे दिखने लगे (आनन्दमठ-19)

प्रातःकाल के किरणों से ज्योतिर्मय हो(,, -19)

अपना प्राण रक्षा करो (आनन्दमठ-68)

ईसा मसीह का शपथ है (,, -75)

मेरा सामर्थ्य क्या (,, -76)

बुराई करने को हिम्मत किसी की न पड़े गी(तुलसीदास-141)

पाषाण के मूर्ति के समान क्यों बैठा रहे(वैनिस नगर का कथा-4)

उसके आत्मा का परामर्श (,, -75)

तुम्हारे आँखे हैं (रजनी-12)

अपना शिकार बनाने के लिए मेरा सामर्थ नहीं(रणधीर प्रेम-8)

6-ग द्विविध रूप-- कुछ संज्ञा रूप ऐसे हैं जिन्हें दोनों ही लिंगों में प्रयोग किया गया है और ये दोनोंही रूप प्रायः एकही कृति में है यथा—

दही—

थोड़ा सा दही लाने कहा था (संसार-85)

चार पैसे को दही है (--,, -85)

रक्षा—

अपना भी प्राण रक्षा करो(आनन्दमठ-68)

अपनी प्राणरक्षा के लिए (,, -68)

किरण—

उनको सूर्य भगवान की किरण दीखने लगी (आनन्दमठ-19)

प्रातःकाल के किरण से ज्योतिर्मय हो (,, -19)

शरीर

अपने अपने शरीर से (वेनिस नगर का क्या-17)
मेरो छोटो से शरीर ,, -7)

होनहार-

होनहार किसो के रोके नहीं रुकतो(रणधीर प्रेम -12)
उसका होनहार भी मालूम हो जाता (,, -30)

पतलून-

फटा पतलून निकाल कर (टी0का0कु0-416)
वह फटी पुरानी पतलून उसे पहनानी पड़ी(टी0 का0 कु0 -416)

3 -1 -ग- वचनः-

द्विवेदी युग के संज्ञा शब्द रूपों में वचन संबंधी रूपान्तर भी परिनिष्ठित हिन्दी के अनुसार ही हुआ है फिर भी यत्र तत्र बोलियों के प्रभाव वश अथवा लेखकों की असावधानीवश कुछ विशिष्टता आ ही गई है जिन्हें विशिष्ट के अन्तर्गत दिखाया जाय गा । विभिन्न लिंग वाची संज्ञा शब्दों के मूल और तिर्यक रूपों में वचन संबंधी रूपान्तर निम्नलिखित हैं —

(1) पुलिंग अकारान्त- मूल एक वचनः-

चटाई में खटमल हैं क्या? (संसार-93)
मृग दुबला होता है (संयोगितास्वयंवर-86)
बालक छाती से उतर कर जाने लगा(मर्यादा-1916-367)
यह तो नाटक है नाटक (उत्तर रा0 च0-140)
मैंने भाटिया को पत्र लिखा(मर्यादा-1979-24)
एक लेख बहुत अच्छा निकला था(लेखा-47)

बहु वचनः-

जो शब्द पतले अक्षरों दिये गये हैं (सर01903-102)
बर्कले के वैज्ञानिक विचार उनको कंठस्थ हो गये थे (मर्यादा1979-24)
हमारे पाठक पा चुके हैं (राजकुमारी-106)
कैसे खटमल पैदा हों (संसार-94)
अफरीकी जवान तुमसे कम बहादुर व लड़ाके नहीं हैं(या0त0-10)
पकवान परोसे गये हैं (महा0-ई0-8)

तिर्यक एक वचन

मैं डाक्टर को नहीं लाऊँ गा (सर01903-52)
रक्त से अपने हाथ रंगने को (जु0ते0-41)
धर्म के हेतु बहुतों ने ऐसो बंधनों को (प्रेमयोगिनो-91)
मुह पै पानो छिड़का(सर01920-236)
अपने रहने के घर में एक कमरा(कौंसिल को मैं-34)
नाटक को रचना कर संसार को मोहित किया(उ0 रा0-25)

तिर्यक बहुवचनः-

सिरके बालों के। बड़ो(सर01904-137)
क्षत्रियों का राज्य अटल बना रहे(सर01903-65)
लेखकों में कृत्रिम ज्ञान पड़तो है (सर01904-156)
मोठे वचनों से अपना सब दुख भूल जातो (संसार-67)
प्राचोन आचार्यों ने तोन भागों में विभाजित किया है(? व0क्सौ0-3)
हाथों से उतारे देतो हूँ(सावित्रो-11)
चौहानों को आदि राजधानो सांभर है(संयोगिताहरण-12)

आकारान्त- मूल - एक वचनः-

लड़का बोर्डिंग में रहता है (बुद्धू का काटा-22)
बच्चा - बिगुल बनवा लेता है (उमा-27)
कांग्रेस का तमाशा देखने को भोजा था (भारतो-8)
मुरदा तप रहा है (संसार-106)
इतना बड़ा झगड़ा पड़ जायगा(सर01904-123)

मूल बहुवचनः-

धनो मनुष्य के हो लड़के जा सकते हैं(वे0द0-18)
सारे गहने उतार कर डाकुओं के दे दिया(सावित्रो-11)
कपड़े, जूते , गहने जेवर हो (स्वामिभक्ति-4)
पौधे हिनहिना रहे हैं(प्रतापसिंह-99)
पर्दे पड़े हैं (गौतम बुद्ध- 10)

तिर्यक - बहुवचन

झगड़े को दूर रखना हो उत्तम है (महाभारत ना049)
मेरे बेटे को बात रहे (द्रोपदी चीर हरण-30)
कुत्ते से को जाय (गौतम बुद्ध -101)
लड़के ने कैसी हो हँसी में चिढ़ाने के लिये पूछा (उसने कहा था-49)
कपड़े पर मन न चलावे (राम का0 कु0 -184)
तिर्यक बहुवचन

इन हत्यारों ने कलेजे में सुई चुभाना शुरु कर दिया (राजकुमारी-8)
लड़कों को उन्नति तो सिद्ध हो है (महावीर च08)
पतिगों को नाईं प्रभु के - , - - - - (प्र0या0 -75)
घोड़ों को चलाइए (गौतम बुद्ध -5)
बेटों का ब्याह होता है (बुद्धु का कर-22)
पुलिंग - इकारान्त - मूल एक वचन

महर्षि कहता है -(शकुन्तला ना0- 88)
मुनि जो तुम जाओ (,, ,, -88)
बाल ऋषि कहलाता (गंगावतरण-29)
कवि बहुत थोड़े शब्द काम में लाये (सुर0 -1904-157)
उसका पति बूझने लगा (काम क कन्दला ना0 -55)
बहु वचन

हस्तिनापुर जाने वाले ऋषि बुलाए जाते हैं (शकुन्तला ना0-57)
मुनि भी मौन है (कृष्णार्जुन युद्ध -5)
वैदिक ऋषि उस प्रदेश से परिचित थे - - - -(सर0-1904-88)
झलमलाते कुछ हुये मणि मन ~~हो सकते है~~ को मोह रहे हैं (संयागितादरण-20)
गाँव- गाँव में कवि हो सकते हैं (र0 रंजन -24)

तिर्यक ~~बहुवचन~~ एक वचन

अतिथि के पास बैठना हमको उचित है (शकुन्तला ना0-16)

ऋषि का मैं तपोबल है (कृष्णार्जुन युद्ध -72)

मुनि का वेषधारी कर यहाँ आ जाइये (कु0 ब0 द0 -202)

कवि को भाषा न केवल ---- (सर0-1904-197)

पति को पूर्व अवस्था में देखने का (सती चिन्ता-61)

तिर्यक बहुवचन

ऋषियों को बेटो गन्धर्व रीति से ब्याही हुई है (शकुन्तला ना0-64)

कवियों को यहां पुरस्कार मिलेगा (दुर्गावती -69)

मुनियों के हाथ से कन्द मूल फलों का भोजन करें (नागानंद -20)

हिन्दी कवियों ने बड़ा जोड़ पकड़ा है (र0 र0 -24)

महर्षियों का परमार्थ जीवन ---(कृष्णार्जुन युद्ध -20)

पुलिंग - ईकारान्त - मूल एकवचन

पक्षी जो परतंत्रता के पिंजड़े में कैद है (भारत दर्पण -16)

हमारे दूसरेक काम का मंत्री भी आ गया (मालविक-5)

सारथी आता है (गौतम बुद्ध -5)

दिखलाने के लिए ब्रह्मचारी है (भीष्म -67)

यह आदमी उसी के साथ का होगा (दुर्गावती -71)

मूल बहुवचन

तपस्वी करने लगेंगे (कृष्णार्जुन युद्ध -16)

भारतवासी ---- सहायता कर रहे है (भारत दर्पण -51()

विद्यार्थी आकर जम गए (पी0 द0 -15)

वनवासी आ रहे हैं (सती चिन्ता -52)

पक्षी भी गुणानुवाद गाया करते हैं (कर्मवीर ना037)

तिर्यक एक बचन)

मंत्री ने विनती की है (शकुन्तला ना0 - 139)

स्वामी के आगमन एक वेनिसियन ---(वेनिस न0 का0 या0-38)

तपस्वी की ओर देखने लगा - (आरण्यबाला -101)

पक्षी पर छुरी फेर असी फुलाता चला गया (गौतम बुद्ध -49)

तिर्यक बहुवचन

हिन्दुस्तानियों से हम ऐसाही उम्मीद करते हैं (भारत दर्पण -43)
मांसाहारियों को ~~स्वार्थ का भेड़~~ भेड़िया तक कहलवाया है (उत्तर रामचरित्र -14)
पड़ोसियों में मेरा नाम था (बुद्धू का कांटा -24)
प्राणियों का जीवन ठोकर से चूर चूर बनाऊँगा (कर्मवीर ना0 -11)

पुलिंग उकारान्त - मूल - एक वचन

जहाँ दनु कबंध रहता है (महावीर चरित्र-67)
शीतल वायु मन्द-मन्द बहता है (संयोगिता हरण-59)
पशु भी हिल जाता है (छोटो बहू -88)
ब्रह्माण्ड ~~ब्रह्माण्ड~~ मेरा बंधु है (गौतम बुद्ध -84)
साधु उन्हें पकड़े हुऐ खड़ा है (भारती -381)

मूल बहुवचन

मुगल शत्रु हैं (~~म~~ राणाप्रताप -80)
अंत । शत्रु धुल गए (भारत दर्पण -143)
मनुष्य रूप में ये पशु हैं (भारती -244)
दस्यु खड़े हैं (भारती -64)

तिर्यक - एक वचन

शत्रु को मनमाना सजा दीजिये (रणबांकुरा चौ0 -69)
पेट भर के शिशु दुलारा करते (भारती -4)
मुझे पशु से मनुष्य बना दिया (,, -388)
बंधु को सो बातें हुई (आँख बीती -161)
साधु ने कहा (भारती -381)

तिर्यक बहुवचन

पशुओं को एक दफे दो दफे पीछा (संसार -114)
शत्रुओं को अखिल बोध अनुभव देगी (भारत दर्पण -48)
भाई बन्धुओं ने ~~ब~~ बहुत धिक्कारा (संयोगिता हरण -109)
पशुओं में गऊ शोभनीय है (श्रवण कुमार -65)

रिपुओं के अधीन है (प्रताप सिंह -205)

पुलिंग - अकारान्त - मूल - एक वचन

लड्डू खाकर में सोच गया (वनवीर ना0-115)

गेहूँ बहुत सस्ता है (छोटी बहू -91)

गुरु विद्या पढ़ाता है (संयोगिताहरण -8)

उसका बाहु आ पकड़ा (,, ,,- 90)

भालू उसका पीछा कर रहा था (भारती -358)

तराजू बालभार भी न्यून नहीं (वेनिस नगर का व्यापारी -68)

तालू सूख गया- - - - - - - (वेनिस नगर का व्यापारी -48)

तिर्यक एक वचन

तुमको गुरु का इतना विचार है (महावीरचरित्र))-33)

तमाकू से सबको खातिरी कर (संसार-123)

दाहिने बाजू के किसी वृक्ष पर - - (संयोगिताहरण-76)

बिच्छू की चाल चलते चलते- - - - -(,, ,, -113)

भालू ने अचानक उस पर आक्रमण किया (भारती-358)

तिर्यक बहुवचन

बीच्चे बाबुओं को - बुओं का क्या कहना (संसार -149)

गुरुओं से पूछती हैं (कौंसिल की मैं0 - 25)

बाजुओं पर उड़ते हुएऐसे प्रतीत होते हैं (संयोगिताहरण -83)

घुघुओं के समान पीड़ित होते हैं (वेनिस न0 का0 व्यापारी -7)

डाकुओं द्वारा लूटी गई (स्वामी भक्ति '-68)

हिन्दुओं के सबसे बड़े शत्रु हिंदू ही हैं (प्रताप सिंह -57)

(11) स्त्री लिंग - अकारान्त - मूल - एक वचन

देव बाला की बात उठी (ठे0 हि0 डा0 -19)

रात व्यतीत हो गई (चौ0 द0 -103)

उसके हिये की आह बनी (संयोगिताहरण -38)

अपनी किताब रख - - - (भारती -6)

मूल बहु वचन

आँखे खुल गई हैं (राजकुमारी -8)

अनुचित बातें कहीं हो (प्रेमयोगिनी -27)

तसवीरें रखी हुई थीं - - - -(छोटी बहू -94)

गंगा की तरंगें खिटकियें बजावेंगी (कृष्णार्जुन यु0 -63)

पुस्तकें मौजूद थीं (चौ0 ट0 -40)

तिर्यक एक वचन

बहन को बिदा कराने आया हूं (छोटी बहू -52)

नेक सी बात से मेरा हिरदय छिद जाता है (ग्राम क0 कु0 -250)

औरत का मुकाबिला करना टेढ़ी बात है)(नरेन्द्र मोहिनी-12)

शत सुबह की गाड़ी में वे लोग आये गें (चौ0 ट0-103)

तिर्यक बहुवचन :-

इन किरणों की सहायता से - - (सर01904-121)
कभी औरतों से पाला नहीं पड़ा(नरेन्द्र मो0-12)
पुस्तकों की संख्या तीस हजार है (,,)
बातों में उड़ाने की क्या पहेली निकाली है (सती चिन्ता-96)
आँखों में आँसू भर कर बोली (मर्यादा-1979-516)

स्त्रीलिंग आकारान्त - मूल एक वचन:

बालिका लज्जा से चुप रही(मल्लिका -86)
अबला किसी के हाथ में न आई (प्रेमयोगिनी-136)
सर्वथा वेश्या सिद्ध हो (छोटी बहू -94)
ललना उस कुल्टा से जाकी छूटी (वि0कौ0-111)
अपनी प्रतिज्ञा तोड़िये(कृष्णार्जुन युद्ध-25)

मूल बहुवचन:-

माताएं पुत्रों को सर्वोच्च शिक्षा दे कर आदर्श बना लेती हैं(महाभारत ना043
जितनी सभाएँ होती हैं (कौसिल की मैं -48)

भारतवर्ष के लिए ऐसी अबलाएं भूषण हैं(प्रेमयोगिनी-136)
संसार में कितनी अधिक हत्याएं होती हैं(प्रतापसिंह-178)
अट्टालिकाएं मिट्टी के गारों की नहीं(भारती-301)

तिर्यक एकवचन

इस कन्या को गन्धर्व रीति से ब्याह लिया(शकुन्तला ना0101)
एक अट्टालिका में परिष्कार शैय्या पर शयन करते हुए पाया(मल्लिकादेवी3:
अजला कटारा तलवार उठाते - -(प्रेमयोगिनी-136)
युद्ध विद्या में बहुत निपुण हैं (प्रतापसिंह-179)

तिर्यक बहुवचन

अबलाओं के झूठे मद का पान कर रहे हैं (नागानंद-51)
अभिकाओं से सेवा कराते हैं (गौतम बुद्ध-81)
माताओं ने कहला भेजा(उ0रा0 ना-7)
असंख्य जिह्वाओं द्वारा चिल्ला चिल्ला कर(कर्मवीर ना0-31)
हत्याओं का काम आरम्भ हुआ(प्रतापसिंह- 179)

स्त्रीलिंग - इकारान्त मूल- एक वचन

शत्रुओं को अति शीघ्र युद्ध देगी (कौमोलतवार-48)
उसकी मति किसने फेर दी (संयोगितास्वयं-36)
बुद्धि ठिकाने आ जाये गी (कृष्णार्जुन युद्ध-55)
मूर्ति पधराई जाय गी(जु0 ते0-68)
मीठी ध्वनि सुनना चाहते हैं(गौतम बुद्ध-8)

मूल बहुवचन

मूर्तियाँ बहुत ही विशाल हैं (सर01904-100)
अच्छी वृत्तियाँ स्वाभाविक होंगी (प्लेटो बहू-88)
शक्तियाँ उपस्थित हैं (कृष्णार्जुन युद्ध- 85)
अधीन जातियाँ शूद्र के समान हैं (भारतदर्पण-66)

तिर्यक एक वचन

सीख की बातों के सहना पड़ा(सर01904-83)
जाति की मर्यादा के अभाव से (भारत रमणी-98)

केवल कीर्ति पर काल का पंजा नहीं पड़ता (संयोगिताहरण-12)
चण्डालों की दृष्टि में खटका करता है (महा भारत ना0 -16)
औषधि से अवश्य सुधार जाता (गौतम बुद्ध-96)
रुचि के अनुसार उनको शिक्षा (कला (उत्तर राम चरित्र-10)

तिर्यक बहुवचन

युक्तियों से विजय प्राप्त करती हैं (कोमो तलवार -54)
जातियों द्वारा स्वाधीनता के लिये (भारत भारत दर्पण-66
मनोवृत्तियों का वर्णन किया करते थे (उत्तर राम0 -10)
अन्योक्तियों को बारी आई (मानसरी0-164)

स्त्रीलिंग - ईकारान्त - मूल एक वचन

नुकी तुम्हारे सामने खड़ी है (सर01907-192)
कोई दोपी पकड़ेंगे (संसार-148)
दासी प्रणाम करती है (कृष्णार्जुन युद्ध-28)
लड़की किसी बात का उत्तर नहीं देती(अपूर्व आत्म त्याग-151)
गाड़ी हवा से बात करने लगी (वी0द0-9)

मूल बहुवचन।-

मुझे गालियाँ दिया करते हो(सर01905-119)
पद्मिनियाँ भी मरना जानती हैं(नवाबनन्दिनी-7)
चूड़ियाँ चमक रही हैं(उमा-9)
मछलियाँ बड़ी बड़ी हैं (कृष्णार्जुन युद्ध-13)
पत्तियाँ मनोहर रंगों से खींची हो(छोटी बहू -94 94)

तिर्यक- एक वचन

पैनी अनोखी छुरी से काटा जाय(मीराबाई-80)
उनकी बीमारी को मैंने इस तरह आराम कर दिया(कु0म0व0-42)
मछली ने कभी अगाध समुद्र को थाह ली है(प्र0या0-55)
कोठरी में चुप चाप औंधे पड़े हैं (आत्मदाह-1)
कुर्सी पर राज गुरु बैठे हैं (संयोगिता-10)

तिर्यक एक वचन

पत्तियों को सरसराहट - - (सर01907-119)

देवियों ने बहुत कुछ किया है (भारत दर्पण-49)

गृहिणियों से सलाह कर रही है(संसार-149)

कहानियों में खूब सूरती के बहुत से बयान(प्रतापसिंह-123)

स्त्रियों के लिए मैंयर बैठना ' - (कर्मवीर-130)

स्त्रीलिंग - उकारान्त - मूल एक वचन :-

बादशाह को आयु पूरी हो समझिए(अभिलाषा-65)

ऋतु भी सदा अनुकूल क्यों न रहती है(महाभारत-ना024)

जो वस्तु मुझे देनी हो - -(गौतमबुद्ध-102)

धनु तोड़ने वाले तो आ गये(धनुष यज्ञ ना0-126)

तो धेनु देना स्वीकार करो(विश्वामित्र-15)

मूल बहुवचन:-

सभी वस्तुएं मनोहर हों(छोटो बहू -95)

बाहुएं युग मृणाल के तरह कोमल हों (सावित्री-20)

तिर्यक एक वचन:-

बसन्त ऋतु को फुलवारी बन रही है(संयोगिताहरण-59)

इस का धेनु को प्राप्ति करने का मेरा दृढ़ विश्वास है(विश्वामित्र-13)

एक सामान्य धेनु के कारण इतना क्रोध(विश्वामित्र-16)

परन्तु यज्ञधेनु से रक्षा के लिए विनय करो(,, -18)

स्त्रीलिंग ऊकारान्त - मूल - एक वचन:-

वशिष्ट को गऊ प्राणों से भी अधिक प्यारी है(भीष्म प्रतिज्ञा-5)

पतोहू कुए के पास बैठ गई(उमा-9)

बड़ी बहू आई(छोटो बहू-90)

उसको जोरू एक रोज मेरे यहाँ -(संसार-105)

सास को बकनी लात आदू खाती हो(संसार-67)

पुत्रवधू बन कर कृतार्थ को जिए(भारती -389)

मूल बहुवचन

मूल बहुवचन

बहुएं भी अपना कर्तव्य भूल जाती हैं (संसार-14)

पतोहुएं तरकारी के टोकरे ले कर आ पहुँची(आ0हि0-24)

उच्च कुल बधुएं और नव युवक सम्मिलित हुए(भारती-217)

तिर्यक एक वचनः-

जोरू जी को झाडू से जान बची(संसार-66)

पतोहू को एक पुरानी धोती दे कर विदा किया(संसार-97)

बहू से बड़ा प्यार करने लगा(वि0कसौ0-44)

नव वधू को अपने घर ले आया(वि0क सौ0-39)

मुनि वशिष्ट के गऊ को चोरी-(भीष्म प्रतिज्ञा-8)

वधू ने लायीं घर हमारा --(मानो वसन्त-23)

तिर्यक बहुवचन

जाओ सासुओं में ही आओ(महावीर ना0 31)

तुम्हारी गऊओं को भी मार कर खा जाये गें (दुर्गावती -99)

पतोहुओं के काम बटे हैं(आ0हि0-23)

मैं कुल वधुओं को मूर्ख समझती थी(भारती-369)

3- बहुवचन सूचक शब्दों का योगः-

संस्कृत शैली के अनुसार लेखकों ने प्रायः ही शिष्टता के रूप में बहुवचन सूचक गण, जन, वृन्द जैसे शब्दों का प्रयोग बहुवचन में किया है।

जनः-

भीष्मादि सब सज्जन जन उपस्थित हैं(महाभारत ना0-48)

बुद्धिमान जन सब कामनाओं को छोड़ छाड़ -- (उ0रा0 च0-238)

साधुजन में तेरी प्रतिष्ठा हो (गौतम बुद्ध-82)

गण

सेवकगण एकदम आ जाते (कौंसिल की मैं-51)

विधवा कुरु नारीगण ...... छाती पीट पीट कर (महाविदुर-87)

भोले पक्षीगण वेग से बढ़ते हुए स्वच्छ झरने -- (गौतम बुद्ध-10)

प्राचीन कविगण स्वानुभूति बातों तथा मनोवृत्तियों (उ0रा0च0-10)

वरुखारोगण अपने अपने स्थान पर बैठे हैं- (सतीचिंता-124)

नक्षत्रगण शोक की काली चादर ओढ़ ले गें - (कर्मवीर-7)

वृन्द

देश के गोवृन्द को क्या दशा है (कृष्णार्जुन युद्ध-19)

पाठकवृन्द में अपनी अवस्था किस लिए लिखूँ (गल्प कुसुम-63)

माननीय सभ्यवृन्द बुलमबुल्ला कसूतायें देते हुए (रा0का0कु0-215)

अलबेले अलिवृन्द स्वच्छन्दतापूर्वक इधर उधर घूमते दिखाई देते हो

(खरा सोना-39)

युवकवृन्दको घायल करती -- (संदेह -76)

लोग

परिनिष्ठित हिन्दी में बहुवचन के आदरसूचक प्रत्यय के रूप में लोग'
शब्द का प्रयोग होता है — इस प्रकार के शब्द निम्नलिखित हैं —

महर्षिलोग फूले नहीं समाते(महावीर चरित्र-97)

परिव्राद् लोग भी उनके पीछे पीछे आये(नवाबनन्दिनी-23)

शास्त्रीलोग सिखलाते हैं (रायबहादुर100)

प्रोफेसर लोग भी भारे बुझो के कमरे --(चौ0द0-10)

अंग्रेज लोग आने लगे -- (,,-15)

अध्यापक लोग सब को खातिर से बिठाते थे (,,-15)

कुल मंडल।- कुल मंडल शब्द का प्रयोग समूह या समुदाय के अर्थ में हुआ है ।-

जयचन्द का मंत्रिमण्डल विचारशील होता -(संयोगिताहरण-43)

ऋषि मण्डल चारों तरफ घूम रहे हैं (न0नि0-86)

यहाँ के सेवक मण्डल में तो नहीं आते जाते (कौंसिल का मैं0-38)

काले बादलों ने आकाश मंडल पर अपना राज्य जमा लिया था(वि0कसौ0-377)

महर्षि मण्डल को घुमाती है (शकुन्तला ना0-150)

पक्षी कुल चार उधर से गगन मंडल में उड़ उड़ कर (मल्लिका-35)

पशुकुल का तुमुल रव तथा उनके भागने का — (,, -38भाग1)

तुम रमणीकुल में रत्न हो (मल्लिका-52)

टिप्पणी:- उपर्युक्त बहु वचन सूचक शब्दों में 'जन और लोग' तो मात्र मनुष्यों के लिए हैं 'वृन्द' मनुष्यों और पशु पक्षियों दोनों के लिए प्रयुक्त हैं 'गण' सजीव और निर्जीव दोनों के लिए आया है ।

(4) विशेष:-

बोलियों के प्रभाव वश 'अन' प्रत्यय के योग - - -

क- से बने पुलिंग तथा स्त्रीलिंग के प्रायः सभी बहुवचन सूचक संज्ञा रूप पर्याप्त रूप से प्रयुक्त हैं यथा:—

भक्तन तापहारी मधुसूदन आपकहाँ हैं (आनन्दमठ-6)

सघन लतानन के वितान से तन रहे हैं(हनुमायक नाo-69)

लतान की ओट में खड़े हैं (हनुमायक-113)

प्रसूनन सों दोने भरे हैं (,, 107)

सौतन की रसोई कर खिलाना पड़ता है(रजनी -91)

गाँव के असामियन तक को हक है (कौसिल की में16)

वकीलन से बातें करें (कौसिल की मेंo-19)

कतिपय विद्वन से जो है (,, -33)

शिष्यन को जो है (,, 34)

आप तो क्षत्रियन को संताप हैं (,, 37)

ख- : सामान्यतः संस्कृत के आकारान्त पुलिंग शब्द 'राजा' तथा संबंध वाचक दादा, नाना, आदि तिर्यक एक वचन और बहु वचन में अपरिवर्तित रहते हैं और मूल तथा तिर्यक बहुवचन में 'ओं' जुड़ता है -

तिर्यक एक वचन,

दादा का नाम हसाँऊ (वनवीर नाo-17)

बाप दादा के वक्त से चला आ रहा है (संसार-37)

राजा की उपाधि मिली - (राजकुमारी-159)

तुम्हारे नाना को यह युचित थी (महावीर चरित्र नाo-79)

मूल बहु वचन:

राजा मुकुट सम्भारते उठे (हनुमायक नाटक-140)

तिर्यक बहुवचन

राजाओं के चबाने लायक चीज (संसार-22)

राजाओं का परम्पर कहान (हनुमान्नाटक ना०- 141)

ग- किन्तु इस काल की यह विशेषता ही है कि इनके तिर्यक बहुवचन रूप में 'ओं' अलग से न जुड़ कर आकारान्त पुलिंग रूप के समान ही ओकारान्त वाले रूप के समान ही प्रयुक्त हैं तथा मूल बहु वचन में 'ए' लगा है यथा—

मूल बहुवचनः-

दुर्योधन के तरफ के सब राजे कहते हैं (द्रोपदी चीरहरण-48)

मेरे बाप दादे राजा ही क्यों न रहे हों (राजकुमारी-6)

राजे महराजे एक एक सोरठे पर खुश हो कर कवियों को निहाल किया करते हैं - - (दुर्गावती -70)

आप के बापदादे परदादे - - -(हुकुम बजाते आयेहैं -(कौंसिल की मे-15)

तिर्यक बहुवचनः-

यह देवतों को सो का बातें करने को --(उमा-110)

उसी से देवतों का पेट भर जाता है(रायबहादुर-50)

तू देवतों की थाली परोसे बैठा है (,, -50)

बड़े बड़े राजों महराजों के यहां नहीं हैं(संसार-75)

राजों का राजों से रूप विनोद करना — (द्रोपदीचीरहरण-42)

इसने राजों में कोई उनको जवाब देने वाला नहीं था(रणधीर प्रेम-84)

बाप दादों के नाम से बड़ाई पाने वालों के बदले (रणधीर प्रेम0114)

अपने बाप दादों के सोचे हुए इस स्वतंत्रता की पेड़ की जड़ को काटने के लिए - - (दुर्गावती -64)

घ- संबंधवाची शब्दों के तिर्यक एक वचन में भी कहीं कहीं विकार आ गया है

हम इनके दादे को जानते हैं - पर दादे का नाम भी सुना है(कौंसिल किमेटी-43)

बड़े दादे के होते छोटा दादा - - - (महावीर चरित्र ना0-55)

मेरे परदादे को पुश्तैनी राजा की उपाधि मिली(राजकुमारी-15)

क- — सामान्यतः ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में ईकारान्त के अन्त में आँ जोड़कर मूल बहु वचन बनाया जाता है । इससे पूर्व –ई का ह्रस्व –इ हो जाना और 'य' श्रुति का आगमन होता है । किन्तु इस समय तिर्यक मूल बहुवचन में 'इयाँ' के स्थान पर 'इयें' का प्रयोग लेखकों की शैली की विशेषता ही कही जा सकती है। इन प्रयोगों में पछाहीं प्रभाव है यथा—

मोठे के लिए चींटिये दौड़ती हैं (रणधीर प्रेम- 109)

सेविका सखियें धैर्य बंधाती हैं (माधवानल काम कन्दल-85)

बेड़िये मेरे पाओं में झन झन करती हैं (,, -84)

चूड़ियें स्कन्ध देश की बढ़ी आती हैं (,, 117)

पुत्रियें कितने तरह की तकलीफ सहती हुई (संसार-9)

उनकी भी गालियें भी भक्तों के लिए वरदान हो जाती हैं (मीराबाई-50)

स्त्रियें ---- झुरमुट से हो कर निकलीं (सु0वि0-110)

मछलियें आखों का अनुसार करती हैं (कृष्णार्जुन युद्ध-12)

कुरसियें लगी हुई हैं (वी0ट0-22)

सहस्त्रों मछलियें कुदक्कुदक कर आपस में झगड़ती हैं (रणबाँकुरा-126)

ख- पुलिंग तथा स्त्रीलिंग रूपों में मूल बहुवचन संज्ञा के स्थान पर मूल एक वचन का प्रयोग भी इस काल तक अपने पूर्ववर्ती युग के समान ही कहीं कहीं हुआ है जिससे भाषागत क्षति का प्रत्यक्ष उदाहरण मिलता है —

वृक्ष का फूल चुन - चुन कर देते हैं - (रजनी-4)

साढ़े चार घोड़े और डेढ़ बहू टाँ (,, -4)

ये तो क्षत्रिय तपस्वियों की कन्या हैं (शकुन्तला ना0-12)

आँख की पुतली घोर कृष्ण वर्ण की टाँ (सावित्री-19)

सूर्य के समान तेज किस जिह्वा नहीं हैं (माधवानल काम-91)

सेवक मंडल की आज्ञा और प्रबंध से हमारे लड़का औषधि वितरण करते फिरते हैं ----(कौसिल कि0मेक-38)

ङ— सामान्यतः ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में ईकारान्त के अन्त में आँ जोड़कर मूल बहु वचन बनाया जाता है । इससे पूर्व —ई का ह्रस्व हो जाना और 'य' श्रुति का आगमन होता है । किन्तु इस समय तिर्यक मूल बहुवचन में 'इयाँ' के स्थान पर 'इयें' का प्रयोग लेखकों की शैली की विशेषता ही कही जा सकती है। इन प्रयोगों में पछाहीं प्रभाव है यथा—

मोठे के लिए चींटियें दौड़ती हैं (रणधीर प्रेम- 109)

कोई सखियें धैर्य बँधाती हैं (माधवानल काम कन्दला-85)

बेड़ियें मेरे पाओं में झन झन करती हैं (,, -84)

चूड़ियें स्कन्ध देश को बढ़ी जाती हैं (,, 117)

गुत्थियें कितने तरह की तकलीफ सहती हुई (संसार-9)

उनकी गालियें भी भक्तों के लिए वरदान हो जाती हैं (मीराबाई-50)

स्त्रियें ---- झुरमुट से हो कर निकलीं (सु0वि0-110)

मछलियें आखों का अनुहार करती हैं (कृष्णार्जुन युद्ध-12)

कुरसियें लगी हुई हैं (बी0ट0-22)

सहस्त्रों मछलियें फुदक्कुदक कर आपस में झगड़ती हैं (रणबांकुरा-126)

च- पुलिंग तथा स्त्रीलिंग रूपों में मूल बहुवचन संज्ञा के स्थान पर मूल एक वचन का प्रयोग भी इस काल तक अपने पूर्ववर्ती युग के समान ही कहीं कहीं हुआ है जिससे भाषागत क्षति का प्रत्यक्ष उदाहरण मिलता है —

वृक्ष फूल चुन - चुन कर देते हैं - (रजनी-4)

साढ़े चार घोड़े और डेढ़ दहू टों (,, -4)

ये तो तपस्वियों की कन्या है (शकुन्तला ना0-12)

आँख की पुतली और कृष्ण वर्ण की टीं (सावित्री-19)

सूर्य के समान वे इजिह्वा नहीं हैं (माधवानल काम-91)

सेवक मंडल की आज्ञा और प्रबंध से हमारे लड़का औषधि वितरण करते फिरते हैं ----(मैथिल कि0मेक-38)

छ- अकारान्त पुलिंग मूल एक वचन तथा मूल बहुवचन के समान होते हैं किन्तु कहीं कहीं पर तिर्यक रूप का प्रयोग हुआ है --

ये सेवकें और बड़ी मैं आप को दी गई हूँ (वेनिस न0 व्या0-45)

और महामूल्य रत्नें भाला होता (,, -41)

रत्नें उसके कानों झलकते (,, -41)

ज- इसी तरह ' बलायें' औरकिरणायें' रूप भी वर्णनीय हैं --

चन्द्रमा की किरणायें इस ऊँची भूमि पर गिर रही हैं (वेनिस न0 व्या-75

शक्तियाँ बलायें और धैर्य नहीं हैं (वेनिस नगर का व्या0-40)

3-2 सर्वनाम

द्विवेदी युग में सर्वनाम शब्दों का वचन और कारक के अनुसार जो रूपान्तर हुआ है वह सामान्यतः खड़ी बोली के परिनिष्ठित हिन्दी के समान ही है। किन्तु भाषा निर्माण युग होने के कारण पूर्वी और पश्चिमी बोलियों के सर्वनाम रूपों का भी कहीं कहीं प्रयोग मिल हो जाता है साथ ही पूर्वी बोलियों के समान ही पुरुषवाचक सर्वनामों में हम, तुम, ये, वे, (आदर के अर्थ में) जैसे बहुवचन सूचक सर्वनामों का प्रयोग, एक वचन के अर्थ में भी किया गया है और बहुवचन के अर्थ में सर्वनामों के साथ 'लोग' तथा सब' शब्द प्रयुक्त सर्वनामों का प्रयोग किया है यथा—

3-2-क- पुरुष वाचक सर्वनामः-

(1) उत्तम पुरुष- मूल- एक वचनः-

मैं अपराध करने कब कहती हूँ(प्रेमलता-146)

मैं अब क्या करूं - (मदन कुमार-138)

हम आप को इस बात की मानते है(राम क0कु0-140)

हम चोरी क्यों न करें (मर्यादा-1911-192)

हम यही कृत्रिम उत्ताप दे कर उसे तैयार किया जाती है(नीलमणि-117)

बहुवचनः-

दोनों कन्या - महात्मा जी, हम तुम्हारे प्रणाम करती है(महावीर ना0-8)

हम लोग आज का दिन इसी गांव में काटे (नरेन्द्र मोहिनी-15)

हम लोग जनकपुर में बैठे हैं(उ0रा0 च0 ना0-11)

हम तो सब तुम्हारी ही आस जोह रही थी(सतीचिन्ता-66)

तिर्यक - एक वचनः-

मैंने ऐसा ही करने की कसम खा ली थी(भूतनाथ-58)

हमने मनुष्य देवता और सब जीवन समूह की (उ0रा0चरित्र-138)

यथा। मोहू के संग लेते चलियों(रणधीर प्रेम मो0-125)

हमारा एक शत्रु है (श्रीमती मंजरी-44)

आज हमारी लगन है (,, -43)

और हमारी जोरू भी मोसल्मान हो गई (श्रीमती मंजरी-81)

हमें भी चलना है राम भरोसे (श्रीमती मंजरी-52)

मैं दूध पिलाऊँगी - - - - -(आनंदमठ-29)

वे हम लोगों को देते थे (नैमिष नगर क कथा-54)

हम लोग पूर्ण विचार न देंगे (,, -55)

हम लोगों को अवश्य रण देख जाना पड़ेगा(,, -55)

(2) - मध्यम पुरुषः-

मध्यम पुरुष एक वचन 'तू' के स्थान पर शिष्टाचार के अनुरोध से बहुवाचक 'तुम' का प्रयोग भी होता है। सामान्यतः इस युग में भी तिरस्कार, क्रोध अथवा आत्यधिक प्रेम विह्वलता को छोड़ कर शेष अर्थों में एक वचन 'तू' के स्थान पर बहुवाची 'तुम' का ही के प्रयोग होता है और बहुवचन में उत्तमपुरुष के समान ही 'तुम' के साथ लोग और सब जैसे बहुवचन सूचक शब्दों का योग होता है। आदर के अर्थ में आप का प्रयोग सामान्य रूप से ही हुआ है यथा——

'तुम - एक वचन'

तू मुझे दिया चाहता है (पा0न0-37)

तू ऐसे कामों में मुझे रोका मत कर (रायबहादुर-83)

तुम कहाँ के रहने वाले हो? (रामाबाई -3)

आदरसूचकः- क्या आप मुझे सुयोधन समझ कर (कु0च0कु0 127)

आप रंज मत हूजिए (ठ0ठ0 गी0-133)

बहुवचनः-

तुम लोग मुझे गालियां दिया करते हो (पर01905-119)

तुम सब मुझे दुःख सुनाते हो(सतीचिन्ता-71)

तुम लोग घर के बड़े लड़के हो के(संसार-37)

आप लोग अप्रसन्न नहीं (भारती -306)

तिर्यक - एक वचन:-

तूने अपना देश छोड़ा (फूल कुलैया-8)

तुमने गजेन्द्र और विक्रम का मंगल युद्ध(प्र0वा0-55)

तुझे मैं यद्यपि भिक्षा न छोड़ूंगी (मृगनयनी-81)

यह तुम्हें छोड़ कर भला कहाँ जाय याप (गौतमबुद्ध-40)

तुमको हो क्या गया है (राजबहादुर-115)

तुमको यम ने अभी तक नहीं देख पाया(सावित्री-84)

तुमसे सचमुच चन्द्रकला ने कहा है(मालविका -45)

तुम से न कहूँ गो - - -(शकुन्तला ना0-55)

तुझ पर कौन सा संकट आ पड़ा (दुर्गावती-59)

तुममें दमड़ी भर अक्ल नहीं(राजबहादुर- 100)

तुम में ऐसी ही प्रभावित हुई (सती चिन्ता-13)

तुम पर नजर लगाये है (गंगावतरण-80)

तेरा यही कर्तव्य है - (ओउम प्रतिज्ञा-56)

आदर सूचक:- आपने सुना होगा(द्रौपदी चीर हरण-11)

आप की हिन्दी का इस प्रकार अपकार न करना चाहिए (सर0 1913-448)

आप से यह बात कहता हूँ (नवाबनंदिनी-91)

कुछ आप के लिए मुझ से हो सकता है(मालविका-62)

आप के बाप के घर पर भोज (राजकुमारी- 131)

बहुवचन:-

तुम लोगों में छेड़ छाड़ का - (सती चिन्ता-117)

तुम लोगों को हमारी शपथ है (द्रौपदी चीर- 54)

जिसने तुम सबों को अंधा बना दिया है (गौतम बुद्ध)-66)

तुम लोगों के लिए जो कैसा कैसा करे है (संसार-64)

तुम्हारी बातें बदबखे हो गए हो (नवाबनंदिनी-75)

आदरसूचक:-

- - - - आप लोगों में मुगलों की अधीनता (नवाबनंदिनी-91)

आप-लोगों से भेंट मुलाकात करने (छोटी बहू -32)

आप लोगों को चाहिए कि - -(सुधा रहस्य-46)

कहो तुम्हारा विचार तो ठीक है (रणधीर प्रेम-30)

मैं तुम्हारी लपेट को बातें सुनने में असमर्थ हूं(ओ॰म प्रतिज्ञा-97)

तुम्हारी सौगन्ध का मुझे इतबार नहीं (,,, -79)

तोरो बाई का तोको बलि चढ़ाने के लिए लाई हो(बनवीर ना0-129)

*तुम्हारा ही नाम जीवानंद है (आनंदमठ- 49)

(3) अन्य पुरुष - वह - मूल एक वचन।

वह कुछ भ्रमित सा हुआ (लक्ष्मी-1908-23)

वह उस अमृत को पान कर रहा है।(सूर्यग्रहण-20)

आदरसूचकः-

वे उस समय तारा को लौटने के लिए कदापि न आज्ञा देते(तारा-41)

वे बचपन में जरा सी बात पर खिलखिला कर हँस देते(आत्मकथा-23)

तलवार के हाथ चलाते हुई वे दूर क निकल गई(च0वि0-64)

बहुवचनः-

वे उसे चारों ओर से घेर कर चलते हो(वि0व्यो0-206)

जब कोतवाल और पुलिस के अन्य प्रतापी अफसर न पकड़ सकते हो तब वे हमारी शरण आते हो (लैलामजनूँ-193)

वहाँ के अफसरों को बताया गया कि यदि वे हिन्दुओं को हथरसो(बचरदा) करें गें(सुधा-1928-364)

वे लोग पहले आपस में तो लड़ लें (चौबोली-21)

एक वचन' वह' का प्रयोग भी बहुवचन में हुआ —

वह क्यों ऐसा कहते हैं (कौंसिल को मे0-15)

आन्दोलन के पीछे वह दीवाने हो रहे हैं (,, -24)

वह यही कहते हैं (,, 39)

वह पढ़े लिखे होशियार हैं (,,-44)

वह कहते हैं (महावीर च0-प014)

- -

टिप्पणी:- यह वर्तनी का विषय है । वर्तनी में जो यह वर्ण विपर्यय हुआ है इसके उदाहरण व्यापक रूप से नहीं मिले हैं । संभव है मध्यमपुरुष का यह रूप भी कहीं कहीं प्रचलित हो ।

तिर्यक एक वचन

उसने ऐसा करने का यत्न ही किया (सर01903-102)
उसे देखते हुए यह कार्य क्षम्य है (मर्यादा-1979-508)
मैंने उसको बहुत ढूंढा (अद्भुत दू0-10)
चलन्तो को उसमें से एक ज़रूर देतो(संसार-3)
उससे वार्तालाप कर क्स आप से सब वृतांत कहेंगे(संयोगिताहरण-47)
उसके लिए सब से अधिक काम -- (प्रतापसिंह-16)
उसके मुंह से कोई बात नहीं आती (उसकी आंखें जमीन देख रही हैं
(नवाबनंदिनी-88)
उसपर अमृत की वर्षा कर रहे हैं(सूर्यग्रहण-20)
एक सखी उसमें खेद का कारण पूंछने लगी (र0र0-70)
आदरसूचक:-
उन्होंने अपने को एक अट्टालिका में परिष्कार शैया पर शयन करते
हुए पाया -- - - (मणिलक्ष्मी-32)
वह उन्हें नहीं हुआ (नलिनी बाबू-29)
उनको कितनी देर लगती है(राणाप्रताप-30)
उनसे मैं भेद नहीं लूंगा(संसार-111)
उन पर मेरा क्या अखित्यार है? (कांदवोको-74)
उनमें अपने को मिला देना चाहती है (भारती-112)
कुछ काम मानिक को उनको देख पर डाल दिया(राजकुमारी-144)

तिर्यक बहुवचन:-

आदरसूचक 'उन' के प्राय: सभी तिर्यक रूप प्रयोग के अनुसार बहुवचन होते हैं इसके अतिरिक्त बहुवाचक लोग और 'सब' 'सब' शब्दों के योग से भी बहुवचन बनाए जाते है यहाँ पर कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं :-यथा——

जो कागज पत्तर चोरी गए थे उनका बहुत पता लगाया(राजकुमारी-34)
उन लोगों ने दो चार प्रश्न किए((पू0ह0-39)
उन लोगों में से कितने हो तो पहले ही इधर उधर जा चुके थे(भारती-22
उनमें से प्रत्येक ने विष्णुदास को बड़े आदर से देखा(भारती-84)
उनके लिए जो अपनी समस्त कमाई दूसरों को अर्पण कर देते हैं(,,,14

उन सब को मैंने खतम कर दिया(बाँसबोबो-99)

विशिष्ट— बोलियों के सर्वनाम शब्द के साथ ही उर्दू का (वो) भी 'वह' के स्थान पर प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुआ है —

उसके मिलने पर वो तत्काल भाग जाती है (रणधीर प्रेम-5)

इतने में वो किसी की आवाज सुन कर (,, -49)

जब वो बहुत दूर निकल गया था (,, -49)

उन्होंने पढ़ा था (संसार-88)

उन्हें मालूम पड़ा (,, -41)

उन्हों के कब्जे में रहो(,, -42)

ओको मत छुओ(मनमोर ना0-89)

अग्नि उसे दुख करे गा (उत्तर रा0 च0 ना0-86)

वाको जोड़ तोड़ मिलाय लिया है (कौसिल को मैं0-34)

वाहि हम मोहन के पुरश्चरन करनो आरम्भ कर दैगो(कौसिल को मैं-35)

सावधानी से उन्हें, तीनों वेद छोड़ सब विद्या पढ़ा दो(उ0रा0 च0-31)

वाको पहन का ---(श्री मती मंजरी-31)

वाके अन्दर चार माले वाला मकान बँध्यो है(श्री मती मंजरी-38)

उनका इतना भार हूँ (श्री मती मंजरी-117)

तू जजमान के पास जा कर वाहूँ राजी नहीं करी गो(आ0छि0-99)

उसने प्रेम से हाथ मिलाया

जो इस धनुष को चढ़ावे वाके साथ जानकी नाम कन्या का विवाह होवे

(धनुष यज्ञ ना0-51)

3-2-ख- निज वाचक सर्वनाम:-

पुरुष वाचक सर्वनाम का आदरसूचक 'आप' निजवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत आता है यह सर्वनाम प्रश्न वाचक सर्वनामों को छोड़ कर शेष सभी सर्वनामों के साथ लगता है मूल रूप में यह दोनों वचनों में समान रहता है। किन्तु तिर्यक रूप में 'आप' के साथ संबंध बोधक प्रत्यय 'न', 'ने' 'नो' के योग से परिनिष्ठित हिन्दी के समान ही प्रयुक्त हुआ है, आप' के स्थान पर स्वयं, खुद' स्वतः जैसे शब्द भी निज वाचक सर्वनाम के लिए प्रयुक्त होते हैं —

मूल

मैंने कहला भेजा है कि आप आप ही युद्ध कर रहे हैं(महावीर च0ना0-4)

मैं आप ही दूँगी (उत्तर राम चरित्र ना0-52)

तू आप ही आप क्या कह रही है(शकुन्तला ना0 119)

यह आप बन बिगड़ा हो (छोटी बहू-31)

आप ने आपने आप यह नहीं कहा (बड़ी बहू-100)

हम स्वयं युधिष्ठिर से यहाँ में मिले थे(द्रौपदीचीर -30)

राय साहब ने स्वयं जा कर यह समाचार कलेक्टर कमिश्नर साहब
ने कहा ((- - (भारती-98)

खुद तो पैसा पैदा कर ही नहीं सकते(राय बहादुर-82)

तुम तो खुद समझदार हो (चाँद बीबी-24)

हा निज जन्म का अनुग्रह है (उत्तर राम0 च0-ना0-22)

सामन्तों के लौटने पर स्वतः मिल जाय गा(संयोगिताहरण-41)

तिर्यक-

मैं अपने आप को नरक की ज्वाला से जलता हुआ देख रहा हूँ(नागानंद92

इन्द्र आदि आप से आप बंदी बन बन जाते हैं(महावीर चरित्र ना0-43)

दुनियाँ में अपने को सब से ऊँचा समझना उचित नहीं है (वनवीरना0-57)

और सब लोग भी इस दरबार में बुलाए गये थे या आप से आये थे
(राजकुमारी-163)

समान वयस और समान रूप में तुम्हारी आपस की प्रीति बड़ी अच्छी
लगती है (शकुन्तला नाटक-119)

शरीर भी अपने लिए बोझ हो गया है (उ0रा0 ना0-24)

तुम अपने आप सीधे रास्ते पर आते नहीं देख पड़ते(रायबहादुर-96)

लोगों को अपने आप किसी को कत्ल करने का ख्याल तक नहीं आ सकता
(सुधा-1928-366)

हमारे निज का धोखा और स्वार्थ भी नहीं है(मल्लिका-71)

ः (अन्यों के विकारी रूप नहीं मिले)

विशिष्टः-

ये स्वयं अपुनो प्रबंध कर लेंगी(कौंसिल की मैं0-35)

तू मारवाड़ी को छोरो है और आपां भी मारवाड़ी हूँ(श्रीमतीमंजरी-30)

आपुणी बात तो आपरे साथ रखो(रणधीर प्रेम0-119)

3-2-ग विशेष निश्चयवाचक सर्वनामः-

यह , वह, सो आदि निश्चयवाचक सर्वनामों में 'वह' का विवेचन पुरुषवाचक सर्वनामों में अन्य पुरुष रूप के अन्तर्गत किया जा चुका है । यहाँ पर उसका पुनरावर्तन न कर के 'यह' और ' सो' सर्वनाम के रूपों को दिखाया जा रहा है ।

क- यह- मूल एकवचनः-

यह मोचे ही को खिसकता है (शकुन्तला ना0-3)

महाराज यह तो नाटक है नाटक(उ0रा0ना0-140)

ये मुझ पर अपना अनुग्रह प्रदान करें ये ईश्वर हैं (र0र0-100)

बहुवचनः-

'वह' के समान ही ''यह' का प्रयोग भी बहुवचन में हुआ है-

क यह तो प्रभु को नाईं लिखते हैं(महावीर चरित्र ना0-19)

यह समझ गईं (कौंसिल की मैं0-27)

ये राज्य के सारे मामलों के अभ्युत्थान या पतन कर के चले जाते हैं (कृष्ण अर्जुन युद्ध-50)

तपोवन के विघ्न ये हैं (शकुन्तला ना0-10)

यह लोग कुछ भी जानकारी नहीं रखते (सर0 1904-137)

यह लोग आरे के स्टेशन पर पहुँचे(संसार-60)

ये लोग निरक्षर होने पर भी अपने पुरखों की बड़प्पन की कोरी डींग मारते हैं (राजबहादुर- 34)

ये लोग भी कितना जप कर सकते हैं (चाँद बीबी-170)

विशिष्टः- बहुवचन 'ये' का प्रयोग एक वचन 'यह' के लिए भी हुआ है जो वचन संबंधी विशिष्टता ही है यथा--

ये भीड़ में छिप कर आ गया होगा(रणधीर प्रेम मो0-78)

जिनको तू आम समझे था सो तो गले में पहनने योग्य रत्न निकला

(शकुन्तला-24)

जो इससे उल्टी रीति चलती है सो कुल का दूषण बनती है(,, -86)

जो होता है सो होता है(राम0क0कु0-241)

आप के सदृश जो है सो न नया है न वर्तमान है(प्र0या0-49)

जो है सो सब भगवान् की कृपा है (,,-46)

ये रूप, रस, गंध नाम की जो चीजें हैं सो इन्द्रियों को लुभाने वाली हैं

(दुर्गावती-27)

जो किया सो सब समय पा कर पाठकों को मालूम हो जाय गा(वि0कसी0-91)

तिर्यक

पुरानी हिन्दी में 'सो' का तिर्यक रूप तिस, तिन है, परिनिष्ठित हिन्दी में इनके लिए अन्य पुरुष 'वह' के तिर्यक रूप ही प्रयुक्त होते हैं। द्विवेदी युग में यद्यपि 'वह' का ही तिर्यक रूप 'सो' के तिर्यक रूप में प्रयुक्त होता था फिर भी भाषागत अनिश्चित काल होने के कारण 'तिस' का रूप भी यत्र तत्र प्रयुक्त है। इसमें एक वचन रूप ही मिलता है बहुवचन नहीं यथा——

तिसका भरत ऐसा नाम (धनुर्यज्ञ-38)

तिसने आते ही सब संसार का सुख (अब0 कु0-19)

तिस पर वे रत्न जटित आभूषणों की शोभा अपार थी(संसार-38)

तिससे तुम और कुछ न कह कर इन पांचों को यहाँ शीघ्र लिवा लाओ

(महा0 ना0- 22)

तिसमें भी तेरी हाय- हाय न गई (अ0वि0-7)

तिस पर आप कहते हैं (कैलिफ की मैं-51)

तिसके ऊपर पूर्णिमा आ गई(सावित्री-1)

तिस पर भी जब किसी अभी से पाला पड़ जाता (संयोगिता-16)

तिस पर मेरा ताना- (भारती -23)

विशिष्ट:- 'सो' का पूर्वी हिन्दी में 'तउन' तथा 'ई' प्रत्यय युक्त रूप भी एक दो जगह प्रयुक्त है -

तउन तुम कहती हो तउन होवेगे(राम बहादुर-27)

बर्तन माँजने गई- - - - - - (संसार -10)

मैं आने जाऊँ हूँ (संसार -20)

अपना मनोरथ पूरा कराने शूर्पणखा पहुँची (महावीर चरित्र0-63)

गंगा की तरंगों के साथ परमार्थ चिंतन किया करते है -- -(कृष्णार्जुन युद्ध-5)

भाभी जो क्षारदेश करने कहे भीला (मर्यादा -1917-266)

आप एक समय दक्षिण विजय करने गए थे — (संयोगितास्वयंवर-88)

सीता को ढूँढने चारों ओर बड़े बड़े वानर भेजे गये हैं (महावीर चरित्र-79)

यहाँ चोरी करने भेजा था (तुलसीदास -135)

(5) अपादान -मूल -

अहम्य वह तालाब की सीढ़ी उतर रही है (संसार-1)

सीढ़ी उतर कर उस रमणी ने कहा (संसार-2)

दरिद्र दम्पति ने बड़ी चाह से कन्या को कण्ठ लगाया— (संसार-3)

तिर्यक -

पाप की पोथा का पढ़ना रोकता हुआ गले लगाने के बहाने सुग्रीव के गले में सोने के कमलों की माला डाल क रहा है (महावीर चरित्र0-75)

(6) अधिकरण - मूल-

घर -घर की गली गली घूम- घूम कर —- - - (तहरा-51)

जैसा अब झुंडियों पर मक्खन जाता (स0-1903-7)

यह अवसर अद्भुत किन्तें अंधा लगा है (मागार्मेद-68)

जिसके जी मुँह आया कहा - (संयोगितास्वयंवर-165)

देश चोरो परदेश भीख (वि0स्वो0 -81)

कोलाहल के कान पड़ी आवाज भी नहीं सुनाई दी (रणधीर प्रेम-6)

यहाँ से दूसरी कुछ कम तीन कोस हो (सावित्री-34)

तिर्यक-

ऐसी पक्तियों को दूसरे के द्वारे द्वारे भटकना पड़ता(संसार-6)

ये बातें मेरे गले में उतरती है(रणधीर प्रेम-115)

वाहिने ही अटारी बायें परन्तु समतल (संयोगितास्वयंवर-76)

उसने हर्ष कर चाहा कि कूदों पैरों लौट जाऊँ(वि0स्वो0-148)

3-3- क- विकारी कारक

विकारी कारक परसर्ग और विभक्ति सम्पन्न होते हैं, इन कारकीय परसर्गों और विभक्तियों को सम्भवतः दो कोटि में रख कर विश्लेषण किया जाय गा। प्रथम कोटि में उन विशुद्ध परसर्गों को रखा गया है जो कारकों के विन्यास के भी विभक्ति रूप में निर्धारित हैं इसको कोटि के अन्तर्गत विशिष्ट में ग्रामीण प्रभावों के कारण प्रयुक्त परसर्गों को भी रखा गया है। विशुद्ध परसर्गों में 'को' 'में' 'से' पर' आदि हैं।

दूसरी कोटि में वे शब्द युक्त नाम पद हैं जो युक्त परसर्ग के स्थान पर प्रयुक्त हैं जिन्हें हम संबंध बोधक अव्यय भी कहा जा सकता है ये परसर्ग 'का' 'के' 'की' के योग से बनते हैं जैसे 'के बाहर' के ओर' के मारे' आदि। यहाँ पर विकारी कारकों के दोनों ही रूपों को क्रमशः विवेचित किया जा रहा है।

(1) विशुद्ध कारकीय परसर्ग कर्ता 'ने'

सप्रत्यय कर्ता कारक सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्तों से बने वाक्यों के अर्थ में हो आता है —

इसने तो उन्मत्तों का मार्ग लिया(शकुन्तला ना0-331)

पिता ने कहा भी है (नागानंद -7)

जो कुछ हमने या हमारे भाई ने कहा है (द्रौपदी चीर -18)

तूने अभी तक कुछ भी नहीं सोचा(उषा-15)

उसने रघुवंश और कौमुदी के पृष्ठों पर दृष्टिपात किया(सर0 1917-68)

विशिष्ट:- 'ने' विभक्ति के स्थान पर पछाह प्रभाव के कारण 'नै' 'नैं' का प्रयोग भी हुआ है—

हमारे छोरा नैं तुमको अपनौं बाबा तो नहो समझ लिया(रणधीर प्रेम-19)

तुमनैं भाग चोई को नहो"(,, -19)

कर्म - 'को'

उन कबरों को खोदने से वे कुछ भी आपत्ति नहीं करते(सर0 1904-137)

सिर के बालों को वे बड़ी खूबसूरती से बाँधती हैं (सर0 1904-122)

मुझे एक पैसर भरी भी नहीं मिला(रजनी-57)

जो सोते हैं उन्हें रात्रियों को सुलाने वाली है(दुर्गावती-27)

(11) संबंध बोधक अव्यय -

विकारी कारकों की दूसरी कोटि में संबंध बोधक विभक्ति अव्ययों का स्थान आता है। ये संबंध बोधक शब्द वास्तव में स्वतंत्र अव्यय हैं जो संज्ञा और सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर परसर्गों और विभक्तियों के समान कारक संबंध को व्यक्त करते हुए भी अपनी स्वतंत्र सत्ता रखते हैं। इस प्रकार के शब्दों का विस्तृत विवेचन अव्यय प्रकरण में संबंध सूचक अव्यय के अन्तर्गत किया गया है (देखिये -अव्यय प्रकरण- - - -3 - 6 -ब)

करण - 'से' के स्थान पर -

बोझा जी के मारे तो मेरा नाक में दम है (भाग्य -86)
तेरे पति ने शाप के वश सुध भूल कर (शकुन्तला ना0-171)
अंधा होने की वजह घर का काम न कर सके (रजनी -61)
यह तो प्रभु की मार्फत लिखते हैं (महावीर चरित -19)
औरत की बदौलत हो मैं चार भले आदमियों में (रायबहादुर-98)
हम लोगों के धर्म के अनुसार राजा ईश्वर का अंश (प्रभा -1913-190)
विस्तृत व्याख्या द्वारा सब संदेह दूर कर देंगे - -(पद्म पराग-36)
अकाल के कारण गाँव की भीषण अवस्था हो रही थी - - -(भारती-239)
उनके साथ अपनी इज्जत भी न बिगाड़िये (भारती -123)

सम्प्रदान 'को' के स्थान पर -

मुझसे उनके बदले शिव जी कहा था (शकुन्तला ना0-67)
पुत्र के रक्षा निमित्त वस्तु के लिए - - - - (नागानंद-66)
धर्म के हेतु बहुतों ने ऐसे बंधनों को - - - -(प्रेमयोगिनी -91)
उनके लिये तो मैं मर गई (मु0 से0 -87)
तुम तो उसके वास्ते पागल हो रहे होगे (ह0ह0गो0-164)
पिता के कष्ट निवारणार्थ अपनी देह को बेड़ी से - - -(श्री मती मंजरी-7)
तुम्हारे पुत्र पौत्रादि के लिये आवश्यकता है (धर्म -103)

अपादान 'से' के स्थान पर -

उसके बदले उसी से अपनी रक्षा कराई (नागानंद -[illegible])
राज्य के अतिरिक्त किसी भारतीय राज्य को (द0 बेगम -8)

अधिकारी कारक विवेचन में किया जा चुका है देखिये अधिकारी कारक-3-3-8

दूसरे प्रकार के प्रयोगों में परसर्गों की अत्यधिक आवश्यकता के बावजूद भी परसर्ग नहीं लगते हैं । इस प्रकार के प्रयोगों से अर्थ में कहीं कहीं दुरूहता भी आ गई है परसर्गों का यह लोप लेखक द्वारा उनके प्रति सचेत न रहने की प्रवृत्ति को ही लक्षित करता है अथवा कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो छापे की भूल अथवा असुविधा वश किए गए हैं । सत्य क्या भी रहा हो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । इस प्रकार के कुछ रूपों को दिखाया जा रहा है यथा - - -

कर्ता कारक 'ने' का लोप - *

आभास है कि तुम ( ) यह उसके सामने नहीं कहा (वेनिस न0 का व्या0-67)

सुन्दरी अलिस ( ) कर्णेश के समान अपने स्वामी को कलंकित किया और यह ( ) उसको क्षमा कर दिया - - - - - - - -(वेनिस न0 का व्या0-73)

मैं ( ) अंगुलीयक को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है (वेनिस न0 का व्या0-72)

आप ( ) अपनी सुदयभागी से आज मुझको और मेरे मित्र को बड़े क्लेश से बचाया है - - - - (वेनिस नगर का व्यापारी -70)

कर्म कारक 'को' का लोप - **

ऐसे उग्रतपवाले ( ) नमस्कार है (शकुन्तला ना0-173)

कौन्ट साहब यहाँ मित्रता के अभाव से और क्यों ( ) उकसाते हैं? (अद0बु0का0भाग2-178)

आज दुष्यन्त ने पुत्रवती शकुन्तला () पहचान कर अंगीकार कर ली (शकुन्तला ना0 173)

आयुष्मान तुमने सीता() त्यागते समय क्या था (उत्तर रा0 च0 ना0-150)

सब तलवार ( ) म्यान कर के उस युवा में पैंजनी फिर खोल निकालो (वि0क्री0 117

मंजरी () कुछ मैंने आप के हाथ में बेच तो नहीं डाली (श्री मती मंजरी-62)

खबरदार । मेरे ( ) हाथ लगाया तो (कु0चि0-111)

ऐसी रांड़ ( ) घर से निकाल देना चाहिये (कु0चि0 -78)

केतकी () ये वचन मानों अमृत के समान लगे (चौहानी तलवार-22)

---

* कुछ परसर्गों के स्थान पर कोष्ठक का प्रयोग किया गया है ।

किसी भारतीय राजा को अपना सम्राट बनाये होते तो आज() दिन यह देश
दुर्गति को ---- (र०बेगम-8)

इस () लिया हम लोगों के धर्म के अनुसार (प्रभा -1913- 190)

बुढ़िया () मरने का दुख नहीं है (चि०क्सौ०-265)

परस्व का अपहरण करने वाले कदापि सुख() नींद नहीं सोते(गोविंद निबंधावली-14)

रामचन्द्र जी धनुष () और चलाते हैं पुरवासी ईश्वर () प्रति विनय करते हैं
(धनुष यज्ञ ना०-153)

उनके सामने सदन() पलवान बढ़ गया (सेवा सदन- 137)

इसके पिता ने एक मुसलमान औरत() पालन किया है(श्रीमतीमंजरी-58)

आप के मुकदमे ( ) फैसल करने में -- (आ०हि०-23)

पराये ( ) कहने से उसको दुख समझा - (मीराबाई-81)

हम सब जीवन ( ) समय पर्यन्त आप को धन्यवाद देते हैं(वे० स० [illegible]-4)

कुछ ठहर कर देवताओं ( ) प्रति '---(धनुष यज्ञ ना०-5)

अधिकरण कारक 'में' का लोप-

तुम्हारी बातों ( ) सभ्यता का लेश मात्र नहीं है ([illegible]-34)

उसमें () आलमारी कुछ हिल गई (अ०भा०-412)

यह बांके अभि अब तक वैसी ही दृष्टि () आ रही है (माधव नल का-32)

जो जो इधर पतले भारी ( ) थिर गये हैं (सर०1903-102)

जिनके सिर वाले लोगों के हाथ( ) पड़ जायेगा (शाकुन्तला ना० - 25)

अन्य इन्द्रियों के विषय( ) भी निश्चित नहीं है कि वे उसे जानती हैं या नहीं(सर०
1909-131)

तलवार म्यान () कर के उस युवा ने पंचमकी पिस्तौल निकाली- -(चि०क्सौ०-117)

समय () नहीं पहुँचा --- (उत्तर राम चरित ना०-43)

मैं घर ( ) पड़ा तड़पता रहा (कि[illegible]- 81)

दोनों आम के पास ( ) पहुँचे (,, -154)

दुःखरो जनों की ओर ध्य ( ) करने के लिए आमचल भी सर्वसाधन दिखाई देने लगता है
(नैषध चरित-44)

उसको मेरे विषय( ) पूछा करने से मुझे अधिक क्रोध देती है (बी०भा०पृ०6)
----

* ऐसे प्रयोग मुहावरों में सुख माने जाते हैं ।

उसका सब अंग सांचे( ) ढला बना है(रणधीर प्रेम०-3)

संसार में रह कर विरक्त रहना दुष्कर( ) आता है (रणधीर प्रेम०-58)

अधिकरण कारकीय 'पर' का लोप:-

उसका पिता घर( ) नहीं है (शकुन्तला ना०-40)

और लोग भी मुख्याध्यापक पद( ) रहे (पद्मपराग-102)

पानी ले कर उसकी आँख ( ) छिड़का(आ०कि०-54)

घर के दरवाजे ( ) कुछ किसान बैठे हैं (कौशिक कि०मं०-17)

यहाँ से कुल्लो कुछ कम तीन कोस( ) हो (सावित्री-317)

उसने इच्छा कर चाहा कि इन्हीं पैरों ( ) घर लौट जाऊँ (वि०कथा०-148)

आसन ( ) पहुँ योगी बाबा'- - - - - (अनुभव पथ भा०-43)

कुछ अशर्फी ले बुड्ढे ने राजकुमार के हाथ ( ) रखी (दो मित्र उप०-57)

राजकुमार पत्र निकाल भवन के हाथ ( ) रखता (सरल तरंग -135)

(2) कारक प्रयोग की अनियमितता:-

कारक संबंधी अनियमितताओं में अनुवाद का प्रभाव ही विशेष रूप से कारणीभूत हुआ है। इनमें से कुछ प्रयोग तो ऐसे हैं जो दूसरी भाषाओं और बोलियों की दृष्टि से उचित हैं जिन्हें यथा स्थान दिखाया जायगा। इसके साथ ही कहीं कहीं छापे की अशुद्धियाँ भी हो सकती हैं। कारक प्रयोग की अनियमितता संबंधी निम्न रूप मिले हैं ----

कर्म 'को' के स्थान पर कर्ता 'ने' का प्रयोग:-

इस प्रकार के प्रयोग पर पंजाब का प्रभाव है और पश्चिमी हिन्दी में यह शुद्ध माना जाता है।

तुमने कुछ बोलना है ? (श्री भक्त मंजरी-101)

हजूर मैंने बोलना है (,, 101)

कर्म 'को' के स्थान पर संबंध का, के, की का प्रयोग:-

कर्म 'को' के स्थान पर संबंध 'का' के' की, का प्रयोग इतनी अधिक मात्रा में हुआ है कि ऐसा लगता है कि इस समय कर्म 'को' के स्थान पर 'का' के, की, का प्रयोग प्रायः था। हो सकता है कि इनमें कुछ छापे की भी अशुद्धियाँ हों किन्तु प्रयोग को देखते हुए इसकी कम ही सम्भावना है। —

महात्मा जी हम तुम्हारे प्रणाम करती हैं (महावीर च0-5)

परशुराम जी के उभारने को मनोज्ञ बोध चले (,, -21)

आप लोगों को चाहिए कि लड़कों के अधर्म से बचाइये (महावीर च0-ना0-60)

मित्रता को तुच्छ किया के रामचन्द्र के मारने को मुझे उत्साह कर दिया(,,-72)

इस बहू का तो कदापि घर मैं न रखूँगी--(सावित्री-21)

इंग्लैंड की गवर्नमेंट ने अप्रतिबद्ध व्यापार नीति का स्वीकार किया उसी

नीति का स्वीकार करना चाहिए। अमेरिका में संरक्षित व्यापार नीति का

का स्वीकार किया गया है। (स0 1904-231, 233, 234)

अपनी श्रेष्ठता तथा गौरव को चिरस्थायी रखने के लिए प्रत्येक स्त्री के

सावधान रहना चाहिए- (स0 1905-64)

जयचन्द्र का आतंक का रोकने वाला भारत में कौन हुआ है(संयोगिताहरण-25)

आप का * हजार बार धन्यवाद -- (चि0क्रो0-413)

यकीन रखो कि उस मुल्क के * सर करने के लिए तुम्हीं तैनात किये

जाओगे ---- (दुर्गावती -24)

हाय मुझको बचाने वाला कौन है (उ0रा0 भा0-57)

मैं चाहता हूँ कि आप इस पुस्तक का आदि से अन्त तक देखिए(अ0बु0भाग-2-75)

जहाँ साढ़ध संख्या के मैंने उसको बहुत ढूँढा (अ0 बु0 भाग -1 - 10)

उसने विनगो के ताक कर एक बंपकु मारा(आ0हि0-141)

कमल पत्र से आप को पवन करती हूँ (माधवानल का0-118)

मैं अपने छिन्न भिन्न स्मृति सूत्र के जोड़ने में उसी प्रकार यत्न करने लगा (का0स0-49)

शिवचरण ने माता का प्रणाम किया (कलयुगी परिवार-54)

पुलिस ने उनके हथकड़ी भर कर ---(यु0वि0-10)

उपर्युक्त दो सम्मतियाँ इस बात के प्रमाणित करने को पर्याप्त हैं(मर्यादा1979-1

मिल और बर्कले के वैज्ञानिक विचार उनके कंठस्थ हो गए थे(,, -24

---

* पश्चिमी हिन्दी और उर्दू की दृष्टि से ठीक है, हो सकता है अनुवाद के कारण ऐसा हुआ हो।

जब तुम समझते नहीं तो फिर इस बात कू वाय हां से ठीक क्यों लेते हो?

(महात्मा ईसा-35)

जल से मेरे धैर्य कू बड़ा मत दे (महात्मा ईसा-16)

स्त्रियों का पढ़ाने लिखाने से, उनका पहले की अपेक्षा अधिक परिश्रम से पढ़ाने लगे (वनिताविलास-8)

आज संध्या का अंदाजा क्या सवेरे लौट आवें गे(वनिताविलास-9)

1756 ई0 में रघुनाथ राव हरिनेवालकर कू झांसी का सुबेदारी मिली- -

(वनिताविलास-41)

मूर्तिकार ने इस कार्य का आरम्भ करने के पहले दूरदेश के प्रायः सभी पुरातत्व संग्रहालयों को देखा(शैलांजलि -10)

नल ने उस विचित्र हंस कू अपने गोद में बिठाया (र0रंजन-67)

श्री हर्ष के अपूर्व पांडित्य को देख कर उनके पिता का पराजय करने वाले पंडित ने भी (नैषध च0च0-35)

कर्म 'को' के स्थान पर करण 'से' और अधिकरण 'पर' का प्रयोग:-

वह ललना उस कुलटा कू भाभी कहती और वह कुलटा उस रमणी कू बेटी कह कर पुकारती थी ---(वि0क0सो0-111)

धिक्कार है तुम पर कि तुम्हारे ऊपर ऐसी विपत्तियां पड़ी(मर्यादा-1979-34)

करण 'से' के स्थान पर कर्म 'को' और अधिकरण 'में' का प्रयोग:-

अब इसे कहाँ तक कहें--- (मर्यादा- 1909-32)

मैं थोड़े दिनों से किसी दुष्ट रोग में ग्रस्त हो गया हूँ(मर्यादा-1979-24)

दमयन्ती को देखती देख एक सखी उसमें खेद का कारण पूछने लगी(र0रंजन70

कोई एक भी नहीं जिसके आने में मैं आनंदित नहीं हूँ (दैनिक का रया0-10)

तुम मुझको गड्ढे में डाल कर मट्टी में पाट दो(मीराबाई-37)

सम्प्रदान 'को' के लिए' के स्थान पर संबंध और अधिकरण का प्रयोग:-

उपर्युक्त दो सम्मतियां इस बात को प्रमाणित करने की पर्याप्त हैं(मर्यादा-1979-3)

उन्होंने उसे अग्नि देवता कू अर्पण कर दिया(वनिताविलास-60)67)

चन्द्र के शरीर का संताप दूर करने के उनके पत्तों की शैय्यायें बना डाली गई हैं ------ (रत्न रंजन- 93)

3-4 विशेषण

विशेषण शब्दों के प्रयोग में भी व्याकरण के सामान्य नियमों का ही अनुकरण किया गया है, फिर भी भाषा की अस्थिरता का प्रभाव इसमें भी आ ही गया है जिसे स्थान विशेष पर दिखाया गया है ।

इस प्रकरण में सभी विशेषण पदों को उद्धृत करना न तो वाँछनीय है और न सम्भव ही है अतः प्रत्येक भेद के अन्तर्गत कुछ ही उदाहरण दिए जा रहे हैं । शेष शब्दों के रूप नियमानुसार शब्दों के समान समझना चाहिए——

3-4-क- सार्वनामिक विशेषण

प्रायः सभी सर्वनाम पद विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं जिन्हें रूढ़ और यौगिक दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है -

3-4-क-1-रूढ़ सार्वनामिक विशेषणपद-

इसके दो रूप हैं (1) मूल और (2) तिर्यक इन दोनों ही रूपों को सर्वनाम प्रकरण में सर्वनाम पद के रूप में दिखाया जा चुका है यहाँ पर उन्हें विशेषण रूप में दिखाने का प्रयत्न किया गया है ।

(1) मूल-

पुरुषवाचक सर्वनामों में उत्तम और मध्यम पुरुष के मूल रूप, मैं हम , तू तुम का विशेषण वत् प्रयोग नहीं होता है किन्तु ये समानाधिकरण रूप में अवश्य ही प्रयुक्त होते हैं यहाँ पर उनके इसी रूप को दिखाया जा रहा है —

समानाधिकरण रूप -

बहुत दिनों पर परशुराम के भाग खुले जो तू क्षत्रिय उनको ललकारने वाला मिला
(महावीर -39)

मैं महात्मा कौशिक मुनि का चेला राम हाथ जोड़ के विनय करता हूँ महावीर च0-42

चलो हम तुम दोनों सिद्धाश्रम का चलें (महावीर चरित्र-52)

हाय। सिद्ध रा ज । तुम ऐसे लोग कहाँ मिलेंगे (महावीर च0-66)

ऐसी मीठी बोलने वाली मानुष सीता हम राक्षसों को भी राक्षसी हो गई(,, -80)

मैं राक्षसिन , मिथाधिनी हूँ उदय (महावीर च0-89)

मैं अभागिन .दर्शन भी न कर पाऊँ (राजाविक-30)

गंगा स्नान और इन ब्राह्मणों को दान दक्षिणा दिया करो— (राजाशिक-30)

अन्य पुरुष सर्वनाम में संकेतवाची प्रश्न वाची आदि सर्वनामिक विशेषणों के निम्न रूप हैं संकेत वाची सर्वनाम* यह

जमना यह बात बखूबी जानती थी----(राजकुमारी- 134)

यह लड्डू मेरे बाप को खिलाता -----(गंगावतरण-15)

मैंने विदुर के ये वचन सुना था----(रणधीर प्रेममोगिनी-123)

ये बातें मेरे हृदय में चुभ जाती हैं (टा०भा०कु०- 238)

विशिष्टः-

यह और ये की जगह पर 'ए' या 'यो', जे' से आदि का प्रयोग भी हुआ है :-

या बात तो आप के कहने लायक नहीं है (रणधीर प्रेममोगिनी-15)

यो वक्त इस तरह गपकने को नहीं है (र० प्रे० - 125)

या मिट्टी कहां कहां है --------(मीराबाई -35)

ए कुमार तो बड़े सुन्दर हैं (महावीर चरित ना०-5)

ए कौन हैं -------------(महावीर चरित ना०-16)

ए सब तो मुझे जानते ही नहीं (,, ,, -40)

जे सब हमारे गुरू महाराज की कृपा है(कौशिल की मे०- 18)

जे बातें तो बड़े गुन की हैं ----(,, ,,-17)

पहले तो जे बातें तुममें तुममें हो नहीं(,, ,,-18)

वह

मैं आप लोगों को वह कथा सुनाता हूँ -- (सर० 1904-8)

वह कपड़ा नदी में नहीं भीगा है —(रणधीर ना०- 89)

वे लोग भी आते ही होंगे ---- (संयोगितहरण- 69)

विशिष्ट—

'वह' के स्थान पर 'वो' का रूप भी प्रयुक्त है जो उर्दू के प्रभाव का है

---

* विषय की सुविधा के लिए इनको वचन भेद की दृष्टि से अलग-अलग नहीं रखा गया है, मूल और तिर्यक दोनों ही रूपों में दोनों ही वचनों के उदाहरण एक ही साथ दिए जा रहे हैं क्यों कि सर्वनाम के विवेचन में इन दोनों के वचन भेद के रूप दिए जा चुके हैं ।

मैं छोरे में वो पानी हूँ मैं आनन्द में वो भी हूँ - - - - - (गंगावतरण-7)
मैं कर्म-धर्म से वो काम करूँगा (भीष्म प्रतिज्ञा-42)
अरे वो जेवर का डब्बा तो दे दो (श्री मती मंजरी-86)
पर वो यार चालो गया - - - - (रणधीर प्रेममोहिनी-7)

जो

हमारे मंदिर में जो मूर्ति पधराई जायगी (जु0से0-68)
जो राजा राजनीति विहीन हो राज्य करता है (संयोगिता हरण-94)
जो बातें उसने सुनी - - - - - - - (बु0 वि0 -32)
राजा साहब ने जो सलाह दी है (दुर्गावती-24)

कोई

कोई कमीना अपने प्राचीन स्वामी की कन्या हरना चाहेगा - - (रजनी-5)
राज्य में कोई उपद्रव तो नहीं हुआ (कृष्णार्जुन युद्ध-19)
कोई बेचारा ही उठाते हैं (गंगावतरण-12)

सो

इस संकेत का सो अर्थ नहीं है (आनन्द म0 -27)
मुझे ज्ञात न हो सो बात नहीं है (दुर्गावती-93)

विशिष्ट -

कहीं- कहीं 'सो' का प्रयोग 'ई' प्रत्यय संयुक्त 'सोई' के रूप में भी हुआ है—
सोई गति कामकन्दला की है (माधवानल कामकन्दला-7)
सोई डर के मारे मैंने झाड़ू को दे दिया (संसार-75)
सोई बात यहाँ भी है ((((टा0 का0 कु0 -349)
वन में हुआ नहीं सोई क्लेश होता भया (ऊषा अनिरुद्ध-75)

कुछ

कुछ दिन पहले आप लोग - - - - - (हेम लता-94)
कुछ अंश पाठकों ने गत प्रकरण में पढ़ लिया - - - (आ0वि0-113)
कुछ पुरुष काम नहीं करते (संयोगिता हरण-80)
विशिष्ट-

विशिष्ट -

यह जानकर कि तुम यहाँ ठेरे हो कछु प्रार्थना को है - - -(शकुन्तला ना0-44)

हो एक चीज मैं खूब अन्यों भाव लगा हूँ - (रणधीर प्रेममोहिनी-17)

कौन

कौन बर्डमवरा मुझे रोकता है ---- (रायबहादुर -83)

आज तुमसे कौन काम करने को कहा गया है (मालविका -26)

कौन कथा बच गई है (राजा शिवि-73)

कौन के साथ 'सा' के योग से हीनता का बोध होता है-

कौन सी किताब पढ़ रही थी (तारा-12)

कौन सा खेल था (तुलसीदास -12)

यह कौन सा देश है(श्री गंगावतरण-2)

कौन से गुण है- - - - -(संयोगिताहरण-34)

ऐसी कौन सी आफत आई (गंगावतरण-14)

क्या

इसमें तेरा क्या होता है (मालविका-31)

क्या विपत्ति पड़ी (उत्तररामचरित -33)

तेरी क्या गति होगी - -(शकुन्तला ना0-66)

अब क्या उपाय करूँ (सती चिन्ता-20)

विशिष्ट-

मैया यहाँ क्या तन्त है (रणधीर प्रेम0-19)

आपको कहा इच्छा है - - - -(वनुजाय ना0-43)

आपने ऐसी कोई बात देखी है(रणधीर प्रेममो0118)

कहो के खैम है- - - - (श्री सती मंजरी -95)

(11) तिर्यक

पुरुष वाचक सर्वनामों में उत्तम और मध्यम पुरुष के तिर्यक सार्वनामिक नामिक विशेषण रूप रा, रे, री, का, के ,को, ना, ने, नी, के योग से बनते हैं । इसके लिये देखिये संज्ञा प्रकरण से तिर्यक रूप श्री(3-2-क(1), (111), क्रम3-2-ख का तिर्यक रूप ।

मैं - हम

एक वचन - मेरे जी में ऐसा आता है - - -(सर01903-15)

मेरा डिठाई देखकर कुछ चकित हुए (स्स0-1903-52)

मेरा जीवन व्यर्थ हो जा रहा है (टा0 का0 कु0-502)

बहुवचन-

हमारा प्यार रेखा सी निर्मल और स्वच्छ है (रणधीर प्रेम-10)

हमारी बुद्धि में हमारे जी में - - -(गद्यमाला-166)

हम लोगों का मोह खुल गया (चाँद बीबी -15)

हम लोगों के जीवन का प्रधान उद्देश्य- - - -(आ रम्यमाला-99)

हम लोगों को जो चाहें काम - - -(सूर्य ग्रहण -66)

तू - तुम - आप

एक वचन-

मैं तेरा गुरु हूँ (प्रेमयोगिनी -63)

तेरा मति मारी गई है (श्री गंगायलरण -47)

तेरे वियोग में अब मुझे प्राण भी त्यागना पड़ेगा (सती चिंता-73)

बहु वचन-

यह तुम्हारा काम नहीं है (कृष्णार्जुन युद्ध-32)

तुम्हारे नगर के अगले राजाओं को (भूल भुलैया -1)

तुम्हारी निर्दोष लड़की किसी बात पर (अपूर्व आत्म रमण-151)

आदर सूचक - आप- का- के -की -

आपको मानसिक कष्ट में दूर करूँगी (संयोगिता हरण-21)

आपका संकट का समय टल गया (सती चिंता-133)

आपके चित्त और अन्तर की हालत अच्छी तरह समझती हूँ — (चाँद बीबी-127)

विशिष्ट -

अपनी बात तो अपने पास रखो (रणधीर प्रेममोहिनी-119)

ने ले, को-

अपनी माँ के मुँह की ओर देखने लगी (कै0 कि0 टा0 -27)

अपना प्रयोजन साधनेवालियाँ - - - (शकुन्तला ना0-106)

अपने पुरखाओं के बड़प्पन की चौरी डाँग - -(राजबहादुर-34)

संकेत वाचक - यह

एक वचन-

इस मकान को ईंट तक माँगो(सर01903-430)

इसको माँ का नाम शकुन्तला है (शकुन्तला-161)

इसके भय का कारण कुछ और नहीं दिखता(नागानंद-62)

इसका स्वाद और किसी ने नहीं लिया (,, -46)

विशिष्ट-

यारो आज तो मन घनरा सेर है(रणधीर प्रेम०-17)

इसरे मन में सक रह जाये गा(,, -18)

आग के जोर से ई सबै शरीर सन्न-सन्न कर रहा है(रणधीरप्रेम०-51)

बहुवचन-

इन पागलों को मारो (महावीर चरित ना0-17)

इनके दर्शन से ही कल्याण होता है(,, -3)

इनको रक्षा करूँ -----(नागानंद-61)

इनका दिमाग बर्फ की तरह ठंढा हो जायगा(बोसे-103)

- वह-

एक वचन-

उस लड़के की बोटियाँ - बोटियाँ सिला सकता हूँ (चन्द्रधर-17)

उसका ब्याह करना पड़े गा(सर01916-147)

उसकी अब उमर बीस वर्ष के लगभग होगी(रायबहादुर-43)

उसके पैर धोटो---------(भारत रमणी-24)

विशिष्ट-

भइया इसको रामबाण तो ऊ चम्बदर वैद्या के पास है(संयोगिताहरन

नहीं तो वाको नजर लग जाय गो(रणधीर प्रेम मो0-54)

(यह ग्रामीण बोलियों के प्रभाव का ही हुआ है ।)

बहुवचन

उन लहरों पर चाँद की हँसती हुई परछाई(सर0 1907-119)

उनका हाथ नहीं पकड़ती ---(दुर्गावती- 63)

उनके चरित्रों से उपदेश ग्रहण करना चाहिए(स्वामि औ0-2)

उनको यहाँ पढ़न कर यह कोई जर्मन आया है (उसने कहा था- 55)

-जो-

एक वचनः-

जिस काम को करने के लिए आप के- - (दुर्गावती-63)

जिसके नाम अपनी सारी सम्पत्ति - - (राजकुमारी-164)

जिसकी चोटी पर कुछ रात- - - -(ठ0ठ0गो0-164)

बहुवचन-

जिन हरिनों ने शकुन्तला को भोली चितवन सिखाया है(शकुन्तला ना-33)

जिनके दर्शन निष्फल कभी नहीं होते- - (नागानंद-99)

जिनकी भक्ति में सदा करता रहा - - (कृष्णार्जुन युद्ध- 96)

कोई

शायद किसी अंग्रेज बहादुर का हो --(बी0ह0-3)

किसी को पूछने उसे सहन नहीं थी (भारती- 99)

किसी का मुँह फुलाना ठीक नहीं(राजासिंह- 67)

किसी के कहने का क्या ठिकाना (,, -111)

कौन

किस रीति से यहाँ पधारियेगा (गांगावतरण-10)

किसका पराक्रमी बालक है (शकुन्तला ना0-156)

किसके आशीर्वाद से इस गोलोक में आए(सतीचिन्ता,- 81)

किन वस्तुओं से बनी है (वेनिस नगर का व्यापारी -1)

ये किनको अजीज है (तारा-8)

क्या

(क्या का तिर्यक रूप नहीं होता है इसके स्थान पर कौन का तिर्यक रूप ही प्रयुक्त होता है)

—अन्य सार्वनामिक विशेषण संबंधी विशिष्टताएँ

कहीं कहीं पर वचन भेद होने पर भी विशेष्य के अनुसार विशेषण का वचन और रूप नहीं बदला है, यद्यपि बहुवचन के स्थान पर एक के वचन रूप का प्रयोग इस काल की अपनी विशेषता है —

यह पल के रवे हैं (औथेलो की मै0—49)

वह पढ़े लिखे होशियार हैं (,, - 44)

यह ऐसे बेवकूफ बेहूदा नौकर हैं (,,-6)

: एक वचन के स्थान पर बहुवचन सार्वनामिक विशेषण का प्रयोग भी बहुत अधिक है —

इन चाल में बहुत सोचना है- - (महावीर चरित्र ना0- 45)
सूरों के इन वचनन के बाद गुम हो गई(श्री मती मंजरी-91)
इन राजा का कुछ ठिकाना नहीं कि कब क्या कर बैठे (मीरा बाई-46)
जो वीर रणधीर ठहरे उसको उसी समय ये प्रतिमा बोल जाय(रणधीर-2)
ये खुशामद मेरे लिए मीठा विष है (रणधीर -43)
ये कटार अभी तेरी शरीर को अपना स्थान बनावेगी- —(रणधीर प्रेम-81)
ये आदमी पहले भी धोखा दे चुका है (रणधीर प्रेम -63)
तैने ये बात अच्छी नहीं की - - - - - (,, -71)
धीरज धरो ये समय घबराने का नहीं है (,, -71)

: मूल के स्थान पर तिर्यक का प्रयोग भी विचारणीय है —

अरे भाई उन लोग बहुत बड़े आदमी हैं (संसार-78)
अभी देखे , इन लोग अभी गाँव गँवई से आई हैं(संसार-100)

3- 4 - क - 2 यौगिक सार्वनामिक विशेषण:-

सामान्यतः यौगिक विशेषण अकारान्त ही होते हैं जिनका रूपान्तर संज्ञा के लिंग वचन और कारक के अनुसार होता है, सर्वनामों से बने ये यौगिक विशेषण गुणवाचक अनिश्चित संख्या और परिमाण वाचक विशेषणं का भी बोध कराते हैं—

(1) गुणवाचक के रूप में—

गुण वाचक रूप में ऐसा, कैसा, वैसा, जैसा आदि रूप तुलना तथा प्रकार का बोध कराते हैं ।

ऐसा

मैं इसे ऐसी वस्तुओं और केवल ऐसी ही वस्तुओं को प्रदर्शनी किया चाहता हूँ (सर0- 1903- 72)
प्रातः काल ऐसी वाटिका में पुष्पचयन करना कैसी आनन्द की बात है
(छोटी बहू-74)
एक ऐसे पिंजड़े में बंद कर दिया (चि0क्वी0-142)
भगवान ऐसे सास ससुर किसी को न दे(मदन कुमार-16)
तुम्हारे ऊपर ऐसी ऐसी विपत्तियाँ पड़ी (मधुरा-1979-34)

कैसा

तुलना, प्रकार के साथ साथ 'कैसा' का प्रयोग 'रोष' आश्चर्य, दुःख के लिए भी होता है ----

अब तुम कैसी चोट पहुँचाया चाहते हो (मल्लिका-6)
न पूछो होना कैसे शौक की बात है (शकुन्तला ना०-140)
ये कैसे कैसे पहलवान और पराक्रमी हैं (संयोगिता हरण-81)
कैसा रमणीय और शोभायमान स्थान है (सतीचिन्ता-80)
आप को कैसी अच्छी नौकरी मिलती है (दुर्गावती -45)
उसमें कैसी- कैसी कथाएं हैं (रायबहादुर- 63)
यह कैसा असह्य वचन वज्रपात है (उत्तर रा० च० ना०-21)

: जैसा वैसा के रूप भी इसी प्रकार के हैं इनका अधिक विवेचन न करके उदाहरण रूप में एक दो रूप देना ही पर्याप्त होगा —

गोपाल की माँ की जैसी साथ थी, वैसे ही उसके भाग्य फूटे हैं(सावित्री-18)
जो जैसा बीज बोता है वैसा फल पाता है (भीष्म प्रतिज्ञा-10)
जैसे देव वैसे ही पूजा भी होती है (भारती-300)
जैसे पुरुष नहीं है --- (संयोगिता हरण-93)
चाहे जैसा अन्यथा ही उसको कर डालते थे (सावित्री-27)
फिर तो जैसइ नाचनाद। जैसइ सौंपनाद। (मीराबाई -51)

: पुरुष वाचक सर्वनामों में भी 'ऊ ई' तथा 'ही' के योग से यौगिक सार्वनामिक विशेषण बने हैं इन्हें एक ही साथ विवेचित करना अपेक्षित होगा —

वहाँ हमीं हम हैं --- (नयानंद-39)
घर की यही रीति है (महावीर चरित्र ना०-58)
सो यह वही अमृतवृष्टि है (नागानंद -99)
आज उन्हीं स्वामी की (गंगावतरण-32)
उन्हीं स्वामी की कमाई से -- (,, -38)
यही वृक्ष सब्जा ही कर आवेगा (संयोगिताहरण-80)
वही पुरुष वीर होता है -- (,, -103)
रोज वेई बातें हुआ करती हैं (रायबहादुर-26)

** अनिश्चित संख्या एवं परिमाण के रूप में :-

(2) अनिश्चित संख्या एवं परिमाण के रूप में-

इतना, कितना, जितना- उतना आदि यौगिक सर्वनाम विशेषण के रूप में अनिश्चित संख्या और परिमाण को बोध कराने के लिए प्रयुक्त होते हैं——

इतना

इतने पाषाण हृदयों को कोमल बना दिया (टा0भा0कु0-359)
इतनो निश्चय हो जाने पर (नैषध चरित- 56)
इतना अनर्थ न कराया जाय (राजनीति- 14)

विशिष्ट:-

बोलियों के प्रभाव वश 'इतना' के स्थान पर 'एतना' 'इतो, यतनो' आदि रूप भी मिले हैं —

अरे ससुराल में एतना सोने से बनेगा (प्रेमयोगिनी- 149)
एतना बड़ा सम्पूर्ण जगत को (बैनिस न0 का इया0-6)
नील कंठ के लिए इतता फिकर मत करो (रणधीर प्रेम-44)
तुम हमको यतनो तकलीफ देतो हो (रायबहादुर-26)

कितना

कितना दान चाहिए (राजनीति -83)
कितने कुलों में सदा हो शोकाग्नि प्रज्वलित रहतो है
कितनो स्त्रियाँ वैधव्य का दारुण दुख भोगती हैं (कर्म- 103)

विशिष्ट:-

बोलियों के प्रभाव स्वरूप 'कितना' के स्थान पर 'किते' 'कितनेक' 'के' 'केतनो' आदि रूप भी उल्लेखनीय हैं ——

दूध से के मन दुबो है सोने को कटोरा से दूध
पोते के बच्चे पैदा होते हैं (संसार- 9)
गढा के हाथ मोचा किया था (मोराबाई- 41)
तू के बरस को है (टभा0कु0 -278)
मधुपुरोते आये किते दिन भये (रणधीर प्रेम मो-19)
अब भोजन में कितो देर है (रणधीरप्रेम-53)
कितनेक राजा राज और सेनापति मारे गये (रणधीर प्रेम- 108)
कितनेक मुर्दों की छाती से खून निकलते - (,, -134)

कितनेक घायल अपने - - - -(रणधीर प्रेम-134)

कितनेक अप्रिय रण में पड़े हुए - -(,, -134)

सब जमान किते होंगे - --(दुर्गावती-85)

हमको कि कैतनो देर लगो(राव बहादुर-92)

(इसो प्रकार जितना' उतना के रूप है , प्रयोग में समानता होने के कारण उन सबों को पुनरावृत्ति नहो किया गया है इन्हें भो इसो आधार पर समझना चाहिए---)

3- 4- ख-- गुणवाचक विशेषण:-

सामान्य रूप से गुणवाचक विशेषणों का कुछ विवेचन सर्व प्रकरण में किया जा चुका है और कुछ का उल्लेख इसो प्रकरण में यौगिक सार्वनामिक विशेषण के रूप में किया जा चुका है देखिए--- यौगिक सार्वनामिक गुणवाचक रूप में 3-4-क-2(1)

अन्य गुण वाचक विशेषणों के कुछ रूप अकारादि क्रम में निम्नलिखित हैं ---

(1) अकारान्त---

हिन्दी में सामान्यतः अकारान्त गुणवाचक विशेषण दोनों वचनों दोनों लिंगों और सभो कारकों में अविकृत या मूल रूप में हो प्रयुक्त होते हैं, वस्तुतः इन विशेषणों को अकारान्त न कह कर व्यंजनान्त कहना चाहिए---

पुलिंग---

विपुल पदार्थों को देख कर निकाल देने लगे(सर01904-121)

सुन्दर शिला उसो कुंज के नोचे - देख (रमाबाई-3)

पवित्र आश्रम के दर्शन स्पर्श करके हम अपना जन्म सफल (शकुन्तला ना1(

प्राचीन आचार्यों ने तोन भागों में विभक्त किया है(वि0कवी0-3)

भोषण उपलों के कठोर स्वर के बदले (मयापुरो-129)

स्त्रोलिंग:-

सुन्दर वस्तुओं को हो दिखलाया चाहते है(सर01903-72)

अपमान के हाथ से भोर कन्या को न बचाय(संयोगिताहरण-112)

सुशोल स्त्रो हो कामिनो समझो जातो है(गंगावतरण-6)

आदर्श परमो के जोड़े के -----(उत्तर राम चरित्र ना0-23)

नव प्रकृति को प्रगाढ़ मधुरिमा- - -(उमा-832)

: किन्तु व्यंजनान्त विशेषणों में संस्कृत के समान हो स्त्रो प्रत्यय लगाकर स्त्रोलिंग विशेष्यों के साथ ईकारान्त और आकारान्त वाले रूप भो प्रयुक्त हुए हैं यथा- - - -

आकारान्त:- अपनी विवाहिता स्त्री की चिन्ता - -(शकुन्तलानाटक-61)

दुष्टा मलयवती अब जो कर क्या - -(नागानंद-96)

अपनी बालिका को सरलता के साथ -(उमा-3)

मुखोला औरतें जगत में - - -(..ोपापहरण-7)

मीठुसबसीया बालाएं ऐसा सुन्दर है(संयोगिताहरण-96)

ईकारान्त:-
- - - - -

भगवती गौरी ने तुम्हारे पुत्र को (नागानंद -198)

हे सखि कुमारी संयोगिता --(संयोगिताहरण-5)

राजकुमारी मलयवती है - -(नागानंद-18)

मोहिनी अति नार चंचल है (गंगावतरण-69)

इस पतित पावनी गंगा के जल को (,, 69)

अपनी रूपवती नारी को पुन समर्पे है(,,-75)

(2) आकारान्त--

आकारान्त विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन, के समान रूपान्तरित होते हैं, पुलिंग विशेष्यों के साथ तो ये वचन के अनुसार रूपान्तरित होते हैं किन्तु स्त्रीलिंग विशेष्यों के विशेषण में लिंग भेद तो होता है किन्तु वचन भेद नहीं - - - -

अच्छा कपड़ा पहनने का कुछ हुकुम(टा0का0कु0-416)

काला मृग भी दिखाई पड़ रहा है(संयोगिता-79)

छोटे छोटे निर्बल राजाओं का - - (ऊषाअनिरुद्ध-81)

नन्हें- नन्हें बा..ों को ओर तो देखो(दुर्गावती-58)

स्त्रीलिंग
- - - -

बड़ी तपस्या को - - -(ऊषा अनिरुद्ध-14)

इकली औरत ने कैसा मारा(मीराबाई-66)

छोटी मछलियों को बट मच्छ- - (रणबंधुरा-130)

बड़ी पुरानी बातें - - - - - (मर0औ0-113)

(3) ईकारान्त--

संज्ञा शब्दों में ' ई' प्रत्यय के योग से जो विशेषण बने हैं वे पुलिंग तथा स्त्रीलिंग विशेष्यों के साथ दोनों वचनों में समान हैं —

ये दुष्ट रिझावुतो और निर्दयो आदमियों को दिये गये (सर01904-20)

अरे पापुरे राक्षस खड़ा रह - - (महावीर चरित्र- 65)

बहुत परोपकारी साधु देते हैं - -(नागानन्द-67)

जंगली जीव मिले - - - - - - - -(गल्प कुसुम-54)

ऐसे ध्यानी नरेश का है (राजर्षि-90)

वैसो नारियाँ व्याख्या हैं (सु0वि0-24)

शरीर पर गुलाबो रेशमी साड़ी थो(,,-11)

नकलो मणि को असली - -(वैवाहिक अत्याचार- 12)

: किन्तु तत्सम स्त्रीलिंग रूपों के पाद? रूपों में 'इनो' और इनो प्रत्ययों के योग द्वारा विशेषण रूप बनता है —

तेरा हितकारिन तपोवन को देवियाँ -(शकुन्तला ना0-81)

उसको कर्मभोगिनो आज्ञा को समझ लो (उमा-47)

दिगन्त प्रसारिणो करुणा पर ध्यान दो (उमा-49)

ब्रह्मचारिणो अवस्था में विनय-(संयोगिताहरण-40)

(4) उकारान्त :-

आप के पढ़ाकू बात जानने को इच्छा- - (संसार-174)

गुवाऊ बाजे के संग मारू राग गाते हैं-(माधवानल- 159)

कमाऊ भाई से बहुत कुछ पाने को - (सु0वि0- 32)

खाऊ पेट को अपनो मिठाइयों से मत मार(राजारिवर्ड-55)

उड़ाऊ पुत्र के समान अपने आश्रय (दे0 न0 का व्या0-29)

: अन्य गुण वाचक विशेषणों के रूप बहुत कम हैं जिनके रूप व्याकरण के नियमानुसार हो हैं इनके लिए अगवालो अध्याय में विशेष प्रकरण को भी देखिए- - - अ-1-क- (3) तथा अ-1-क-2 - (3)

3-4-ग- संख्यावाचक विशेषण:-

परिनिष्ठित हिन्दी में संख्या वाचक विशेषणों के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं:-

(1) निश्चित संख्या वाचक (2) अनिश्चित संख्या वाचक(3) परिमाणवाचक

3-4-ग-1 निश्चित गणनावाचक विशेषण:-

इस वर्ग के अन्तर्गत गणना, क्रम, गुणात्मक, आवृत्ति, समुदाय, प्रत्येकवाचक जैसी निश्चित संख्याओं का स्थान है —

(1) गणनावाचक:-

इसमें पूर्णांक सूचक तथा अपूर्णांक सूचक दोनों ही प्रकार के विशेषण हैं ये विशेषण शब्दों और अंकों दोनों में ही प्रयुक्त हैं यथा—

पूर्णांक सूचक (शब्दों में

इस काल में पूर्णांक संख्या सूचक शब्दों के निश्चित उच्चारण और वर्तनी नहीं मिलती है, एक ही अंक के कई विभिन्न रूप प्रयुक्त हैं जिससे स्पष्ट है कि गणनात्मक शब्दों की वर्तनी और उच्चारण में अनिश्चितता ही रही और यह प्रवृत्ति आज भी बहुत हद तक जारी है। जो रूप मिले हैं वे निम्न हैं - - - -

एकु पंडित पढ़ाने को आता है (रायबहादुर-23)
इक बात याद रख - - - (,, -30)
एक टक उसी ओर देख रहे हैं (धनुर्यज्ञ-117)
केवल एक समस्या नहीं है (सोले -142)

भगवान की दया से यह दो पैसा कमाते हैं (संसार-37)
दुइ दिन हुए - - - - (रायबहादुर-106)
दौ दिन - - - - - - (,, -109

छै दिन हो गए - - (मीराबाई-66)
छ लाख रुपया है (वि0कसी0-410)
छः महीना की कन्या (रजनी-68)
छ बरस नौकरी (रायबहादुर-91)

पाँच हजार सिपाही बिल्कुल तैयार है (हेमलता-64)
सात सेर - - - - (रण धीर प्रेम-16)
नव लाख हैं - - - (वेनिस नगर का व्या-23)
नौ बरस बाद आए - - (संसार-52)
बड़े धूम धाम से नव रात्रि भए - - (संसार-32)
नौओं खण्ड - - - - (माधव नल-11)

दस गुना बड़ा अधिक है (उसने कहा था-49)
दश मौल चले - - (वि0कसी0-72)

ग्यारह विषय - - (वेनिस नगर का व्या-23)
ग्यारह बजे दिन- (जीवन आरा-91)

मुझे बारहो मोना पाठशाला भेजे - -(माधवानल काम-55)
कोई बारह वर्ष हुआ - - - (रणधीर प्रेम' मो0-14)
पत्नी को उम्र साढ़े बारह साल होकर(मानो बसन्त-37)
बारह वर्ष को लड़की को- - (,, -37)

तेरो छटाँक - - - (रणधीर प्रेम मो0-17)
तेरह साल - - -(वि0क्सो0-187)
पन्द्रह या तेरह - -(रणधीर प्रेम मो0-17)
पन्द्रह सोलह वर्ष को (भारतो-16)
पंद्रह दिन तक खाने के लि(वि0क्सो0292)
पन्द्रह सोलह वर्ष तक (संसार-73)
दूसरो बार के सोलह दिन के भीतर भा भी सकता है(मानोबसन्त61
सोलह वर्ष का एक नवयुवक -(भारतो-16)
साढ़े सत्तरा विपल पर अचल वर्ग का मुहूर्त है (मानाबसन्त-67)
उसको उम्र सत्तरह वर्ष से ऊपर न होगो(हत्यारहस्य- 169)
अठारह वर्ष को युवती हो चुको थी (हत्यारहस्य-65)
अट्ठारह बरसों से कम(राज रिचर्ड- 4)
अट्ठारह वर्ष - - - -(हत्यारहस्य-33)
बीस दिन - - -(माधवानल काम-69)
बीस मिनट के बाद- -(वि0क्सो0-196)
इक्कीस दिन तक - - -(ट0क0उ0-457)
बोर चौहान राज से इक्कीस बेर हारेथे(रणबांकुरा चौ0-176)
इक्कीस बार- - -(चन्द्रशेखर-2)
चौबिस घंटे में एक बार-(अ0हि0-115)
चौबीस बड़बोस अक्षर- (सूर्यग्रहण-201)
पच्चीस सौ से भो - -(माधवानल का0-128)
पचीस वर्ष बीत गए(उसने कहा था-59)
सत्ताइस वर्ष उन्होंने - -(हत्यारहस्य- 94)
सत्ताइस परिच्छेद -(भारतो-368)
अट्ठाईस रुपया- -(सु0वि0146)
अठाईस प्रकरण- - (वि0क्सो0-320)

तैंतीस करोड़ - - -(तुलसीदास-100)

तैंतीस करोड़ योद्धाओं ने (संयोगिता हरण-88)

पच्चास कवच - - - - -(रणबांकुरा चौ0-43)

पचास हजार- - - -(आनन्दमठ- 86)

एक पिचहत्तर वर्ष का बूढ़ा- - (आ0हि0-21)

तैरासो वर्ष के- - - - -(आ0हि0-11)

पचासी वर्ष का पट्ठा है (वि0क्सी0-66)

साल को लकड़ियाँ पिछ्यासा वर्ष की पूरी हो गई(वि0क्सी0-65)

नब्बे सहस्त्र कुंवर - - - - (माधवानल काम0-131)

नब्बे लाख सेना - - - - - -(,,, -147)

सौ रूपया - - - -(रणधीर प्रेम मो0-17)

दो सिपाही - - -(योद्धानो तलवार-71)

चार सौ रूपया- - (रणधीरप्रेम-17)

हजार सौर- - -(रणबंकुरा चौ0-43)

हजार आदमी जमा हुए- - (आनंदमठ-16)

हजार नोट है- - -(यौवन भार-24)

मैं इस घड़ी अट्ठारह वर्ष का हूं(हत्या रहस्य-32)

इतने दिन अट्ठारह वर्ष तक यह रहो(,, -32)

: गणना के अन्तर्गत 'कोड़ो' और 'जोड़ो' भी बहुत प्रसिध्द हैं। 'कोड़ो' का अर्थ बीस है और जोड़ो का 'दो' है यथा- - - - -

चार कोड़ो बुकेटस उड़ई है(वेनिस नगर का ब्यापार-42)

एक जोड़ो फटा जूता पहनने को दिया(टा0का0कु0-416)

दो जोड़े जरी के बढ़िया जूते हैं(हत्यारहस्य- 115)

: कहीं कहीं संख्यावाचक विशेषण और विशेष्यों के बीच में 'ठो-' का भी प्रयोग है जो पूर्वी बोलियों के प्रभावक है —

एक-दो ठो घर हैं - - (आनन्दमठ-86)

यह एक ठो आदमी है (चन्द्रोदय मा0-116)

तीन तीन ठो बड़े बड़े गाँव दे देगी(,,15)

चार ठो काम कर दे - - (हत्यारहस्य-10)

पाँच ठो दुकानों पावे गा(,, -10)

तैतीस करोड़ - - -(तुलसीदास-100)

तैंतीस करोड़ चौहानों ने (संयोगिता हरण-88)

पच्चास कवच - - - - -(रणबांकुरा चौ0-43)

पचास हजार- - - -(आनन्दमठ- 86)

एक पिचहत्तर वर्ष का बूढ़ा- - (आ0हि0-21)

तैरासी वर्ष को- - - - -(आ0हि0-11)

पचासी वर्ष का पट्ठा है (वि0कसौ0-66)

लाला को लकड़ियाँ पिचासा वर्ष को पूरी हो गई(वि0कसौ0-65)

नके सहस्र कुवर - - - - (माधवानल काम0-131)

नके लाख सेना - - - - -(,,, -147)

सौ रुपया - - - -(रणधीर प्रेम मो0-17)

से सिपाही - - -(चौहानी तलवार-71)

चार सौ रुपया- - (रणधीरप्रेम -17)

हजार तोर— - -(रणबांकुरा चौ0-43)

हजार आदमी जमा हुए- - (आनंदमठ-16)

हजार नोट हैं- - -(गोदान आर-24)

मैं इस घड़ी अट्ठाईस वर्ष का हूँ(हत्या रहस्य-32)

इसके दिन अट्ठाइस वर्ष तक यह रहो(,, -32)

: गणना के अन्तर्गत 'कोड़ी' और 'जोड़ी' भी बहुत प्रसिद्ध हैं। 'कोड़ी' का अर्थ बीस है और जोड़ी का 'दो' है यथा- - - - -

चार कोड़ी डुकेटस उड़ई है(वेनिस नगर का व्या-42)

एक जोड़ी फटा जूता पहनने को दिया(टा0का0कु0-416)

दो जोड़े जरी के बढ़िया जूते हैं(हत्यारहस्य- 115)

: कहीं कहीं संख्यावाचक विशेषण और विशेष्यों के बीच में 'ठो-' का भी प्रयोग है जो पूर्वी बोलियों के प्रभाववश है —

एक-दो ठो घर हैं - - (आनन्दमठ-86)

यह एक ठो आदमी है (वनबीर ना0-116)

तीन तीन ठो बड़े बड़े गाँव दे देगो(,, 15)

चार ठो काम कर दे - - (हत्यारहस्य-10)

पाँच ठो दुअन्नो पावेगा(,, -10)

अंकों में—

साल में 200) के धान की पैदावार है (संसार-47)

84 लाख जीव देह से - - - -(स०सार्थि[illegible]-30)

महाभारत के 4000 वर्ष पीछे इस भूमि पर(स०1903-65)

देश का 60 करोड़ रुपया वार्षिक- (भारत दर्पण-१ 121)

उसकी अवस्था 77 वर्ष की हुई -(संयोगिताहरण-6)

तुम्हारा 1000) तो मेरा 1002) (ओ३म प्र0-61)

100रुपया का नोट- - -(प्रेम योगिनी-12)

727 वर्ष 11 महीने 17 दिन हो गए (वि0कसौ0-192)

अपूर्णांक सूचक (शब्दों में

अपूर्णांक सूचक विशेषणों में केवल आकारान्त 'आधा' को छोड़ कर सभी अविकृत रहते हैं।

'आधा' का लिंग वचन के अनुसार तिर्यक रूप होता है- —

आधा सिरवाला- - - - (तुलसीदास-54)

आधी उमर बीत गई - -(रायबहादुर-34)

आधे सिकों स्वतंत्रता पूर्वक(ओ३म प्रतिज्ञा-59)

पौने सात बजे तुम्हें - - (श्री मती मंजरी-112)

पौने दो आने- - - (ओ३म प्रतिज्ञा-59)

पौन हिस्सा उसका- - (वि0कसौ0-262)

सवा नौ हजार हुए- - (रायबहादुर- 117)

साढ़े सात महीने पीछे- - -(बुड्ढे का ब्याह-25)

डेढ़ घंटे से चोट- - -(चौ0ट0-24)

ढाई सौ फुट गहरी- - -(बुड्ढे का ब्या0-26)

ढाई मन का दिमाग चाहिए-(ओ३म प्र0-59)

अंको में:-

देशी कपड़ा ९11) को बिकता है वैसा ही विलायती कपड़ा 111=) को मिल जाता है - - - (संसार-122)

आठ मिनट के बदले ९।।। मिनट हो गए(वि0कसौ0-56)

करीब ९11 मील आगे चलने से (चौ0ट0-1)

रात के 811 बजे अहूत - - -(,, -24)

क्या 611 पके आइए (पो०ट०-37)

क्रम वाचक -

क्रम सूचक संख्या वाचक विशेषण अकारान्त होता है जिससे लिंग, पुरुष के अनुसार उसके तिर्यक रूप होते हैं। गणनावाचक के समान ही क्रमवाचक विशेषण के वर्तनी और उच्चारण रूप में विविधता है। यहाँ पर तिर्यक रूप रूप अधिक न दिखाकर वर्तनी और उच्चारण वाले रूप ही अधिक दिखाने का प्रयास रहा है यथा -

पहिला दृश्य- - - -(भारत दर्पण-18)
पहला खण्ड - - -(सावित्री-1)
पहले जोत नगेन्द्र को - - - -(पो०ट० -27)
पहले महीने में - - - -(मर्यादा 1979-31)
नहीं हम लोगों का दूजा ईश्वर है (रणधीर ना0-5)
दूज के चन्द्रमा- - - -(रणधीर प्रे0-5)
दूसरा परिच्छेद - - - -(भारती-6)
दूसरा अंक - - - -(ओम प्रतिज्ञा-44)
दूसरी अवराजा करन है (रणधीर प्रेम मो0-119)
दूसरे दिन - - - - (नलिनी चार-10)
दूसरी दुलहिन ढूंढ देगो - - -(राजबहादुर-28)
पाचमी परिच्छेद - - - -(संसार -32)
पांचवा दृश्य - - - - -(सु.वती-86)
पांचवां परिच्छेद- - - -(अंगूठी का नगीना-28)
छठा परिच्छेद - - - - -(संसार -42)
छठवां परिच्छेद- - - -(रजनी-176)
छठवां परिच्छेद - - -(ओम प्रतिज्ञा-115)
छटा अध्याय - - - -(छोटी बहू -23)
छठी बहार की- - - (पो०ट०-80)
नौवां खण्ड में (भारवामल राम चन्द्रला-11)
नवमां अध्याय (,, ,, -141)
नवां परिच्छेद (सावित्री-43)
नौवां सोन - - - -(ओ मता मंजरी -46)
नववां दृश्य- - - -(पो०ट० -80)

सोलहवाँ परिच्छेद (आनंद मठ-85)

~~सोलहवाँ~~
सोलहवाँ नम्बर---(कलयुगी परिवार-159)

सत्रहवाँ परिच्छेद (आनंद मठ -85)

सतरहवाँ परिच्छेद (हरा सोना-146)

अठरहवाँ परिच्छेद (कलयुगी परीवार-89) इक्कीसवां परिच्छेद (संसार-169)

अठारहवाँ परिच्छेद (अंगूठी का नग-100) उक्कीसवां " (भारती-276)

सत्ताईसवाँ परिच्छेद (अंगूठी का नगीना -189)

बाइसवा पच्छेद (कलयुगी परिवार-136)

विशेष:-

क्रम बोधक विशेषणों में अंकों के साथ प्रत्ययों का योग भी इस काल की विशिष्टता ही कही जा सकती है। इनमें से कुछ तो परिनिष्ठित हिन्दी में भी स्वीकृत हैं किन्तु कुछ तो प्रयोग दोष पूर्ण होने के ~~कारण~~ कारण त्याज्य हो गये हैं।

किन्तु द्विवेदी युग में ~~में~~ बहुत से लेखकों ने इनका प्रयोग किया है यहाँ स्वीकृत तथा अस्वीकृत दोनों ही रूप दिए जा रहे हैं—

स्वीकृत-

---- 5वाँ नागरिक (भीष्म प्रतिज्ञा -61)

27वाँ श्लोक (उत्तर रामचरित ना0 भूमिका -2)

30वीं जनवरी(गुलेरी की अमर कहानियाँ वक्तव्य-8)

11वीं जुलाई (" " " -76)

30वीं मार्च (" " " -8

68वीं सूची (उसने कहा था-61)

कभी - कभी मात्र अंक देकर भी क्रम का बोध कराया जाता है जैसे -

1 सहेली 3 सहेली
2 सहेली 4 सहेली (श्री गंगावतरण -41)

1 नगर नि0
2 नगर नि0 (भीष्म प्रतिज्ञा -59)

1सहचरी
2सहचरी (संयोगितास्वयंवर-30)

अस्वीकृत-

अर बोधक —

1 ला बरचारो } 2 दूरा बरचारो } प्रेमयोगिनी-19
3 रा बरचारो } 4 था बरचारो }

1 ला नगर नि0 3 रा नगर नि0 } कौशम प्रतिज्ञा-61
2 रा नगर नि0 4 था बरचारो }

(क्रम बोधक संख्या वाचक विशेषण का प्रयोग यथा स्थान क्रिया विशेषण के अर्थ में भी होता है जिसका विवेचन इसी अध्याय के क्रियाविशेषण प्रकरण में किया गया है ~~देखिए इसी अध्याय में क्रिया विशेषण प्रकरण में किया गया है~~ देखिए इसी अध्याय में क्रिया विशेषण प्रकरण—3 - 6- क

(3) गुणात्मक—
- - - - - - आकारान्त होने के कारण ये भी लिंग वचन के अनुसार तिर्यक होते हैं। यहाँ पर कुछ गुणात्मक संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण दिए जा रहे हैं - - - - -

दूनो आग लग जाये गो (वनबोर ना0-37)
दूना आनन्द - - - (पो0द0- 57
दूने दर्द को(स्द01907-149)
दुगुन तान में बोल कर(माधवानल-47)

तिगुनो संख्या रहनो चाहिए(दुर्गावती-89)
तीन गुना अधिक द्रव्य आवे गा(वैश्य का व्या-15)
तिगुना द्रव्य दे कर- - (,, -67)
तिगुन तान में बोल कर (माधवानल का0- 47)
चौगुना उमंग - - -(रणधीर प्रेम मो0-110)
चौगुनो मोह- - - -(सु0वि0-6)
चौ गुने अवस्था वाले वृद्ध को (मनोरमा-2)
अठगुनो मोह - - (सु0वि0-6)
दस गुना बरस कर के (संसार-45)
सौगुनो बढ़ा बढ़ो(श्री गंगावतरण- 65)
हजार गुण बढ़ के त्रिभुवन (संसार-55)

(4) आवृत्ति—

(4) आवृत्ति :- आवृत्ति के लिए हार, बार, बर, बारा आदि का योग हुआ है। आवृत्ति वाचक संख्यात्मक विशेषणों को वर्तनी में भा भिन्नता है यथा—

दुबारा कुछ अनिल का संचार हो सकता है(वी०द०-80)

दोबारा सामोर फ़रमायाँ (भारत दर्पण-78)

दोहरा खटक लगा है - - - - (राजा रिचार्ड - 16)

फिर तिबारा पाठ दोहराया गया (वी०द०- 36)

तोबारा आवाज आई (संसार-26)

चार बार आवाज दो (संसार-27)

मिट्टी को चाहार दिवालो है(आनंदमठ-28)

चहार दीवारी दस बारह हाथ ऊँची थी(हत्यारहस्य-185)

चोथ बार सुन्दरताई में बढ़ूँ (वेनिस न०क० व्या०-47)

सहस्त्रबार मेरी इच्छा है (,,)

जीव के लिए सहस्त्रबार उचित है (प्रेमयोगिनी -26)

(5) समुदाय:-

इसमें केवल 'दो' के साथ 'नौं' लगता है शेष अंकोंमें सब के साथ औं का योग करके समुदायसूचक संख्यावाचक विशेषण बनता है किन्तु अन्य संख्यावाचक विशेषणों को भांति वर्तनी में विशेषकर अनुस्वार संबंधी अनिश्चितता बहुत अधिक है इनमें से कुछ निम्न लिखित हैं यथा- - - - -

दोनो दिखावे एक गाड़ी - - (सु०वि०-48)

दोनों का जानती - - - - (मालविका-14)

दोनों पक्षवालों से - - -(कु० व०व०- 85)

तोनों विदेशी चले गए (वेनिस न का०व्या०-57)

तीनों व्यक्तियों के एक साथ(वी०द०-60)

चारो दिशा को वायु'- -(वेनिस न०का व्या-6)

चहार तरफ से उमड़ती हुई क्यामत से (मल्लिका-2-20)

चारों ओर डूबने लगे(- - सूर्यग्रहण-151)

चहुँ ओर शांति और सुख हो दृष्टिगत होने लगे(कलयुगी परिवार-184)

पाचो भाई का अभ्युदय- - - -(महाभारत ना०-29)

पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती (सूर्यग्रहण- 83)

दसों दु:ख - - - (आनन्दमठ- 19) पचासों सिपाही(नवाबनंदिनी-70)

दसों दिशा- - - (,, -19) पचासों मराठे - - (सूर्यग्रहण-79)

दसों दिन "(सूर्य ग्रहण-20) पचासों नौकर - - (सु० वि० -60)

तब सास ससुर को सैकरन गारी सुनाई(रणधीर प्रेम०-21)

सैकड़ों गृहस्थ और रानियाँ - - (संसार-59)

सैकड़ों मराठों के वे शब्द- -(सूर्यग्रहण- 150)

सैकड़ों पुरोहित- - (नवाबनंदिनी-81)

हजारों कुरसियाँ- -(ठा०ठ०गो०-163)

सहस्रों चोर- - -(रणबांकुरा चौ०-143)

हजारों पुरोहित - - (नवाबनंदिनी-81)

हजारों मकाने - - (चौहानी तलवार-77)

लाखन जन --(श्री भक्त मंजरी-54)

लाखों आदमी काटे गए(संयोगिताहरण-112)

लाखों टुकड़े- - - (चैनिक का ब्या० '51)

कोटिन सेना जिन जिनको - -(श्री भक्त मंजरी-54)

करोड़ों मुसलमानों को - - -(चौहानीतलवार-71)

करोड़ों मुगल - - - -(चौहानीतलवार-91)

कोटि वृश्चिक दशन की भांति - - -(मणिलता-33)

सोलहों आने ठीक उतर गयी- - (हरयारहस्य-16)

सोलहो आने विश्वास ही करना होगा(-,,-80)

(6) प्रत्येक वाचक:-

निश्चित संख्या वाचक को विशेषित के साथ ही 'हर, प्रति, फी, प्रत्येक' जैसे शब्दों के योग से प्रत्येक सूचक संख्यावाचक विशेषण बनता है - - - -

पचास पचास हाथ पर हवा को टकरा कर चलना पड़ेगा(भारतमित्र 1903-10)

उनमें से एक एक हमारे तीन तीन सिपाहियों से भी भारी पड़े थे - - (दुर्गावती -90)

अँधेरे में तीस तीस मन का गोला फेंकते हैं(उसने कहा था-50)

किन्तु परिश्रम के साथ साथ और बातों की ओर भी ध्यान देना पड़ता है (अरण्यबाला-29)

और सब राजपरिवार जैसे-तैसे इस संसार से चल बसे(रणधीरप्रेमो0-181)

दिल बहलाने के लिए कोई दूसरा स्थान नहीं था(स्वामिभक्ति-23)

(5) सर्व सूचक शब्दों के द्वारा:-

समस्त सर्पों का विनाश देख - (नागानंद- 59)

सब आर्यों में योग दे कर सास के हृदय में अधिकार कर लिया(मर्यादा1917-10)

संसार की सारी स्त्रियां विधवा हो जाय(छोटी बहू-31)

उसके सारे आशा- भरोसों पर पानी फिर गया-(टा0का0कु0-415)

क्या सारा संसार शून्य हो गया(उत्तर राम चरित्र ना0-100)

(6) अधिकता तथा न्यूनता सूचक शब्दों द्वारा:-

कवि बहुत थोड़े शब्द -- काम में लावें-(सर0-1904-157)

मैंने बहुत ठोकरें खाई हैं(गौतम बुद्ध-107)

ट्रंक में बहुत सी चीजें न थीं, बहुत से कागज के टुकड़े पड़े थे(मर्यादा-1911-192)

ब्रह्मचारी का गीत बहुतों ने सुना था(आनन्दमठ-27)

मैंने बहुतों को देखा है(गद्यमाला-127)

3-4-ग-3 - परिमाण सूचक विशेषण:-

के प्रयोग के अनुसार निश्चित संख्यावाचक और अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण निश्चित अनिश्चित परिमाण का भी बोध कराते हैं यथा---

(1) निश्चित परिमाण वाचक:-

उसने रत्ती भर भी बात मानिक से कही थी(राजकुमारी-4)

अपनी डेढ़ चावल की जुदी खिचड़ी पकाते हुए(र0बेगम-9)

सभा की कुल्लत दो कौड़ी की हो जाये गी(सर01907-149)

बूंद बूंद पानी टपकता था(लक्ष्मी-1908-23)

आप का कहना बावन तोले पाव रत्ती होगा- -(राजबहादुर- 136)

सौ-सौ कोसे जमीन राज्य से निकलवाये (प्रेम पेतिसी-84)
पानी को एक बूंद से क्या होगा (चांदबीबी- 183)
साथियों के लिए दो आँसू बहाऊँगा (,, 182)

(2) अनिश्चित परिमाण:-

उसका रसीलो-रसीली हाल अमना सुन चुकी हो (राजकुमारी- 119)

जिसके नाम अपनी सारी सम्पत्ति लिख दी थी (राजकुमारी-164)

मगर मोर पुरुष का शरीर कुदरत को कुल ताकतों का समूह है (सर01909-60)

थोड़ा दूध पियोगे- - -(उम्र-50)

एक दूध बहुत सा हीरा मोती मोट ले कर आया है (मालविका0-50)

बहुत कम खर्च पड़ता है - - (जिसकी बदौलत बहुत थोड़े से रूपये से ही हम कारखाने खोल सकते हैं- - (चौ0ट0-81)

थोड़ा सा हाल इस स्वर्ग - भूमि का का और देने की इच्छा है- चौ0ट0-82)

उनको बहुत- बहुत धन्य धन्यवाद देता हूँ (दुर्गावती-51)

हमारी बड़ी भारी हानि होगी (दुर्गावती-92)

जिनके पास कुछ रूपये हुए- (गद्यमाला-105)

हम कभी तो सस्ते पड़ते का माल अधिक दाम दे कर लेते हैं- (गद्यमाला-126

3-4-क- तुलनात्मक विशेषण:-

तुलनात्मक विशेषण में दो की अथवा समुदाय से तुलना की जाती है , जब दो से तुलना की जाती है तो कभी साम्य, कभी अधिकता और कभी न्यूनता का बोध होता है, सार्वनामिक यौगिक विशेषण ऐसा , जैसा, इतना, उतना आदि का विवेचन पहले ही किया जा चुका है (देखिए - सार्वनामिक विशेषण-3-4-क-2 गुणवाचक रूप में)

3-4-क-1 दो की तुलना

(1) अधिकता बोधक-

इससे उत्तम और क्या है (शकुन्तला ना-1)
उसके हृदय को जड़ से भी अधिक प्रचंड चोट से अभी कहे जाता है - - - (नागानंद-72)
मैं प्राणों से बढ़ कर और जस से बढ़ कर धर्म को समझता हूँ (रणधीर प्रेम-110)

सौ-सौ कोसे जमीन राज्य से दिलवाये(प्रेम योगिनी-84)

पानी की एक बूँद से क्या होगा(चाँदनी- 183)

साथियों के लिए दो आँसू बहाऊँगा(,, 182)

(2) अनिश्चित परिमाण:-

उसका रत्ती-रत्ती हाल जमना सुन चुकी थी(राजकुमारी- 119)

जिसके नाम अपनी सारी सम्पत्ति लिख दी थी(राजकुमारी-164)

मगर वीर पुरुष का शरीर कुदरत की कुल ताकतों का समूह है(सर01909-
-60)

थोड़ा दूध पिओगे- - -(उमा-50)

एक दूध बहुत सा होरा मोती ओट ले कर आया है(मालविका0-50)

बहुत कम खर्च पड़ता है - - (जिसकी बदौलत बहुत थोड़े से रुपये
से ही हम कारखाने खोल सकते हैं- - (बौ0ट0-81)

थोड़ा सा हाल इस दर्श - भूमि का मन और देने की इच्छा है-बौ0ट0-82)

उनको बहुत- बहुत धन्यवाद देता हूँ(दुर्गावती-51)

हमारी बड़ी भारी हानि होगी(दुर्गावती-92)

जिनके पास कुछ रुपये हुए-(क गद्यमाला-105)

हम कभी तो सस्ते पड़ते का माल अधिक दाम दे कर लेते हैं-(गद्यमाला-126

3-4-ख- तुलनात्मक विशेषण:-

तुलनात्मक विशेषण में दो की अथवा समुदाय से तुलना की जाती है , जब दो से तुलना की जाती है तो कभी साम्य, कभी अधिकता और कभी न्यूनता का बोध होता है, सार्वनामिक यौगिक विशेषण ऐसा , जैसा, इतना, उतना आदि का विवेचन पहले ही किया जा चुका है (देखिए - सार्वनामिक विशेषण-3-4-क-2 गुणवाचक रूप में)

3-4-ख-1 दो की तुलना

(1) आधिक्य बोधक-

इससे उत्तम और क्या है(शकुन्तला ना-1)
उसके हृदय को वज्र से भी अधिक प्रचंड चोट से अभी चूर्ण करता है - - - (नागानंद-72)

मैं अपने प्राणों से बढ़ कर और धन से बढ़ कर धर्म को समझता हूँ
(रणधीर प्रेम-110)

यहाँ ज्यादातर मकान दो मंजिले होते हैं ~~किस~~ -(गो०द०-82)

पिता कण्व के आश्रम के विरले तुमसे अधिक प्यारे होंगे - - -(शकुन्तला ना०-12)

तू लवड़्गलता से अधिकगुनी सुघी है (रजनी -96)

इसके उपरान्त घोरतर दारिद्रय दुःख अधिक तुम लोगों का पीड़ित करने लगा ।

(रजनी -108)

कोई भी दूसरा लड़का उनसे बढ़कर न था सका - - - -(व० विलास-31)

(ii) साम्यबोधक -

जितना विचार मैं किया करता हूँ उतना अभी इस बात पर की मैंने किया नहीं है । (दुर्गावती -5)

वह लकड़ी सी कैसी उठ रही है मुँडेरी से ऊँची- - - - - - -(दुर्गावती-67)

जितना बड़ा तेरा भतीजा है उतना ही यह आम है (उसने कहा था-61)

यथार्थ रूप से प्रदर्शित करना उतना सहज नहीं जितना सो पचास वर्ष पहले था।

(आरण्यबाला-41)

फूलों में फूल ही नजर आने लगे (श्री मंगलाचरण -19)

(iii) न्यूनता बोधक-

वह राजा भी अधिक ऋषि यों से घाट नहीं है (शकुन्तला ना०-43)

हमारे अफरीदी जवान तुमसे कम बहादुर व लड़ाके नहीं हैं (या० कु०त०-10)

तुम क्या किसी से कम हो (कमजोर -40)

(4) उपमान के वाचक शब्द के रूप में 'जैसा' के प्रयोग से भी तुलनात्मक विशेषण बना है । आँखें बड़ी गोली भौंहें जैसे काले तारे भी मौजूद हैं- - (रजनी -60)

वह रजनी ही जैसी सुन्दरी होगी (रजनी-61)

(5) कभी - कभी ' सा ' अथवा सी के स्थान पर जैसा और सरीखा शब्द के योग के बाद भी संज्ञा तथा सर्वनाम विशेषण रूप में प्रयुक्त हुए हैं यथा—

अपनी आस्तीन में तुम सी नागिन पाली (र०वे० -47)

वह वह के नये पत्ते से हाथों को बढ़ाकर वह फूल की माला देवनंदन के हाथों में डाल दी (ठ० हि० ना०-17)

आप जैसे पढ़ी लिखी स्त्री को क्या कुछ भी संकोच नहीं होता - -(रायबहादुर-131)

उसमें मोती मोतियों सरीखा पहले ही लिखा हुआ (गो०द०-34)

कुटकी जैसी दवा लेने में चाहे रोगी को हजार दुःख हो किन्तु शरीर के सारे विकार निकल कर उसकी फूल सी देह निकल आती है - - - -(आ०हि०-232)

तुम क्यों सो बातें करते हो (आरण्यबाला-55)

अधखिले फूल सरीखे चेहरे अभी आपको मेरा परिचय नहीं दे रहे हैं (कुन्दावली-60)

रामचंद्र सा मनोहर कांतिवान यह और किसका बालक है (उत्तर रामचरित नाटक नाo-90)

मेरे जैसे हतभाग्य और अधिकारी के हाथ में पड़ती तो तुम्हारी जैसी कमल कमलिनी की आज न करना पड़ता (स्वामिभक्ति -143)

(6) इसके अतिरिक्त अन्य शब्द 'ओरों में का' 'सा' तथा 'के सदृश' आदि सादृश्य सूचक शब्दों के योग से भी तुलना का बोध होता है। मी तुलमाहित है ---- (नागानंद-77)

इन वृक्षों में सहोदर का सा स्नेह हो गया है --(शकुन्तला नाo-13)

तुम्हारे साथ अपने लड़के का सा बर्ताव नहीं रखा चाहती --- (तारा-11)

तुम्हारी बहन की सी मेरे भी एक बहन होती --- - (छोटी बहू-37)

आप के सदृश गुणग्राहक जो है (प्रo पाo -49)

तुम्हारा साहस उस बांके मनुष्य का सा है (प्रo पाo-61)

जो उल्लू का सा मुँह लिये है (भूल भुलैया-45)

क्षितिज पर लटके हुए बादलों का सा चरफीली पहाड़ों का चोटियाँ जान पड़तो- के . (बुलबुल का कांटा)3)

(7) विशेषणों के साथ 'सा' प्रत्यय जोड़ने से हीनता का बोध होता है।

एक मैली सी अपनी कोठरी की तरफ इशारा कर बैठने को कहा- - -(उसके पास ही एक और छोटी सी कोठरी है और उसमें बहुत सी टूटी चीजें भरी पड़ी हैं ------(चौoटo-63)

3-4-क-2 समुदाय से तुलना :-

अभ्यागत सब से बड़ा है (नागानंद-24)

भीतर से काम , क्रोध, लोभ, मोह आदि में और लोगों से कहीं अधिक डूबे रहते हैं (दुर्गावती-63)

उसके लिए सबसे अधिक कठिन काम छन्द चुनना है ---- (राणाप्रतापसिंह-16)

अपना कलंक मेटने का यही सबसे अच्छा राह है' - - -(भारती -291)

विज्ञान का सबसे बड़ा गुण नई- नई बातों के आविष्कार करना है- - -

(रoरo-42)

3-4-क-3- विशेषण से विशेषण की तुलना

कम से कम तुझे मैं कदापि जिन्दा न छोडूँगा- - -(भूतनाथ-21)

बड़ा से बड़ा काम दे सकता हूँ (भारत दर्पण-21)

महान से महान शक्ति का सामना खेलखेल खेलते कर सकते हैं -(,, ,,-21)

~~सब्र से काम लिया~~ सख्त से सख्त आजमाइश में भी सब्र से काम लिया - -
(कौमी तलवार-74)

अच्छे से अच्छे मिठाई देने पर नहीं आता - - - -(प्रेमयोगिनी-76)

भैंस के आगे बढ़िया से बढ़िया बीणा बजायी आया- - -(प्रेम योगिनी-79)

3-5- क्रिया

वाक्य के विधान में क्रिया मुख्य संचालिका होती है । व्याकरणिक दृष्टि से क्रिया में वाच्य काल, अर्थ, पुरुष, लिंग और वचन के कारण विकार होता है।

इस युग की भाषा में प्रयुक्त क्रियाओं के अनुशीलन से स्पष्ट है कि इस समय विभिन्न भाषाओं की विभिन्न धातुएं तो प्रयुक्त हैं ही इसके साथ ही हिन्दी की विभिन्न बोलियों के प्रभाववश उनके रूप और प्रयोग में भी विविधता परिलक्षित होती है । सुतरां प्रारम्भिक कृतियों के क्रियापदों पर तात्कालीन भाषागत अव्यवस्था तथा लेखकों की स्वच्छन्द प्रकृति के कारण कहीं कहीं विशिष्टताएं भी मिलती हैं ।

विवेच्य युग की भाषा में जिन क्रियाओं का प्रयोग हुआ है उन्हें उनकी प्रकृति के अनुसार मुख्यतः चार वर्गों में रख कर विवेचित किया जा सकता है ।

3-5- क- क्रिया की प्रकृति-

(1) धातु
(2) यौगिक क्रिया
(3) संयुक्त क्रिया
(4) सहायक क्रिया

3-5-क-1 धातुः शब्द प्रकरण में कुछ मूल धातुओं का उल्लेख किया जा चुका है । इन मूल धातुओं के रूप में काल, लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जो विकार उत्पन्न होता है उन्हें संयुक्त धातुओं के अन्तर्गत दिखाया जायगा । (देखिए संयुक्त धातुएं 3-5-क-3)

हिन्दी के समान ही इस युग की सभी धातुओं को ~~सकर्म~~ सकर्मक और अकर्मक दो वर्गों में बांटा जा सकता है । कुछ धातुएं अकर्मक हैं तो कुछ सकर्मक। किन्तु कुछ अकर्मक धातुओं को बनाया जाता है । यहाँ दोनों ही धातुओं के कुछ रूप दिए जा रहे हैं :—

(1) अकर्मक-

हम लोग घर से निकले हो -(सूर्यग्रहण-156)
आप घर बैठे रहें (,, -158)
कै मुगलों की छावनी में घुस गये(,,-195)

मेरो नौकायें उससे एक मास पूर्व आवेंगो(वेनिस नगर का व्या0-16)

दोनों बहर जाते हैं---(,, -16)

वह उस निगोड़े तोते से पूछतो है (वि0क्षी0-310)

खटका हूटता है (वि0क्षी0-310)

आप बड़ी हो---(हरा सोना-30)

(2) सकर्मक
----- द्विवेदी युग में भी अकर्मक से सकर्मक क्रिया बनाने की पद्धति परिनिष्ठित हिन्दी के अनुरूप ही है। यथा----

प्रथम अक्षर का गुण या दीर्घ द्वारा--

आज मोड़ता हूँ---(तुलसीदास-86)

बात भी न छूटनो चाहिए(,,-128)

सुधना को खोंचतोहै--(,,-129)

हृदय को चीरता हो (मीराबाई -64)

वे यहाँ किसी को मारते पीटते हो(सूर्यग्रहण-39)

दूसरे अक्षर में गुण द्वारा।-

पवन आकाश गंगा को बहातो है और सप्तर्षि मंडल को घुमातो है

(शकुन्तला ना- 150)

एक सुन्दर नारो वोणा बजातो है (नागानंद- 11)

मामा ने ब्याह कराया--(तुलसीदास- 10)

अपने जीवन को उन्हीं की सेवा में बिताती है(प्रेमयोगिनी-22)

मैं भी ऐसा बोझा उठाया हूँ-(वर्मोंबन-49)

मैंने मार गिराया---(सूर्य ग्रहण--310)

कुछ शब्दों के सकर्मक रूप गुण द्वारा बने दोनों ही रूपों में मिलते हैं जैसे--

फँसना (तुलसीदास-60) काटना (तुलसीदास-128)

जलाना(मीराबाई-55) कटाना(भीष्म प्र0-9)

छोड़ना(मीराबाई-45)

छुड़ाना(तुलसीदास-107)
बाँटना(आनंदमठ-4)
बटाँना(माहित्र फा-71)

मटाँना (मल्लिका-71)

प्रयोगः-

मुझको फसाया है (मीराबाई-55)

हम लोगों को झूठ मूठ फँसा दिया (तुलसीदास-60)

इसको छोड़ता है (मीराबाई-45)

दयालाल से उसे छुड़ा लूँ (तुलसीदास-107)
हम लोगों को घटता है (आनंदमठ- 4)

उसने बहुत कुछ डाटा मटाया (मल्लिका-71)

बात भी न घटनी चाहिए (तुलसीदास-128)

उसने भरी सभा में मेरी नाक कटा दी (भीष्म 9)

: कुछ अकर्मक धातुओं के 'क ट-' का सकर्मक में ड़ हो जाता है जैसे—

मुझे तुझे फोड़ता हूँ, उसे तोड़ता हूँ तेरे हाथ जोड़ता हूँ (तुलसीदास-86

इसको छोड़ता हूँ (मीराबाई-45)

मुझे मराठों ने छुड़ाया था (सूर्यग्रहण-263)

: किन्तु छुट् धातु का कहीं कहीं सकर्मक में भी 'ट' का ड़' नहीं हुआ है —

प्रीतम प्यारी से छुटाया (माधवानल काम0-31)

यह कह कर बाह छुटाय दो (,, -76)

मुझे कारागार से छुटाया (,, -95)

'ल' के योग से बने सकर्मक रूप

तुम कितनी जल्दी दिखलाते हो (सर01905-119)

धीरे जिव्हा को मुर्दा बतला दे (सर01907-149)

किसने विष पिलाया था (छोटी बहू -151)

सौ- सौ आँसू रुलाये गा'— (साविनी - सत्य-22)

ऐसी दवा पिलाओ (रामोभगिनि-88)

3-5-क-2 यौगिक धातुएँ:-

निर्माण की दृष्टि से यौगिक धातुएँ तीन प्रकार की हैं।
(1) प्रेरणार्थक (2) नाम धातुएँ (3) अनुकरणात्मक

(1) प्रेरणार्थक रूप—

बचवाना (तारा-77) सजवाना (आत्मदाह-10)

लगवाना (अबमारो-2) निकलवाना (स्वप्नभोजपति-117)

मरवाना (रावबहादुर-151) खिलवाना (मा०ओ०-29)

भिजवाना (दुर्गावती-97) पिलवाना (कर्मवीर-90)

प्रयोग:-

अपने हाथों को बंधवाया (प्रेम योग-127)

इतनी गालियाँ सुनवाई (अबमारो-7)

इश्तहार छपवाता हूँ (भीष्म प्रतिज्ञा-28)

मैं ओवर मंगवाता हूँ (वि०कु०-31)

मेरे प्राणेश्वरपति को सर्प से डसवाया (कर्मवीर-132)

विशिष्ट:-

परिनिष्ठित हिन्दी के व्याकरणिक नियमों के अनुसार प्रेरणार्थक रूपों में आदि अक्षर के स्वर 'ओ' का 'उ' तथा 'ए' का 'ई' होना चाहिए किन्तु बोलियों के प्रभाव स्वरूप कहीं कहीं स्वरों में परिवर्तन नहीं हुआ है —

प्रयोग:-

दूसरे किसानों से जमीन जोतवाता था (संसार-2)

अपनी स्त्री से दरवाजा खुलवाया (उमा-85)

जंगल में कांस छीलवाया-(प्रेम योग-73)

अपने वालियों को बुलाया जाय (,,-80)

उसको हरवराज के पास भेजवाया था (भीष्म प्रतिज्ञा-89)

हम लोगों को दुःख देखाना अच्छा है (प्रेम यो०- 75)

उसे बहुत देखवाया- - (बैनिस म० का० व्या०-75)

(2) नाम धातुएँ—

यद्यपि वर्तमान काल में इनका प्रयोग कम होता जा रहा है किन्तु इस युग में इनका प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक हुआ है ——

दैव जो यही रूचता है ((रणधीर प्रेम-102)

कुछ भी पड़े या तो बनने तुम्हारो साथे गो (आ०हि०-116)

सिंह के कुल में मोबद्द जन्मा है (महाभारत ना०-92)

बुखार कमा नहीं सबेरे 102 डिग्री से कमता नहीं (संसार-113)
किसी ने नहीं अपनाया ----------- -(,,-16)
मैं इतना स्वीकारता हूँ (भीष्म प्रतिज्ञा-86)
बिना हाथ गरमाये किसी का कुछ(महात्मा बुद्ध-123)
जयसिंह का उस पर गरमाना(ऊषा अनिरुद्ध- 10)
हमारी चिन्तायें नसायेंगी -(,, -85)
ओवरसियर को लतियाया (ट0क0कु0- 268)
बड़ा नाम कमाऊँगा --- (मानोवसन्त ना0-164)
लड़कियाँ कितनी बड़ी [illegible] है(,, -37)

(3) अनुकरणात्मक धातुएं:-

अनुकरणात्मक अथवा ध्वन्यात्मक शब्दों को यदि संज्ञा माना जाय तो इन्हें भी नाम धातु ही माना जा सकता है। क्रिया रूप में इनको शब्द प्रकरण में उल्लिखित किया जा चुका है अतः देखिए - शब्द प्रकरण-क-1-ख-2 अनुकरणात्मक शब्द-(4)

3-5-क-3 संयुक्त क्रियाएँ:-

परिनिष्ठित हिन्दी में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग भारतेन्दु युग में ही होने लगा था और क्रमशः उत्तरोत्तर इसके प्रयोग में बहुलता होने लगी। यहाँ पर उन समस्त संयुक्त क्रियाओं का विवेचन किया जा रहा है जिनमें धातु से निष्पन्न क्रिया, क्रियार्थक संज्ञा, संज्ञा विशेषण और कृदन्त आदि मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त हो कर संयुक्त क्रिया का निर्माण करते हैं, इनमें पुरुष, लिंग, वचन सभी का ध्यान रखने का भरसक प्रयत्न किया गया है।

(1) मुख्य क्रिया— धातु से निष्पन्न:-

धातु के साथ जो संयोग हुआ है उनकी बहुत बड़ी संख्या है। यहाँ पर स्पष्टीकरण के लिए मात्र कुछ ही दिये जा रहे हैं।

मुख्य क्रिया --- धातु से निष्पन्न-

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
उ0पु0 मैं,	हम	मैं	हम
म0पु0 तू	तुम, आप	तू	तुम
अ0पु0 वह	वे	वह	वे

प्रयोगः-

युवती फूलों को देख मारे प्रसन्नता के हँस रही है(रमाबाई-3)

मैं यह बात भली भाँति नहीं समझ सका(आनंदमठ-40)

मैं अपने पास रख लूँगी (नवाबनंदिनी-12)

तुम कानों से सुन तो सकते हो(मीराबाई-15)

तुम क्यों अजीरित हृदय को और भी छिन्न भिन्न कर रही हो(मल्लिका-111)

तू तो मुझे देख नहीं सकती (मीराबाई-61)

इसको आज्ञा आप छोड़ दीजिए(मल्लिका देवी-123)

हम मारे प्रसन्नता के बोल उठीं (,,-14)

तू इस शीशी के भाँति जनाने महल में चोरों की तरह घुस आया(मल्लिका-26 भाग2)

हम लोग इनके सुखद सुराज्य में बड़े महाराज दशरथ को भूल गए
(उ०रा० ना०-21)

वे अपने अपने कानों पर हाथ लगा कर घरों में घुस चुके(आ०हि०-60)

कोई पापी हर ले गया (सती चिन्ता-135)

मेरी आँखें खुल गई हैं (राजकुमारी-8)

विशेष:— जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि यह युग भाषा की दृष्टि से क्रांति का युग था फलतः ब्रज भाषा जो भारतेन्दु युग तक काव्य की भाषा थी अपना प्रभाव इस काल तक छोड़ी थी। अन्य शब्द भेदों की अपेक्षा क्रिया रूपों में इसका प्रभाव स्पष्टतः ही दर्शनीय है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि बोलियों के प्रभाव का धातु से निष्पन्न मुख्य क्रिया के रूप में ग्रामीणता आ गई है —

मुझे लज्जा आय आती है (श्री मती मंजरी-104)

वह यहाँ भी आन पहुँची (मीराबाई-66)

कोई आफत आन पड़ी (संसार-16)

कुछ कुछ काम मैंने किया था सोच डाला(वे०न० का० व्या०-5)

कन्दला कन्दन करती उठि बैठी(माधवानल काम०-141)

सहजावस्था यदि आवे --- (,, -147)

समुद्र के पास धरि आऊँ (,, -153)

योगी को आप दर्शन-[illegible] चुके(चतुर्भुज यज्ञ ना-45)

वहवौड़ आके --------(,, -69)

(2) मुख्य क्रिया --- संज्ञार्थक क्रिया

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	मैं	हम	मैं	हम
म०पु०	तू	तुम, आप	तू	तुम
अ०पु०	वह	वे	वह	वे

प्रयोग-

मैं जानना चाहती हूँ (वैवाहिक अत्याचार-36)
वे बिना आयमन किए ही बोलने लग गए (सूर्यग्रहण-47)
तुम पहाड़ को तोड़ना चाहते हो --(,, -13)
हम लोग तो आप समर्थ के दर्शन करने आ रहे हैं (सूर्यग्रहण-12)
तू अपना प्राण देने आई है --(मनि लक्ष्मी देवी-52)
हम तुम्हें इस समय एक पैकेट देने आई हैं (रोशनआरा-96)
मैं तुम्हें खबरदार करने आया हूँ ---(,, -8)
तुम लोग जमीन आसमान एक करने लग गये हो (हु०च०कु०-301)
हजूर को समझ न जाने किधर घास चरने चली गई है (रजियबेगम-47)
तू मुझे आज नजरों से देखने लगे गए (बिनो और अधिरो-93)
रमण भोजन करने बैठा है (महात्मा ईसा-8)

(3) संयुक्त क्रिया -- संज्ञा के योग से

('करना' और होना के साथ। इस प्रकार की संयुक्त क्रियाएँ बनाने को संख्या बहुत अधिक है --

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	मैं	हम	मैं	हम
म०पु०	तू	तुम, आप	तू	तू, आप
अ०पु०	वह	वे	वह	वे

प्रयोग:-

आप मेरी सेवा न स्वीकार करेंगे (सर०-1903-21)
वह उनके लौटने का इंतजार कर रहा है (ज़माना-97)
तुम परिचित से बोध होते हो (मल्लिका- 118)

तू हमसे फिर भेंट करना (मल्लिका देवी -119)

जो तू क्यों व्यर्थ अपना पीड़ितायें वर्द्धित कर रही है (बंगसरोजनी-129)

मैं विनीत वचन से निवेदन करूँगी (,,-130)

आप उसी पर क्यों न इतना आग्रह दिखाते हैं (,,-122)

पहले तो तुम हम से प्रीतिपूर्वक सम्भाषण करती थीं (,,-139)

हम तुम सोच रही थी - - - - - - - - - - (,,भाग-2-13)

हम लोग श्री श्री सम्राट् के दर्शन करने जा रहे हैं (सूर्यग्रहण-12)

जिसे वे उत्साह के साथ व्यय करते हैं (उ०रा०-6)
वे उसको व्यय करना नहीं जानती (स्वामीभक्ति -3)

वह हमारा स्मरण करेगी - - (मल्लिकादेवी-124)

मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ (वैवाहिक अत्याचार-17)

(4) संयुक्त क्रिया — विशेषण के योग से

विशेषणों के योग से बनी संयुक्त क्रियायें निम्नलिखित हैं :-

मेरी आँखें नीची हुई जाती हैं (रणधीर प्रेम मो०-122)

इतना सुनते ही वे ठंडे पड़ गए (टा०का कु० 248)

तुम्हारे दिन पूरे हो गए -(मल्लिका देवी-57)

धर्म का जामा पहन कर लोगों पर हाथ साफ करते हैं (टा०का०कु०-140)

मेरा सत्यानाश हो गया - - (बंग सरोजनी-80)

गुलाबी चेहरा क्रोध से लालपड़ जाये गा (राजा रिचर्ड-67)

(5) संयुक्त क्रिया —— वर्तमान कालिक कृदन्त के संयोग से

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	मैं	हम	मैं	हम
म०पु०	तू	तुम, आप	तू	तुम
अ०पु०	वह	वे	वह	वे

प्रयोग--

वे बाल्यावस्था से ही उन पर कृपादृष्टि रखते आए हैं (सूर्यग्रहण-5)

बीच बीच में आप कहते जाते थे - - - - - - (,,-16)

इतने में तुम सामने से आते हुए दिखाई दिए(सूर्यग्रहण-16)
हम लोग उनका साथ देते चलते हैं (,, -67)
वह ज्योतिषी जी की तारीफ करता जाता था(,,-36)
फजूल बातें तू मन में क्यों लाते रहता है (मानोपसन्तना0-33)
मैं बाट जोहते-जोहते उकता गई हो(वैवाहिक अत्याचार-84)
मैं रात दिन सोचते पड़ी रहूँ गी (मानो वसन्त ना0-84)
फिर तूँ उसको एक-एक बताते बैठे गी (,, - 43)
हम उसके पीछे रोते - पीटते दौड़ी (वैवाहिक अत्याचार-76)
उसके लिए तुम लज्जा से मरतो रहती हो(,, -80)
मैं मुँह ताकता रह जाऊँ (भोग- 58)
वे विपति के सिर परपैर रखती चली गई (भारत रमण-111)
वह आपही को अपना आराध्य देवता मानती आई है(स्वामोभक्ति-13)

(6) संयुक्त क्रिया —— मूल कृदन्त के योग से

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोगः-

तुम अपने को बुरी राह बताया चाहते हो(धर्मपालन- सं0-10)
वह भगवान की हो चुकी है (सर01904-120)
मैं आप से कुछ अर्ज किया चाहता हूँ)(र0वे0-84)
पाप में तू बड़ी हुई होगी - (मु0हो0-68)
वह रस टपका पड़ता है (उ0राम0च0ना0-9)
हम लोग रोने का शब्द सुन कर इधर हो चले आए थे(सूर्यग्रहण-12)
हम वहाँ आया करती थी- - - - - - (,,-4)
तुम यहाँ से जाया चाहती हो(मस्तिष्क देवी-138)
मैं अपने प्यार या मुहब्बत का ढंग एक और ही तरह का रखा चाहती हूँ - - (नवावनंदिनी-39)
वे उसमें से हाथ जोड़े हुए निकलती है (भोराबाई-39)

पुत्र धन पर आँख लगाए बैठे हैं (गद्यमाला-162)

तू मुझे दिया चाहता है (भा०स०-37)

(7) मु० क्रिया— पूर्वकालिक कृदन्त

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	मैं	हम	मैं	हम
म०पु०	तू	तुम, आप	तू	तुम
अ०पु०	वह	वे	वह	वे

प्रयोग:-

डाक्टर लोग शरीर से विकृत पदार्थों को देख कर निकाल देने लगे (सर०1904-121)

वह मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया(हेमलता- 149)

मैं छाती का दूध पान करा कर छोड़ूंगी(तारा- 56)

वह कुलटा उस रमणी से बैठी कह कर पुकारती थी(चि०कसौ०-111)

तुम उसे उजाले में जा कर कहो(मदा० हंसा-51)

हम सब बातें बोल कर कहेंगे(आनन्दमठ-51)

मैं भी कौशिक सा बन कर खड़ा हो जाऊँ(मीराबाई- 27)

हम अपने को अप्रकट ही रख कर देश सेवा करें(र०बेगम-13)

तुम हमें अविश्वासी समझकर नहीं करती(मल्लिका-122)

तू कम्बुल वाँ से पैठ कर भाग गई (रोशन आरा-82)

वे देख कर लड़ेंगी —(मल्लिका देवी-138)

आप हमें यह स्मरण कर के आए हैं(बंगसरोजनी-44)

तू सुखोला से मोतीमहल दुर्ग में जा कर मिल सकता है(बंगसरोजनी-34)

विशिष्ट— पूर्वी बोलियों के प्रभाव वश धातु में 'आय' प्रत्यय युक्त पूर्वकालिक रूप भी प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं साथ ही कहीं-कहीं ब्रज का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है।

'आय' वाले रूप—

आय वाले रूप -

नेत्रों का जल मिलाय आपके चरण कमलों से दूसरी ओर को मुख छिपाय खड़े हो गये
(मीरा बाई-77)

तुम अभी वृन्दावन में आय श्री कृष्ण चन्द्र जी के चरण कमलों का दर्शन कर ----
(मीराबाई-85)

चन्द्र के निकट आय चरणों पर गिर निवेदन किया (माधवानल का0-4)

तू निज शरीर पाय यहाँ आवेगो, पृथ्वी पर पहाड़ आय गिर पड़ो---(माधवानल का0-40)

मधुकर रूप बनाय एक नलकर के छिद्र में प्रवेश किया---(माधवानल का0-42)

नगरवासियों को बुलाय बहुत भोजन जिमाय अत्यन्त पुण्यदान किया। मेरे पास आय सुन्दर वेदी रचाय मुझको मनो बनाय गन्धर्व विवाह किया--- (माधवानल का0-45

ह्वै प्रभाव-

लज्जित ह्वै लौट पड़ा ---(मधुप यश का0-138)

शोकित ह्वै सब ओर देखता है (,, ,, -147)

सृष्टि रचि कै कौन सा सुयश पाया ----(माधवानल का0 -155)

चिता से उठि कहने लगा --------(,, ,, -141)

खुरों से उड़ि उड़ि कर धूरि आकाश में जाने लगी(,, -131)

गन्धर्व यहाँ आन आनकर वास करते हैं (,, ,,-8)

राजद्वार पर आनकर खड़ा हो गया - (,, ,,-14)

मुझसे पहले ही पलंग पर आनकर सो रहो(मीराबाई-59)

3-5-क-4 सहायक क्रियाएँ

परिनिष्ठित हिन्दी का काल रचना बहुत अंशों में सहायक क्रियाओं पर ही निर्भर करता है। सहायक क्रियाओं के योग से संयोग मूलक और संयुक्त दोनों ही क्रियाओं का निर्माण हुआ है। विवेच्य युग में प्रयुक्त इन समस्त सहायक क्रियाओं का विवेचन सुविधानुसार तीन दृष्टियों से किया गया है —

(1) हर अंश में सहायक

(2) 'ह' तथा 'थ' धातुओं से निष्पन्न सहायक क्रियाएँ।

(3) प्रसंगानुसार सहायक तथा मुख्य क्रियाओं के रूप में।

(1) ~~हर अंश में सहायक~~

(1) हर दशा में सहायक

परिनिष्ठित हिन्दी में चुक और सक सहायक हर दशा में सहायक होते हैं। सामान्यतः इस युग में भी इनका प्रयोग अधिकांशतः सहायक रूप में हो हुआ है, लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार इनके रूप तथा प्रयोग निम्न प्रकार से दिखाये जा सकते हैं

	पुलिंग सक		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोग -

मैं आप की बातों का उत्तर नहीं दे सकता (महावीर चरित-48)

जगतसिंह ठीक समय पर उनसे भेंट भी न कर सके - - (नवाबनंदिनी-4)

मैं पैदल नहीं चल सकती (च0द0 -59)

वह अपने पति की मृत्यु के दुखदाई घटना को हृद से दूर न कर सकी - -(रौशनआरा-5)

तुम बता सकोगी - - - - - -(रौशनआरा -9)

तुम मेरी लाडली मेहरबानियों का अन्दाज कर क सकोगे (मल्लिका -22)

क्या हम घुस देने पर भी नहीं घुस सकते (पंगसरोजनी -48)

हम लोग इनके उपकारों का बदला चुका सकेंगे (मल्लिका -66)

मैं स्वप्न में भी नहीं सोचती थी कि तू आज घर आ सकेगा - - -(अ0च0पु0-70)

जिससे तू अन्त में स्वर्ग में पहुँच कर शांति का अधिकारी बन सकेगा (रा0च0कु0-230)

उस समय तुम पलंग से भी नहीं उठ सकोगे। (रा0च0कु0-159)

बहुतेरी छिपी हुई बातें भी मालूम हो सकेंगी -(लता -प्रस्तावना)

बिना उसे तोड़े वह (द्रव्य) नहीं मिल सकता (चन्द्रकान्ता चौ0 -70)

तू अपनी पत्नी बिना कैसे रह सकता (मानावती ना0-60)

चुक

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम आप	तू	तुम
अ0प0	वह	वे	वह	वे

प्रयोग -

क्या तुम लोग माया जाल काट चुके (आनंद मठ -16)

तू समझ चुका कि अब आन से सुख नहीं है -----(आनंद मठ-37)

मैं अभिमान और ममता छोड़ चुका (द्रोपदी चीरहरण -45)

उमा बहुत कुछ सुख भोग चुकी (उमा0-46)

तुम फूल डालों को बोचो हो चुको (रोशनआरा-11)

जी जब याकूब जो कुछ कहना था कह चुका तो (र0 बेगम-61)

हम अपने किये का बेहद सजा पा चुके (रंग महल-मेंडल ह0-63)

मैं विश्राम कर चुकी (उत्तर रामचरित ना0-33)

आप उनके मरने से मर चुके (राजा रिचार्ड -9)

हम बहुत पढ़ चुके ------(,, -88)

मेरो दो सताने वाल को भेंट हो चुकी (टा0का0 कु0-76)

इस घोर पापकर्म को वे अपनी पुस्तक में लिख चुके ---(द्रोपदीचीरहरण-51)

(11) है तथा था से निष्पन्न सहायक क्रियाएं

' ह ' से निष्पन्न सहायक क्रियाओं को तीन रूपों में विभक्त किया जा सकता है (1) वर्तमान (2) भूत (3) भविष्यत्। लिंग पुरुष और वचन के अनुसार इन रूपों और प्रयोगों को निम्नलिखित प्रकार से दिखाया जा सकता है।

ह — वर्तमान-काल

उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम आप	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

तू माला किसके लिए बनाती है (मेंहदी मल्लिका -39)

तुम हम से क्या चाहती है (चंगमरोवरी -53)

तुम इन अनमोल फलों पर हाथ फेरते हो (सर01904-4119)

तू आबात संतान के पंजे में क्या है (टा0 का0 कु0-449)

हम उसे पार कर सकती हैं (,, ,, -454)

आंखें शतरंज पर खूब गड़ी हुई हैं (तारा -96)

आप ऐसा समझते हैं (आरण्यबाला -55)

वे केवल ज्योतिष के भरोसे व्यापार करते हैं (गल्पमाला -127)

प्रयोग—

एक दिन तुम अवश्य ही सफल होगे (आनन्दमठ-33)

यह स्वप्न देख रही होगी (छोटी बहू-61)

बढ़ गया होगा (माधवानल कामकन्दला-79)

वह अपने को सुकुमारी कहती होगी (रणबांकुरा चौ0-61)

पाठक यह जानना चाहते होंगे (मल्लिका-9)

तुम अवश्य किसी बड़ी भारी शक्ति को रखते होगे (बंगसरोजिनी-46)

आप लोग इसी आदर में प्रसन्न होते होंगे (राजा रिचर्ड-45)

मैं आराम न दूँगा (कृष्णकान्त का दानपत्र-99)

आप पुत्र का संवाद पाते होंगे(,, -26)

तू मुझे की बात जानता होगा(टा0का0कु0-122)

हम भी मामी के साथ इस की बातों को सुनना चाहते होंगे
(टा0का0कु0-184)

मैं शाहजादी मीरा की खिदमत में हाजिर होऊँगा (बंगसरोजिनी-22)

तुम या तो उन दोनोंही के साथ तारा का विवाह कराना चाहते होगे
(तारा-80)

इसको क्या उम्मीद थी उस समय तक हम जाते होंगे (र0बेगम-99)

(3) प्रसंगानुसार सहायक और मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त—

इस कोटि में युग की उन क्रियाओं को रखा गया है जो प्रसंग के अनुसार कहीं मुख्य क्रियावत प्रयुक्त हैं तो कहीं सहायकवत् । आधुनिक खड़ी बोली में इस प्रकार की क्रियाओं की संख्या बढ़ती जा रही है तथा संयुक्त क्रिया के निर्माण में यह प्रवृत्ति सामान्य रूप से जोर पकड़ती जा रही है । हमारे विवेच्य युग में भी लेखकों ने सामान्य रूप से प्रसंगानुसार सहायकवत् और मुख्यवत् क्रियाओं का अधिकाधिक उपयोग किया । यहाँ पर न तो उन सबों का विवेचन हो सके है और न आवश्यक ही प्रतीत होता है अतः मात्र स्पष्टीकरण के लिए कुछ चुने हुए उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

अब भारतीयों ने कर्तव्य करना छोड़ दिया (भारत दर्पण-13)

चेतनाविहीन पुनः जीवित हो उठो(वीरों तलवार-145)

उचटती नजर से देखने लगे(प्रेम योगिनी-58)

सारा हाल थोड़े में कह सुनाया(राजकुमारी-80)

मौजूद रहने की खबर नहीं होने पावे-(,,-106)

जितना जी चाहे मुझे गालियाँ देती रहना(छोटीबहू-9)

यहाँ से निकल जा (श्री गंगावतरण-46)

लोहा भी संग-संग बजाना पड़ता है (संयोगिताहरण-16)

अग्नि में कूद कर जल मरो - (कृष्णार्जुन युद्ध-55)

मेरा तो दम हार गया (,, -8)

मेरा सर्वस्व तुम्हारे आगे हाथ बाँधे खड़ा रहेगा(भीष्म प्रतिज्ञा-43)

दो ही चार बात कह कर झटपट विदा कर दिया(छोटी बहू-139)

आप बैठे हुकुम दिया करें (,, -87)

देखते देखते किवाड़ जल कर गिर पड़े (,,-167)

मेघ को हटा कर निकलना पड़ेगा (गौतम बुद्ध- 35)

उसी चटाई पर आ कर सो रहे (भारती-3)

दिग्विजय की आज्ञा ले कर चला आऊँगा(,,-355)

पथ में लेख भी लिखा करती है (सुखमय जीवन-16)

3-5-ब- कृदन्त

धातुओं में प्रत्ययों के योग के उपरान्त निष्पन्न शब्दों को कृदन्त नाम पदों से अभिहित किया गया है। कृदन्तों का प्रयोग वाक्य-रचना और संयुक्त क्रियाओं के विकास में विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

क्रिया के विकास में जिन कृदन्तों का प्रयोग द्विवेदी युगीन भाषा में हुआ है वे दो प्रकार के हैं :-

(1) विकारी (2) अविकारी

3-5-ब-1 विकारी कृदन्त

विकारी कृदन्तों के रूप, लिंग वचन, पुरुष आदि प्रत्येक स्थिति में बदलते रहते हैं। विकारी कृदन्त भी चार वर्गों में विभाजित किए जा सकते हैं

(1) क्रियार्थक संज्ञा (3) वर्तमान कालिक कृदन्त

(2) कर्तृवाचक संज्ञा (4) भूत कालिक कृदन्त

(1) क्रियार्थक संज्ञाः-

धातु के अन्त में 'ना' प्रत्यय के योग से क्रियार्थक संज्ञाओं की रचना हुई है, आकारान्त रूप होने के कारण इनमें आकारान्त संज्ञा के समान ही रूपान्तर होता है। प्रयोग के अनुसार विभिन्न कुछ भेदों के अन्तर्गत आते हैं यथा- - -

संज्ञावत् प्रयुक्त--

लड़ाई के लिए पैरने से लोग बड़े अनुचित काम कर बैठते हैं

(महावीर चरित्र भा0-72)

उस पर हार पहनना हुआ भी नहीं तो क्या है? (नागानंद-49)

यदि यह घटना न होती - - -(उमा-99)

हंसना रोना दोनों एक दूसरे से गुंथे हैं(नवाबनंदिनी-2)

दिल्लगी करने को जी चाहता है (भ0 -29)

तुम्हारा कहना सच है (तारा-21)

तुम लोगों का पढ़ना लिखना छुड़ा कर तुम्हें भी भिखारी बनाये गा

(भारत दर्पण-129)

अपने इष्ट मित्रों को पढ़ने के लिए दे देता है (रायबहादुर-61)

यदि कहीं मरने पर मेरे बाद सती हो जाय गी(प्रेमयोगिनी-67)

राज्य का खजाना चला जाने से इतना रूपया देने में कठिनाई होती है

(ब0विलास-53)

आरोचन उत्पन्न होने से प्रमोचन पथ का अवलम्बन किया(1636/14 जनार्दन आ0)

विशेष

कहीं कहीं पछाहीं प्रभाव के कारण इनके रूप में भी ब्रज का प्रभाव है यथा- - -

अपने आदमी के रहन के सिवाय तुमें काम ही नहीं(मु0वि0-12)

गाली बकनी ठीक नहीं (श्री सती मंजरी-30)

पड़ता हो पर मिलनो मुश्किल है (श्री सती मंजरी-25)

आपको वनिता को मैया पुकारिबे तें हमारो जन्म सार्थक है जायगो (मीराबाई-75)

तुम्हें मैया बोल के टेरिबेतें हमें अपार आनन्द होय है(मीराबाई-75)

हम सब तुम्हें ब्रज लौं पहुंचाइबे के लांई चलेंगे(मीराबाई -75)

विप्रयन तें गुरुसेवा लेवो हमारो नियम नाहिं है(मीराबाई-77)

श्री कृष्ण जी ने हमारे चित्त के भ्रम दूर करबे के तुम्हें पठायो है (मीराबाई-78)

कहीं कहीं क्रियार्थक संज्ञा में विशेष कर चाहना क्रिया के योग से भी विकार हो गया है जो पंजाबी प्रभाव के समान है - - - -

मुझे पिता के नियम के विरुद्ध करने चाहे(वेनिस न0 का व्या0-10)

अपने- अपने गुरु को जाने चाहते हैं (,, -10)

सखियाँ होने चाहते हैं -(,, -14)

कौन सी पापिष्ठा को बुलाने चाहती है(आनन्दमठ-31)

यह तो बड़ा अनर्थ होने चाहता है(महाभारत-भा0-66)

उसे स्वीकार कर लेने कहें तो कहूँ(,, -72)

विशेषणवत प्रयुक्तः-

इनके लौटने का इन्तजार कर रहा हूँ(भूतनाथ-97)

शाइस्ता खाँ के पराजित होने का पूरा पूरा हाल कहा(पू0ह0-51)

तुम्हें पहचानने की कोशिश तो करता हूँ (नवाबनंदिनी-38)

उनके ऊपर रसोई पानी करने का भार देना ठीक नहीं(उमा-72)

दासी वृत्ति करने को मशीनें हैं(भारती-221)

कर्तृवाचक संज्ञा

सामान्यतः क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप में -वाला- प्रत्यय के योग से निर्मित कर्तृवाचक संज्ञाओं का प्रयोग तो इस युग में हुआ ही है किन्तु इसके अतिरिक्त 'वाला' के स्थान पर हार, हारा- हारे-वारे प्रत्यय के योग से निर्मित कर्तृवाचक संज्ञाओं का प्रयोग भी इस युग की कृतियों में विशेष कर प्रारंभिक कृतियों में

अधिक हुआ है यह॥—

संज्ञावत प्रयुक्त—

ऐसा हो खोने हारे मिल गये हैं (चैनिस न0 का कथा-33)

बनाने हारे को दोनों आँखें - - - (,,   -46)

निर्दयता का छिपाने हारा नहीं है(,, 59)

जो अंगुल लेने हारे न बचाते -(,, -79)

होनहार के सैकड़ों द्वार होते हैं(शकुन्तला ना0-11)

कोई रोकने वाला न होगा(,,   -88)

~~कालनेमि~~ कालनेमि का कान काटने वाले है (वनवीरना0-23)

ऐसा कष्ट बाप को मारने वाले पर भी न पड़े(वि0कथो0-238)

आने- जाने वालो से इष्ट मित्रों से कहने लगे(वि0कथो0 -289)

बड़े बूढ़ पेड़ियारे आये है (तुलसीदास-95)

जैसे एक डूबने वाले के लिए एक सरका भी सहारा जान पड़ता है

(प्रेमयोगिनी- 66)

वेद रत्नागार के रक्षा करने वाले हैं (उत्तर रा0 ना0-128)

विशेषणवत - प्रयुक्त

हस्तिनापुर जाने वाले ऋषि बुलाये जाते हैं(शकुन्तला ना0-75)

इनमें तीनों लोकों के मंगल करने वाले जय के लक्षण हैं(महावीर च0ना0 -23)

उस करनु हारे ब्रह्म को (चैनिस ना 0 का कथा0-7)

समाचार लाने हारा ऐसा दूत कभी नहीं देखा(,,-38)

जीवन बचाने हारा ज्यापारीश तीन बड़ा ब्र——,,-79)

उस कोटि काम लजावनहार राम के हम हत प्रणाम(चन्द्रावर-2)

उस पर आग में घी डालने वाली शीतल सैनों की यह सलाह—

(वनवीर ना0-56)

ऊपर से वेदान्त की बातें मारने वाला यह सरदार पूरा गोबर गणेश है   (दुर्गावती-34)

प्रफुल्लित कर देने वाला एक बालक भी न था (मर्यादा-1922-510)

वर्तमान कालिक कृदन्त

धातुओं के अन्त में -ता' प्रत्यय के योग से वर्तमान कालिक कृदन्त की निष्पत्ति होती है । इसके बाद 'हुआ' का तिर्यक रूप जोड़ने से यह कृदन्त संज्ञा विशेषण और क्रिया विशेषणवत् भी प्रयुक्त होता है यथा——

संज्ञावत् प्रयुक्तः—

मरते को मार कर क्या सूरता होगी(माधवानल-139)

मैं वन में कन्द मूल फल खा कर अपनी घटती के दिन पूरा करूँगा (रणधीर प्रेम-110)

बहुतों को बिगड़ते से बचाया (आ0हि0-194)

कहते में हृदय काँपता है (तुलसीदास-123)

विशेषणवत् प्रयुक्तः-

पीछे आते हुए रथ को हरिन फिर फिर कर देखता है(शकुन्तला-5)

चंचल कोयों में काँपती हुई आँखों को तू बार बार स्पर्श करती है (शकुन्तला ना0-17)

पाँव पड़ते हुए भरत को उठा कर (महावीर चरित्र ना0-109)

मेरे जलते जी को ठंडा करता है (रनधीर ना0-87)

गंगा में उठती हुई लहरों की कलकलाहट(सर01907-119)

धधकती आग में घुस जाना(महाभारत ना0-71)

उचकती अनजरों से देखने लगे (प्रेम योगिनी-58)

क्रिया विशेषणवत् प्रयुक्तः-

एक बेटी आम की मंजरी को देखती हुई आती है(शकुन्तला ना0-119)

मुसलमानों का अधिकार जमता चला आता है (पू0ह0-3)

मैं मरते मर जाऊँगा (रणधीर प्रेम-109)

पानी टपकता हुआ उसे दिखाई दिया(लक्ष्मी-1908-23)

ढोल बजाता हुआ शास्त्रागार में आया(गोलमहुज-65)

बालिका खेतों को फाँदती हुई आ रही थी(बुन्द का कांटा-40)

खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला(उसने कहा था-51)

वरिष्ठता को हँसी उड़ाते देखती हुई लौट आई हूँ(राजश्री-20)

द्विरुक्ति मूलक क्रिया विशेषण वत् प्रयुक्त

वर्तमानकालिक कृदन्तों की द्विरुक्ति से बने क्रिया विशेषणों को शब्दावली के द्विरुक्तादि शब्द के अन्तर्गत भी विवेचित किया गया है(देखिए शब्दावली अध्याय द्विरुक्तादि ब-2-घ)

स्पष्टीकरण के लिए यहाँ पर कुछ और उदाहरण दिये जा रहे हैं

दुःशासन चीर खींचते खींचते थक जाता है (द्रौपदीचीरहरण-68)

दोनों रोते रोते गले मिले(राजकुमारी-47)

श्याम ने नदी में ऊँघते ऊँघते पूछा(छोटी बहू-11)

जाते-जाते इस ख्याल से उसने कई बार पीछे फिर फिर कर भी देखा (तारा- 87)

परित्याग करते करते कहा (मर्यादा-1979-30)

चिट्ठी लिखते लिखते ऊषा का प्रकाश निकल आया था(आरण्यबाला-60

हँसते हँसते सेवक ने कहा(विवाह कुसुम-12)

क्रिया वत प्रयुक्तः-

क्रिया के रूप में इसका प्रयोग काल रूपों में प्रयुक्त है देखिए क्रिया के काल रूप और प्रयोग- 3-5-ग-)

भूत कालिक कृदन्तः-

धातुओं के अन्त में -'आ' प्रत्यय के योग से भूतकालिक कृदन्त निष्पन्न होते हैं। वर्तमानकालिक कृदन्त के समान संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार इनमें भी रूपान्तर होता है ये कृदन्त भी संज्ञा विशेषण, और क्रिया-विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं यथा—

संज्ञावत् प्रयुक्तः-

हम बीतुओं को बताने को यह भी निर्गोड़ा(माय बानल भाग-74)

पिसे को पीसने में फायदा क्या(सु0वि0-17)

करम लिखी के सामने किसी की बुद्धि विद्या एक नहीं चलती
(संयोगिताहरण-98)

क्यों जले पर नमक लगाती हो। मरे को गाली देने से क्या हाथ
आए गा- - - (संयोगिताहरण-98)

सब किया कराया मिट्टी हो गया(वि0क्षो0-196)

गिरे ~~फिसलने~~ हुए को गिराने वाले सब हैं(कर्मवीर -138)

मेरी कुछ कहा-सुनी हो गई(चाँदबीबी-29)

विशेषणवत प्रयुक्त

बुरों से उठी हुई धूल भी आय नहीं लगती(शकुन्तला ना0-6)

यह माँस से लिखा हुआ चूड़ामणि कैसा(नागानंद-76)

गवैया नृत्यशाला बैठा हुआ ताराके चेहरे तरफ देखा रहा(तारा-19)

दूसरी ओर विलायती रोशनी का हरा भरा मुकलित बसन्त है
(ठ0ठ0गी0-11)

खाट पर पड़ा बालक लाल पगड़ियों को देख कर खेला हुआ - कूद
कर हँसा(सर्वदा -1979 - 511)

मैं एक परित्यक्ता बन सका हूँ (दुर्गावती- 60)

भीगीहुई कुमारी उसके सामने खड़ी है(युद्ध का काँटा-37)

फटी लंगोटी भी नसीब न होती(रायबहादुर- 82)

मरा हुआ बेटा बना था(राजकुमारी- 144)

बालिका एक फटा सलूका और धोती लिए थी(चित्रशाला-49)

अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो(उसने कहा था-51)

अपमान के भरे वचन सुन कैर (महाभारत ना0-70)

क्रिया विशेषणवत् प्रयुक्त-

विभीषण पुत्रक के आगे किए हुए आरहा है(महावीरचरित्र-103

मंगल पात्र हाथ में लिये हुए बैठ ता है (शकुन्तला ना0-76)

अनसूया हाथ में सामिग्री लिये आती है ---(शकुन्तला ना0-76)

उसकी गोद में सिर रखे उदय सोता है (वनवीर नाटक-75)

हम ईर्ष्या से जले जा रहे हैं (महावीर ना0-70)

दुर्योधन और शकुनि का हाथ मिलाये हँसते हँसते प्रवेश (महाभारत ना0-79)

द्विरुक्ति मूलक क्रिया विशेषण वत् प्रयुक्त

बेचारी जहाँ का तहाँ खड़ी-खड़ी रोती थी (राजकुमारी-59)

उसे चुपचाप बैठो-बैठो देखा करो (तारा-67)

बिछौने पर पड़ी पड़ी रात भर व्याकुल रहा (बेटो बहू-23)

घर में बैठो-बैठो घुटा करूँ (त्रिशाला-12)

भुजाओं को हिला-हिला और चमक चमाचम करती (संसार-18)

(शेषके लिये देखिये शब्द प्रकरण क-द्विरुक्तादि शब्द-अ-2-आ)

क्रियावत् प्रयुक्त - क्रियावत् रूप में इसके प्रयोग काल रूप और प्रयोग में देखिये- -3-5-ग

3-5-ख-2-अविकारी कृदन्त - अविकारी कृदन्त प्रत्येक स्थिति में अपरिवर्तित अविकारी कृदन्त के रहते हैं। इस प्रकार के कृदन्तों के भी चार वर्ग हैं —

(1) अपूर्ण क्रिया द्योतक (2) पूर्ण क्रिया द्योतक

(3) तात्कालिक कृदन्त (4) पूर्वकालिक कृदन्त

(i) अपूर्ण क्रिया द्योतक - मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की अपूर्णता सूचित करने वाले ये कृदन्त वर्तमान कालिक कृदन्त के विकृत रूप 'ते' के योग से निष्पन्न क्रिया विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं द्विरुक्ति होने पर भी ये लिंग वचन और प्रयोग की दृष्टि से निर्विरोध होते हैं विकारी कृदन्तों के वर्तमान कालिक कृदन्त वर्ग में इन्हें क्रियाविशेषण वत इनका प्रयोग में दिखाया जा चुका है अतः यहाँ पर इनका पुनः विश्लेषण करना अपेक्षित नहीं है

(ii) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त - ये कृदन्त भूतकालिक कृदन्त के विकृत रूप हैं इनका प्रयोग मुख्य वाक्यांशों में होता है जहाँ ये क्रियाविशेषण वत प्रयुक्त होकर मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की पूर्णता के अर्थ को द्योतित कराते हैं ——

डेढ़ पहर दिन चढ़े तक, मानिक ने राजकुमारी की सुई होने की तरह खोजा

(राजकुमारी-36)

उसे चंटो पलंग पर लेटे और करव टे बदलते बोल गये- - -(चित्रलेखा० -
(राजकुमारो -63)

दो घंटे दिन चढ़े दूर दूर मवेशियों के पैरों की और आदमियों के बोल चाल की आहट कान पर पहुँची (चि० कथा० 0-37)

मेरे बुजुर्ग मजलिस में बैठे हुआ, वे रहे हैं (चाँदबीबी -118)

पूर्णद्योतक कृदंतों से संयुक्त क्रियाओं का भी निर्माण हुआ है संयुक्त क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्तों के विवेचन में कुछ उदाहरण दिए जा चुके हैं (देखिए प्रकरण में - - - - - - (संयुक्त क्रियायें -3-5-क-3)

उन पर बिना क्रोध किये न रहूँगी (उत्तररामचरित-27)

तुम्हारी कन्या तुम्हें लौटाए देता हूँ (राजकुमारी -4)

जिसे खाने के लिए मुँह बाये खड़ा है(,, -4)

ख्वलास खाँ के हाथ में चले गये हैं उधर अकबर इस अहमद नगर पर ताक लगाए बैठा है - - - - - - - - - - - - - - -(चाँद बीबी -7)

(111) तात्कालिक कृदन्त

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्तों में ही अव्यय के योग से तात्कालिक कृदन्तों की निष्पत्ति होती है, इन कृदन्तों से मुख्य क्रिया के तत्काल पूर्व होने वाले व्यापारों का बोध होता है तथा स्वतंत्र वाक्यांश भी जिनसे निर्मित होते हैं ——

माँ का दूध छूटते ही देवी वाल्मीकि ने स्वयं दोनों बालक महर्षि के अर्पण कर दिये-
(उत्तररामचरित'-48)

बेन्नी वह स्टेशन पर आते ही बन्द हो जाती और गाड़ी चलते ही फिर अपना काम आरम्भ करती - - - - - - - -(चि० -की कथा०-113)

उसके मरते ही नवला ब्रह्मचारी का जन्म (राजकुमारी -31)

~~रघुबादल का सिर~~ पैरों के पास पहुँचते ही उसने दो गोते खाये - - -(बुदबुद का काँटा-3

प्रेम की गहराई को लखते ही उसकी आँखों में आँसू भर भर आये — -(छोटी बहू -137)

उसके आते ही उस विषय की ओर भी सहारा मिल गया - - -(मायापुरी-110)

जो कल सवेरा होते ही अस्तबल के हवाले कर दिये जायेंगे-- — (पु०क०-51)

घरनी सुनते ही दौड़ चली आती है (मालती का वंश ना०'-57)

विशेष —— तात्कालिक कृदन्त की पुनरुक्ति से सातत्य स्थिति का बोध होता है,

देखते ही देखते उसका पयोधि छलित अश्रुजल गिरने लगता है (गल्पकुसुम-1

यह कहते ही कहते रो पड़ी - - (-पु० या0-5)

(4) पूर्वकालिक कृदन्त

——————धातु रूपों में - के - कर-करके प्रत्ययों के योग से यह कृदन्त निष्पन्न होता है प्रायः पूर्वकालिक कृदन्त और मुख्य क्रिया का कर्ता उद्देश्य एक ही होता है जो कर्ता कारक में आता है ।

शून्य प्रत्यान्त -

—————— इसमें प्रत्ययों के बिना भी अर्थ स्पष्ट है-सैनिक सुम सेनापति को बुला का लाओ (~~-- मर्यादा 1916-169~~) (शकुन्तला ना0-34)

आखिर ईर्ष्या ने बुड्ढे बादशाह को ला फंसाया (भारतदर्पण-43)

सिल धो ले तो आओ (मर्यादा -1916-169)

पिछवार विचार देखिये (महाभारत ना0-11)

प्रत्यांत -

इनमें प्रत्ययों के योग द्वारा अर्थ बोध कराया गया है-इसी में चलके देखूं (नागानंद-32)

आपने यज्ञ में न्योता देकर बुलाया था (महावीर चरित -10)

सबको आग लगाकर अपने घर को सिधारा । प्रथम ब्राह्मण भोजन का प्रबंध करके आओ ——————(गौतम बुद्ध -66)

योगेश्वर को कंठ की ध्वनि सुनकर उमा घबरा अचेत कर उठ बैठी ——————(उमा-146)

कोई इन से मिल कर बातें नहीं कर सकता ————(पू0 ह0-39)

इसके बाद मौका देखकर उन दोनों को मार डालियो- - -(तारा-89)

वु मुंह फिर छिल कर रह गया- - - -(अब0 वृ0-149)

वह शान से फिटन पर बैठ कर निकलना चाहते हैं - - -(प्रेमाश्रय-14)

दाँतो से डबक डबक के खा डालता है (बुमदार ना 0 -41)

कहीं कहीं पर पूर्वकालिक कृदन्त का संबंध कर्ता कारक को छोड़कर अन्य कारकों से भी दिखाई पड़ता है —

मुझे अज्ञात भारतवासी पाकर विज्ञान ने क्या-क्या चमत्कार दिखाया (सर0 (1904-8)

नाना प्रकार के राजनैतिक संघर्षों में पड़कर उन्हें बल सम्पन्न होना पड़ा (रमाबाई -पृ01)

पकड़ लाकर सिंहासन पर बैठा दिया है (चंद्रधर -11)

जब धातुओं की द्विरुक्ति के बाद पूर्वकालिक प्रत्यय लगाया जाता है तो तो इससे प्रत्येकता, पौनः पुन्यः, क्रम,अतिशयता , क्रम आदि अर्थों में का बोध होता है । कृदन्त प्रकरण में इनका विस्तृत विवेचन किया जा चुका है - देखिए (कृदन्तवाचक - द्विरुक्ति कृदन्त पूर्वकालिक कृदन्त -अ - 2- ब - 1 -(ब) ( )

कृदन्तों के संबंध में यह निर्विवाद है कि ये लिंग, वचन निरपेक्ष निर्विशेष होते हैं । हिन्दी का कृदन्त विधान क्रिया के काल, अर्थ और विस्तार की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। हमारे विवेच्य युग में भी क्रिया के विस्तार में कृदन्त प्रयोग निःसंकोच रूप से किया गया है ।

3-5-ग क्रिया के काल रूप और प्रयोग

व्याकरणिक दृष्टि से हिंदी क्रिया विकारणी है अर्थात् उसके विधान में लिंग वचन पुरुष काल अर्थ और वाच्य का सक्रिय योग होता है । इसी प्रकार इस आधार पर द्विवेदी युगीन क्रियाओं के काल रूपों का अध्ययन दो वर्गों में रखकर किया जाता है - - - -

(1) धातु से बने काल (तिङन्तीय काल)

(2) कृदन्त से बने काल (कृदन्तीय काल)

उपर्युक्त वर्गों में विभिन्न कालों का प्रयोग द्वारा पदक्रमीय दृष्टि से विवेचित करना ही लक्ष्य रहा है । यहाँ पर जो प्रयोग दिए गये हैं उनमें वाच्य , काल, अर्थ के साथ ही साथ लिंग, पुरुष और वचन को भी दिखाने का प्रयत्न किया गया है

3-5-ग-1 -कर्तृवाच्य -

3-5-ग-1-1 -धातु से बने काल -(1) सम्भाव्य भविष्यत्

तिङन्तीय कालों के सम्भाव्य भविष्यत के तथा प्रत्यक्षविधि के कर्तृवाच्य में दोनों ही लिंगों के कालरूप समान होते हैं । अतः सम्भाव्य भविष्यत् के रूप

उ0पु0	मैं ऊँ	हम ए
म0पु0	तू ए	तुम ओ ए
अ0 पु0	वह ए	वे ए

हम लोग भी देवमंदिर के दर्शन करें (नागानंद -11)

तुम आओं - - - - - -(तुलसी दास ना0-9)

वे जहाँ पन्नाड को सलतनत पर भी हमला करें (प्र- राणाप्रताप-197)

मैं भी चलूं (चाँद बीबी -111)

भगवान ऐसे सास ससुर किसी को न दें (कुणकुमार -16)

आप प्रसन्नता पूर्वक पया न करें (स्वामि भक्ति -14)

विशिष्ट -

बोलियों के प्रभावस्वरूप क्रिया में वर्तनी संबंधी विभेदता और कहीं कहीं सामान्य भविष्यत के क्रिया रूपों में भी उन्हीं के अनुसार रूप मिलता है जिनमें 'ए' के स्थान पर 'े' तथा 'ऊँ' ओ के स्थान पर 'ए ऊँ' अउ की विशेष उल्लेखनीय है

उ0पु0	ए ऊँ	एँ
म0पु0	े	ओड, अउ एओ, ओ
अ0पु0	े	ें

प्रयोग -

हम उसी ओर चलें (महावीर चरित-69)

देखें हम तुम्हारे मुख से मिलाप करें (मुद्रा0 वि0 -15)

कोई कसम या नहीं चलता कि वे कुछ कर सकें (राजकुमारी-40)

केवल जो दो सौ दासियां रहें (संयोगिताहरण -41)

शायद आप बार बार मौती लगे (वि0 पट्टी 0323)

आप लिख देवें --- (कृष्णकान्त का दानपत्र-4)

सारे घर का नीलाम कर देवो (श्रीमती मंजरी-77)

साहब जल्दी कर देवु (,,-78)

कोई भूला भटका आ जावे (सु०वि०-150)

हम उन्हें यह बात क्यों कर समझावें(राजकुमारी- 140)

इस बार को विपत्ति से तु बचावे(बि०कसौ०-235)

कहो तो हम सुनावें (मीराबाई-51)

तू घबराव मत (माधव नल काम कन्दला-27)

तू घबरावे मत (सु०वि०-25)

तू गाड़ी भोजने के लिए जावे (भानो बसन्त ना० 61)

(2) सामान्य भविष्यत्

	पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन	स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
उ०पु०	ऊँगा	एंगे	ऊँगी	गी
म०पु०	एगा	ओगे, ओंगे	एगी	एंगी, ओंगी
अ०पु०	एगा	गे	ओगी	एंगी

प्रयोग:-

वे भी यमपुर जावेंगे (बनवीर ना०-65)

सरला अप्रसन्न होगी (मल्लिका-38)

वे ठीकरें क्या करेंगी (मीराबाई-55)

हम तुमसे आगे जावेंगी(राजरिचर्ड- द्वितीय-39)

आप जरूर खुश होंगे(पी०ह०-2)

तुम अपने इस अधम नीच और पापी पति को क्षमा नहीं करोगी

([illegible]-10)

मैं अपने प्राण होम दूंगी (दुर्गावती-117)

मैं आप की आज्ञा का पालन अवश्य करूंगा (सतीचिन्ता-75)

हम क्या चूड़ियाँ पहिनेंगी-- (रणबांकुरा चौ०-83)

तू पागल हो जायगी- (टा०का०बु०-12)

आप इसका नेतृत्व ग्रहण करेंगी(1652/14 पद्मसिंह शर्मा जी)

ऐसा करने से तुम इस लोक और परलोक में निन्दा के भाजन होगे
(महाभारत ना0-68)

तू मुझे क्या मारेगा?)(वि0कसौ0-256)

राम हाथ नहीं मांगे गा(र0भा0पु0-483)

विशिष्ट--

क्रिया के सम्भाव्य भविष्यत् रूप के समान हो ऐकार और औकार वाले रूप के बाद हो, इनके स्थान पर य के आदेश से बने रूप के बाद गा, गे गो गीं प्रत्ययों का योग किया गया है।

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	ऊँगा	ऐंगे	ऊँगी	ऐंगो
म0पु0	ऐगा	ओगे, ऐंगे	ऐगो	ओगी
अ0पु0	ऐगा	ऐंगे	ऐगो	ऐंगो

प्रयोगः-

विपत्ति को कब तक सहोगे(धनुष यज्ञ ना-5)

उसे वे आगामी पृष्ठों में जान लेंगे(वि0कसौ0-401)

मैं लौटा देऊँगा (वेनिस का व्या0-5)

तू करैगो (मु0 वि0-70)

आप मुँह छिपाते फिरेंगे(महाभारत ना0-44)

हम देलैंगे --- (,, -80)

हम करैंगो- ------(,, -44)

वे अवश्य ही देलैंगो (,, -69)

तू नहीं मारैगा (वि0कसौ0-256)

परमेश्वर मेरी अवश्य सुनैगा(,,-257)

मनोरमा अब तुम्हें नहीं मिलैगो(वि0कसौ0-284)

'य' के आदेश से बने

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	यूगा	यैंगे		
म0पु0	येगा, यैगा		येगो	
अ0पु0	येगा, यैगा	येंगे, यैंगे	यैगो, येगो	यैंगो

प्रयोगः-

वह कहाँ तक लोक लाज बचावैगी(सु0वि0-71)

वह हजार बातें बनावैगो(सु0वि0-74)

तू सजा न दिला देगा(राजकुमारी-116)

वे काम आवैंगी---(,, -42)

वह चाण्डाल प्राण दण्ड हो पावैगा(कृष्णार्जुनयुद्ध-23)

वह मनोरमा को लावैगा--(वि0कसौ0-285)

तूं मेरे साथ चल आज जावैगा(,, -270)

तू फौज चढ़ा लावैगो (,, -268)

हम जकर पकड़ पावैंगे (,, -401)

वह जरूर आवैगो (मानो वसन्त ना0-56)

वह किसको बुलावैगा(,, -56)

क्या वे अकेले आदमियों के लाख फौज देवैंगो(मानो वसन्त-64)

मैं सरितापुर नहीं जाऊँगा (,, -44)

:- ब्रज भाषा के प्रभाव वश सामान्य भविष्यत के कुछ रूप उस बोली के भी हैं। यह बहुत ही थोड़े हैं। अतः उनका मात्र प्रयोग ही दिखाना समुचित होगा—

मैं सटर पटर को इनाम न लेहौं, घोड़ा लेहौं(चनुभायब ना0-36)

मैं अपने लाला को न देखहू य हौं (,,-42)

वह एक न मानेगो ---------- ,,-42)

मैं दर्शन न करौंगो------- (,,-43)

मैं पहुंचा दौंगा (तुलसीदास-130)

मैं दलाले नहीं लौंगा(,,-130)

मैं ले चलौंगा(,,'129)

तुम्हारा काम मैं करा द्यौंगा,,129)

क्या करेंगी दो चार दिन में मुझे लेते चले आवेंगी(तुलसीदास-10)

:- सामान्य भविष्यत् काल की क्रियाओं में हो का के प्रयोग प्रकृति और प्रत्यय के बीच में हुआ है वह भी विवेचनीय है—

सो तो ही होगो(मल्लिका-65)

तुम छोरछोड़ , बस बस हमारे राज में मुंह न दिखलाना और परदेश में आपस में मेल न करना (राजा रिचर्ड द्वितीय-15)

तू कभी घर न आना --- (,, -16)

आदरार्थः-

विमान राज यहाँ आइये (उ०राम०चरित्र ना०-78)

आप इस रूप को धारण न करिये (वे० नगर का स्या०-4)

आइए, भीतर आइए और आज से फिर कभी दृढ़ता करने का साहस न दिखलाइएगा- -(मरिसका-108)

आप साधारण न जानिए गा (महाभारत ना०- 43)

आप उस पर अप्रसन्न न हुजियेगा (रा०र०-112)

कल आप इन्हें अवश्य लेते आइयेगा (कल अवश्य पधारिए गा (रामोभवित-31)

विशिष्टः-

उपर्युक्त सामान्य रूपों के साथ ही साथ इस युग में 'ना' के स्थान पर 'ओ' और 'इयो' के योग से बने रूप प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं जो इस युग की अपनी विशेषता कही जा सकती है। ये रूप पछाहीं प्रभाव के कारण हैं जो विशेष कर दिल्ली और उसके आस पास के क्षेत्रों में प्रचुरता से व्यवहृत होते हैं —

तू वहाँ काम कीजे (शकुन्तला ना०-46)

महाशय कष्ट न कीजिए (सर०-1903-316)

रामदास बनिया हो तो कह दीजो (संसार-28)

तू तो बुढ़ापा बचाने के लिए दूसरा खसम कर लीजियो (जु०सै०-61)

यदि कोई तेरा नाम पूछे तो सरला बताइयो (चन्द्रकान्ता-33)

तू वहाँ सोइयो- - (राजकुमारी-61)

तू अपनी जुबान से किसी से भी इसका हाल न कहियो (भूतनाथ-58)

आप किसी प्रकार का संदेह न कीजे (माधवानल का मकन्दला-9)
प्राणनाथ प्राणदान दीजे (,, -22)

तू जरा सोच समझ कर तब कुछ करियो (तारा-52)

तू भी मुनियों का वेश बना कर यहाँ आ जाइयो (कु०व०-124)

नारायण को आराधना कीजिये(मीराबाई-54)

इसका सौना बाजार में खरीद लीजियाँ (दुर्गावती-28)

3-5-ग अ- 2- कृदन्त

क- वर्तमान कालिक कृदन्त से बने काल

(1) सामान्य संकेतार्थ — कर्तरि प्रयोग—

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	ता	ते	ती	तीं
म0पु0	ता	ते	ती	तीं
अ0पु0	ता	ते	ती	तीं

प्रयोग:-

मुझे इतना ही कहना है कि तू क्षमा करने में धार न लाता जो राम तेरा चोर न होता- - (महावीर चरित्र -मा532)

यदि कष्ट मिलता तो वे सदय होते(रजनी-49)

इस समय कोई शास्त्र ज्ञानी आ जाता तो उसके साथ शास्त्र संबंधी वाद विवाद भी होने लगता(छोटे बहू-76)

मनसुखा बालक न होता तो स्त्रियाँ उसकी बातों से बुरा मान जातीं (छोटे बहू-70)

यदि इस देह छोड़ने के मैं पहले ही संसार से विदा कर देता तो(दुर्गावती-1

यदि हम मर जाते तो इस दुःख से छुट्टी पा लेते (हा0कृ0का0कु0-430)

क्या ही अच्छा होता यदि तू भी अरुण कुमार के समान किसी पुरुष को पत्नी होती—(रत्नांकुरा -श्री0-50)

जब तुम मुझे दिलों जान से चाहती होती।मैं भी तुम्हारे निष्कपट प्रेम पर न्यौछावर हो जाता (रत्नांकुरा श्री0-53)

अगर आज तक तुम न होते तो संभव है कि मैं आज इतने बड़े सत्य का मालिक न होता(रत्नांकुरा श्री0-91)

हम अब संसार में ऐसा कोई पारितोषिक तुम्हारे लिए नहीं ठीक कर सकते कि जो तुम्हारे इतने उपकारों के बराबर का हो(मस्तिष्क-72)

(2) सामान्य वर्तमान काल:-

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	ता हूँ	ते हैं,	ती हूँ	ती हैं
म0पु0	ता है	ते हो, ते हैं -	ती हैं	ती हो, ती हैं
अ0पु0	ता है	ते हैं	आती है	ती हैं

राजा बैठता है (शकुन्तला ना0- 62)

मैं अपनी बहन मनोरमा से मिलना चाहती हूँ(चन्द्रकान्ता -114)

आप ऐसा समझते हैं (मल्लिका-4)

वे बुलाते हैं (नागानंद-61)

जहाँ तक हम जानते हैं (सर01904-110)

हम तुम्हारे प्रणाम करती हैं (महावीरचरित्र ना-5)

आप डरती हैं (मल्लिका-7)

तुम इन लाजेल फलों पर हाथ फेरते हो(सर01904-119)

तू मुझे किया चाहता है (या0ता -37)

तुम सब मुझे क्या दुःख सुनाती हो(सतीचिन्ता-71)

हमको आती है (राववहादुर-95)

आत्माएँ सूर्यमंडल को भेद कर जाती हैं (दुर्गावती -135)

तू हीरालाल,अभयचन्द्र और रामदास को जानती है(स्वर्णलोचतित-129)

विशिष्ट:-

कहीं कहीं पछाहीं बोलियों के प्रभाव वश लेखकों ने सामान्य वर्तमान काल के लिए क्रिया के सामान्य भविष्यत रूप में रिदति दर्शक सहकारी क्रिया 'होना' के वर्तमान कालीन रूप से बने रूप को प्रयुक्त किया है। ये रूप दोनों ही लिंगों में समान हैं अतः एक ही साथ रूप दिये जा रहे हैं यथा——

रूप

उ0पु0	ऊँ, हूँ, उँ, हूँ	एँ हैं
म0पु0	ए है	ऊ हो, ओ हो, ओं हो
अ0पु0	ए है, रे है	एँ हैं

प्रयोग:-

द्वार पर कौन हेरे है (धनुर्भयज्ञ ना0-40)

मुझे डर लगे हैं, मेरा माथा ठनके है(तुलसीदास-10)

• प्रायः कहीं सहायक क्रिया के बिना ही वर्तमान कालिक कृदन्त सामान्य वर्तमान काल के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । ऐसा प्रायः निषेधात्मक वाक्यों में ही हुआ है । क्योंकि निषेधात्मक वाक्यों में प्रायः सहकारी क्रिया से रहित क्रिया ही प्रयोग में आती है ,—

आप उसको पसन्द नहीं करते (महाभारत भा0-10)

मेरी समझ में ही नहीं आता (,, -10)

उनका मन नहीं लगता (,, -48)

• इस काल के कुछ रूपों में मूल क्रिया तथा उसके प्रत्यय के बीच में 'व' का आगम भी उसी शैली के समान है जैसा कि भविष्यत् काल के विशिष्ट में दिखाया जा चुका है, इन प्रयोगों से भाषा में पण्डिताऊपन अथवा पूर्वीपन का आभास होता है । साथ ही प्रत्ययों के पूर्व 'व' का आदेश होने से इन रूपों में प्रामाणिकता भी आ गई है । ऐसे प्रयोगों में एक बात और उल्लेखनीय है कि यह उन्हीं रूपों में अधिक हैं जिनके अन्त में स्वर है । साथ ही ब्रज भाषा के प्रभाववश ओकार' की प्रवृत्ति भी दर्शनीय है । कुछ ही रूप उपलब्ध होने के कारण इन्हें एकही साथ प्रयोग में दिखाना अपेक्षित होगा—

मैं लगन का पूरा काम कर के आवता हूँ (श्रीमती मंजरी-33)

बिटुआ आवती है - - - - (श्रीमती मंजरी-70)

कभी और उधार चल आवते हैं (,,-75)

तुम सब रोवते हो - - - -(,,-90)

डर लगती है, जो मैं ऐसा ही आवती है(श्रीमती मंजरी-94)

मैं सब बात सोची कर के आवत हूँ (,,-110)

मैना भी रोज-रोज पत भेजती है -(,,-109)

रोजहू चन्दन बीबी रंडी के घर जाती है (,,-110)

हम गैल गैल डोलत फिरतु हैं (अनुभाग भा0-41)

(3) अपूर्ण - भूतकाल

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	ता था ते थे	ती थी,	ती थीं
म0पु0	ता था ते थे	ती थी	ती थी
अ0पु0	ता था ते थे	ती थी	ती थीं

प्रयोगः-

मैं तुमसे कुछ पूछा चाहता था (चन्द्रकान्ता-11)

स्त्रियाँ जल लेने के लिए आतीं (नासिकेत-55)

मैं जानती थी - -(रजनी-27)

क्या तू अपने पुराने मालिक के यहाँ गाड़ी चलाता था। (चा0का0भु0-142

तुम मेरी भी बड़ी बड़ी तारीफ करते थे - - - - - (,, -184)

उस समय तुम पढ़ना लिखना खूब जानती थीं - -(चा0का0भु0-45)

हम कभी नहीं भेजते थे न भेजते -(रानी केतकी की कहानी-22)

हम इतने दिन जानते थे -(आनंद मठ-15)

तू गुड़ियों से खेला करती थी तब भी बहुत हठ करती थी

(रणबाँकुरा चौहान-50)

आप छिपी निगाह से मेरी तरफ देखते थे(,, - 52)

वह बिना मेरी आज्ञा के कोई काम नहीं करता था (महाभारत-

वे अपने पास धन रखते थे - - - -(गौतम बुध्द- 108)

वह रोती थी - - - - - - - - - -(आँख की किरकिरी-131)

विशिष्ट—

- - - - - - इस काल में भी ब्रज के प्रभाव वश रूपों को ओकार करने की प्रवृति व्यंजन तथा वर्तमान कालिक कृदन्त ता, ते, ती, के स्थान पर स्वर का आगम भी कहीं कहीं मिलता है यथा——

सभी पड़ोसी इनकी हठ की बुराई करें थे और तुम्हें कहें थे

(तुलसीदास-10)

इतनी तो स तब भी तुम नहीं चिढ़ी थी - (,,- 112)

मेरी माता नपुंसक बताया करे थीं - - - - .(माधवानलकाम0-19)

तू सहाय करे थी - - - - - - - - - - - - -(,, -142)

मैं अब जोधपुर जाता था-(श्री मती मंजरी-80)

मैं तुम्हारी राह देखते थे(,, -33)

(4) सम्भाव्य वर्तमान काल

उ०पु०	ता होऊं	ते हों	ती होऊं	ती हों
म०पु०	ता हो	ते हो	ती हो	ती हों ती हो
अ०पु०	ता हो	ते हों	ती हो	ती हों

प्रयोग:-

सम्भवतः तुम ठीक कहते हो(महावीर चरित्र ना0-3)

पितृव्य को सदा अनुकूल क्यों न रहते हो बड़े बड़े युद्ध और राजनीति में प्रवीण धनुर्धारी वीर देश के मस्तक को सदा ही ऊँचा क्यों न रखते हो- - --(महाभारत ना0-24)

वे कहीं जागते न हों - - (,, -33)

हम उसको अपने बाप दादे का राज्य समझते हों(महाभारत ना0-40)

कदाचित् वह पूजा करता हो (मीराबाई-76)

कहीं तुम अपने मधुर कंठ से इस मंदिर को पूर्ण न कर रही हो (मीराबाई- 83)

आप शायद जानती हो- --(रजिया बेगम -64)

तू आखिरी तौर पर अमर सिंह के साथ कैसा ही अच्छा बर्ताव क्यों न करता हो- --(तारा-98)

हजूर हो सकता है मैं ही वह बच्चा होऊँ जो ईमानदार भी हो और सलामत से किसी प्रकार का सरोकार भी न रखता होऊँ(तारा-98)

इस पोशाक में कहीं हम राजकुमार न प्रतीत होती हों अन्यथा एक बखेड़ा- - -(रणबांकुरा चौहान- 103)

हो सकती है तू उनको रोटियाँ बेच कर शराब पी डालती हो (दा0क0कु0- 233)

कदाचित् उसी के वियोग में मल्लिका व्याकुल न हो रही हो(मल्लिका-56)

कदाचित् इस स्थान से अपरिचित होने के कारण मैं यहाँ से लौट जाती होऊँ- - -(चंगपरीजनी-14)

(5) संदिग्ध वर्तमान काल

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	ता हूंगा	ते होंगे	ती हूंगी	ती होंगी
म०पु०	ता होगा	ते होंगे	ती होगी	ती होगी, होंगी
अ०पु०	ता होगा	ते होंगे	ती होगी	ती होंगी

प्रयोगः-

तब तू गाना भी अच्छा गाता होगा(माधवानल काम-16)

शायद आप मेरी बहन को भी जानते होंगे(रौशनआरा-17)

आप पुत्र का संवाद पाती होंगी(कृष्णकान्त का दान-126)

तुम अवश्य किसी बड़ी शक्ति को रखते होगे(मणिलता देवी-74)

तू उसे खूब याद करती तो होगी(टा०का०कु०-77)

हम भी मामी के बारा रथ की बातों को सुनना चाहते होंगे)
(टा०का०कु०-184)

उस समय मैं एक सभ्य की भांति अपनी कोठरी में सोता हूंगा
(टा०का०कु०-351)

यदि मैं खुदा पर यकीन करती हूंगी तो तुम्हारी बातों पर अवश्य यकीन करूंगी- - (रजियाबेगम -91)

तुम तारा के दो टुकड़े कर के एक - एक टुकड़े को उन दोनों को बांटना चाहती होगी (तारा-70)

इसकी क्या उम्मीद कि हम उस समय तक-सोते होंगे
(रजियाबेगम-99)

ग्वालिन आती होगी(संसार-82)

सामन्त लोग मेरी बाट देख ते होंगे(रणबांकुरा चौ० -84)

टेपू पंडित आता होगा-- (राजा शिव-110)

विलायत की औरतें बन्दूक चलाती होंगी(मानसरोवर-2-30)

ब- भूतकालिक कृदन्तों से बने काल

(1) सामान्य भूतकाल

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	आ	ए	ई	ई
म०पु०	आ	ए ए	ई	ई
अ०पु०	आ	ए	ई	ई

प्रयोगः-

निमाई जाते हो जाते बोले(आन- द-म-ठ- 33)

आप कुछ भूल गईं (मल्लिका -15)

ये सब बातें सलामत से कह सुनाई (तारा-35)

तुम मेरे ऊपर आ खिक क्या समझ कर हो गए(तारा-76)

हम बहुत पढ़ चुके (राजारिचर्ड- 88)

वह अत्यन्त हर्षित हुआ (मल्लिकादेवी-22)

वे वजीर की बाईं ओर बैठे (बंगसरोजनी-61)

गधाधर सिंह वरोग के पास गया (,,-25)

मोहिनी दौड़ी हुई यहाँ आ पहुँची(भूतनाथ-77)

तू अपने अधम शरीर के सहित यहाँ क्यों आया(गौ0बु0-65)

आप का तात्पर्य मैं समझा- (गौ0बु0-25)

भाई विदुर, आप बड़े अवसर पर आए(महाभारत-21)

मैं न रोई - - (श्री मती मंजरी-21)

तू यहाँ तक फरियाद ले कर आई (श्री मती मंजरी-65)

विशिष्ट :-

यहाँ पछाही और पूर्वी बोलियों में विशेष कर ब्रज और अवधी के कुछ प्रयोग किये गये हैं।

पुल्लिंग मध्यपुरुष तथा अन्य पुरुष में अवधी के निम्नरूप उल्लेखनीय हैं —

मैं तो कहती हो वह मेरा नौकर कहिस (संसार-65)

लज्जा शरम एक दम से पानी में बहा दीस(-,, -63)

राजा जो तो हमको मार हो डारिन का हुकुम दीन(मीराबाई-46)

हमने किन्हीं पे गोसइयाँ हमको दिहेन(महाभारत भा0-27)

राम भरोसे जासे पूछिस - - -(,, -25)

आप ने मेरे लाला को आशीष माहिन दीन्हे(हनुमानचरित्र भा0-45)

ब्रज —ब्रज के ओकार की प्रवृत्ति उत्तम और अन्य पुरुष एक वचन में विशेष रूप से चलती है —

मैं दर्शन करि चुक्यो(हनुमानचरित्र भा-45)

मेरा क्या जन्म-कर्म थोड़े लेगयो(महाभारत ना0-54)

मात को तो चार बरस (वर्गवास किये है गयो-(श्रीमती मंजरी-33)

उधर चन्द में औरो को रंगरेजो पढ़ा कर नाश कर दियो(,,-30)

श्री सेठ जो मैं आयो- --(श्री मती मंजरी-32)

वह गयो (,, -32)

वह वर्ष हो गयो (,, -76)

कहो- कहो कोर्ट ने क्या कह्यो(,, -76)

:- कर धातु का भूतकालिक रूप करा , करो में हुआ है । यह भी बोलियों के प्रभाव वश हो हुआ है —

राजा द्वार पर आ परशुराम जी को मिल प्रणाम कर दर्बार में लाय सिंहासन पर बैठार पूजा करी- - (धनुष यज्ञ-ना-52)

तुमने क्या करा- - - (माधवानल काम0-53)

तू ने मेरा सब मनोकामना पूर्णकरो(माधवानल काम-73)

(2) आसन्न भूत—

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	आ हूँ	ए हैं	ई हूँ	ई हैं
म0पु0	आ है	ए हो, हैं	ई है	ई हो
अ0पु0	आ है	ए हैं	ई है	ई हैं

प्रयोग:-

हम बैठे हैं - - -(मल्लिका-18)

वह अपनी मौत से नहीं मरा है(रौशन आरा-15)

मैं खड़ो हूँ -- ---व(माधवानल काम0-66)

अब वे भी चरणों के जोग हुई हैं(मल्लिका-54)

ग्वाला और सेठ सभी वस्तु बांध कर मेरे पीछे पड़े हैं(रायबहादुर-3)

तुम मेरे साथ विवाह की बात करने आये हो(रजनी-73)

आप यहाँ क्यों आए हैं - (मल्लिका-44)

तुमकब से कु मनुष्य भई हो(चाँदनी और अंधेरा-73)

अब तू युवापर आया है (रणबांकुरा चौ0-47)

तू उनके पास कई साल तक रह चुका है (,,-129)

वे सब लोग ऊपर बुर्ज पर चढ़े थे(सूर्यग्रहण-309)

पर हम लोग तपस्या करने के लिए निकली थीं(सूर्यग्रहण-295)

कल रात्रि में तुम यहाँ नहीं सोई थीं(विलासिनी-44)

आप सरला से इन्हीं को मिलने गए थे(मल्लिका-5)

देश यात्रा से एक शिष्य आया था(मल्लिका-57)

हम यह पहले ही सुने थे(महावीर चरित्र ना0-6)

मैं इसे नागौर से लाया था (रणबाँकुरा चौ0-120)

मैं इतने दिनों तक जान कर भी ~~[illegible]~~ अनजान बनी थी

(प्रतापसिंह- 195)

तू पकी पकाई मछली खा ली थी(ब्रजभारती-33)

तू अपनी इच्छा से आए थे(मानसरोवर-57)

विशिष्ट:-

---"पछाहीं बोलियों के भूतकालिक कृदन्तीय प्रत्यय 'इन' से निर्मित रूप का, जो वस्तुतः प्राचीन खड़ी बोली की एक विशिष्टता है किन्हीं-किन्हीं लेखकों ने प्रयोग किया है जैसे ——

हम अपने हाथ सौं पकड़ा पकड़िन रहे और कन्हानो जी के ऊपर मढ़ी डारिन रहे -- (मीराबाई- 45)

अपनी माँ के पास आदमी भेजिन था(संसार-74)

उस दिन अघोर डालिन था(संसार-10)

जिसमें कहे पाई बाँध सोना हतो(महाभारत ना0-54)

: ब्रज के ओकार का प्रभाव सहायक और काल रूप दोनों में ही हुआ है——

रोकड़चन्द ने दो लाख रुपया दियो हो(श्रीमती मंजरी-80)

मैं परसों गाड़ी पर सवार हुओ थो(,,-76)

जो रोकड़ चन्द यहाँ आयो थो (,,-82)

जोधाबाई ने दो हजार रुपया मँगायो थो ,, -110)

इन्हों ने दिई थो (भैंस का ० स्वा0-71)

(4) संदिग्ध भूतकाल

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	हूँगा	होंगे	हूँगी	होंगी
म0पु0	होगा	होगे होंगे	होगी	होंगी
अ0पु0	होगा	होंगे	होगी	होंगी

प्रयोग-

वे हवा खाने गए होंगे , चाचा तो अभी कचैहरी से आये हो न होंगे, लक्ष्मण तो खेलने चला गया होगा(मानोवसन्त मा0-41)
तू यही समझतारहा कि मैं उन दोनों को मार डालो हूँगो(रजियाबेगम।
इससे उन्हों ने यही समझा कि उन दोनों लड़कियों को मार डालो होंगो --- (रंग महल में हलचल-78)
यहाँ से निकल कर तू अपनो फौज में जा मिला होगा(मल्लिका-69)
हमें स्मरण नहीं कि हम तुम्हें कहाँ और किस अवस्था में देखे होंगे -----(मल्लिका देवी-78)
तुम बहुत खुबसूरत होगे- -(रोशनआरा-91)
उस समय तुम लगभग 40 वर्ष के बूढ़े होगो(रोशनआरा-3)
मैं उसे कहाँ गाड़ दिया हूँगा(चाँदनी और अँधेरा- 15)
आप मेरे मामले को खबर लाये होंगे (,, -57)
तू घर को और भाग चोनें चुराई होगो(टा0का0कु0-283)
आज प्रभा आई होगो (विवाह कुसुम -63)
अब सब औरतें बहादुर रही होगो(मानसरोवर -2 -50)

(5) पूर्ण संकेतार्थ कालः-

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	होता	होते	होतो	होतीं
म0पु0	होता	होते	होतो	होतीं
अ0पु0	होता	होते	होतो	होतीं

प्रयोगः-

बसन्तो की माता यदि कभी कुन्दन पुर के बाहर गई होतो तो उसने देखा होता- - -(संसार-16)
घर तू रोई होतो तो मैं प्रसन्न होतो(राजारिचर्ड-73)
राजा भी बहुते लोगों को छूट दिया होता तो इस समय प्रजा धर्म और राजभक्ति का फूल फूलतो(राजारिचर्ड-74)
हम बर्फ के बने राजा के खिलोने हुए होते तो , बोलिंगब्रोक को सूरत के सामने खड़े होते (राजारिचर्ड-87)

मैं साद। न का होता तो इस पर हस्ताक्षर कैसे होता (राजारियर्ड 103)

हम यदि ऐसा न करना चाहो होतीं तो क्यों तुमसे भेंट करतीं (मल्लिका-54)

वे उसी समय दुराचारी यवनों के आखेट हो गए होते (मल्लिका-71)

अगर खुदा के फजल से तू हमको न मिला होता तो उस रोज मोतामहल में हम लोगों का खात्मा तुगरल कर ही चुका था (मल्लिका-66)

तुम अगर मुझे प्यार किए होती तो जरूर जग सकती हो (टा0का0कु0 116)

मैं इसको मालकिन रही होती तो मारे कोड़ों के प्रहार से इसका चमड़ा उधेड़ लेती -- (टा0का0कु0-284)

आप पहले ही अपना मन्तव्य प्रकट कर चुके होते तो अभी तक भोजन कर चुके होते ----(राजाधिक-105)

तुम उस समय उसको विहारपुर से जाने न दिये होते तो ऐसा न होता---(मानोवस्न्त ना0-118)

अगर वह बिना पूछे गया हो होता तो इतना होता क्यों? (मानोवस्न्त नाटक-22)

जाते समय वे यही सोच लो होते तो बतलाने का कारण क्यों होता-------(मानोवस्न्त ना0-21)

कोई उसको सहायता ही नहीं करता नहीं तो अब तक वह भी वहीं काम कर चुका होता। जो हम लोगों ने वक्षिण में किया है (सूर्यग्रहण-9)

(6) सम्भाव्य भूतकाल

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम, आप	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोग:-

इस कारण यह भी हो सकता है कि इसके असल मंजिल को आज तक कोई न पाया हो(रजनी-80)

कदाचित आप डरे हों ---(मल्लिका-10)

सम्भव है वह सहज में उसके प्रेम में फँस गई हो(वैवाहिक अत्या0-38)

सम्भव है वह सहज में उसके प्रेम में फँस गई हो(वैवाहिक अत्या-38)
कहीं वह आघात न कर ली हो(मानोवसन्त ना-117)
मैंने यही सोचा तुम शायद कचहरी से आ गए हो(मानोवसन्त-6)
सम्भवतः हम न भेजें हों- - (मानवसन्त ना0-14)
कहीं वे साथ ही चले गए हों(,,   -116)
अब तक गंगा की सारी मछलियाँ एकत्र हो गई हों(रणबांकुरा चो14)
कहीं तू उस कुम को छीन कर अपने में लगा न लो(,,- 61)
कहीं मैं ही न वहाँ गया होऊँ - - (तारा-75)
लगता है तू उस समय साक्षात शैतान के पंजे में फँसी हो

(टा0का0कु0-449)

या ऐसा भी हो सकता है कि हम उस समय अपने नजूमी
साहब का सबक बिल्कुल भूल गई हों - -(र0बेगम- 48)
यह तो तभी हो सकता है जब कभी मैं बेगम बनी होऊँ

(तारा-71)

हो सकता है तुम एक अच्छी खासी नीति विशारद पंडिता
बन गई हो - - (टा0का0कु0- 71)

<u>3-5-ग-क कर्मवाच्य</u>

<u>3-5-ग-क-1 धातु से बने काल-</u>

क्रिया के कर्मणि प्रयोग में कर्म उद्देश्य हो कर अप्रत्यय कर्ता कारक के रूप में आता है और सभी कालों में क्रिया का पुरुष, लिंग वचन उस कर्म के अनुसार होता है, यहाँ पर अब कर्मणि प्रयोग के आधार पर विभिन्न कालों का क्रमशः विवेचन किया जा रहा है —

(1) सम्भाव्य भविष्यत् काल

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	जाऊँ	जाय	जाऊँ	जाय
म0पु0	जाय	जाओ	जाय	जाओ
अ0पु0	जाय	जाय	जाय	जाय

प्रयोगः-

पांडव कुछ दिनों के लिए हटा दिये जाय- महाभारत ना0-21)
भीमसेन के दरबार में एक जासूस भेज दिया जाय(रणबांकुराचो05)
मैं स्वर्ग से भी निकाला जाऊँ —(राजा दिव -17)

आप से विनती है कि हम क्षमा को जाय(राजारिचर्ड-31)

मेरो हार्दिक इच्छा है कि तू मुझे पुत्र रूप दिलवा दिया जाय (राजारिचर्ड-42)

हम नहीं जानते कि किस नाम से हम पुकारे जांय(,,-87) अतः

सलावत के जरिये से तू बेलाग क़त्ल व कर लो जाय(तारा-30)

बादशाह को हुकुम है कि तुम कैद कर लिए जाओ(तारा-50) है।

यदि तुम जातो गाड़ दो जाओ, आग में डाल दो जाओ(टा०का०कु०451)

मैं कुत्तों से नुचवा डालो जाउं तो भी उसका कोई विचार न होगा (टा०का०कु०-450)

नगर बहुर बुलाई जायें -- (राजाशिवि-114)

तेतो उजाडू उजाड़ न की जाये -- (ऊषा अनिरुद्ध-88)

(2) सामान्य भविष्यत्

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ०पु०	जाऊंगा	जायें गे	जाऊंगी	जायगी
म०पु०	जायगा	जा ओगे	जायगी	जायगी
अ०पु०	जायगा	जायेंगे	जायेगी	जांयगी

प्रयोगः-

मैं अच्छी तरह पीटी जाऊंगी (राजाशिवि- 40)

वह ऊषा नाम से पुकारी जायगी(अनिरुद्ध -83)

वह हो पीसा जायगा (चंद्रकांता-172)

तुम बादशाह को बेगम बनाई जाओगी(मरियम-83)

तू बहुत जल्द अपने मक्कार मजुओ के पास पहुंचाई जायगी (र०बेगम- 47)

हम लोग नीलाम कर बेच दिये जायें गे(टा०का०कु०-395)

चुप रह नहीं तो तू पकड़ा जाय गा (-,, -46)

तुम मारे जाओ गे (राजा रिचर्ड -16)

मैं क्यों मारा जाऊंगा --(मीराबाई-46)

सारो सम्पदै दो जाय गो-(राजा रिचर्ड-24)

हमें विश्वास है कि हम यहाँ को सब तरह मान लो जायेगो(राजारि०60)

उस चाण्डालनो के बदले वे दूकयदर मारे जावेंगी(रणबांकुरा-93)

(3) प्रत्यक्ष तथा परोक्ष विधिकाल

प्रत्यक्ष विधि काल के रूप तो सम्भाव्य भविष्यत् के सामान हो है अतः उनको पुनरावृत्ति करना अपेक्षित नहीं है।

कर्मवाच्य में परोक्ष विधि काल के कोई भी उदाहरण नहीं मिल सके हैं। वैसे कर्मवाच्य में आवश्यक विधि के रूप भी हिन्दी में नहीं पाए जाते ।

3-5-ग-क-2 कृदन्त

क- वर्तमानकालिक कृदन्तः-

(1) सामान्य संकेतार्थकाल (वर्तमान कालिक कृदन्त)

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम आप	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोगः-

वह आगरे से मैं गाड़ा जाता है (रोशन आरा-16)

तुम बड़ी बेरहम के साथ बरबाद को जाती (र0बेगम-47)

मैं बैगैर कुछ दुनिया को लज्जत उठाए हो जहान
से झही कर दी जाती - - -(र0बेगम-47)

आज मैं न होता तो तू अवश्य पकड़ी जाती(टा0भा0कु0-65)

आँसू नहीं रोके जाते- - -(सोना-43)

यदि ऐसा होता तो हम किन्तु ठकुरानो के यहाँ क्यों
रखो जातीं- - -(अद्भुत पु0155)

अगर आप न लाए जाते(प्रतापसिंह-67)

अगर तू अलाउद्दीन को न दिखलाया (राजप्रताप-82)

तब तुम बुरे माने जाते — (,, -108)

रानो जो जोती होती तो मैं अब तक मारा जाता (मीराबाई-42)

उसको ब्यटाएं अब नहीं देखी जाते(मानसरोवर-7 भाग-2)

यह निष्ठुरता अब नहीं सही जाती(मानसरोवर-भाग7- 8)

हम शस्त्रों के सिरताज समझे जाते- - -(भीष्म पृ0-3)

सामान्य वर्तमान

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोगः-

मैं कहाँ पहुँचाई जा रही हूँ(र0बेगम-57)

मैं यहाँ से निकाला जाता हूँ(राजारिचर्ड-17)

हम इस रीति से आपत्ति में तुमको खिच जाते हैं(राजारिचर्ड95)

शायद ही वह कभी देखी जाती हो (दा0भ0कु0-302)

तू बोले , से पोटा जाता है (,, -443)

वह मजबूर कराया जाता है (,, - 451)

कुली स्त्रियाँ यों ही मारी जाती हैं (,, -539)

सब बड़े-बड़े काम उन्हीं की खिच जाते हैं(सूर्यग्रहण- 24)

तब तक तुम यहीं रखे जाते हो (,,- 74)

बुद्धि शुद्धि के परिपक्व होने से पहले ही हम ब्याह दी जाती हैं

(अब्दुल अपूर्व-51)

इसके बाद तू निकाली जाती है(राणाप्रताप-47)

काले ही तुम इस समय भुला दी जाती हो(राणाप्रताप-82)

संदिग्ध भूत का

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	मैं	हम	मैं	हम
म0पु0	तू	तुम	तू	तुम
अ0पु0	वह	वे	वह	वे

प्रयोगः-

तू वहाँ से भगा दी गई होगी(रणबाँकुरा-88)

तू उस समय रोक लिया गया होगा(,,- 93)

मैं चुन लिया गया हूँगा(वैवाहिक अत्या0-83)

इसी न्यायालय में तुम बाल हत्या की अभियुक्त बनाई
गई होगी -(वैवाहिक अत्या0-104)

हो सकता है उस समय तुम गवाही देने को बुलाए गए होगे(वैवाहिक अत्या-108
विरोध कर जब कि मैं उसके वहन करने को ला गई हूँगी, इन्कार कर
देती- - - (वैवाहिक अत्या-110)
किन्तु अवस्था के मालूम होते ही हम सब काम से अलग की गई होंगी(वैवाहिक अत्याचार-112)
निशानाथ उस पर लिटा दिया गया होगा(अद्भुत अपूर्व स्या0- 25)
हम अपने घर द्वारा से निकाले गए होंगे (,, -252)
क्यों कि वह बहकाई गई होगी , फुसलाई गई होगी(वैवाहिक अत्या0100)
कदाचित् वे दोनों वहीं मारे गए होंगे(रोशन आरा- 117)
राजा शिव की बहुत सी इधर उधर की बातें सुना दी गई होंगी(राजाशिव-21)

ख- भूतकालिक कृदन्त से बने काल

(1) सामान्य भूत

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	गया	गए	गई	गईं
म0पु0	गया	गए	गई	गईं
अ0पु0	गया	गए	गई	गईं

प्रयोग:-

हम लोग उसके कहने से मूर्ख ही ठहराए गए(माधानल काम12)
वह कागज पढ़ा गया - -(रोशन आरा-117)
वह फिर लड़ना को लड़ाई में लड़ी हुई मारी गई(राणाप्रताप-202)
तुम नीलामी करने के लिए आसाम भर में भेज दिए गए(द0का0कु0400)
एक दिन मैं बुलाई गई(वैवाहिक अत्या0- 113)
बाद पर जब तू देखा गया(,,)
उससे हम भी सूबों में चढ़ाई गई(द0 का0कु0 -46)
तत्पश्चात् मैं पर्ल नदी के पास किसी केलिकर के अड्डा बेच डाला
गया- - - - -(द0का0कु0-464)
वे एक काल कोठरी में कैद की गई(रा0बेगम-57)
आज से तू मेरी लड़की [illegible] गई ' माधव नीचनी-13)
तुम मेरे मेले में बाँध दो [illegible] (राजाशिव-73)

आसन्न भूत

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	गया हूँ	गए हैं	गई हूँ	गई हैं
म0पु0	गया है	गए हो	गई है	गई हो
अ0पु0	गया है	गए हैं	गई है	गई हैं

प्रयोगः-

कृष्ण मारे गए हैं(महावीर चरित ना0 -10)

धर्म देश के लिए बनाया गया है (कोमली मंजरी-116)

जिससे मैं अब सरदार बनाया गया हूँ(राजारिचर्ड- 4)

अग्नि दी गई है , , , --- (,, -50)

हम उसके प्रतिनिधि पद से उतारे गए हैं(राजारिचर्ड- 6)

वह लिखी जा चुकी है - -(रा0का0कु0- 26)

मैं पकड़ी गई हूँ - - -(,, -103)

हम एक के हाथ बेची गई हैं (,, -846)

तुम उस बुलवाने और गाँवों के बारे में कैद किए गए हो(र0वेनस-66)

तू किसी खास गरज से चौका दे कर लायी गई है(रोशन आरा- -11)

हाय प्रिये?कहाँ गाड़ा गया है (रोशनआरा-13)

तुम दुष्टों के हाथ से कितनी ही बार सताई जा चुकी हो(मौ0न0 6)

ये सब पकड़ी जा कर यहाँ लाई गई हैं(मल्लिका ना0-10)

पूर्ण भूत काल

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
उ0पु0	गया था	गए थे	गई थी	गई थीं
म0पु0	गया था	गए थे	गई थी	गई थीं
अ0पु0	गया था	गए थे	गई थी	गई थीं

प्रयोगः-

वे मल्लिका को खोज के लिए भेजे गए थे(मल्लिका-18)

कैद से हम एक व्यक्ति द्वारा छुड़ाई गई थीं(मल्लिकादेवी-62)

जिस समय तुम पकड़े गए थे(वैवाहिक अत्या0- 95)

वह खबर पाने से पहले ही मारा गया था - (तारा- 31)

वह क्वेटा में पाली गई थी (विवाह कुसुम-8)

बचपन में ही तू यहाँ भेज दिया गया था(टा0का0कु0-143)

मैं इसको वहन करने के निमित्त की गयी हो(वैवाहिक अत्या0-110)

तू कल की ही मोलाम कर दी गई हो (टा0का0कु0- 405)

हम लोग के टाकी प्रदेश से गिराये गए थे (टा0का0कु0-186)

जब मैं निकाला गया था (राजारिचर्ड- 49)

तुम ऐश्वर्य के गोद में पाली गई हो(डा0 का0कु0-455)

वे (सीतादेवी) त्यागी गई थीं(उत्तर राम चरित्र -1 1)

3-5-क- वाच्य

150 कर्ता, कर्म या भाव के लिंग, वचन पुरुष के अनुसार क्रिया के रूप विधान को वाच्य संज्ञा से अभिहित किया गया है। हिन्दी क्रिया के चार वाच्य होते हैं।-

(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) कर्तृकर्मवाच्य (4) भाववाच्य।

क्रिया के इन्हीं बहरूपों के आधार पर विवेच्य युगीन क्रिया के वाच्यों का विवेचन निम्न प्रकार से किया जा रहा है —

3-5-क-1- कर्तृवाच्य—

कर्तृवाच्य में अविकारी कर्ता क्रिया का उद्देश्य होता है। कर्ता के लिंग वचन, पुरुष के अनुसार ही क्रिया का भी रूप विधान होता है, इस वाच्य की क्रिया अकर्मक सकर्मक दोनों ही होती हैं।

अहारेय भी आते हैं (शकुन्तला- ना0-5)

अब चौसती हुई भटी आती है (वनवीर ना0-

हम लोग चलें - - -(चौबचोली-61)

आप क्या यह बात सच्चे दिल से कहते हैं—(नवाबनंदिनी-31)

3-5-क-2 कर्मवाच्य—

कर्मवाच्य में कर्म के लिंग वचन पुरुष के अनुसार क्रिया का रूप विधान होता है कर्मवाच्य में क्रिया अनिवार्यतः सकर्मक होती है जिसका प्रयोग दो प्रकार से होता है(1) कर्तृकर्मणि प्रयोग

(2) कर्म- कर्मणि प्रयोग

(1) कर्तृ कर्मणि प्रयोगः-

इस में कर्ता का विकारी रूप प्रयुक्त होता है---

मंत्री ने विनती की है ---(शकुन्तला ना0- 139)

मैंने कुछ अनुचित बातें कही हों तो (प्रेमयोगिनी-26)

उस समय तक की सारी कथा हमने उसमें कही(सर0 1907-1409)

बसन्त कुमार ने बहुत सी बातें कहीं (भारती -107)

मेरी बहन ने भी मेरे सामने बोलने का साहस नहीं किया(स्वामिभक्ति 16)

ये पाप जो तुमने किए हैं (हेमलता -152)

उन लोगों ने दो चार प्रश्न किए--(पु0ब0-39)

किसी ने मुझ से मुहब्बत की (प्रतापसिंह-121)

मैंने गुस्से में आ कर उसके एक घूंसा मार दिया(सर0 1920-263)

तुमने जो बात कही हो---(संसार-185)

(2) कर्मकर्मणि प्रयोगः-

इस रचना में यदि कर्ता अपेक्षित हो तो करण कारक में अथवा 'द्वारा' शब्द के साथ आता है:-

उसके राजतिलक के उत्सव में यह सार्वजनिक आनन्द मनाया गया था

सुख स्वप्न क्या जल्दी बिसरा जाता है (संसार-184)

व्याख्या अनेक रीति से हुआ करती (छोटी बहू-76)

साकेत भाई गए --- (संयोगिता हरण-106)

ओस के आगे बाँड़ुआ से बाँड़ुआ को वीणा बजायो जाय- (प्रेमयोगिनी-79)

वसन्तोत्सव बरज दिया गया (शकुन्तला ना0-122)

बेली कराई गई ---(वि0क0वै0- 571)

काम किया गया ---(,, -471)

स्त्रियाँ तक मारी जा चुकी हैं(चाँद बीबी-165)

एक स्त्री रस्सियों से बंधी पाई गई --- (सती चिन्ता-134)

खंडित गाड़ दी गई ---(पोद्0ट0-14)

कमला डाकुओं द्वारा लूटी गई(स्वामिभक्ति- 68)

यह कथा रोज कही जाती थी (बुद्ध का कांटा- 21)

लगान सब से वसूल किया जायगा(भारतो -206)

गरोबों से सुना कि आज गदाधर निवासो का लिखा घनघोर नाटक खेला जाये गा----- (घरघोर ना0 -1)

विशेष:- द्विकर्मक क्रियाओं के कर्मवाच्य में मुख्य कर्म उद्देश्य होता है और गौणकर्म विकारो होता है——

दोन दरिद्रों को सहायता दो जाती होती'(छोटो बहू-75)

संयोगिता को तोन चार घाव लगे हैं (संयोगिताहरण- 106)

ईश्वरदास कोपन्द्र गाँव एक हाथी और आठ घोड़े दिए जाय((संयोगिता हरण- 114)

ज्योतिषियों के विद्यालय से ज्योतिष सिखाया जायेगा(वि0कवी0-470)

गाँव वालों को वह (अन्न) बाँटा जाता है(भारतो-156)

पत्र दासो को दे दिया गया- - (भारतो-313)

3-5-41-3 कर्तृकर्मवाच्य

हिन्दो में कुछ प्रयोग विधान की दृष्टि से कर्तृवाच्य होता है किन्तु अर्थ को दृष्टि से कर्मवाच्य इस नियम के अनुसार विवेचो युगोन वाच्य के निम्न रूप उल्लेखनोय हैं——

चिट्ठियाँ आगरे से बनारसोदास के पास जाया करतो थीं(वि0कवी0-435)

शकुन्तला के त्याग को खबर तुम्हारे कानों तक पहुँचो(शकुन्तला-ना0-12

डंक मिट जायें गे- - - -(शकुन्तलाना0- 105)

कुंडल पुर में गजनोपति का झुण्डा गड़ गया(संयोगिता हरण- 89)
सोना अपना रंग नहीं बदल सकता(प्रेमयोगिनो-79)

यह चोट मेरे हृदय से कभी नहीं जाये गो(भारतो-125)

गहने जेवर सब बिक गए --------(,, -161)

चिट्ठी आई थी-------------(,,-188)
दो आटें पड़ी थीं - - -(सी0ट0- 62)

पसीना आ गया था- - -(सुखमय जीवन- 18)

3-5-4-4 भाव वाच्य

जहाँ क्रिया का रूप विधान न कर्ता के अनुसार हो और न कर्म के , तब रचना भाववाच्य को कहलाती है । इस वाच्य में यह के विशेष रूप से

उल्लेखनीय है कि इसमें अकर्मक और सकर्मक दोनों ही प्रकार की क्रियाएं होती हैं और क्रिया हमेशा पुल्लिंग, एक वचन अन्य पुरुष में होती है — यह वाच्य तीन प्रकार का है। इसके अनुसार विवेच्य युग के भाव वाचक क्रिया पदों के निम्न रूप हैं:-

(1) कर्तृभावे प्रयोग:- इसमें अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के कर्ता और कर्म दोनों ही परसर्ग युक्त होते हैं:-

तुमने इन ओकते ही मरे हुए माता-पिता के लिए वनवास के दुःख को सहन कर काल बिताया (नागानंद-5)

लीला ने अपने जीवन को तलवार की धार में बढ़ा दिया(प्रेमयोगिनी।।

मैंने उन लोगों को क्यों नहीं देखा --(चंद्रनी-।)

फिर देवता ने इन संन्यासियों और दिग्विजय बाबू को यहां भेजा दिया है ------------(भारती- 207)

इसे देखना चाहा-- -- ----- (बी०द०- 62)

रघुनाथ ने उसे पकड़ लिया (बुद्धू का कांटा- 38)

लहना ने कहा- -----(उसने कहा था- 58)

आपने मुझे अपने कठोर दृष्टि का पात्र क्यों बनाया है(सतीचिन्ता-32

(2) कर्मभावे प्रयोग:-

गधे को कितना ही पोटा जाय(प्रेमयोगिनी-79)

इस अज्ञानकृष्ण को कितना ही समझाया जाय(प्रेमयोगिनी-79)

मुझको बिलाया जाय- --(कोमली मंजरी- ।।2)

कर्चों को हाजिर किया जाय(,, -112)

(3) भाव- भावे प्रयोग:-

सेठ जी यह काम हम से नहीं होगा(प्रेमयोगिनी- ।।)

अकस्मात् उनसे भी आगे बोला न गया (चाँदबीबी-71)

मुझसे इनका दुःख देखा नहीं जाता(भारती-157)

इससे देहरा सूखा जाता है (द्वाविंशतिविल-71)

यह काम तुमसे नहीं हो सकेगा(सूर्यग्रहण- 2)

3-6 अव्यय

अन्य शब्द भेदों की भांति द्विवेदी युग के प्रातिपदिक और यौगिक अव्यय शब्दों को भी शब्दावली प्रकरण में विवेचित किया जा चुका है। यहाँ पर उन्हें व्याकरणिक प्रयोग और अर्थ के अनुसार दिखाने का प्रयत्न किया गया है। व्याकरण के अनुसार इस युग के अव्ययों को चार वर्गों में विभक्त किया गया है यथा—

क्रिया विशेषण

संबंध सूचक

समुच्चयबोधक

विस्मयादि बोधक

(इन अव्ययों के लिए यह विचार सत्य है कि कुछ आकारान्त क्रिया विशेषणों को छोड़ कर शेष सभी अव्यय अविकारी ही होते हैं।)

3-6-क क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषणों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया जा सकता है।

(1) प्रयोग (2) रचना (3) अर्थ

3-6-क-1 क प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर भी क्रिया विशेषण चार उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। यथा—

सामान्य क्रियाविशेषण

अन्य शब्द भेद - क्रिया विशेषण रूप में।

निश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण।

अनिश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण।

क- सामान्य क्रिया विशेषण-

इस वर्ग के शब्द स्वयं ही क्रिया विशेषण है और इनका प्रयोग भी क्रिया-विशेषण के समान ही हुआ है यथा—

इस लड़ाई को जल्दी रोकिए(रणधीर प्रेम० मो-114)

जब इनको अकस्मात पाठशाला जाने योग्य हुई तब दोनों एक साथ पाठशाला को जाया आया करते थे - - - (दो मित्र० 30-31)

अब हम नहीं जानते - - -(राजारिचर्ड द्वि० 87)

जकर डूब मरो- - - -)(स0 1917–314)
अभी उस दिन भी यहाँ हो आए थीं बाबा? (पंडित जी-59)
किसी एक को बुला कर यहाँ हमें पहिचनवा देना-(डाकघर-33)
सहसा कुछ धड़क उठा- - -(बीते - -61)
जहाँ भाग्य और बुद्धि ले जाती है वहाँ पहुँचती है (तरलतरंग-60)

ख - अन्य शब्द भेद- क्रिया विशेषण रूप में

इसके अन्तर्गत वे शब्द हैं जो रचना के अनुसार अन्य शब्द भेदों के अन्तर्गत आते हैं किन्तु प्रयोग के अनुसार ये क्रिया विशेषण हैं यथा——

(1) संज्ञा—

शौर्य पर तो तुषार पड़ गया (माधवानल-95)
योगिनी यमुना किनारे-किनारे चलती हुई वीर दरवाजे के भीतर पहुँचती- - - - (तारा-74)
घर घर -व गली- गली घूम कर खबरें पहुँचती- - (तारा-51)
आग लगे इस चाल को गाज पड़े उन औरतों पर (आ0हि0-150)
लड़कियां जब रोती है तो पीट पीट कर उनका अचार निकालने से क्या फायदा? (टा0बा0कु0-8)
आज सवेरे अपने ही एक कार्य से कुछ वाक्य इधर आया था (पंडितजी-47)
उसके पीछे वह दिनके रात ऐसा लग जाता है कि सब कोई उससे डरा करते हैं(डाकघर-22)
कल सुबह जब यहाँ पुलिस आये गी (स्वामि भक्त-107)

(2) सर्वनाम

जिसने अपना पति आप ढूंढ लिया है(शकुन्तला ना0 -15)
सब पता सामन्तों के लौटने पर स्वतः मिल जायेगा-(भौसंयोगिता 041.
मनोवृत्ति को कुछ-कुछ समझ लिया (आत्मदाह-101)
अपने कमरे में कुछ सोच ही रही थी(जौहरी तलवार-82)
कभी यह सोचते - - (गद्यमाला-157)
भगवान जाने, क्या- क्या होता है(कर्म-103)
आपने अपने आप यह नहीं कहा(बड़े बाबू-100)

(3) विशेषण

मैं तो तुम्हें सीधी-सादी समझती हो(छोटीबहू-114)

अपने आगे दूसरे को अति तुच्छ समझते हैं(र0बेगम-9)

अपने स्वामी के प्राण बचाने को ऐसा किया हा(लक्ष्मी 1878-23)

इस बुढ़ापे में ये चोंचले बहुत ही अच्छे लगते हैं- - (रायबहादुर-131)

कदाचित् पहनने में ही बड़ा सुन्दर जान पड़ता होगा(रजनी-2)

यह ऐक कोड़ों की मार से उसकी पीठ लाल करके छोड़ती(हा0क0कु0-178)

अहमदनगर पर कब्जा करना बहुत कठिन हो जायेगा(चाँदबीबी-143)

(4) क्रिया

क्रियाओं का क्रिया विशेषणवत् प्रयोग व्याकरण अध्याय में ही संयुक्त क्रियाओं के अन्तर्गत किया जा चुका है। अतः उनका यहाँ पिष्टपेषण करना अपेक्षित नहीं। स्पष्टीकरण के लिए देखिए— 3-5-क -3

ग- निश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण

इसके अन्तर्गत वे क्रिया विशेषण हैं जो प्रयोग के अनुसार निश्चित रूप से क्रिया के पूर्व ही आते हैं यथा—

व्यंजन तैयार कर के चुपके भेज देती है(संसार-150)

थोड़ी देर चुपचाप सोच कर बोले (सर01903- 53)

चोर-दरवाजे से भीतर पहुँचो (तारा-74)

मन ही मन सोचता रहा (अरण्य बाला- 67)

जल्दी जाओ - - (रणप्रताप-188)

भाई का प्रश्न कान में पड़ते ही चटपट उठ खड़ी हुई(पंडित जी-4

वे उसे अवश्य पकड़ लावें (चौहानी तलवार- 64)

उसी समय से वे निरन्तर सोचने लगे(तरलतरंग-66)

घ- अनिश्चित स्थान वाले क्रिया विशेषण-

प्रयोग के अनुसार इस वर्ग के क्रिया विशेषणों का कोई निश्चित स्थान नहीं रहता ये वाक्य के पूर्व और मध्य कहीं भी हो सकते हैं। इनमें से स्पष्टीकरण के लिए कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं।—

(1) पूर्व में—

अब हम नहीं जानते किसनाम से पुकारे जायें गे(राजारिचर्ड- 87)

जहाँ सर्वथा उत्कंठा हो उत्कंठा है(प्र0या0-158)

निःसंदेह मुकुन्द पागल है (आरण्यबाला-145)

शायद तुम्हारा गाँव हमने देखा होगा(डाकघर-13)

ज्यों ही फिटन द्वार पर पहुँची, त्यों ही नौकर ने कोई
प्रश्न किया- - - -(तरल तरंग-66)
—जैसे-तैसे अस्वस्थता का बहाना कर के उन्हों ने उससे अपना पिंड
छुड़ाया(संदेह- 185)

कहीं कहीं ये नदियाँ बहते- बहते इकट्ठी हो गई थी-(चौहानीतलवार-13)

(2) मध्य में-

भारत के राजाओं को अब मोह निद्रा त्याग कर अवश्य अपने
देश का उद्धार करना चाहिए था- - -(र0बेगम- 6)

संकुचित मन से धीरे धीरे होरक के कमरे की ओर चलो-(विवाह कु060)

वह झटपट सिंहासन छोड़ कर उठा (चन्द्रधर-58)

कुंज अपनी इस छोटी बहन को सचमुच प्यार करता था(पंडित जी-23)

सब तो अकारण ही गेहूँ के साथ घुन की तरह पिस गए-(कोहम-10)

बिचारी तरल पर यह अचानक वज्रपात हुआ(तरलतरंग-22)

तब तक पिता नित्य वहाँ से फूल चुन लाते(रजनी-2)

सुलोचना सदैव ही देर में उठती है(आत्मदाह-121)

(इस प्रकार प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषणों की बहुत अधिक संख्या है उन सब का विवेचन यहाँ न तो संभव है न अपेक्षित ही)

3-6-क-2- रचना का आधार

रचना के आधार पर क्रिया विशेषणों के मुख्यतः रूढ़ और यौगिक दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है —

क- रूढ़ क्रिया विशेषण

उसका सूत्रपात प्रायः उन्हों ने किया(सर01903-99)

भारत के राजाओं को अब मोहनिद्रात्याग कर अवश्य अपने देश का उद्धार करना चाहिए था (र0 बेगम-6)

आखिर यह बात कौन सी आन पड़ी (कृतमाट I-ब 88-7 पृ037)
अब वह दिन क़रीब है ' -- (होलै-50)
एक बटम के अकस्मात जा लगी (वि0क्सो0-382)
ज़रूर डूब मरी ---(सर0 1917-314)
जल्दी जाओ- ----(राजाप्रतापसिंह-138)
धीरे चलिए --(राजशिक-40)
जब आँखों से देखी हुई ये घटनाएँ आप पर असर न दिखा सकी
तब लिखी हुई बात का क्या बस -- (अल्प कुसुमावली- 64)
(शेष के लिए शब्दावली प्रकरण भी देखिए-)

ख- यौगिक क्रिया विशेषण

रचना की दृष्टि से यौगिक क्रिया विशेषण को कई उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है यथा—

उपसर्ग के योग से निर्मित
प्रत्ययों के योग से निर्मित
विभिन्न शब्द भेदों की द्विरुक्ति से निर्मित
विभिन्न शब्दों के संयोग से निर्मित

इनमें से उपसर्ग, प्रत्यय और द्विरुक्ति वाले क्रिया-विशेषणों का विस्तृत विवेचन शब्दावली प्रकरण में किया जा चुका है यहाँ पर मात्र कुछ ही उदाहरण स्पष्टीकरण के लिए दिए जा रहे हैं शेष के लिए शब्दावली प्रकरण के उपसर्ग, प्रत्यय और द्विरुक्ति शब्द को भी देखिए----)

ख-1 उपसर्ग के योग से निर्मित

निश्चय इसने अपनी निंदा सभी को सुचि कर के की है (शकुन्तला नाटक-141)

निदान, वह क्रोध से काँपता - काँपता उठ खड़ा हुआ-(तारा...)

बच्चों को छोड़ कर हररोज आ भी तो नहीं सकते (संसार-135)

तथापि वर्षों से तो जो कोई चाहे निधड़क पूछ सकता है (शकुन्तला नाटक-23)

सब तो अकारण ही गेहूँ के साथ घुन की तरह पिस गए (भीष्म प्र0-10)

निःसन्देह, मुकुन्द पागल है (आरण्यबाला - 145)

उसी समय से वह निरन्तर सोचने लगे (तरलतरंग-66)

प्रायः प्रतिदिन मेरे मकानपर आ कर संध्या होने ही मेरे भाई को सैर कराने -- (स्वामिभक्ति-135)

घ-2 प्रत्यय के योग से निर्मित

भाग्यवशात् उसे एक खोह उस पेड़ में दीख पड़ा—(संयोगवश उस खोह में एक सर्प रहता था(सरस्वती 1908-24)

कदाचित् दक्षिण कोरिया अंकित होगा (रसबांकुरा बी0-142)

मैं स्वतः जाऊँ - -(अ नोवरन्त ना0-113)

यो मतलब बहुधा द्रव्य संबंधी प्रायः जाता है(रणधीर प्रे0यो0-109)

जहाँ सदा उत्कंठा ही उत्कंठा है(प्र0पा0- 158)

सहसा कुछ चहक उठा- - (होली-61)

अपने हृदय को उमड़ाव रोकने में असमर्थ हो कर क्रमशः सब उगल रहे थे (चित्रशाला-19)

सर्वत्र बोली उर्दू का ही तूती बोलने लगी(गो0नि0-15)

घ-3- द्विरुक्ति से निर्मित क्रिया विशेषण

झिलमिलाते पैरों बेग-बेग जाता है(शकुन्तला ना-70)

वह उस आदमी के पीछे पीछे चल पड़ा(भूतनाथ-6)

पुत्र के बार-बार प्रश्न पूछने पर बोली (मल्लिका देवी- 89)

जब जब बादशाह दारा के अत्याचार से अप्रसन्न होते हैं

तब तब वह बादशाह को समझा-बुझा कर शान्त कर देता है(तारा62)

कहीं कहीं बिजली भी चमक जाती है(संसार-6)

आप अंग्रेजी भी कभी-कभी बोल लिया करते हैं(प्रेमयोगिनी-105)

उनको रास्ते पर लाने को ज्यों ज्यों कोशिश की जाती है त्यों त्यों

यह और भी पागलपन के कार्य करते हैं (रायबहादुर-105)

(शेष के लिए देखिए शब्द प्रकरण द्विरुक्तादि शब्द— ख-2-घ

घ-4- विभिन्न शब्द भेदों के संयोग से निर्मित.

(1) संज्ञा - परसर्ग-

काले- काले बादल पूरब से पश्चिम को जा रहे थे(ठे0ठि0क0-37)

हाते के बीच में लोहे का एक सुन्दर फाटक बना है(चौ0ट0-3)

हुजूर में इसलिए मैं आप से कुछ अर्ज किया चाहता हूँ(र0बेगम-48)

बिस्तरे पर बैठे-बैठे चन्द्रसिंह नाना प्रकार की बातें सोचने लगे- (चौहानी तलवार-29)

जल की भांति लपटें भीतर से पजलती हुई निकलीं(ब्रजकुमार-121)

उसने उठा कर ज़ोर से चोते के मुँह पर मारा (मनोरमा-1925-301)

कह चुपचाप रात को बारह बजे आयो होगी-(बुधवार आदमी-35)

(2) संज्ञा + निपात

तक--

कुछ दिनों तक तू उन दोनों के साथ रह(तारा-88)

वे देर तक उन्हें आतो से लगाए रहे(आत्मदाह-41)

हम सब दो-दो तीन-तीन दिन तक भूखी रह जाती थीं(चोहानीतलवार-115

पर्यन्त--

कल सन्ध्यापर्यन्त मेरा समस्त धन मैं सूद और असल आ जाना चाहिए- - - -(रमाबाई-13)

अपनी लम्बी बाहों से समुद्र पर्यन्त सब पृथ्वी पर राज्य करता है (शकुन्तला ना0-46)

भर

दिन भर बैठे बैठे मेरे सिर में पीड़ा उत्पन्न हुई(स०1903-308)

रात भर मूसलधार बरखा किया पल भर को भी वृष्टि न रुकी (चन्द्रधर-26)

लौं

पहरों लौं घुटनों पर सिर धर कर रोता हा(माधवानल का0-47)

बरसों लौं रहे - - - - - - - - - - - - - - -(,, ,,- 114)

स्वर्ग लौं पहुँचो- - - - - - - - - - - - - - -(,, ,,- 140)

ही--

सब कोई किनारे ही किनारे चलने लगे(राजकुमारी-130)

मन ही मन सोचता रहा - - (आशा चला-67)

(3) सर्वनाम + निपात

तब तक मैं कुछ भी नहीं कह सकती -(राजकुमारी-49)

वह आप ही आप क्या कह रही है(शकुन्तला ना0-119)

इस अवसर पर आप ही तो यहाँ आ गए हो-(नागानंद-57)

मैं आप हा दूँगी(कबीर ना0-52)

(4) विशेषण+ निपात

पर्वत, आसमान और नदी नाले भी वैसे ही बने रहें-(रणधीर प्रेम मो0-133)

आप जितनी ही पढ़ाई करेंगे प्रश्न उतने ही सर पर चढ़ती आयेगी-- (भारती -269)

(5) क्रियाविशेषण + परसर्ग

जिधर से ओगिनो बाग के अन्दर पहुँचो हो -(तारा- 74)

घोड़े पर सवार हो जहाँ से अपनी विछिन्न सेना में पहुँचा (स० मो-1910-167)

अब वहाँ से तुम्हें फूटो कौड़ो भो नहीं मिले गो(रावबहादुर-165)

जब से वधू सीता से अलग हुए हैं तब से उल्टे पीछे की (उत्तर रामचरित- उल्टे पीछे को) भागें गे - - -(दुर्गावती-85)

कहाँ वहाँ को रम गए हो(महात्मविदुर-109)

सेना इतस्तत ज्यों को त्यों खड़ी रहो-(चोहानी तलवार-65)

अब को अघटित घटना घटो है (गद्यमाला- 106)

दरिद्रो के मनोरथ को तरह यहाँ के वहाँ हो लोप हो जाते थे (वि०च्चो०-31)

(6) क्रिया विशेषण + निपात

हो

जब हो उसके मंदिर में गया तब ही वह लज्जित हो गया(आ०चामत84)

ज्यों हीउसे मोने लगा त्यों हो तब उसका उसका बोझा ऐसा किया (स० मो 1908-23)

अवश्य हो घर को बढ़ियाँ चीजों को छोड़ कर बनैले उमतो पर

दाँत लगाने को इच्छा रखते हैं (संयोगिताहरण-19)

क्या सचमुच हो उधर के लोग इतने कड़े हैं(दुर्गावती-90)

तो-

अब तो चलता नहीं बोलता(चन्द्रहार-4)

अब तो इतना सुनते हो इन्द्रवालो को आँखें से मसलज को धारा बहने लगो (ठ०ठ०गो०- 30)

जब तो गुरु जो । अपनी पाँचों घो में है(सतोचिन्ता-36)

कहते कहते तो हम लोगों भूखे रह जाते थे-(चोहानीतलवार-115)

तक-

जहाँ तक हम स जानते हैं(सर०-1903-102)

इसीलिए जब तक वह घड़ी न आवे तब तक मुझे कुछ न करना चाहिए - - -(शकुन्तला ना०-143)

कहाँ तक इधर उधर से माँग जाँचके काम चलाया(दुर्गा० 86)

अब तक हेम नाथ को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ था(अपूर्ण आत्म पा0-7)

भला इस तरह कब तक काम चलेगा(राजा प्रता परिसं-137)

लौं और लाईं

जब लौं उस वियोगी को अपने नेत्रों से न देख लूँगा तब लौं

भेजन नहीं करूँगा (माधवानल काम-109)

जबहीं पैसा है तबहीं लौं वेश्या को प्रीति है(माधवानल काम-113)

जब लाईं हमारे माथे पै छत्र रहैगो तब लाईं हमको

किसो का डरनहीं (रणधीर प्रेम-120)

भी

अजी हम तो अब भी न सकते(पू0ह0-16)

मैं तो कोई जब भी कुछ नहीं कहता था(धी0द0- 87)

उनके यहाँ भी रोज यहीं किस्से रहते हैं(कमल कुमार-32)

विद्या के अभाव से आज भी हम पुरानी लकीर पीट रहे हैं—
(गद्यमा ला-126)

3-6-क-3-अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों के भेद

अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :-

(1) स्थान वाचक
(2) काल वाचक
(3) परिमाण वाचक
(4) रीतिवाचक

इन समस्त वर्गों के क्रिया विशेषणों में से अधिकांश का विवेचन प्रयोग और रचना की दृष्टि से वर्गीकृत क्रिया विशेषणों में भी किया जा चुका है इसके अलावा शब्दावली प्रकरण में निरुक्तिलादि शब्दों के अन्तर्गत बहुत से क्रिया - विशेषण को अर्थ के अनुसार ही विभक्त किया गया है । यहाँ पर स्पष्टीकरण के लिए मात्र कुछ ही उदाहरण दिए जा रहे हैं। यथा—

क- स्थान वाचक- क्रिया विशेषण

इसके अन्तर्गत स्थितिवाचक और दिशा वाचक क्रिया विशेषणों को रखा गया है—

(1) स्थिति वाचक-

वहाँ पहुँच कर इधर से उधर सर्वत्र देखा(चन्द्रधर-22)

अपनी बाहों से समुद्र पर्यन्त सब पृथ्वी पर शासन करता है (अभि॰ शकु॰ ना0-46)

किसी घने पेड़ के नीचे पहुँच कर अपने थके मांदे शरीर को आराम दें (चन्द्रकान्ता सं॰ भा01 3पृ107)

यहाँ बैठे गें तो उनका बुरका पानी बन्द हो जाये गा(छोटी बहू-66)

रथ में- मेरे सम्मुख नहीं ठहर सकेंगी(द्रौपदी चीरहरण-8)

जोगिन जमुना किनारे - किनारे चलती हुई और दरवाजे से पास अमर सिंह के बाग के भीतर पहुँची- - (तारा-भाग-1-74)

हजूर मैं तखलिए में कुछ आप से अर्ज किया चाहता हूँ(रा0बेगम-भा2-84)

हाते के बीच में लोहे का एक सुन्दर फाटक बना है(हो0ट0-3)

पैगम्बरों का जामा पहन कर जगह-जगह व्याख्यान देते फिरो(टा0का0कु031

जिस समय वह गाँव के निकट पहुँचा(वि0क्लो0-377)

जनस्थान के बीचोंबीच सघन द्रुम कुंजों के कारण सतत् शीतल श्यामल आरण्य से घिरा हुआ- - - - (उत्तर राम चरित-12)

हम इस बंगले के पास बैठे रहते हैं(डाक्टर-23)

तुम्हें शिकार कहाँ मिले गा(अरण्यबाला-160)

जल को भीगी लकड़ी भीतर से पजलती हुई निकली-(श्रवण कुमार-121)

जहाँ भीषण युद्ध के पूर्व कुरूप हो कुरूप दृष्टि-गोचर होते हैं— (मनोरमा-177)

उनके समक्ष आप का सौदा भी ले जाने वाला कोई न रहे गा— (स्वाभिलाषित-104)

विशिष्ट:- बोलियों के भी कुछ क्रिया विशेषण प्रयुक्त हुए हैं जिन्हें विशिष्ट

ही कहा जायेगा । इनकी संख्या बहुत ही कम है यथा—

आप दूर ही से दर्शन कर लेव मेरे मति के आश्रयो-(वनुचयन्त्री ना043)

दूरई आके दर्शन कर लो ---------(,,)

ऐसा कौन मूर्ख है जो धोरे जा कर इनके पास फेले-(माधवानलकाम-35)

जगत के बाहिर है --------------(,, -90)

इसी मार्ग के अगाड़ी बढ़ कर दाहिनी ओर की गली में घूम

जाओ परन्तु और कुछ अगाड़ी बढ़ कर सब गलियों के अन्त में बायों ओर

घूम जाना- - —(वैनिस नगर का व्यापारी- 19)

(2) दिशावाचक

काले- काले बादल चुपचाप पूरब से पश्चिम को जा रहे थे (ठे0कि0ठ0-37)

जिधर-तिधर आम पकते है (माधवानल का म-160)

दो चार बातें इधर-उधर से एकत्रित कर के अपने पाठकों से निवेदन

किया चाहते हैं - - - - (स01904-127)

चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है(सविद-168)

धीरे धीरे मदनि कमरे की ओर जाने लगा - - -(छोटी बहू-7)

झरोखे से नीचे की तरफ देख कर (रणधीर प्रेम-71)

महाराज आज किधर है ध्यान? (श्री गंगा वतरण-45)

जिधर देखिए उधुर कवि ही कवि (र0र0-24)

बाहर समुद्र की लहरें मारता देख उसे अपना वह सपना या द आ गया

(हौले-110)

(ब) कालवाचक :-

काल वाचक क्रिया विशेषण तीन प्रकार के हैं

(1) समयवाचक) (2) अवधिवाचक (3) पौनः पुन्य वाचक

(1) समयवाचक:-

जब मैं काम में हुआ करूँ तब तुम कृपा कर के मुझसे कुछ मत बोला करो

(स0 1903-128)

मैं पहले ही कह चुका हूँ - -(सर० 1904-120)

मैं अभी जाता हूँ - - - -(नाग नंद-97)

मैं अन्याय करने कब कहती हूँ -(हेमलता-146)

कल सूरज उगते ही राज्यसिंहासन पर बैठूँगा-(चनचोर ना०-64)

आज तुम्हें क्या हो गया है (राजकुमारी-3)

परसों लड़की विदा हो जाये गी -(संसार-35)

फिर भी अन्त में कल्याण ही होगा(उत्तर राम च० ना०89)

मैं सबेरे घर से लिख लाऊँगा - - (रायबहादुर-69)

सब प्रबंध ठीक हो जाने के पश्चात् नन्दराम ने पूछा(भिखारिणी-123)

(2) अवधि वाचक

मैं बहुत देर से यहाँ खड़ी तुमको अगोर रही हूँ(ठे०हि०ठा०13)

दिन भर बैठे बैठे मेरे सिर में पीड़ा उत्पन्न हुई(सर०1903-308)

इसलिए जब तक वह शुभ घड़ी आवे तब तक मुझे कुछ न करना चाहिए

(शकुन्तला ना०143)

तुम आज कल संस्कृत की पौन सी पुस्तक देख ती हो(तारा-12)

जहाँ नित्य घोती गमछा और पानी रखा जाता था(उमा - 98)

देह के गहने बेच कर आज तक कार्य चलाया किया-(चन्द्रधर-4)

अब बहुत देर तक ठहरना न पड़ेगा (आ०हि०-146)

जिसने सदा देखा आया- --(सावित्री सत्यवान-70)

कभी कभी तो हम सब तीन तीन तीन दिन तक भूखे रह जाते थे

(चोहानी तलवार-115)

भला इस तरह कब तक काम चले गा(राणाप्रताप-137)

पैंतीस रोज तक गाड़ी मरम्मत के लिए लगातार खड़ी रही(बुधवार आ05)

विशिष्ट:-

- - - - यत्र के प्रभावस्वरूप लौं, लौं, ताईं निपातों के योग से भी अवधिवाचक क्रिया विशेषण के उदाहरण मिलते हैं ——

जब लौं इस वियोगी को अपने नैनों से न देख लूँगा तब लौं भोजन नहीं करूँगा

(माधव नल काम०109)

तब ही लौं लैला की प्रीति है - मा धवानल काम०113)

अब तक लौं प्रसिद्ध है -- (माधवानल 149)

जब तांई हमारे माथे पै हमारी छत्र रहे गो तब तांई हमको किसी का डर नहीं(रणधीर प्रेम 120)

(3) पौनः पुन्यवाचक

रोज़-ब-रोज़ नए-नए लड़ाई झगड़े कराने शुरू किए(तारा-94)

वह रोज़-रोज़ शोर करता है -(तारा-90)

अब एक बार पुनः अमना-सरस्वती और ज्ञानवती उसी स्थान की तरफ आ रही हैं -- (भूतनाथ-21)

क्या एक दफा भी यह बात तुम्हारे ध्यान में आती है(सर01904-119)

बच्चों को छोड़ कर हर रोज़ आ भी तो नहीं सकते -(संसार-135)

इसी बीच में वह दिन पर दिन बढ़ने लगी(टा0का0कु0146)

उसके लिए पुनः पुनः क्षमा मांगती हूँ(संदेह-187)

दिन-ब-दिन यह पृथ्वी घोर निविड़ अन्धकार में फँसती चली जा रही है
(आरण्यबाला-101)

प्रेम का या अन्य भाव बार-बार क्यों होता है (कु0स0015)

प्रायः प्रतिदिन मेरे मकान पर आ कर (स्वामिभक्त-135)

ग- परिमाणवाचक

परिमाणवाचक विशेषणों से अनिश्चित संख्या व परिमाण का बोध होता है, ये निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होते हैं यथा—

(1) अधिकताबोधक-

बस बहुत हो चुका-- (छोटी बहू-116)

आपने देर भी बहुत की (रामबहादुर-137)

हमारे तीन-तीन सिपाहियों को भी भारी पड़ जायेगा(दुर्गावती-90)

अपने आगे दूसरे को अति तुच्छ समझते हो(र0बेगम-9)

जब स्वाधीनता अधिक हो जाती है(भूलभुलैया-12)

विद्यार्थियों को बिल्कुल ही भूल मत जाना(सरलसरोज-22)

नवनीत भी इसका सर्वथा अपवाद है(पद्मपराग-131)

(2) न्यूनतावाचक-

हम लोग टुक पर्वशास्त्र की ओर जाते हैं (संयोगिता-7)

टुक उस झरने पर दृष्टि डालो ----(,, -8)

अब तक हेमन्त्रा की ओर कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ था (अपूर्व आत्मत्याग 7)

लगभग एक घंटा हुआ -- (मनोरमा-309)

कवित्त की सीमा कट छट कर बहुत थोड़ी रह जाती है(र0र0-38)

इंग्लैंड के प्रायः सभी पुरातत्व वस्तु संग्रहालयों को देखा—
(लेखांजलि-10)

(3) पर्याप्त वाचक-

ये सब केवल सभी प्रदर्शनी के लिए बनाई गई है । (सर01904-72)

अस्तु जाने दो ---- (मणिलता देवी- 134)

पल-पल बरस-बरस को बराबर बीतता है (रत्न और प्रेम- 109)

पहले उसी के मुताबिक काम करना ठीक होगा-(दुर्गावती- 24)

अगर सिर्फ ऐसे ही खत और तार हिन्दुस्तान में आवें-(मर्यादा-1979-88)

अनाथबंधु के मन में अंधकार यथेष्ठ था (मर्यादा 1917-209)

मर चाहे जाऊँ पर मन को भेद कर और किसी से विवाह न करूँगी
(र0र0 86)

(4) तुलनावाचक-

अब दिन दो पहर से अधिक चढ़ गया (शकुन्तला-88)

मैं कितना फूँक फूँक कर पैर रखता हूँ —(नरेन्द्र मो0-10)

दूसरों की मूर्तियाँ उतनी ही आयें गी(भारत नि01813

आप जितनी ही बड़ाई करेंगे प्रजा उतनी ही सर पर चढ़ती जायेगी
(भारती-269)

(5) रीतिवाचक-

इस बात की भनक तनक-तनक मेरे पिता के कान में पड़ी(आत्मानन्द-46)

मैंने बारी-बारी से दो सौदों को भेजा- -(तारा-70)

घ- रीतिवाचक क्रिया विशेषण-

गुण वाचक विशेषणों के समान ही रीतिवाचक क्रिया विशेषणों की संख्या भी बहुत अधिक है। इससे प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, कारण, निषेध अवधारण आदि अर्थों का बोध होता है, इनमें सब से अधिक संख्या प्रकारबोधक रीतिवाचक क्रियाविशेषणों की ही है।

(1) प्रकार बोधक—

थोड़ी देर चुपचाप सोचकर बोले (सर01903-33)

हम इसमें अन्यथा क्यों कर सकते हैं (र0बेगम-7)

क्यों झूठ-मूठ रो रही हो-(छोटी बहू- 22)

वह झटपट सिंहासन छोड़ उठा(च० हार- 58)

मैं समझता हूँ कि कोई ऐसो-वैसो नहीं है(मालविका-5)

जो कोई चाहे निधड़क पूछ सकता है (शकुन्तला-23)

ज्यों ही उसे धोने लगा त्यों ही तब उसका पेड़ ऐसा फिरा (लक्ष्मी-1908-23)

मैं बहुत होले-होले से आँखें खोलती (माधवानल-61)

वे चटपट घर आने को तैयार हो गए-(मर्यादा1911-240)

एकाएक उसके हृदय में आग भभक उठी-(टा0का0कु0242)

मन ही मन सोचता रहा - - (अरण्यबाला-67)

अपना-अपना जीवन चरित स्वयं लिखा है (उ0रा म0406)

लगा ओवरसियर सटापट मारने (मर्यादा-1979-516)

आज सहसा मेरा बाँया नेत्र फड़क रहा है(सतोपिन्सा-11)

भाई जल्दी जल्दी आगे बढ़ो — (हरल तरंग-149)

~~मेलमेलमेल~~दत्तप्रयत्न का बहाना करके उन्होंने उनसे अपना पिंड छुड़ाया (संदेह- 183)

सैना स्तब्ध ज्यों को त्यों खड़ी रही(चौहानीतलवार- 65)

लेकिन अकस्मात् एक दिन उनका व्यवहार बिल्कुल ही बदल गया (पीड़ित को-144)

सुशांत एकदम चौंक कर उठ बैठे (आत्मदाह-1)
धीरे - धीरे उसका प्रशान्त गौर मुख कृष्ण वर्ण धारण करने लगा(मनोरमा-57)
सब तो अकारण हो गेहूँ के साथ घुन की तरह पिस गए(ओरम-10)
मैं सुखपूर्वक उनका समर्पण करने को तैयार हूँ(रर्पंजक-111)
वे हो प्रतापूर्वक बोले- - - (भिखारिणी-91)
तुम जानबूझ जले पर नमक छिड़कती हो (मानसरोवर- -74)

(इस प्रकार के और भी रूप है जिसका विवेचन न तो संभव हो है और न अपेक्षित हो)

(2) निश्चय बोधक:-

एक बड़े मुल्क भेज देना (संसार-36)
आप सब का प्रस्ताव निःसंदेह बहुत अच्छा है(सरलतरंग-143)
पर वास्तविक में मैंने अपना कर्तव्य किया(चौहानी तलवार-64)
अवश्य हम सब भाइयों को पूरी दुर्गतिकरते (द्रोपदी चीर015)
देश की अवस्था सचमुच इस समय शोचनीय है (संदेह- 19)
यद्यपि व्याकरण तो सब प्रकार से (गो०नि० 13)
है तो बड़ी पर भाड़ा अधिक है (कलयुगी परिवार-51)

(3) अनिश्चय:-

कदाचित् उस बार युधिष्ठिर हो भोल जाते (द्रोपदी चीर0 15)
शायद किसी अंग्रेज बहादुर का हो हो(चौ०ट03)

(4) स्वीकार बोधक:-

हाँ ऐसा हो हुआ —(रोब नकारा-49)
अच्छा, तो फिर क्या हुआ-(रायबहादुर-9)
ठीक है जो हो तो मैं सोचता था (दुर्गावती-74)
जी हाँ, अभी आप के लिए लड़का हो है (चौ०ट० 37)

(5) निषेध बोधक-

इसे देख कर मारे भय के यहाँ खड़ा नहीं रहा जाता (नगानंद - 28)

अभी ऐसी शंका मत करो (भाग नंब- 28)

आप मुझे और अपने बच्चों को जीवित न पायेंगे(दुर्गावती-74)

(6) अवधारण बोधक:-

गढ़कुण्डार में रहकर भी तुम मुझे नहीं जानते(नवाबजीवनी-34)

पर अब तो चलता नहीं बोलता (कभ इधर-4)

तुरन्त ही आ जाता है(वि0कसी0 129)

इस रुपये को छूते तक नहीं(,, -251)

मनुष्यों को डराने का ढोंग मात्र मानते हैं (कृष्णार्जुन युद्ध-37)

3-6-ब- संबंध सूचक अव्यय:-

संबंध- सूचक अव्यय वास्तव में अलग से कुछ भी नहीं है । प्रयोग की दृष्टि से इनका विशेष संबंध संज्ञा और सर्वनाम से है। कारक विवेचन में इन्हें परसर्गीय इकाइयों के रूप में विवेचित किया गया है । अर्थ की दृष्टि से क्रिया विशेषण और संबंध सूचक अव्यय समान ही है किन्तु प्रयोग के आधार पर ही इन्हें अलग किया जा सकता है । प्रयोग की दृष्टि से क्रियाविशेषण का स्थान वाक्य में कहीं भी हो सकता है किन्तु संबंध सूचक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद ही आते हैं । स्थान की स्पष्टता के लिए इन दोनों को प्रयोग के आधार पर स्पष्ट किया गया है —

3-6-ब-1 प्रयोग-का आधार

क्रिया विशेषण:-

पहले विदेशी शत्रु का संहार किया जाय फिर पीछे घर का झगड़ा निपटाया जाय- --(बीछानी तलवार-91)

सामने समुद्र की लहरें भरता देख उसे अपना वह सपना याद आ गया- - - - (शोले-110)

अन्दर भी अन्धेरा है - - -(मर्यादा 1916- 268)

संबंधसूचक अव्यय:-

यह शहर के बाहर ऐसी उजाड़ और बीहड़ - (तारा -50)

बहन की कोठरी के सामने जा कर उसने कहा(पंडित जी-43)

संध्या से पहले मुझे फुर्सत नहीं - (स्वामिकथित -15)

उसके पीछे मुझे भी रेविंसपुर जाने की आज्ञा है (राजविराई -46)

अर्जुन ने कृष्ण के समीप कर देना और बाकी है(कृष्णार्जुन युद्ध-44)

इस प्रकार प्रयोग की दृष्टि से संबंध सूचक और क्रियाविशेषण में स्पष्टता ही अन्तर है किन्तु अर्थ में दोनों समान होते हैं । यहाँ पर अर्थ की दृष्टि से संबंध सूचक अव्ययों की निम्न वर्गों में विभाजित किया गया है यथा—

36- क-2 अर्थ का आधार:-

क- कालवाचक:-

तिस पीछे बहुत से सिपाहियों ने घेर लिया (पृ0सं039)

राज दण्ड लेने के उपरान्त आप के आशीर्वाद से कीर्ति कमाने को बैठा- - - - - - - गंगा यातरा-23)

पति के चले जाने के बाद अपने घर की सारी पूँजी पसारा लूट

लुट जाने के अनन्तर जब लाडली बेटी न यह रंग दिखाया

(आ0वि0 232)

उसके पश्चात् भी न जाने कितनी स्त्रियाँ-(कर्म -102)

(2) स्थान वाचक:-

अपने निकट बुलाता है (शकुन्तला - ना0-15)

गदाधर सिंह दारोगा के पास गया(चन्द्रकांता- 25)

जगत दृष्टि तल आ सकता है (भारतवर्ष- 31)

इन कुछ एक दरिद्रों के पीछे से किसी मनुष्य को आया न जाती है

(रणधीर प्रेम - 48)

इससे ऊँची चरणों के सामने नहीं गई (मालविका - 54)

(3) दिशावाचक:-

कि अपनी माँ के मुँह की ओर देखने लगी(है0कि0सं0027)

दूसरे हिस्से की तरफ पाठकों को ले चलते हैं (भूतनाथ-52)

इस बगीचे के उसी पार ती गई है (नवाबनन्दिनी-31)

वेद ग्रीकों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए(दुर्गावती- 228)

(4) साधन वाचक:-

ओहो आप कब करके आ गए (कु0म0ब.-30)

मंजरी के जरिए जलालुद्दीन सिर्फ आप की सेवा(सोमतोमंजरी-8)

व्यवसाय की बदौलत खूब माल मारते(टा0क0कु0-126)

किसी गुप्त जासूस के ज़रिये हुआ होगा(रणबांकुरा-68)

अपने भुजदण्ड के बल तुम्हें मनाऊँगा (वीरांगना'90)

विस्तृत व्याख्या द्वारा सब संदेह दूर कर दें (पद्मपराग-36)

(5) हेतु वाचक:-

मैया के वास्ते खा ने को देने जाता हूँ (वनबीर ना0 44)

अपनी भगिनी मलयवती कन्के वर निमित्त इसी पर्वत पर (नागानंद- 17)

रुपया पढ़ने के सबब से खूब छोड़ देते हैं(संसार-2)

जोजा जी के मारे तो मेरा नाकों में दम है (भारत म-86)

धर्म, कर्म, धर्म के हेतु बहुतों ने ऐसे बंधनों को निर्मूल कर छोड़ा है
(प्रेमयोग0 91)

तुम्हारे पुत्र पौत्रादि के लिए आवश्यकता है(कर्म-123)

(6)विषय वाचक—

उनके लेखे तो मैं मर गई —(कु0 से0 21)

मुझसे उसके मुखे बात कहो हो (शकुन्तला ना0- 47)

अपने तुई इसे जरा भी डर नहीं था(तारा- 79)

(7) व्यतिरेक—

इसके अतिरिक्त वह राजा बड़ा ही शूरवीर और पराक्रमी था(चन्द्रधर-2)

इस घटना के अलावा कोई बात लिख ने योग्य नहीं - - (भो0द0-73)

यदि पक्षपात रहित हो कर (मर्यादा-1911-10)

मेरे सिवा अन्य दो ही चार अत्यन्त विश्वास पात्र -(तरलतरंग-131)

आप के बिना मेरे कुम्हलाए हुए मुख को वसन्त का समीर भी
नहीं खिला सकता(रणबांकुरा चौ0- 116)

विशेष —, ' बिना, और 'सिवा ' विशेषणवत भी प्रयुक्त हुए हैं यथा ——

सिवा   सिवा उल्लू चमगादड़ों के और कोई वहाँ नहीं रहता -(तारा- 50)

थोड़ी दूर चलने पर सिवा सड़क और हरे हरे मैदान के और कुछ नहीं
दीखता ---------(चां द0- 1)

माता ने बिना आहट किए भीतर प्रवेश किया(आत्मदाह-1)

बिना बदला लिए चैन कभी न लूँगा (स्वामिभक्ति- 98)

(8) विनिमय वाचक:-

दुःख में सहानुभूति दिखलाने के बजाय दिल्लगी कर रही हो (उषा 45)
दुःख के बदले सुख पाने की उत्कट अभिलाषा रखते हैं (कलियुगीपरिवार65
अभिलाषा-रखते हैं-
इसके पलटे में हमारा भी कर्तव्य है (प्रभा 1970- 190)

(9) सादृश्य वाचक:-

यह मृग आश्रम का है मारने योग्य नहीं (शकुन्तला ना०-7)
मिलाप लायक मेरा भाग्य नहीं (रणधीर प्रेम०-89)
अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारने के बराबर था(भूतनाथ-22)

तुम्हारे साथ अपने कुत्ते का सा व्यवहार नहीं रखा चाहती(तारा-11)
सम्पादक की आज्ञानुसार इस नाटक को अभी ढंग से तैयार किया है(
(द्रौपदीचीर हरण-3)

इस परिवार की नाईं के कम सुखी हैं (संसार-4)

विनोदिनी प्रतिभा के सदृश स्थिर थी (उषा-57)
चोर की तरह कुमुद को दबे पाँव आते हुए(चि0सुम- 150)
पशु रूप धारण करके भवन की भाँति भाग रहे हैं(गो0कुम58)
तुम्हें पैर की जूती के समान समझता हूँ (अमर कुमार-77)
हमारी प्रजा भी हमारी जैसा-वैसा राजा ही बनना चाहती है (
(दुर्गावती-38)

अदालत के हुक्म मुताबिक तुम्हारे घर की सब चीजें निकलवानी पड़ती है
(स्वामिभक्ति- 117)

3-6-ग- समुच्चयबोधक अव्यय:-

समुच्चयबोधक अव्यय अविकृत होते हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए इस युग के समुच्चयबोधक अव्ययों को समानाधिकरण और व्याधिकरण दो भागों में बाँट कर विवेचित किया गया है —

3-6-ग-1 समानाधिकरण:-

समानाधिकरण समुच्चय बोधक चार प्रकार के हैं —

(क) संयोजक-

मैं अपने देश व जाति की मान वृद्धि के लिए हर समय उद्यत हूँ
(भारत दर्पण-23)

मेरे जाल से चार नेत्र और बारह नेत्र वाले भी नहीं निकल सकते-
(द्रौपदी चीर० 31)

मान-अपमान तथा सुख दुख का होना ईश्वर ही पर निर्भर करता है
(प्रेमयोगिनी-23)

मैं इस प्रमदा का दुःख हरूँगा और उसको दूसरे के लिए आदर्श बना ऊँगा ---- (तरलतरंग- 23)

वे अपने दुराचारी पति के संग करें एवं मेरी प्यारी बहन कमला से भी यही बात कह देना ---- (स्वामिभक्ति-103)

विशिष्ट:-

कहीं कहीं पर 'और' के स्थान पर 'औ' और अरु' के प्रयोग भी मिले हैं जो बोलियों के प्रभाववश है यथा—

देखटके परस्पर बातें करती अरु यह रागिनी गाती (माधवानल-19)

घुर-घुर अरु घुर घुर कर देखते हैं (माधवानल-19)

बुद्धि समेत पुरान औ वेद को ज्ञान निधान समान अपरा
(महावीर चरित-47)

ख- विभाजक-

या भगवो को कारागार में बन्द कर दो या देश से निकाल दो
(महावीरचरित- 45)

भैया तुमने अपराध किया कि* उपकार किया। यह आप क्या कहते हैं आप बड़े हैं कि हमारे पीछे चलने वाले (महावीरचरित-60)

कोई पुरानी ईर्ष्या है या वह राजभक्त, प्रजा की तरह भोले का कोई राजविद्रोही बना कर उसको दण्ड दिलाना चाहता है (रॉबिन रिकर्ड-1)

कुछ न कुछ स्थान अथवा बंदी गृह में चली जायें गी (भारतदर्पण-126)

चलने को तैयार हो कर रहा है अथवा यों कहिए कि भागने को राह ढूँढ रहा है - - -(सावित्री-3)

वे न आयेंगे, न बात करेंगे न उनको देखेंगे (कृष्णकुमार ना-8)

तृष्णा तो उन जीवों में है न कि उन जीवों में जो अपने घर बार को त्याग कर दिन रात ईश्वर के भजन में माला फिराते हैं
(प्रेमयोगिनी-22)

मथो में प्राण रखूंगी अथवा इसी समय जीवन त्याग कर दूंगी
(सावित्री-27)

सुधार करना चाहिए नहीं तो अपने राज्य की बड़ी भारी बदनामी है
(राजसिंह- 71)

क्या वह धर्म कुछ भी नहीं है (भीष्म पृ0-31)

चाहे संसार की रीति से, चाहे धर्म की रीति से जाँच कर देखो -
(रणधीर प्रेम मो0 -105)

लोग गृह- मैत्री या भक्ति का लगना कहते हैं(उरा ०४०-109)

जल्दी भाग वरना तेरा भी सर मेरी इस कराल काल सदृश तलवार से उड़ा दिया जायेगा (रणधीकुरा-13)

ग- विरोध - दर्शक-

प्रार्थना का प्रभाव इतनी जल्दी न मिट जायेगा परन्तु मुझे भय है - - (सर0 1903- 72)

अभी हम तो अब भी न रुकते अगर हमारे खाँसाहब कुछ फूंक फूंक कर पाँव धरते हैं - - (पु080-16)

इसमें और तो कोई नुक्स नहीं, लेकिन ये कम्बख्त काली जायगी
(रणधीर प्रे0-43)

कुल असबाब को जल्दी दिखा देंगे लेकिन अपने अक्षय नमकहार का माल दुश्मन के तहत तसर्रुफ में कभी न जाने देंगे(रणधीर प्रेम-125)

मुझसे शास्त्रार्थ नहीं करता हूं, वरन् ऊँचा-नीचा समझाता हूँ
(संयोगिता हरण-40)

यह उल्टी नीति नहीं, बल्कि हमारे पुनीत भारतवर्ष की नीति है
(राजसिंह-59)

- -

*विशेष:- विकल्पक 'कि' का रूप बहुत कम मिले हैं वस्तुतः आधुनिक हिन्दी में भी इस 'कि' का अनुचित प्रयोग ही मिलता है ।

मेल तू कंगाल है पर तू दुखों का अन्त कर देती है (राजारिचर्ड-नि0 03।

यह तो सब ठीक है, किन्तु फिर इन दोनों का क्षत्रियोचित संस्कार कौन करेगा (उ0रा0 च0 - 146)

ख- परिणाम दर्शक —

उसको चाल भी अच्छी नहीं है जो उसका होना न होना बराबर है
(महावीर चरित ना0-45)

मैंने कोई अपराध नहीं किया अतः अब आप कृपा कीजिए (कृ0 क.र्जुनपु0 66)

मैं बहुत दूर गया था, इसीलिए थक गया (श्री गंगा वतरण-55)

अतएव बड़ी गवाह बदे गए (नैषध चरित च0-36)

तब पहले का स्मरण दिलाने वाले, सुतरां उससे भी कहीं प्रचण्ड दूसरे को गंभीर गर्जना कर्ण - कुहर में प्रविष्ट होने लगी यह बात वास्तव में अधिक चमत्कार जनक मालूम पड़ती है (उ0रा0 च0 ना0-5)

3-6-ग-2 व्यधिकरण समुच्चयबोधक:-

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भी चार भेद होते हैं यथा—

क- कारण बोधक-

जिसका का राज्य है सो ले ले क्योंकि असल राजा तो वही है
(वनवीर ना0 59)

मैंने वही किया जो कि एक क्षत्रिय कन्या को करना चाहिए (संयोगिता ह0 39)

यह इसलिए किया ताकि आप ऐसा न सोचे (संयोगिताहरण-39)

मैंने जो कुछ कहा है, सो इसलिए कि आप का आचरण सुधर जाय - - - - (राव बहादुर-99)

ख- उद्देश्यवाचक:-

आप लोगों को चाहिए कि लड़कों के अधर्म से बचाइये (महावीरचरित -61)

मैंने पार्लमेन्ट में उसकी जमानत की है कि वह सदा राजा का हितैषी रहेगा - - - (राजारिचर्ड, 97)

मैंने क्या नहीं किया जो चन्दन की खड़ाऊँ बनाई (मालविका 055)

'पर' ठेठ हिन्दी का शब्द है और इस काल में इसका प्रयोग बहुत अधिक हुआ है जिससे साहित्यिक भाषा और जन भाषा का सम्पर्क स्वभावतः स्पष्ट है।

उसी में इसे भी लिख लूँ ताकि पीछे से भूल न जाऊँ (राजबहादुर- 167)

ग- संकेत वाचक:-

यद्यपि हमको पराजित होना पड़ा परन्तु हमारी वीरता की धाक संसार में जम गई - - -(कोशलकुमार- 60)

यदि वे चाहते तो वैसा कर सकते थे (राजकुमारी- 154)

यद्यपि दुबेजी ने बहुत चाहा मगर मैंने उस बात पर ध्यान नहीं दिया (राजकुमारी-155)

चाहे कठोरता के कवच धारण करने की चेष्टा योगेश्वर कितना ही क्यों न करें तो भी वे मनुष्य ही हैं (उमा-122)

राजा ने यद्यपि वह विष था तथापि सोचा वह पानी ही है(लक्ष्मी 1908-23

जो आप लोगों को डर लगे तो आप ठहरे रहिए(राजारिचर्ड द्वि037)

ऊपर से वे चाहे जैसे भी हों परन्तु भीतर से बड़े भोले हैं(दुर्गावती-62)

घ- स्वरूप वाचक:-

किसकी सामर्थ्य है जो हमारे प्यारे यजमान राजर्षि विदेहराज की परछाईं भी लाँघ सके (महावीर चरित- 35)

हमें पश्चिमी सभ्यता अर्थात् खूब सूरत कुत्ता क्यों नहीं सुहाता (संसार-179

मैं समझता हूँ कि तू बहरा हो गया है (भूलभुलैया-27)

यानी तुम सरस्वती जैसे भामिनी बनने का नहीं आ न(गंगावतरण-6)

तुमने अपूर्व रूप पाया है मानों विधाता ने स्वयं अपने हाथों बड़े ही परिश्रम से तुम्हें बनाया है (भीष्म प्रतिज्ञा-21)

3-6- च- विस्मयादि-बोधक अव्यय:-

व्याकरणिक दृष्टि से विस्मयादि बोधक अव्यय शब्दों का कोई विशेष महत्व नहीं है क्योंकि वाक्यों के विधान में इनसे कोई विशेष सहायता नहीं मिलती। किन्तु वाक्य में निहित अर्थ की अपेक्षा भावों की तीव्रता को सूचित करने में इनका विशेष रूप से उपयोग होता है।

विस्मयादि बोधक अव्ययों में कुछ तो कुछ रूप से भाव या अभिव्यक्तियों के अनुसार सूचक है किन्तु कुछ विस्मयादि बोध अव्यय रचना की दृष्टि से तो अन्य शब्द भेद के अन्तर्गत आते हैं किन्तु प्रयोग के अनुसार वे विस्मयादिबोधक अव्यय हो हैं, इसी तरह कहीं एक ही शब्द तो कहीं एक वाक्यांश या पूरे वाक्य ही विस्मयबोधक हो जाते हैं।

~~द्विवेदी~~ विवेच्य युग के विस्मयादि बोधक अव्ययों को प्रयोग और रचना

दो दृष्टियों से विवेचित किया गया है ।

3-6-घ-1 प्रयोग के आधार पर :-

प्रयोग के आधार पर दो उपवर्ग हैं

(1) मुख्य रूप में भावों के अनुसार बोधक

(2) विभिन्न शब्द भेदों के अनुसार बोधक के रूप में प्रयोग

क- मुख्य रूप में भावों के अनुसार बोधक:-

ये निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त है यथा —

(1) हर्ष बोधक

आहा ? तू है भारत माता। (भारत दर्पण -38)

वाह! वाह!! वाह !!! महाराज़ो भी कैसे उदार हैं(मालविका0-61)

अहाहा! कृष्ण का रंग बहुत ही मोटा होगा(कृष्णार्जुन युद्ध-86)

अहा! कैसा अलौकिक रूप। (भीष्म प्रतिज्ञा -18)

(2) शोक बोधक:-

हाय! न पूछो होगा कैसा शोक की बात है(शकुन्तला ना0140)

हाय! हाय! यहाँ इस काम को दो (महा वीरचरित ना0-10)

आह! इन लोगों को इस दुष्टता-रूप अग्नि की पूज्य बाबा जी को

दुराचारि ने बुझा दिया है (द्रौपदी चीरहरण-19)

उफ! हृदय शान्त न हो। (कृष्णार्जुन युद्ध-19)

हा ! क्या मैं वसुदेव के राज्य का एक भिक्षिकारी हो रहा हूँ? हाँ!

एक समय यह था - - (सती चिन्ता-99)

(3) आश्चर्यबोधक —

आह! यह क्या शंका की बात है ? (अभिमन्यु वीर हरण- 35)

हाँ ! यह पत्र, और वह पत्र , दोनों मैंने अपने वास्केट की जेब में

रख लिए थे (चीक ट0- 38)

ओह! सचमुच इसने अचल समाधि लगाई है - श्री गंगावतरण- 36)

अरे ! अब घर सरेआम तो सवार नहीं? (भीष्म प्र0-27)

हैं ! हैं! पितामह जी ! यह आप क्या कह रहे हैं?

(भीष्म प्र0-108)

हैं। यह क्या बाबा (स्वामिभक्ति - 50)

(आश्चर्य से)हैं । आप क्या विचार रहे हैं? (सती चिन्ता -100)

अरे, अरे । मदनसिंह जी। आप कहाँ ? (दुर्गावती-46)

हूँ। तो क्या वशिष्ट जी आए हैं । उ0रा0 च0 80)

(4) तिरस्कार बोधक:-

छि। छि। छि। आज कल क्या लोगों को अपने नाम इज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं रहा- - - -(संसार- 168)

रे पामर। भक्त भय भंजन श्री कृष्ण भगवान मेरे सहायक हैं(द्रोपदीचीर6

ओः! (क्रोधपूर्वक) ऐसे स्वार्थियों को सभा में आना पाप है (

(राज्यश्री- 80)

(5) संबोधन द्योतक-

भाई। खुदा के वास्ते बातें को पहेली न बनाओ(र0बेगम- 84)

ओः! नामर्द रोमत हैं । (रायबहादुर- 22)

ओः! फिर वही बात (,, -23)

क्यों? कुल पतिका ने मालविका को मुक्त कर दी न? (मालविका-30)

अरे! जो कुछ सुख,दुख इस अभागिनी को भोगना है(प्रेमयोगिनी- 33)

उई!, भाड़ में पड़े ऐसा निरालापन (भीष्म- 16)

अजी! आप भी अच्छे काम के समय आ कर डट गए(राज्यश्री- 87)

(6) अनुमोदन बोधक:-

हाँ! तभी तो मैंने यह सूरत बनाई (दुर्गावती-46)

हाँ! हाँ!। आप घबड़ाइये नहीं (स्वामिभक्ति- 77)

ख- विभिन्न शब्द भेद अनुसार बोधक रूप में -

(1) संज्ञा -

जय! जय श्री रामचन्द्र जी की जय। (महावीर च0- 7)

राम! राम । कैसी पूजा की बात है (संसार-168)

(कान पर हाथ रख कर() शिव। । शिव। पाठक । देखा (राजकुमारी-38)

नारायण ! नारायण ! हमारी वर्षों बाद गंगावतरण का समय आया है

(श्री गंगावतरण-11)

बेटी! तूने यह क्या कहा (रणधीर प्रे0-114)

वत्स! तो इस चिरंजीव को भी यहीं हो बुला लो (उत्त० च०-127)

(2) विशेषण:-

धन्य! उनके समीप हो रुक तौर के उपासक हमारे प्रभु भ्रातागण हैं (द्रौपदी चीरहरण- 2)

भला! आपलोगों ने यह कैसे जाना। (राजाविधि -20)

अच्छा । तो अब हम लोग जाते हैं (स्वामिभक्ति-77)

(3) क्रिया:-

हट, हट बाहर चल बाहर (राजाविधि-80)

देखो ! यह प्रस्तवण नाम पहाड़ है (महावीर चरितना0- 64)

कहो, मित्र, बड़े महाराज ने तो खूब दूध और हलुआ खिलाया था

(तरलतरंग- 149)

लो, मिठाइयाँ जो। (राजकुमारी- 103)

3-6- ब -2 रचना के आधार पर:-

रचना के आधार पर विस्मयादि बोधक अव्ययों को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है (1) शब्द (2) वाक्यांश (3) वाक्य (इस प्रकार के विस्मयादि बोधक अव्ययों की संख्या काफी है तथा इस आधार पर इनके विस्तृत रूप भी होते गए हैं किन्तु यहाँ पर मात्र स्पष्टीकरण हेतु कुछ ही उदाहरण दिए जा रहे हैं।

क- शब्द- कहीं कहीं एक ही शब्द व्यक्ति के सम्पूर्ण मनोभावों को व्यक्त करता है यथा——

शाबाश, मेरे मिट्टी के शेर शाबाश। (स्वामिभक्ति- 51)

बेशक । हाँ जी। (रायबहादुर- 31)

धन्य वीरों धन्य, तुम लोगों से ऐसे ही पराक्रम की आशा थी

(श्री गंगावतरण-34)

बेशा। यही सुकुमारी का परज था(राजकुमारी- 38)

राम। राम। - -(संसार- 168)

बस, भोभो। - -(अँगूठी का नगीना - 118)

ख- वाक्यांश:-

लो जो मिठाइयाँ जो (राजकुमारी- 103)

अच्छा तो। देखा जाये ना(प्रेमयोगिनी'-18)

अरे राम, राम , अब तो मेरी पूरी मरम्मत हो गई (प्रेमयोगिनी-71)

अरे नाना। जाओ मत। (चनचोर ना0 4)

जी हाँ, आप का कहना बहुत ठीक है (रायबहादुर-130)

धत् तेरे की। सारा जीवन व्यर्थ हो गया (स्वामिभक्ति-31)

है, यह कैसे ? --- (ऊषा अनिरुद्ध 60)

हैं यह क्या।। क्या वह धन भी हर ले गया (सती चन्द्रा - 50)

क्यों महाशय, यहाँ से बर्कली कितनी दूर है (राजा रिचर्ड -47)

ग- वाक्य--

----- कहीं-कहीं सम्पूर्ण वाक्य ही विस्मय सूचक होता है यथा--

वाह भाई साहब, इससे क्या आप का यह मतलब है कि मैं पैदल चल ही नहीं सकती ? --(बी0ए0- 59)

धत्तेरे की, तुम अब तक खाक नहीं समझे (रायबहादुर- 166)

यह तो महाराज के ही मंत्री का लिखा हुआ है और इस पर स्वयं महाराज के हस्ताक्षर भी हैं। --(तरलतरंग- 131)

हाय। इस सुन्दर बालक को किस निर्दयी ने इस भयानक वन में छोड़ दिया है (तरलतरंग- 110)

इस समय तो आप अजब तरह की बातें कर रहे हैं।(अंगूठी का नगीना-169)

4- पदबंध

व्याकरणिक अर्थ की दृष्टि से वाक्यांश या पदबंध परस्पर सम्बद्ध एकाधिक शब्दों के समूह है जो किसी बात का संश्लिष्ट बोध कराने में सहायक होते हैं। अर्थ की दृष्टि से सभी शब्द भेदों के परस्पर संयोग से अनेक प्रकार के पदबंध बनते हैं। विवेवेदी युगीन पदबंधों का संरचनात्मक अध्ययन दो दृष्टियों से किया जा सकता है।

(1) सम शब्द भेद मूलक पदबंध:- अर्थात् जिनमें एक ही शब्द भेद के समान शब्दों को रखा गया है। [1] द्विरुक्तिवाचक शब्दों के अन्तर्गत समशब्द भेद मूलक पदबंधों को देखा जा सकता है।

(2) विषम शब्द भेद मूलक पदबंध:-

इस वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न शब्द भेदों के संयोग से बने पदबंधों को रखा गया है।

यहाँ पर क्रमशः रचना के उपर्युक्त दोनों दृष्टिकोणों को ध्यान में रख कर प्रत्येक शब्द भेदों के अन्तर्गत निर्मित विभिन्न पदबंधों को दिखाने का प्रयत्न किया जा रहा है —

4-क-1 . संज्ञा पदबंध - 4-क-1-क(सम शब्द भेद मूलक)

(1) द्विरुक्तित शब्द:-(1) कौड़ी कौड़ी (तुलसीदास-9) बोटी-बोटी(राजकुमारी-117)
चिट्ठी पत्री(तारा-58) बलिबुद्धि(नवावनन्दिनी-2)
धर्म अधर्म(प्र0या0-28) व्यापार वाणिज्य(प्रभा1924-503)

(2) सम नाम अथवा शब्द द्वारा:-

अनंग पाल के राज्य का उत्तराधिकारी कान्यकुब्ज पृथ्वीराज चौहान (संयोगिता ह0-9)

पंगु राज जयचन्द- - - (संयोगिता हरण-34)

मंदिर के अधिकारी महात्मा हरिहर शर्मा(र0 वेगम-2)

योगिनीपति पृथ्वीराज- - (संयोगिताहरण- 35)
देवताओं के राजा इन्द्र —(,, -50)
त्रिलोक के मालिक कैलाशपति(,, - 87)
निमि कुल के राजा विदेह (महावीर चरित- 4)
महात्मा कौशिक मुनि का चेला राम(,, -42)
भरत की माँ रानी कैकेई - - (,, -43)

1- अर्थ की दृष्टि से द्विरुक्त शब्दों में से अनेक भले ही कुछ समास के अन्तर्गत भी आ सकते हैं किन्तु रचना की दृष्टि से ये पदबंध ही कहे जाते हैं। शब्दावली के अन्तर्गत इनका विस्तार से विवरण किया गया है। यहाँ पर कुछ उदाहरण स्पष्टीकरण

4-5-1-अ विषम शब्द कोष मूलक

(1) संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा-

विघ्न पर विघ्न(वेनिस का बंका-40)
जलोते पर जलोता (तारा-60)
गाँव का गाँव (संसार-15)
बात की बात (हो सब कुछ है(संयोगिता हरण-33)
मिसरे पर मिसरा (भारतवर्ष-139)
घड़े के घड़े (,, -143)
लड़की की लड़की(तुलसीदास- 7)

(2) संज्ञा + संयोजक + संज्ञा:-

वैश्य और शूद्र(द्रौपदी चीर ह0-56)
फूल और पुष्प (रणधीर प्रेम-86)
दया व धर्म (भीष्म प्र0-31)
दुख तथा चिन्ता(प्रेमयोगी0-21)
अपमान और दुःख(,, -32)
आदर धौर राज्य(धर्मजय-22)

(3) संज्ञा + निपात + संज्ञा

मर्द ही मर्द(मानो बसन्त ना0-11)
अफसोस सब अफसोस(कोमोतलवार-74)
अंधकार ही अंधकार(टा0का0कु0-13)
बालू ही बालू (आरण्यबाला-99)
उत्कंठा ही उत्कंठा(प्र0पा0-158)
धुआँ ही धुआँ (मनोरमा -1925-177)

(4) संज्ञा + क्रियार्थक संज्ञा:-

सर गूँथना (अधखिलाफू0 -84)
बेल बूटे बनाना(,, -84)
पोत पिरोना (,,-83)
माथा गूथना (,,- 84)
हाट बटाना (,,- 214)

(5) संज्ञा + क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा

स्नान करने के लिए पानी(नवाबनन्दिनी-70)
प्यार करने की ख्वाहिश (,, -38)
रसोई पानी करने का भार(उमा-72)
वासा पूर्ति करने की मशीन (भारती-211)

(6) सर्वनाम/ विशेषण + क्रियार्थक संज्ञा :-

कुछ कहने (को) (भारत दर्पण- 72)

तुम लोगों का पढ़ना-लिखना (खोंमोतलवार- 129)

तुम्हारा कहना (तारा- -11)

मेरा कहना (तारा-30)

तुमने क्या करना विचारा है (नवाबनंदिनी- 46)

ऐसा करने से (मानोवसन्त- 31)

कुछ कहना चाहता है (भारती -114)

(7) क्रियार्थक संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा :-

जाने का पता (उमा- 49)
पुकारने की जरूरत (,,-49)
समझने में भूल (नवाबनंदिनी-39)
पहनने की पोशाक (,, -69)
लौटने का इन्तजार (भूतनाथ- 90)
पढ़ने के लिए कमरा (रायबहादुर- 61)
जीने का अधिकार (मौसे -121)

बैठने के लिए जगह (लम्बी दाढ़ी -18)

(8) वर्तमानकालिक कृदन्त + संज्ञा :-

डूबते हुए सूरज (अध0 फू0 -78)

जलते हुए जी (को) (बबबोर न0-87)
हँसती - मुस्कराती उमा सुन्दरी (उमा -11)
धड़कती हुई आग (में) (मजमा रतन न0 -72)
उड़ती उड़ती खबर (संयोगिता हरण-18)
उचटती नजर (प्रेमयोगिनी-58)
जलते हुए कोयले (दुर्गावती-66)
उबलता हुआ पानी (बुद्धू का कांटा-38)

(9) भूतकालिक कृदन्त + संज्ञा :-

खिली चमेली (अध0 फू0 78)
फूली हुई फुलवारी (अध0 फू0-78)
उतरा हुआ चेहरा (राजकुमारी-5)
मरा हुआ बेटा (,, -144)
बैठा हुआ तारा (तारा- 19)

फटो लंगोटी (रा बबहादुर-82)

देवा-ज्वाला-मार्ग (मीरा बाई- 75)

परित्यक्त वनलता (दुर्गावती-60)

सूखी लकड़ी (उसने कहा था -51)

4-क-1-ग संज्ञा पदबंधों का विस्तार

(1) समानाधिकरण सर्वनाम/ विशेषण द्वारा :-

मैं, महात्मा कौशिक मुनि का चेला राम(महावीर चरित ना0-42)

वह, भारत की माँ रानी कैकेई (महावीर चरित ना0- 43)

तुम, निराधार सेवक को (रणधीर प्रेम-112)

मुझ, अभागिनी संयोगिता के (संयोगिताहरण- 102)

मैं, दास राजा अश्वपति (सावित्री- सत्यवान- 13)

मैं, इनकी पुत्री मैं पत्नी सुशीला (,,, -13)

(2) विशेषण द्वारा :-

ये दुष्ट रिश्वती, निर्दयी आदमी(सर01904-20)

बहुत परोपकारी साधु (नागानंद- 67)

वे आकर्ण विस्तृत मृगोपम आँखें (उमा-3)

एक तपोपुंज, प्रलम्बकाय, अतिदर्शनीयवेश शरीर(र0बेगम- 4)

उन पापी कलंकी गोरे अंग्रेज सौदागरों (टा0का0कु0 14)

इन अभागी कुछ बड़ी दासियों को (,, -14)

गुलाबी रेशमी कपड़ा - -(सु0वि0-11)

एक शीतल सुगंधित बयारें -(संयोगिताहरण- 96)

तुम्हारी जैसी चंचल कामिनी (गंगावतरण- 87)

कैसी अच्छी नौकरी - -(दुर्गावती- 44)

यह कैसा असह्य वचन (उ0रा म0च0 -21)

वो लोग बुड्ढे पतले बंगाली बाबू(रवरा सोना-25)

कैसा रमणीय शोभायमान धाम (सती चिन्ता -80)

छोटे छोटे निर्वंश राजाओं (ऊषा अनिरुद्ध -81)

ऐसे दानी नरेश - - (राजा शिवि-90)

4-क-2 सर्वनाम पदबंध - 4-क-2-क (सम्बन्ध बोध मूलक)

जो जो (तारा-60) जिनको जिनको - (तारा-8)

तुम खुद (रा0 वेन-88) किसी-किसी (टा0का0कु0-31)
जो कुछ (वि0क्सी0 -91) अपना अपना (खरा सोना-40)

4-क-2-ख - विषम शब्द भेद मूलक विस्तार— समानाधिकरण—

पंचतत्व के पुतले हम तुम (संयोगिता हरण- 110)

अयचन्द्र के आतंक को रोकने वाला कौन (संयोगिता -25)

बेटो संयोगिता तू (संयोगिता हरण- 31)
घेरे में से निकल भागने वाला मैं (वि0क्सी0-144)
क्षत्रिय का बच्चा तू (महावीर चरित ना0- 30)
क्षत्रिय के लड़के तू (,, ,, -30)
बेटा तुम)(महावीर चरित ना0110-111)
बहू तुम)

(सर्वनाम पदबंध बहुत ही कम हैं, जो है भी वे सर्वनाम पदबंध न हो कर अन्य शब्दों के साथ संज्ञा विशेषण पदबंध बनाते हैं)

4-क-3 विशेषण पदबंध - 4-क-3-क- समशब्द भेद मूलक -

(1) द्विरुक्ति -

दुष्ट दुष्ट (कैमोलतवार- 142) दस-बारह-(राजकुमारी- 72)
बूढ़ बूढ़े - बूढ़े (द्रौपदी चीर-7) मैला -कुचैला (नवाबनंदिनी-51)
बढ़िया बढ़िया (टा0का0कु0 6) दो चार (पी0टा0- 5)
छोटा-मोटा 'नीलमणि- 20) ऊँच नीच (प्र0या059)
छोटी छोटी (कर्म-47) नई-नई (र0र0 -42)

(2) संयुक्त / समानाधिकरण विशेषण द्वारा :-

इतना बड़ा(छाता)(सर01904-123)
ऐसे निष्ठुर(वचन) (नागानंद-63)
एक आध- मोटी-मोटी (के बातें) (उषा -120)
अति सूक्ष्म सौवर्ण तार(नवाबनंदिनी-65)
परम-पुनीत '(दिन) (र0वेनक-1)
बड़ा, नया, अनोखा, ईमानदार, चतुर(बाज)(टा0का0कु0-2)
पक्का बेवकूफ (आदमी) (मनोविनोद ना0-85)
बड़ी बड़ी मनकीक आदि)(सु0वि0-139)

4-4-3-ख विग्रह शब्द कोष मूलकः-

(1) संज्ञा + विशेषण-

अत्याचार पीड़ित (देश) (टा०क०कु०-586)

देश प्रचलित (कानून) (टा०क० कु०-567)

बुद्धि हीन(पुरुष) (राजबहादुर- 87)

पद दलित (स्त्री) (प्रेमयोगिनी-25)

मन मलीन (वेश्या)(अक्षय कुमार-43)

(2) संज्ञा + का के की + संज्ञा :-

धाँग की धाँग (स्त्रियाँ) (माधवानलकाम०-19)

झुण्ड के झुण्ड (पक्षी) मल्लिका देवी-5)

गरीब के गरीब(पुरुष वर्ग) चौहानी तलवार-105)

दल के दल(मुगल) आनन्दमठ- 79)

गठ्ठ को गठ्ठ (लकड़ियाँ) चौहानी तलवार- 33)

ढेर का ढेर (पुष्प) (टा०क०कु०-13)

(3) संज्ञा + के, का, की + विशेषणः-

हृदय का गंभीर (व्यक्ति)(टा०क०कु०-110)

दिल के काले ((,, -115)

धुन के पक्के (व्यक्ति)(मानोवसन्त-45)

माता का कलंक (पुत्र) (मानोवसन्त- 46)

मन के अच्छे(पुरुष) (,, - 86)

आँख का अंधा(व्यक्ति) गद्यमाला-157)

(4) संज्ञा + सादृश्य सूचक शब्दः-

पत्ते से(हाथ) (ठे०हि०ठ०-17)

रघुनाथ राय सरीखे (व्यक्ति) मानोवसन्त ना०-96)

फूल जैसी(कन्या) (दुर्गावती-58)

फूल- फूल सरीखे (चेहरे)(,,-60)

वज्र जैसी (कठोरता (''- 106)

फूल सी (देह) आ०हि०-232)

बच्चों सी(बातें) (अरण्यबाला-55)

(5) संज्ञा + सादृश्यसूचक शब्द + विशेषण:-

कामदेव के समान सुन्दर(पुरुष) ना आनंद-24)

वज्र से भी अधिक प्रचण्ड(गर्जन)(ना आनंद-78)

कुटकी जैसो कड़ुवा (वचन) (आ0डि0232)

मुँडेरी से ऊँची (लहर) दुर्गावती-77)

पृथ्वी से भी बड़ा (पेट) (मानोचनन्द ना0-46)

क्षय को सरीखी असाध्य बीमारी(,, -94)

(6) संज्ञा + कर्तृवाचक कृदन्त:-

हस्तिनापुर जीने वाले (क्षत्रिय) शकुन्तला ना0-75)

मंगल करने वाले (जय के लक्षण(महावीर चरित ना0- 23)

जीवन बचाने हारा(श्यामापोषा)(क्से बेनिस का व्या0- 79)

समाचार लाने हारा(दूत) (वेनिस न0व्या0 व्या 0-38)

दूध पिलाने वाली(मैं धाई माँ) बनवीरना0 -43)

घी कबके गालने वाली(शीतल सेनी)(,,-55)

बीचर पाथने वाली(दास) छोटीबहू -3)

बातें मारने वाला(ओसवाल सरदार) दुर्गावती- 34)

जागीर हड़पने वाली (कुलोति)(दुर्गावती- 73)

मद बोदने वाला(देव भोडो(,, -74)

(7) संज्ञा + परसर्ग में पर + वर्तमान कालिक कृदन्त:-पवि

धूँध पहुँते (भारत) महावीर चरितना0- 109)

कीचों में काँपती (आँखें) शकुन्तला ना 0- 17)

गंगा में उठती हुई (लहर) सर01907- पृ0119)

आकाश में चमकते (तारे) कृष्णार्जुन युद्ध)

होठों पर उभरती (मुस्कान) (शा सै-82)

(8) संज्ञा + परसर्ग + भूतकालिक कृदन्त:-

खुरों से उठी हुई(धूल) (शकुन्तला ना0- 6)

विरह का सताया हुआ(शेरचरक) नायानंद-43)

माँस से लिखा हुआ(चूड़ामणि)(,,- 76)

जहर की बुझी (कटारी) (नरेन्द्र मो0-69)
गोद में आई दौलत (स्व01907-119)
अपमान के मारे (यवन))(महाभारत ना0-70)
दासत्व प्रथा पर लिखे हुए उपन्यास (टा0का0कु0-561)
जल की भाँजी (लकड़ी) (श्रवणकुमार-121)
मुँह से निकली (बात) (दुर्गावती-75)

(9) सर्वनाम + से + विशेषण:-

अपने से सवाया (कोई) (टा0का0कु0 42)
अपने से अच्छे (व्यक्ति) (,, -182)
उससे पचगुना (धन) (,,- 197)
उससे अधिक (बुराई) (सूर्यग्रहण- 42)
इससे उत्तम (उपदेश) (मानोबल त-19)
सब से प्रिय (बात) (प्रेमयोगिनी- 51)
उनमें से एक (भी व्यक्ति) (,, -168)

(10) सर्वनाम + सादृश्यसूचक शब्द + विशेषण,

तुम से कम बहादुर (जवान) पा0ना0-10)
मेरे सदृश उपाधि धारी (रायबहादुर-62)
मेरे सदृश भाग्यशाली(,, -119)
तेरा ऐसा हृदयवाला(सुखमय जी0-17)
उसका सा कोई (दुख) (प्रेमयोगिनी-51)
तुम ऐसा टेढ़ा विचारवान (,,- 92)
तुम सरीख चतुर (जोध)(श्रवणकुमार-21)
आप सरीखे महात्मा (पुरुष) (,, 94)

(11) विशेषण + से + विशेषण:-

महान से महान(पुरुष) (भारतदर्पण-1)
सख्त से सख्त (आदमी) कोमोतलवार-74)
बढ़िया से बढ़िया(गाना) (प्रेमयोगिनी-79)
अधिक से अधिक (धन) (प्र0या0 147)
कम से कम (वस्तु) (आरण्यबाला-79)
बुरे से बुरे(मार्ग) (कर्ण-96)
कठिन से कठिन(काम) (श्रवण कुमार-9)
निकम्मे से निकम्मे(काम) (प्रतापसिंह-116)

(12) विशेषण + न + विशेषण:-

एक न एक (बिन)(रायबहादुर-109)

कोई न कोई (अयवित) प्रथा०-42)

कुछ न कुछ धन(तिलांजलि-22)

4क-4 क्रिया पदबंध:-

क्रिया पदबंधों के अन्तर्गत पुनरुक्त क्रियाओं तथा संयुक्त क्रियाओं का उल्लेख ही विचारणीय है। यद्यपि यह बात अलग है कि इनका विस्तार होता गया है। इस प्रकार की क्रियाओं का विवेचन स्वतंत्र रूप से तथा व्याकरण अध्याय के अन्तर्गत किया जा चुका है। यहाँ पर स्पष्टीकरण के लिए मात्र कुछ ही उदाहरण दिए जा रहे हैं यथा——

4क-4क- क सम्बन्ध भेद मूलक — संयुक्त क्रियाएं :-

इसके अन्तर्गत द्विरुक्त क्रियाएं तथा संयुक्त क्रियाएं जो कृदन्त रूपों के संयोग से बनी हैं रखी गई हैं यथा——

(1) द्विरुक्त क्रियाएं:-

देखो देखो-(महावीरचरित-88)

उठो- उठो(,, -60)

आ- आ (श्रीगंगावतरण- 27)

जा- जा(,, - 46)

उठ-उठ(दुर्गावती-26)

छोड़ो- छोड़ो(कृष्ण कांत का दानपत्र- 162)

चलो चलो(सत्य नारायण-114)

बताओ- बताओ(,, -115)

आइए आइए (दुर्गावती- 50)

जाओ- जाओ(संयोगिताहरण-30)

देखिए -देखिए(दुर्गावती -105)

(2) संयुक्त क्रियाओं के द्वारा —

क- धातु + क्रियाएं—

बैठ गए(उमा- 94)

देख पड़े(नागानंद- 36)

जा चुके हैं (हेमलता-97)

छोड़ दो (मालविका- 62)

पढ़ लिया (आ०हि०- 113)

कह चुकी हो(भारत रमणी-80)

चल चलेंगी(चनबोर मा03)

हैस दिया करती थी(उमा-25)

मर गया(बुड्ढे का ब्याह-26)

(ख) वर्तमान कालिक कृदन्त + क्रिया-

छरछराता चला आता है (धनघोर ना0-35)

देखते जाते हो (राजकुमारी-30)

फिरतो आतो हो (बुध्दू का कांटा- 36)

उतरतो आ रहो है (शोले -46)

करते चले गें (धनघोर ना0-2)

सुनता रहा -(चाँद बोले- 186)

अपने बोल पढ़ते हैं(कर्मवीर ना 0-43)

रखतो चलो गई है (भारत र0-111)

ताकता रहा आऊंगा (कोरम -58)

ग- भूत कालिक कृदन्त + क्रियाः-

किया करता है (सर0 1904-120)

बताया जाता है (चन्द्रकांता सं0-10)

बढ़ो हुई होगो(कुलदे0 -68)

दिया जाता है (या0त0- 37)

किया करतो (छोटो बहू-141)

हुआ जाता है (ओपदो घोर डर0-17)

टपका पड़ता है (उ0रा0चरित ना 0- 9)

बैठे घूम रहे है (कर्मवीर ना0- 132)

खोजा करता है (प्रभा 1913-214)

(घ) पूर्व कालिक कृदन्त + क्रियाः-

देख कर निकल देने लगे(सर01904-121)

बोल कर कहेंगो (आनंदमठ-51)

आ कर खड़ा हो गया(हेमलता- 149)

जा कर मिल सकता है (शान्ति-34)

छिप कर सुने गा (राजकु0-31)

छिप कर सुनेगा(राजकु0-31)

घुम कर बोला (,,-55)

कह कर पुकारतो हो(नि0कबी0- 111)

बैठ कर निकला जाते थे(प्रेमाश्रम- 14)

बैठ कर निकला चाहते थे (प्रेमाश्रय-14)
आ कर कहे :-(महात्मा ईसा- 51)
लगा के चल दे (लम्बा बाबू -36)

(छ) क्रियार्थक संज्ञा + क्रिया:-

चरने चली गई है (र० बेगम-47)
देने आई है (रोशन आरा-96)
सुनने लगेंगे (उमा- 27)
बोलने लग गए (सूर्यग्रहण- 7)
तोड़ना चाहते हो (,, -13)
कटवाना चाहता हूँ (दा०का०कु०-339)
आनना चाहता हूँ (वैवाहिक अत्याचार -36)
करना जानता हूँ (नयाधर्मविनो- 39)

4-क-4-ख - विजातीय शब्द भेद मूलक — संयुक्त क्रियाएँ

(1) संज्ञा + क्रियाएँ:-

खर्च कर रहा है (मस्तिष्क देवी-129)
इन्तजार कर रहा है (मृतात्मा- 97)
बोध होता है (बंगसरोजनी- 118)
आग्रह दिखाते हैं (,, -122)
दर्शन करने आ रहे हैं (सूर्यग्रहण- 12)
विश्वास दिलाता हूँ (वैवाहिक अत्याचार- 17)
श्रवण करते हैं (उत्तर राम चरित-6)
आज्ञा देते हैं (,, -138)
प्रस्थान किया (नागानंद -22)
शयन कर रहे हैं (रुक्मिणी- 3)
प्रणामकिया (मर्यादा- 1979- 314)

(2) विशेषण + क्रियाएँ:-

विकास होती है (सर० 1904- 157)
ठंडी कर ली (शकुन्तला ना०- 11)
चौथा कर लिया (मस्तिष्क -140)
पूरे हो गए (,,- 57)
अच्छी होती है (प्रेमयोगिनी- 54)

पचके बोलते हैं (मनोवस्न्त ना0-11)
टेढ़ो हाने लगो(,, - 41)
साफ करते हैं (टा0क0कु0-140)
फेंका पड़ गया (,,- 534)
मोटे बन रहे हैं (,, - 248)
पुलकित होने लगता है (कृष्णार्जुन युद्ध-61)
सुहावनो लगतो है (नागानंद- 8)

(3) क्रिया विशेषण + क्रिया:-

एक एक रो उठो(उमा- 85)
वेग-वेग आता है (शकुन्तला ना0 -70)
पीछे पीछे चल पड़ा ("ल ना0-6)
आगे आगे आया है (नवाबनंदिनी- 32)
कभी कभी बोल लिया करते हैं (प्रेम यो0-105)
शोघ्र हो ग्रहण करो(कृष्णकान्त का वा 0 111)
इधर उधर दौड़ा करते हैं (ठ0ठ0गा0-186)
झटपट ले आओ--(रायबहादुर- 15)
जल्दो रोकिए --(रणधीर प्रेम0- 114)

4-क-5 क्रिया विशेषण पदबंध - 4-क-5-क(सम्भाव्य भेद भूतकाल)

क्रिया विशेषण पदबंधों को बहुत बड़ी संख्या है । शब्दावली तथा अव्यय प्रकरण में क्रिया विशेषण के विभिन्न भेद दिए जा चुके हैं यहाँ पर पदबंध रूप में कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं —

(1) द्विरुक्ति द्वारा:-

कभी कभी (राजकुमारी-62) जैसे-जैसे(द्रोपदी चीर0-62)
जब जब(तारा-60) तैसे- तैसे(,,- 62)
अभी अभी (रायबहादुर- 123) पीछे पीछे(नवाबनंदिनी- 32)
ज्यों ज्यों (,, - 105) आगे आगे (,, -32)
त्यों त्यों (,, -105) धीरे धीरे (उमा- 2)
करीब करीब (,,-130) शनैः शनैः (मिथाइ कुसुम- 130)
वेग वेग (शकुन्तला ना 0-70) जोरशोर (,, - 130)
यहाँ वहाँ (म0चौ0 44) जल्दोजल्दो (1949/14 हरिहरस म

4-क-5-ख विषम शब्द भेद मूलक:-

(1) संज्ञा की द्विरुक्ति से :-

किनारे -किनारे (राजकुमारी-9) | बन-बन (प्रेमयोगिनी-123)
द्वारे - द्वारे (संसार-26) | दिन-दिन (अरुंधती-101)
गली- गली (रायबहादुर-85) | घर-घर (कौमोलखार- 35)
सबेरे सबेरे (संसार-66) | रोज़ रोज़ (तारा -90)

(2) ~~संज्ञा~~ संज्ञा + निपात + संज्ञा:-

मन ही मन(स०1907-119) | किनारे ही किनारे(राजकुमारी- 30)
दिल ही दिल (तारा- 82) | रोज़ ब रोज़ (तारा - 84)
दिन ब दिन (प्रेमयोगिनी-3) | कूचा ब कूचा "(नवाबनंदिनी- 95)
लड़के ही लड़के (संसार- 27)

(3) संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा-

पैर पर पैर चढ़ा कर बैठी हुई (संसार-12)
दिन पर दिन (प्र०पा० -9)
बात की बात में उड़ जाता है (माधवानल-85)

(4) संज्ञा + परसर्गीय शब्दावली-

गंगा किनारे (स०1907-119)
कृष्ण के समीप (कृष्णार्जुन युद्ध- 44)
दरोगा के पास गया (चन्द्रकांता-25)
संध्या के पहले ही (दा०क०कु०-57)
ब्याह के पहले देखा था(भारत र०78)
बाग के भीतर (तारा-74)
पेड़ के नीचे पहुँच कर (चन्द्रकांता सं०-107)
गाँव के निकट पहुँचा (पि०क्षी० -177)
डाले के बीच में - -(बी०द०-3)

(5) संज्ञा + परसर्गीय शब्दावली + कृदंत + निपात:-

बैरा होते ही - - (दू०ब०-51)
वनों के बाहर निकलते ही (सूर्यग्रहण-104)
तट पर आते ही -(कृष्णार्जुन-61)
बाहर देखते हुए (देता) उसने कहा-51)

(6) संज्ञा + अव्यय + परसर्ग

महीनों भर तो (मानोवन्तर ना0 35)
पहरों लौं (रोता रहा (माधवानल-44)
स्वर्गों लौं (पहुँचा) (,,-140)
समुद्र पर्यन्त (राज्य करता है) (शकुन्तला ना -46)
देर तक (लगाए खड़े रहे (आ0वा0-41)
दिन भर (बैठे बैठे (सर0 1904- 308)
जिन्दगी भर में (वि0क्षो0 -144)
रात भर से (जागने के) (शकुन्तला ना0 57)
पल भर को भी (नहीं रुके) (चन्द्रधर-26)
छुटपन से ही (मानोवन्तर सना0-11)
जब भर ही में (,, -26)
बीच ही में छोड़ (,,- 29)

(7) सर्वनाम+ संज्ञा-

इस समय (सर0 1903-99)
उस रोज (कहा) अवध कुमार-102)
उन दिनों (डोल रहा) (छोटी बहू -98)
इसी समय (सुन लिया) (उमा - 16)

(8) विशेषण की द्विरुक्ति द्वारा-

साफ साफ कहा (विराट कुसुम0-39)
अलग -अलग (जा कर (मर्यादा-1979-34)
ठीक ठीक (कहा) ता रा-94)
धीमी धीमी (गरम होने लगी)(ठे0हो0ब0-37)
कुछ कुछ समझ लिया) (आत्मदाह- 101)
प्रथम प्रथम (अवहेल हुआ हूँ (द्रौपदी चीरहरण-45)

(9) विशेषण + संज्ञा + परसर्गीय शब्दावली-

एक अठवारे पीछे (कहा)(छोटी बहू-114)
दो पहर पीछे(उसे चेत हुआ(,,-174)
दो महीने बाद ——(पी0द0- 100)
कुछ दिन पहले (आए थे) (ओसे-2)
बहुत देर से (बाट देख रहा हूँ(स्वामीभक्ति-11)
ऐसी रात में (कहाँ जाते हो) (कृष्णार्जुन युद्ध- 65)

अट्ठ अवसर पर(आज) (सत्यनारायण-16)

बारह बजे रात को (हैगा) बुधवार आ0-35)

(10) विशेषण+ संज्ञा + अव्यय:-

कुछ दिनों तक (पड़ा रहा(अह्न बु0- 196)

इतने दिनों तक (कहाँ थे) (उमा- 15)

बैंलोसरोज तक (ऐसे हो रहे(बुधवार-आ0- 5)

अपनो जिन्दगो भर में (नहीं देखा (पि0कसौ0-144)

(11) विशेषण + क्रिया विशेषण:-

इतनो जल्दो -जल्दो (कह कर भगाया चाहते हो)(चन्द्रकांता-57)

बहुत होले होले से(आंसो(माधवा नल-61)

ऐसे चुपचाप (आते हो)(मानोवसन्त मा0- 35)

इतने जोर से चिल्लाने का (,, -93)

बड़े जोर से दौड़ा (नवाबननिदनो-10)

क्रिया को द्विरुक्ति:-

इसके अन्तर्गत वर्तमान कालिक कृदन्त भूतकालिक कृदन्त और पूर्वकालिक कृदन्तों को द्विरुक्ति से बने क्रिया विशेषण पदबंधों को रखा गया है यथा—

(12) वर्तमान कालिक कृदन्त:-

(लड़को को) मारते-मारते (लाया) (मानोवसन्त-22)

चलते चलते चला गया(छोटी बहू -23)

घुमते घुमते कहा(विवाह कुसु0- 13)

करते करते(सोचा) (दुर्गा बलो- 81)

जाते -जाते (तारा- 87)

उठते उठते बुझने लगा(कृष्णार्जुन युद्ध- 10)

रोते रोते गले मिले(राजकुमारी-47)

खींचते खींचते थक गया(डोयवो चोर 68)

चिट्ठी लिखते -लि- लिख ते निकल आया(अरण्यबाला-60)

(13) भूतकालिक कृदन्त:-

बैठो बैठो सोचतो रहो(तारा- 60)

पड़ो पड़ो देखो (छोटो बहू-23)

खड़ो खड़ो देखतो रहो (राजकुमारी- 59)

हिला हिला - चमका चमका कहो(संसार-18)

4-क-5-ग- विभिन्न शब्द भेदों से बने क्रिया विशेषण पदबंधों के कुछ विस्तृत रूप---

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि क्रिया विशेषण पदबंधों की संख्या बहुत अधिक है फलस्वरूप विभिन्न शब्द भेदों के संयोग से इनका विस्तार इतना लम्बा चौड़ा है कि उनका अलग - अलग विभाजन करना कठिन हो जाता है। उदाहरण के तौर पर यहाँ पर इसी प्रकार के कुछ विस्तृत क्रिया विशेषण पदबंधों को देना रोचक होगा यथा---

वे, उस दिन एक जहाज पर दिन भर भी स्थिर नहीं होते थे(र0बेगम-3)

वे, कभी कभी शिविर के बाहर निकल कर कुछ दूर तक इधर उधर घूम आते थे - - - - (रंगमहल में हलचल- 3)

रोशन, यह सुनते ही पागल की तरह छटपटा हुआ बाहर को दौड़ गया - --(राजकुमार)- 86)

चिन्ता में पड़े हुए, करवटें बदलते , जागते -जागते ही रातें बीत जाती हैं (नवाबनंदिनी- 2)

पड़े बेगम के सदा आलस्य में पड़े पड़े दिन पर दिन बीतते चले जाते हैं (नवाबनंदिनी-2)

हाथ में फूलों की माला लिए हुए धीरे धीरे मुस्कराती हुई उनके सामने आ रही है (नवाबनंदिनी- 5)

बड़ी देर तक सिर नीचा किए ही सोचने विचारने के बाद पूछा- - -

वह, अब रसोई घर में जाते हुए मन ही मन सोचने लगा(टा0का0कु0-66)

इतना सुनते ही जोर से हँसते हुए कहा(सूर्यग्रहण- 81)

किन्तु , वे मराठे सैनिकों के बहुत ही पास पहुँच जाने पर भी चुपचाप अपनी जगह पर बैठे रहे - - - - - --(सूर्यग्रहण- 90)

जामनी से बाहर निकलते ही औरंगाबाद की ओर बढ़ने लगे(सूर्य ग्रहण-104)

अब शीघ्र चल कर पास ही डट जाय(सतीचिन्ता- 79)

इस घटना के पीछे , पल पल , मन ही मन पूछने लगी(कुसमकान्त का दान पत्र- 115)

जहाँ जहाँ चोरी-चोरी रात को जाता हूँ (कुमार -79)

4-क-6 परसर्गपदबंध - 4-क-6-क (सम शब्द भेद मूलक)

पूर्व के पदबंधों से ज्ञात होता है कि विभिन्न शब्द भेद मात्र परसर्गों के संयोग से अर्थ की दृष्टि से विभिन्न पदबंधों के अन्तर्गत आए हैं किन्तु परसर्ग की पदबंधता में मात्र परसर्ग का अर्थ तथा अन्य शब्द भेद किस तरह परसर्ग वत प्रयुक्त हुए हैं यही दिखाना मुख्य उद्देश्य है यथा—

(1) परसर्ग + परसर्ग:

आसमान पर से टपक पड़ता (सूर्यग्रहण-84)
मकान पर से घेरा (नवाबनंदिनी-10)
चेहरे पर से मालूम (गा० ज्यो० म प्र0-42)
जमीन में से निकल आते (सूर्यग्रहण- 84)
सेना में का कोई दुष्ट (,,- 101)
घेरे में से निकल भागा (,,-144)
उसमें के मसाला को (वेनिस न0 व्या0- 2)
उनमें से कोई (वि0कसौ0-144)
तुममें से किसी (मानोमस्त ना0 167)

4-क-6-ख- विषम शब्द भेद मूलक:-

(1) परसर्ग + परसर्गीय शब्दावली-

नित्य दान की अपेक्षा(वेनिस न0 व्या0- 2)
(मारने) के लिए(सूर्यग्रहण- 85)
आने के लिए होता है (ट0का0कु0-110)
होने के कारण (नवाबनंदिनी-22)
अलेख के साथ कहा (,, -2)
भैया के पास (,, -3)
आग की नाईं (महावीर च0ना0- 36)
धर्म के अनुसार (प्रभा 1923 -190)
उनके लेखे - (गु0ते0- 87)
धर्म के हेतु(प्रेमयोगिनी-91)
माल के पलटे (शकुन्तला ना0 -10)
औरत की बदौलत (रामबहादुर- 98)

(2) परसर्ग + संज्ञा-

नदी के किनारे (बनबोर ना0-79)
युध के समय (प्रभा1913-191)
फुर्सत के वक्त (रायबहादुर- 114)

(3) परसर्ग + क्रिया विशेषण

नगर के बाहर(सतो विन्ता-110)
स्त्रियों के सामने (बुद्धू का कांटा- 28)
दरोगा के पास (अलनादर -123)
चारपाई के आगे(तारा- 84)
मुह की ओर (ठे0ठ0ठ0-27)
पेड़ के नीचे (बनबोर ना0- 79)
हिरके की तरफ (अलनादर -32)
गाँव के निकट (वि0क0वी0 -377)

(4) परसर्ग + परसर्गीय अव्यय या परसर्ग -

ओठो के भीतर से (मकाबनीबिनो-6)
चरणों के पास से (,, -13)
काम के जरिये से (,, - 14)
होने की वजह से (सूर्यग्रहण-85)
सेना के बीच से (म0विलास-64)
नदी मंडल की ओर से (भालो - 282)

4-क-7 विस्मयादिबोधक अव्यय पदबंध-

विस्मयादि बोधक अव्यय वास्तव में अव्यय नहीं हैं वरन् विभिन्न प्रकार के मनोभावों को अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न प्रकार के शब्दों के समूह ही कहे जायेंगे । संज्ञा , विशेषण, क्रिया विशेषण आदि का प्रयोग जब भावाभिव्यक्ति के लिए होता है तो विस्मयादि बोधक अव्यय ही कहे जायेंगे –

4-क-7-क- सम अन्वय मूलक-

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित वाले शब्दों को रखा गया है —

जय। जय। (महावीर चरित ना0-7)

वाह। वाह। वाह। (मालविका-61)

हाय। हाय। (महावीर चरित -10)

राम। राम। छि: छि: छि: (संसार-168)

शिव। शिव। शिव। (वनवीर ना0 -11)

4-क- 7-ख- विस्मय शब्द बोध सूचक-

इसके अन्तर्गत मात्र विस्मयादिबोधक अव्ययों के विस्तार को दिखाना ही लक्ष्य रहा है, क्यों कि प्रत्येक का वर्ग विभाजन करना कठिन नहीं तो दुरूह अवश्य होगा फिर एक ही वर्ग के शब्द विभिन्न प्रकार के भावों के भी सूचक हैं अतः विस्मय बोधक रूप में उनकी प्रचुरता के विस्तार को ही मात्र दिखाया गया है यथा—

क्यों, मित्र। (मल्लिकादेवी-4)

अय, दयाधाम। (,,- 57)

ऐसो भाली दिल्लगी। (मानोपदेश ना0-28)

अरे, राम, राम। (प्रेम योगिनी-71)

लो, जिलानी जी। (राजकुमारी- 103)

अच्छा लो। (प्रेमयोगिनी- 18)

धन्य वीरों। धन्य। (संयोगिता हरण-45)

अरे, ना, ना। (वन वीर ना0 4)

वाह तेरे की। (स्वामी भक्ति-31)

हैं, यह कैसे? -(ऊषा अनिरुद्ध- 60)

वाह भाई साहब। (चा0 च0- 59)

हैं, यह क्या।। (सती चिन्ता -50)

बेशक। हाँ हाँ। (रायबहादुर- 31)

शाबाश। मेरो प्यारो शाबाश। (स्वामिभक्ति-32)

अरे बाप रे। (मानोपदेश- 41)

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

भाषा के प्रसार और सम्पन्नता के साथ ही साथ जनसाधारण के भाव, विचार और अनुभव आदि सहज, प्रयोग के रूप में व्यक्त न हो कर मुहावरों और कहावतों में ढल जाते हैं । इनका अर्थ सामान्य भाषा से अधिक प्रभावशाली और शिष्टग्राह्य होता है । यद्यपि यह निश्चित है कि द्विवेदी युग में भाषा को परिमार्जित और परिनिष्ठित बनाना ही मुख्य लक्ष्य था किन्तु साथ ही साथ भाषा में सजीवता, सूक्ष्मता, रोचकता एवं चुस्ती प्रदान करने के लिए युग के गद्यकारों ने मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग यथा स्थान किया है । शुद्ध विचारता पूर्ण साहित्य की अपेक्षा रचनात्मक साहित्य- उपन्यास, कहानी, नाटक आदि में इनका प्रयोग अधिक हुआ है । इन लाक्षणिक प्रयोगों का अध्ययन दो वर्गों में विभक्त करके किया जा सकता है :-

मुहावरे
लोकोक्तियाँ

5- 1 मुहावरे--

लाक्षणिक प्रयोग की दृष्टि से ~~मुहावरों~~ मुहावरे पदबंध के रूप में वाक्यों में आते हैं किन्तु इनके मूल में निहित अर्थ सामान्य पदों से विशिष्ट होता है। रचना की दृष्टि से प्रत्येक मुहावरे का अन्तिम पद क्रियार्थक संज्ञा होता है किन्तु प्रयोग के अनुसार उसका परिवर्तन संज्ञा, विशेषण क्रिया- विशेषण और क्रिया के रूप में भी सम्भव हो जाता है ।

हिन्दी में प्रयुक्त इस प्रकार के मुहावरे फारसी, शैली के देन हैं। चूँकि इस युग के अधिकांश लेखक अरबी - फारसी शैली से प्रभावित थे, फलस्वरूप भाषा में व्यावहारिकता लाने के लिए उन्होंने मुहावरों का प्रयोग यथा स्थान निःसंकोच रूप से किया है । लाक्षणिक अर्थ समन्वित होने के कारण मुहावरों के प्रयोग से वाक्यों की शैली में भी भिन्नता आ जाती है ।

मुहावरों के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि इस युग में भी पूर्व निर्मित मुहावरों का ही पिष्टपेषण हुआ है । ऐसी स्थिति में यह अनुमान लगाना कठिन है कि युग में कौन-कौन से नवीन मुहावरे प्रयुक्त हुए हैं। फिर भी प्रयुक्त मुहावरों का अध्ययन निम्नलिखित आधार पर करना सुविधाजनक होगा- यथा:--

मुहावरों के उपादान की दृष्टि से भेद

रचना की दृष्टि से मुहावरों के भेद

अर्थ की दृष्टि से मुहावरों के भेद

5-1-क- मुहावरों के उपादान की दृष्टि से भेद:-

मुहावरों का निर्माण सामान्य रूप से जिन आधारों पर होता है उन्हें मुहावरों के उपादान कह सकते हैं। ये उपादान शरीरिक अंग, मानवजीवन से संबंधित वस्तुएं, मनुष्येतर प्राणी मानव मस्तिष्क और हृदय से निःसृत विभिन्न प्रकार के भाव तथा सामान्य जीवन घटित व्यापार, गुण, तक हो सकते हैं। निम्नलिखित मुहावरे अंग तथा उसकी क्रिया को ध्यान में रख कर दिए गये हैं जिनमें अलक्रम का ध्यान भी रखा गया है —

5-1-क-1 अंग तथा उनके व्यापार संबंधी-

बाल- बाल बाँका करना (सूर्यग्रहण-80)
बाल छूना ---(टा0का0कु0- 200)

सिर- चिकने सिर वाला जोगी(श कुन्तला 17)सिर पर चला आना(तारा-38)
सिर घूमना (नरेन्द्रमोहिनी-22) सिर पर पैर रख भागना (श्रीमती मंजरी-58)
सिर पर बिजली टूटना (छोटी बहू -132)
बेसिर पैर की बातें करना (रायबहादुर- -115)
सिर पटकना (राजकुमारी- 35) सिर चढ़ाना(टा0का0कु0-392)
सिर पर ले कर भटकना(भारतमणि-10) सिर नीचा करना(कृष्णार्जुन -55)
सिर पर पैर रखना (,,- 111) सिर पर पहाड़ निकला- उठाना (शैले-8)
सर खपाना(भारती-21) आसमान सिर पर उठाना (,,-1)
सिर आँखों पर लेना (,,-118)

माथा-
माथा खाना(सत्य नारायण- 50) माथा टेकना (उसने कहा था -
माथा खपाना -(भारती-10) दूसरों के माथे कुलौड़ियाँ खाना (सेवासदन-12?
माथा मारना(,, - 25) माथा चकराना (गंगावतरण- 47)

दिमाग:-
दिमाग दुरुस्त होना (रायबहादुर-166) दिमाग चाटना(टा0का0कु0- 275)
दिमाग चढ़ना (दुर्गावती -55) दिमाग में पहुँचना(?।मसिंह-शर्मा-8)
दिमाग ठंडा होना (शैले - 103)

बुद्धि तथा अक्ल:-

बुद्धि पर पत्थर पड़ना (कल्याणकल्प- 179) अक्ल का घास चरने जाना (नलिनीबाबू-28)
बुद्धि का चरने जाना (रायबहादुर- 78)   अक्ल आग में जल गई (रायबहादुर-83)

भाग्य और किस्मत:-

किस्मत सोना (प्रेमयोगिनी- 125)   भाग्य फूटना (रायबहादुर- 3)

आँख -

फूटी आँखों न सुहाना (कुलनारी- 58)   आँखें फूटना (तारा- 38)
आँख की पुतली (उमा- 61)   आँख फड़कना (फूलभुलैया-63)
आँख का पर्दा खुलना (प्रेमयोगिनी-14)   आँख खुलना (राजकुमारी-8)
आँख खोलना ----- (,,- 146)   आँखें चार होना (रायबहादुर- 11-12)
आँख लड़ना (,,- 10)   आँख बिछाना (,, - 28)
आँख फाड़ फाड़ कर ताकना (गोसै-1)   आँख में सुर्खी छा जाना (टा0का0कु0-20)
आँख में धूल झोंकना (,,-43)   आँख पथराना (सत्यनारायण-10)
आँख का लगना (उ0रा0च0ना0- 109)

होठ— नैन

होठ फेरना (शकुन्तला ना0 40)
नैनों की कटारियाँ चलाना (प्रेमयोगिनी- 10)

आँसू—

आँसुओं का तार बँधना (नरेन्द्रमोहिनी- 17)
सौ-सौ आँसू बहना (सावित्री-सत्यवान-22)

नाक—

नाक कटाना (छोटी बहू-15)   नाक रगड़ना (ठ0ठ0मी0- 189)
नाक भौं सिकोड़ना (टा0का0कु0-231)   नाक में दम होना (सुखमय जीवन-17)
नाक चढ़ाना (,,- 430)   नाक कटना (मानसरोवर-74)

कान:-

कान काटना (छोटी बहू-93)   कान पर जूँ रेंगना (सूर्यग्रहण-10)
कान तक पहुँचना (पू0ह0-9)   कान खुला रखना (टा0का0कु0- 199)
कान में पड़ना (नरेन्द्र मो0-1)   कान जल उठना (,, - 506)
कान खोल कर सुनना (रायबहादुर-168)   कानफटना (बोले- 103)
कान पकड़ना (भारत रमणी- 85)   कानखुजना (सुखमय जीवन-16)

चेहरा:-

चेहरा लाल होना (विवाह पुष्प0-149) चेहरा मुर्झाना (भारती- 11)

चेहरा पीला पड़ना (,, - 149) चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना (भारती-152)

मुँह-

मुँह पर आग रखना (छोटी बहू-35) दूसरों का मुँह देखना (सूर्यग्रहण-51)
मुँह में आग लगाना (,, -21) मुँह फूलना (टा0का0कु0-236)
मुँह बिचका (छोटी बहू -53) मुँह फीका पड़ना (टा0का0कु0-534)
मुँह काला कर के आना (चा0स0-2) मुँह बन्द करना (रायबहादुर-15)
मुँह पीला पड़ना (रजनी- 145) मुँह सम्हाल कर बोलना (,, -31)
मुँह लाल होना (भारतरमणी-110) मुँह लगना- (,, - 31)
मुँह उजला करना (,, -130) मुँह में कभी पानी आना (,, - 50)
मुँह बाये रहना (बुद्धू का काटा-21) मुँह पर थूकना (,,- 24)
मुँह सफेद होना (,, -42) मुँह के बल पटकना (,,- 190)

दाँत:-

दाँत से तिनका काटना (छोटी बहू-20) दाँत गड़ाना (नाट्यमाला- 162)
दाँत पीसना (सूर्यग्रहण- 91) दाँत लगाना (,,- 162)
दाँत बजना (उसने कहा था-53)

ओठ:-

ओठ चाँपना (बोले- 42)
ओठ उथलती) (रणधीर प्रेम- 131)

गला-

बात का गले उतरना (रणधीर प्रेम-115) आफत गले में पड़ना (बोले- 102)
गले को रेतो (रायबहादुर- 84)

छाती:-

छाती पाक- पाक होना (आनन्दी मंजरी-2) छाती फुला कर चलना (भारतरमणी-130)
छाती फटना (टा0का0कु0-537) छाती फूल उठना (रायबहादुर- 70)
छाती पे चढ़ बैठना (भा0प्र0-96)

जी-

जी भरना (मालविका -42) जी का चक्कल होना (टा0का0कु0-164)
जी ठंडा करना (चन्द्रधीर ना0-87) जी का आफत में होना (,,-164)
जी खट्टा करना (संयोगिताहरण-80) जी ललचाना (कुमार- 92)

मुट्ठी:-

मुट्ठी में होना (भारती- 273)

पेट:-

पेट में खलबली पड़ना (छोटोबहु-66)

पेट कूच पूजा करना (टा0क्षा0कु0-67)

पेट में चूहे कूदना (उमा- 54)

पेट फटना - - - (,,- 505)

पेट फूलना (श्रीमती मंजरी- 3)

पेट से बाहर निकालना (,,-525)

पेट में आग जलना (भारतरत्न- 24)

पेट में पानी न पचना (मानसरोवर-283)

पेट भरना --- (,,- 79

पेट गिराना (रायबहादुर- 2)

पीठ:-

पीठ ठंडी करना (शकुन्तला ना0-11)

पीठ लाल करना (टा0क्षा0कु0- 184)

पीठ का चमड़ा छुड़ाना (टा0क्षा0कु0- 90)

कमर -

कमर बाँधना (नरेन्द्र मो0-3)

पैर:-

फूंक फूंक पाँव धरना (पु0ह016)

पैर चाटना (भारत रमणी- 24)

पैर में कुल्हाड़ी मारना (भा0लना0-122)

पैर की धूल होना (,,- 37)

पैर पटकना (रायबहादुर-155)

पैर में मेहदी लगाना (सेवासदन-175)

लात:-

लात के देवता '- (विवाह कुसुम-24)

लात मारना (टा0क्षा0कु0- 214)

मुख पर लात मारना (सु0वि0-7)

ऐड़ी:-

ऐड़ियाँ रगड़ना (होली-146)

ऐड़ी से चोटी तक (हत्याहरण- 138)

तलवा:-

तलुए चाटना(सु0वि069)

हड्डी:-

हड्डी सुलगना (रमणी- 7)

हड्डी पसली एक करना (रायबहादुर-34

हड्डियाँ बजाना(विवाह कुसु0-24)

हाड़ हाड़ होना(टा0क्षा0कु0- 107)

रग/रोम

रग-रग में घुसना (टा0क्षा0कु0- 165)

रोम रोम में तार दौड़ाना(उसने कहा05:

रोआं खड़ा होना(रायबहादुर- 39)

5-1-क-2 मानव जीवन से संबंधित उपकरण वाले मुहावरे।-

जो वस्तुएँ सर्वसाधारण के जीवन के अधिक निकट हैं और नित्यप्रति के जीवन से संबंधित हैं वे भी मुहावरों के निर्माण गत उपादान में सम्मिलित हैं। मानव जीवन से संबंधित इन ~~भिन्न-भिन्न~~ उपकरणों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।-

(1) खाद्य तथा पेय संबंधी।-

खाद्य तथा पेय संबंधी पदार्थ जो मुहावरों के उपादान रूप में व्यवहृत हैं अकारादिक्रम से निम्नलिखित हैं किन्तु उनसे निर्मित मुहावरों के उदाहरण ~~क~~ पुस्तक के काल क्रमानुसार दिया गया है यथा——

(1) अचार (2) चना (3) आटा(4) कलेजा(5) कोयला (6) खीर)7) गुड़ (8) घी (9) तिल (10) अंगूर(11) तेल(12)दही (13) दाल (14) नमक (15) दूध(16) नवनीत)(17 पापड़ 18)पानी (18) पूड़ी (19) फल (20) फुलौड़ियाँ (21) मोदक (22) मूँग (23) मलाई (24) मिर्च (25) मेवा (26) रसगुल्ला (27) ~~लड्डू~~ लड्डू (28) सत्तू

प्रयोग:-

पाव भर गुड़ भेज कर खबर लेना(छोटे बहू- 36)
दाल में काला(राजकुमारी- 83)
पापड़ बेलना(माधवानल क-66)
छठी का दूध (तारा-56)
राख में घी फेंकना(चनचोर ना0-45)
आग में घृत डालना(,,- 56)
घाव पर नमक का असर(कौशल की मैं0-53)
दाल में नमक के समान(संयोगिताहरण-99)
तिल की तरह के पेरना (,, -22)
तेल में डाल कर देखना (,,- 99)
नमक हलाल (सूर्यग्रहण- 83)
काल का कलेवा (द्रोपदी चीर हरण- 20)
सत्तू बाँधकर पीछे पड़ना(राजबहादुर- 3)
मुँह में पानी आना "(,,- 50)
चने के पेड़ पर चढ़ना (,,- 102)
मन मोदक उड़ाना(,,- 14)
अचार निकालना(टी0क0कु0- 8)

लोहे के चने चबाना(टा०क०कु०- 153)
आटा दाल का भाव मालूम होना (टा०क०कु०-170)
नमक मिर्च लगाना (टा०क०कु०-240)
कटे पर नमक छिड़कना(,, -399)
आशा पर पानी फिरना (,,- 415)
दूध की मक्खी की तरह बाहर निकालना(दुर्गावती- 45)
नवनीत द्वारा चक्र का खण्डन (प्र०या०-55)
नमक की मछली (प्र०या०-56)
दाल गलना (गद्यमाला- 123)

दूध पिला कर नागिन पालना(भारतरत्न- 69)
टेढ़ी खीर ---(कृष्णार्जुन युद्ध- 81)
मक्खन में मेवा (,, - 5)
मुगल होना (,, - 55)

मन के लड्डू मन में फूटना(सौते- 46)
चुल्लू भर पानी में डूबना (सौते- 123)
तिल का ताड़ बनाना(भारती- 14)
पूरी -मलाई उड़ाना (,, - 37)
खट्टे अंगूर खाने जायेगा(,,- 47)
पानी की तरह बहना(स्वामिभक्ति- 3)
हाथ से रसगुल्ले टपकना(,, - 35)
फल चखना --- (,, - 92)
मूंग दलना (मानसरोवर-20)
पेट में पानी न पचना- 283)
जख्म पर नमक छिड़कना(सेवासदन- 127)
दूसरों के माथे फुलौड़ियाँ खाना-(,,- 156)
यहाँ तक बड़ी बड़ी हाँकना (प्रेमाश्रय- 68)
गरीबी में आटा गीला - (लम्बी दाढ़ी- 180)

(2) परिधान संबंधी-
= = = = = = =

धोती ढीली होना(मल्लिका-भाग- 2-44)
धर्म का जामा(टा०क०कु०-140)
[illegible] का जामा(,,-126)
पैगम्बरी का जामा पहनना(टा०क०कु०-311)
जामे से बाहर होना (,,- 514)

भागे भूत की लंगोटी भली(वरदानी औरत- 50)

5-1-4-3- मानव निर्मित वस्तुएं:-

उपादान रूप में मानव निर्मित वस्तुओं वाले मुहावरों के कुछ उदाहरण अंग संबंधी मुहावरों में दिए जा चुके हैं। यहाँ पर सूची में उपादान रूप में व्यवहृत समस्त वस्तुओं का उल्लेख किया जा रहा है किन्तु इनसे बने मुहावरों में से काल रचनानुसार मात्र उन्हीं को दिखाया गया है जिनका उल्लेख पहले नहीं हुआ है यथा——

सूची:-

(1) उस्तरा | (9) डफली | (18) मोम
(2) खिताब | (10) ढोल | (19) मशाल
(3) चक्की | (11) ढेला | (20) रस्सी
(4) कटारी | (12) तवा | (21) लड्डू
(5) कुल्हाड़ी | (13) दिया | (22) लोटा
(6) चूल्हा, चक्की | (14) दीपक | (23) झाड़ू
(7) जूता | (15) बाँध | (24) हुक्का
(8) ढोंगा | (16) बोझा | (25) सुई
 | (17) बत्ती |

प्रयोग:-

25- कलेजे में सुई चुभाना(राजकुमारी-8)

4- जहर की बुझी कटारी(नरेन्द्र मोहनी-69)

15- बालू का बाँध बाँधना (उषा-57)

17- बत्ती दिखाना (रणधीर प्रेम-124)

14- दीपक का तेल पूरा होना(,,-128)

14- छठी का दीपक स्मरण होना(द्रौपदीचीर-9)

5- पैर में कुल्हाड़ी मारना(मृतमन्द- 122)

4- नैनों की कटारियाँ चलाना (प्रेमयोगिनी-10)

16- बोझा उठाना (राववहादुर- 82)

20- गले की रस्सी(,, -84)

11- ढेले को चोट कहना(,,-87)

19- दिन दहाड़े मशाल का उजाला (राववहादुर-101)

24- हुक्का पानी बन्द करना(ठेठोबाबू-66)

1- गले में उस्तरों की माला डालना(श्रीमती मंजरी-87)

2- किला ढह का जाड़ा (भारती-13)

10- ढोल पीटना (टा०का०कु०-126)

23- हाँड़ी सा मुँह बनाना(,,-418)

6- चूल्हा चक्की से अलग होना(चि०कुसुम-18)

3- चिलती बालू पर पैर देना(मध्यमा ला-138)

9- रोमन को ढफली पीटना (सर०1920-84)

21(18) मोम का लड्डू (प्र०धा०56)

22- मेघों का लोटा होना(सतीपन्ना-24)

23- पकी पकायी हाँड़ी उलटना(,,-104)

13- घर में दिया जला कर मस्जिद में जला लेते हैं(मानसरोवर-164)

7- धूल झाड़ना (भारती रत्नों-49)

12- गर्म तवे पर जल की बूंद के समान (भारती-151)

5-1-क-4-प्राकृतिक पदार्थ संबंधित मुहावरे

(1) अग्नि
(2) आग
(3) आसमान
(4) कौड़ी
(5) काँटा
(6) काई
(7) घास
(8) जमीन
(9) तिनका
(10) धूप
(11) धूल
(12) धारा
(13) पत्थर
(14) पहाड़
(15) पत्ता
(16) पवन
(17) पानी
(18) प्रकाश
(19) फूल
(20) बालू
(21) बिजली
(22) मिट्टी
(23) राख
(24) वज्र
(25) बर्फ
(26) समुद्र
(27) सागर
(28) सोना
(29) हवा

प्रयोग:-

13- छाती पर पत्थर पड़ना(माधवानल काम-95)

22- एक मिट्टी का बनना(कुलनारी)103)

7- अक्किल का घास चरने जाना(नीलमोह कु-20)

23-जल कर राख होना (राजकुमारी-43)

13- छाती पर पहाड़ पड़ना(राजकुमारी-88)

9- बाँस से तिनका न कटना(छोटोबहू- 30)
22- मिट्टी का घौंधा- - (,, -88)
13- पत्थर से कठोर (,,- 106)
21- बिजली को गिरना (रणधीर प्रेम मो0-109)
6- काई सो फटना - -- (,,- 109)
16- पवन की भाँति निकलना(,,- 113)
17- पानी की पोल - - (,,-113)
28- सोने के सुहागने वाले(,,-114)
29-हवा बिगड़ना (मुन्नुलैला-30)
28- सोने की गुड़डी --(रायबहादुर-76)
19- फूलों की सेज - (प्रेमयोगिनी-122)
29- हवा होना (,, -3)
27- सोच सागर (क्रोधचारी- 29)
24- वज्रपात होना (टा का0कु0-119)
24- मिट्टी में मिलना(,,- 132)
17- पानी फिरना (टा0का0कु0-122)
24- वज्र हृदय (,, - 203)
2- आग बबूला होना(,,- 261)
3-8-जमीन आसमान एक करना(,,- 301)
4- दो आँखों का होना(टा0का0कु0-418)
10- धूप के समान हलना (श्रीमती मंजरी-2)
20- बालू का बाँध (उमा-57)
14- फूँक से पहाड़ उड़ाना(संयोगिताहरण-100)
13- गड़े पत्थर उखाड़ना (ऋजार्जुन यु क-25)
11- दूर फेंकना(अरण्यबाला -47)
1- अग्नि में फूँक मारना (चाविका-30)
22- रोजगार मिट्टी होना(भारत रमणी-122)
2- एक दम आग होना (,, -122)
25- एक दम बर्फ होना (,, -122)
2- आग के मुँह में ढकेलना(,, -138)

11- मुट्ठी भर धूल- - - (भारत रमणी-38)

11- पैर की धूल (,, - 37)

2- पेट में आग जलना (,, - 27)

11- आँख में धूल झोंकना (झाँसी -43)

12- धूल चाटना (दुर्गावती- 55)

8- आसमान सिर पर चढ़ाना (झाँसी-1)

12- उल्टी धारा बहना(सतीचिन्ता- 20)

ज्वार भाटा के समान (भारती-14)

15- पके पत्ते होना (,,- 39)

17- पानी फेरना - (,,-40)

17- पानी के बुलबुले की भाँति हवा होना(भारती-44)

2- आग में घी डालना (भारती-260)

26- समुद्र की भाँति गंभीर(,, -154)

9- तिनके के सहारा (मायापुरी- 89)

5-1-क-5- धर्म तथा स्थान संबंधी-

जंगल में रोना (माधवानल -115)

यमपुर जाना(वनवीर ना0 65)

परलोक जाना (रणधीर प्रेम मो0-132)

दुनियाँ भर में धूल चाटना(दुर्गावती-55)

संसार से विदा करना (,, -111)

मौत के घाटक उतारना (,, -134)

घाट देखना - - (दा0का0ग0- 210)

दर दर भीख माँगना(,, - 233)

रसातल को जाना (,,- 247)

जमीन - आसमान एक करना(,,-301)

स्वर्ग का रास्ता लेना (स धनारायण-61)

अदालत का दूरवाजा (अरण्यबाला - 47)

घाट छोड़ना (प्रेमधन -74)

मुल्क में मियाँ मिट्ठू बनना(दुमदार -155)

कर्म के का खाता जाना (लम्बी दाढ़ी -36)

5-1-क-6- संख्या , माप, तौल संबंधी:-

साढ़े तीन हाथ की निशानी (माधवानल -33)

सब धान बाईस पसेरी (,,- 23)

रत्ती भर बात (राजकुमारी-117)

नौ दो ग्यारह होना (फूलनारा -6)

पाव भर गुड़ भेजना (छोटी बहू-36)

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना(र0बेगम-9)

छठी का दूध (रायबहादुर-34)

रत्ती भर लाभ(,, -88)

बावन तोले पाव रत्ती(,,-136)

आठ आना हिस्सा (फूलमुलेया-100)

छः पाँच में पड़ना (उमा - 94)

छठी का दीपक (द्रौपदी चीरहरण-9)

सोलह आना - -(हत्या रहस्य)

आठ पहर चौसंठ घड़ी (टा0का0कु0-207)

सेर का सवा सेर होना (सतीचिन्ता-24)

5-1-क-7- मनुष्येत्तर प्राणी संबंधी:-

1- उल्लू	10- टट्टू	19- भेड़िया
2- कछुआ	11- तोता	20- मक्खी
3- कोढ़ा	12- नागिन	21- मछली
4- कुत्ता	13- बगुला	22- मोर
5- गदहा	14- बछिया	23- मुर्गी
6- चिड़िया	15- बटेर	24- मेढक
7- चींटी	16-बन्दर	25- साँप
8- जूँ	17- बिल्ली	26- सियार
9- ढोर	18- बैल	27 सिंह

प्रयोग:-

12- आस्तीन की नागिन (नरेन्द्र मो0- 69)

1- उल्लू का सा मुँह (फूलमुलेया -95)

23- घर की मुर्गी होना (,,- 16)

20- मक्खी मल कर [illegible] करना(,,-32)

बन्दर की से घुड़की(माधवानल -157)

गिरगिट की तरह रंग बदलना(रणधीर प्रेम- 59)
अड़ियल टट्टू ---(रणधीर प्रेम 83)
मेंढक की सी टर (,, -107)
कछुआ का अण्डा (,, - 144)
उल्लू बनाना (छोटोबहू- 46)
काला साँप — (पी०टा०- 86)
कान पर जूँ रेंगना (कौंसिल के में52)
उड़ती चिड़ियाँ पहचानना (रायबहादुर- 16)
बछिया के ताऊ -- (,,- 41)
गदहे पर शक्कर की गोद लादना(,,-80)
रंगे सियार ---(रायबहादुर- 80)
गदहा कहाना —(,, - 92)
बिल्ली के भाग से छींका टूटना(गंगाजलरत्न -15)
भेड़ की खाल में भेड़िया होना(आ०हि०-13)
झक मारना---------(,, -80)
चींटी की फूँक — (प्र०पा 055)
मछली की याद (,,- 56)
न कच्ची मछली('' -56)
दूध की मक्खी (दुर्गावती- 55)
उल्लू होना (भारत रमणी- 49)
बेचारी टट्टू (विवाह कुसुम-28)
मक्खी मारना (सतीचिन्ता-23)
तेली का बैल (शोले- 1)
हाथ का तोता उड़ना (शोले-43)
मेढक की तरह टर्राना(,,-107)
उल्लू फँसाना(व णिका मित्र-31)
उल्लू का पट्ठा (,,- 90)
किताब का कीड़ा (भारती-13)
साँप के बिल में हाथ डालना (भारती-133)
सिंह की माँद में जा कर लोटना(,,- 134)
बगुला भगत -- (भारती-172)

भकुआ हुआ बैल (लम्बी बाढ़ी -34)

कुत्ते का काशी जाना(,,- 36)

अंधे के हाथ बटेर (उलट फेर -90)

बुझावन टट्टू (बुधवार आ0-119)

5-1-क-8- भाव - मनोविकार एवं अनुभाव संबंधी उपादानः-

भावों एवं मनोविकारों के आधार पर बने मुहावरों की संख्या बहुत ही कम है जो हैं भी वे पुराने उपादानों के मात्र रिपीटेशन ही कहे जा सकते हैं यथा—

अभिमान	क्रोध	भाई
अभिलाष	ख्याल	लाज
असर	आशा	विपत्ति
आनन्द	दुःख	संकट
आलस्य	प्रीति	सुख
आशा	बड़ाई	
इज्जत	मतलब	

प्रयोगः-

आशा का धूल में मिलना(छोटो बहू -109)

क्रोध कीपीना- - (तारा- 78)

लाज की गुरही (भूल-भुलैया-33)

बड़ाई मारना —(रणधीर प्रेम मो0-7)

प्रीति का पैबन्द(रणधीर प्रेम मो-101)

प्रीति की महक (,, - 110)

सुख पर लात मारना (सु0मि0-7)

मतलब गाँठना - - (,,- 7)

आशा का पुल बाँधना(रावबहादुर-11)

आँसा देना - - - (,,- 140)

इज्जत में बट्टा लगना (,,- 147)

आशा पर पानी फिरना(टा0का0कु0-147)

आनन्द फीका पड़ना (,, - 148)

अभिमान से फूलना (,,- 151)

आ लक्ष्य का राग अलापना(टा०का०कु०- 177)
अशान्ति की आग (,, - 207)
आशा में फूलना - - (,,- 296)
विपत्ति का पहाड़ - (,, -396)
वज्र हृदय - - - - - -)(,,- 203)
ख्याल दौड़ाना - - - - - (कौसिल की -54)
असर जमना - - - - - - - (,,- 58)
मोह का वर्षा पड़ना- - - - (आरती-19)
संकट का पहाड़ - - - - - - (सती चिन्ता -70)
दुःख का पहाड़ - - - -(स्वामिभक्ति- 40)

5-I-क-9- गुण आदि से संबंधित :-

गुण आदि उपादानों से बने मुहावरों का उल्लेख विस्तृत रूप से अर्थगत कोष के अन्तर्गत हुआ है । यहाँ पर प्रतिनिधि रूप में बहुत थोड़े से मुहावरे लिए जा रहे हैं यथा——

वज्र मूर्ख (आन्दमठ-
निरा मिट्टी (छोटोबहू -88)
पहाड़ सा दिन (रणधीर प्रेम-101)
कोरी डींग (रायबहादुर- 35)
जल कटी बातें(,,- 131)
टेढ़ी खीर (कृष्णार्जुन-81)
लाल आंखे (आरती-25)
कुम्हली दददू(कुमकार- 119)
अनोखा जी (मनमोरमा0 87)
वज्र हृदय (टा०का०कु०-203)
बेचारी ददददू(विवाह कु०- 28)
कोरा-कोरा उत्तर(अरण्यबाला-57)
धूप की लकीर (मद्यमाला - 127)
काला मुँह (सुखमय जी0-17)
गड़े मुर्दे -(सेवासदन- 14)

5-I-क-10- क्रिया , प्रतिक्रिया तथा व्यापार संबंधी:-

अनेक क्रियाएँ भी मुहावरों के निर्माण में उपादानवत व्यवहृत हैं । ये क्रियाएँ देखने में तो शाब्दिक अर्थ में विशेष नहीं प्रतीत होती किन्तु जहाँ पर ये उपादानवत प्रयुक्त हैं वहाँ इनका अपना लाक्षणिक अर्थ बन पड़ा है, यहाँ पर अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाव हेतु इस प्रकार की क्रियाओं की मात्र एक सूची दी जा रही है क्यों कि इनसे संबंधित अनेक

मुहावरे विभिन्न विभागों के अन्तर्गत आए मुहावरों में आ चुके हैं तथा आगे भी अर्थगत और निर्माणगत भेद के अन्तर्गत दिए जायेंगे । अकारादि क्रम भेद से उपादानवत व्यवहृत कुछ क्रियाएं निम्नलिखित हैं - - - - - -

आना	गढ़ाना	फुलाना
उछलना	घूमना	फंसाना
उड़ना	चाटना	फटना
काटना	चढ़ाना	फेंकना
खुलना	छूना	बेचना
खाना	टूटना	भिगाना
खटकना	टटोलना	बजना
पोसना	भरना इत्यादि	

5-1-क रचना की दृष्टि से मुहावरों के भेद।-

विभिन्न शब्द भेदों के योग से निर्मित मुहावरों को दृष्टि में रखकर रचनागत विश्लेषण द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि क्रिया से निर्मित मुहावरों की संख्या अपेक्षाकृत कम से अधिक है । रचना के आधार पर ये मुहावरे निम्नलिखित हैं :-

5-1-क-1 संज्ञा + संज्ञा

सीख आगर(झोपड़ी चोर -29)	फूल शैय्या (विवाह कु0-59)
वज्र हृदय(टा0का0कु0- 203)	आनन्द सागर(सत्यनारायण-79)
पेट पूजा (,, - 67)	बगुला भगत(,, - 102)
पाषाण हृदय (,, - 359)	नैन बन (सावित्री सत्य0- 17)

संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा।

जिगर के टुकड़े(पु0ह0-14)	हृदय की अग्नि(राजकुमारी- 87)
आँख की पुतली(उमा- 61)	लोहे के चने (टा0का0कु0-153(
बालू का बांध(उमा-57)	जी के जंजाल(,, - 164)
पेट का झंझट (सत्यनारायण-18)	जी के आपत्त (,, - 165)
सिर का शनिचर (,, - 23)	मौत के घाट(सावित्री सत्य0-21)
हृदय का मैल(,,- 24)	प्रेम की गाँठ (,,- 72)

हाथ की खुजली(अरुण कुमार- 48) सुहाग का डोरा (सावित्री सत्य0- 96)

पैर की जूती (,,- 77) सौभाग्य का सूरज(,, -' 96)

पेट की आशा (धर्मांजय-84) पैर की धूल (भारत रमणी-10)

नमक की मछली (प्र0या0-56) दिल के फफोले (शोले -99)

हृदय का टुकड़ा (शोले- 8) कलेजे की जलन (कुमदार -123)

तिनके का सहारा (आयापुरी-286) आस्तीन में साँप (प्रेमयोगिनी- 142)

(अर्थ की विशिष्टता के कारण ये मुहावरे के अन्तर्गत भी आते हैं ।-)

संज्ञा + क्रिया

गाठ फेरना(शकुन्तला ना-40) आँख लड़ना(प्रेमयोगिनी-10)

छिया फटना(राजकुमारी-5) किस्मत ठोना(,,- 125)

आँख खुलना (,,- 8) काठ बनना (बनवीर ना0 -3)

कलेजा फटना (छोटी बहू-37) जी मारना (दुर्गावती-55)

उल्लू बनाना (,, -46) मुँह उतरना (सर01920-263)

कान काटना (,,- 93) अचार निकालना(टा0का0कु0-8)

आँख फूटना(तारा- 38) खबर लेना(,,- 10)

मजा चखाना (,,-78) सिर पटकना(,,- 35)

आग लगाना (,,-38) कलेजा थामना(,,-117)

पैर काटना (श्या0र0-27) पट्टी पढ़ाना- (,,-117)

मुँह छिपाना (,,-) गुलछर्रे उड़ाना (,,-126)

पेट भरना (,,- 79) माल मारना (,,-126)

पेट गिराना(रणधवजकुवँर-2) दिमाग चाटना(,,-168)

भाग्य फूटना '(,,-3) नमकमिर्च लगाना (,,-240)

आँख बिछाना (,,-28) कलेजा पकना (,,-414)

अंधेर मचाना(,,-46) आनफूलना (,,-429)

गले फँसाना (,,-92) कान जलना (टा0का0कु0-505)

आँख खिखिलना (शोले- 51) बातलगना (गद्यमाला-162)

आँख मिलाना (,,-58) दाँत गड़ाना (,,- 162)

कान काटना (,,-103) बाँत समाना (,,-162)

नाक रगड़ना (ठ0ठ0गो0-189)   हृदय दुखना(सुखमय जो0-26)

नाक कटना (मान सरो0-74)   हृदय बेचना (,, -13)

प्रयोग:-

लड़कियाँ जब रोती हैं तब पीट-पीट कर उनका अचार निकालने से क्या फायदा(टा0का0कु0-8)

उसकी बातों से शोभा के कान पटने लगे तो वह रो-रोकर अपने माँ-बाप को बिसूरने लगी- --(शोले- 103)

उसकी राह में आँखें बिछाए किसी खिड़की में बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही हो (शोले- 51)

मालिक चाहे तो करे तुम्हारा पेट क्या" खिराता है - रावबहादुर-2)

संज्ञा + परसर्ग + क्रिया

मिट्टी में मिलाना(राजकुमारी-117) चूल्हे में जाना(मानोबसन्त- 2)

प्रेम को पीना(तारा-78)   चूल्हे चक्की से अलग होना(वि0कु0-18)

संसार से विदा करना(दुर्गावती-11   शरीर को पीसना (टा0का0कु0-60)

मुँह पर थूकना (रावबहादुर- 24)   अंध कूप में पड़ना(,, -122)

देह को जलाना (,, -25)   अभिमान से फूलना(,,- 151)

पानी कीतरह बहाना(,, -46)   रसातल को जाना (,,-247)

तन मन से करना (,,-46)   आँख के सामने फिरना(,,-414)

नशे में चूर होना (,,-140) धूल में मिलाना (,,- 393)

जाल में फँसना   (,,- 161) पेट से बाहर निकालना (,,-525)

प्रयोग:-

कभी- कभी अभिमान से फूल कर डाँटने लगती(टा0का0कु0-151)

अब को छिपने छिपाने को गुंजाइश नहीं है + सारी बाते पेट से बाहर निकालनी पड़ेगी -(टा0का0कु0- 525)

तेरे शरीर को पीस कर चलनी में छान डालने से भी आत्मा का एक कण नहीं निकलेगा - - - - - - (टा0का0कु0- 60)

संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा + क्रिया

अक्किल का घास चरने जाना (नीलनोखा - 28)

समझ पर पत्थर पड़ना - (राजकुमारी - 88)

आग में घृत डालना (बनवीर ना0 - 56)

कलेजे में सुई चुभाना (राजकुमारी - 8)

घाव पर नमक छिड़कना (छोटी बहू - 106)

काल का कलेवा बनाना (द्रौपदी चीर हरण - 20)

वसुन्धरा का बोझ उतारना (,, - 20)

ओठ पर से ओठ उठाना (सरलतरंग - 129)

शरीर पर साँप रेंगना - (,, - 66)

बुद्धि पर पत्थर पड़ना (हत्यारहस्य - 179)

तिल का ताड़ बनाना (खरा सोना - 133)

राई का पहाड़ करना (,, - 133)

आँख का पर्दा खुलना (प्रेमयोगिनी - 14)

दाँत से तिनका न काटना - (छोटी बहू - 30)

पेट में खलबली पड़ना (छोटी बहू - 66)

पेट में चूहा कूदना (उषा - 54)

पैर में कुल्हाड़ी मारना ([illegible] - 122)

राख में घी फेंकना (बनवीर ना0 - 45)

मुँह पर थप्पड़ पड़ना (रावबहादुर - 50)

मुँह में पानी आना --- (,, - 50)

कच्चा आग में जलना (,, - 83)

गले की रस्सी पकड़ाना (,, - 84)

मुँह के बल पटकना - (,, - 90)

चने के पेड़ पर चढ़ना (,, - 102)

इज्जत में बट्टा लगना (,, - 147)

पीठ का चमड़ा उधड़ना (रा0का0कु0 - 10)

आँखों में सुर्खी आना (,, - 20)

आशा पर पानी फिरना (रा०भा०कु०-147)
आटा दाल का भाव मालूम होना(,,-170)
आलस्य का राग अलापना(,,- 177)
अन्न से हाथ धोना --(,,- 212)
हृदय पर साँप लोटना (,,- 353)
विपत्ति का पहाड़ टूटना (-,,- 396)
हृदय के पट खोलना - - (,,-410)
कान पर जूँ रेंगना - - (सूर्यग्रहण- 10)
आसमान सिर पर उठाना (शोले-1)
सिर पर पहाड़ गिरना (,,-8)
आँख में धूल झोंकना (,,-43)
इज्जत पर डाका डालना (,,- 43)
आफत गले में पड़ना - - (,,-103)
सिर आँखों पर लेना '--(,,- 118)
पेट में आग जलना --(भारत रमणी-27)
कलेजा मुँह को आना --(सुखमय जी०-1)
दिल के फफोले फोड़ना '-(घु-घू का काटा-20)
पेट में कुमैंडवो लगना(सेवासदन- 146)
पेट में पानी नपचना (मानसरोवर- 283)
मुट्ठी के पक्षी - - - -(तरलतरंग -152)

प्रयोग:-

मैं धृष्टद्युम्न आज हो कुरुकुल को कराल कुल का कलेवा बना कर पृथ्वी का बोझ उतार दूँ - --(द्रौपदी चीरहरण- 20)

जहाँ किसी ने गहरी समाधि लगाई - चट से उसके पेट में चूहे कूदने लगते हैं - - - - - - (सती चिन्ता- 22)

तेरे प्राण प्यारे की सौगन्ध जो तूने यहाँ चल कर ओठ पर से ओठ उठाया - - - - - - (तरलतरंग -129)

मेरी बुद्धि पर पत्थर पड़ा था कि पत्थर से पानी माँगने आई
(-- हस्यारहस्य-179)

मनमाना धन लूट कर अन्त को उसे मुँह के बल पटकने का तुम्हारा विचार यद्यपि कम अच्छा नहीं कहा जा सकता (राजबहादुर- 90)

मैंने तुमसे कहा था उसके पेट में पानी नहीं पचेगा (मानसरोवर-283)

संज्ञा + परसर्ग + विशेषण:-

खून का प्यासा (पू०प्र०- 45)   क्रोध से अंधा (सूर्यग्रहण- 91)

बात में काला (राजकुमारी-83)   दिल का काला -(टाक का०कु०- 115)

हृदय को कच्चो (तरलतरंग- 123)   दिल का साफ(,,- 198)

धर्म को पक्को(धर्मजय-24)

प्रयोग:-

प्यारो बहन तुम तो हृदय को बड़ी कच्ची हो — (तरलत रंग-123)

संज्ञा + विशेषण + क्रिया

जी ठंडा करना (कमचोर मा0-87)

मुँह काला कहना (रमणी -99)

बाल बांका न करना (सूर्यग्रहण-68)

हड्डी पसली एक करना(रा यबहादुर-34)

मुँह उजला करना (भारत रमणी-230)

मुँह लाल होना (,, - 110)

कलम ठंडा करना (टा0का0कु0- 7)

मुँह सफेद पड़ना (,,- 120)

खून सर्द होना (,,- 248)

चेहरा पीला होना (वि0कु0-10)

दिमाग ठंडा होना (सौतेले-103)

प्रयोग:-

विनय । बेटा। तूने मेरा मुँह उजला कर दिया-(भारत रमणी-130)

संज्ञा + परसर्ग + सा + संज्ञा

बन्दर को सी घुड़की (माधवानल काम0-157)

पहाड़ का सा दिन(रणधीर प्रेम मो0-101)

उल्लू का सा मुँह (भूल भुलैया-55)

मुर्दे का सा चेहरा (भूलभुलैया -57)

हाड़ी का सा मुँह (टा0का0कु0- 418)

संज्ञा + क्रिया विशेषण + क्रिया

कीड़े की भाँति छिपना(रणधीर प्रेम मो0- 54)

मोती सा चमकना - - - (,,- 35)

मेढ़क की सी टर्राना (,,- 107)

काई सी फटना (,,- 109)

बिजली सी गिरना (,,-109)

भर्रों बराबर बोलना (,,- 109)

तिनके बराबर जानना(,,- 110)

पानी के पोल के समान भरना(,,-111)

पवन की तरह निकलना(,,- 113)

कच्चे पारे की तरह पचना (,,- 123)

सिल की तरह पेरना (संयोगिताहरण-22)

धूप के समान ढलना (श्रीमती मंजरी- 2)

मक्खी की तरह निकालना (दुर्गावती-55)

हृदय की तरह पालना (शोले- 8)

पानी की तरह बहाना- (रक्षाबिन्धन बि.स- 3)

प्रयोग:-

उसका माल कच्चे पारे की तरह तुमको कभी नहीं पचेगा(रणधीर प्रेम-123)

मैं वैरियों को तिनके बराबर जानता हूँ - - - - - - - - -(,,-110)

अब तक तुम पुष्प में कीड़े की भाँति भले छिपे रहे(र (,,- 54)

पानी की पोल के समान समय में अवकाश भर रहा है -(,,- 111)

दोनों को बाँध ला कर सिल की तरह पेरना - —(संयोगिता हरण- 22)

वस्त्र सब धूप के समान ढल जाने वाली वस्तु है -(श्रीमती मंजरी-2)

5-1-क-2 विशेषण + संज्ञा

थोथा कवि (रणधीर प्रेम मोहिनी- 72)

चिकना घड़ा (,, -107)

धूप धाप—(टा0का0कु0- 8)

काला साँप - (पो0टा0- 86)

साफ हाथ (फूल भुलैया-14)

पूरो मण्डल (,,- 36)

सफेद बाल (श्रवण कुमार-90)

पूरा सोलह आना(,,- 127)

टर्रे चोर - - -(सत्यनारायण- 64)

बेगारो टट्टू (विवाह कुसुम-28)

कोरा- कोरा उत्तर(अरण्यमाला-57)

टेढ़ो चोर- - -(कृष्णार्जुन - युद्ध- 81)

पके पत्ते - - (भारती-39)

प्रयोगः-

नगेन्द्र पूरा काला साँप है (चौ०ह०- 86)

महाराज ये दोनों बड़े टर्रे चोर हैं (सत्यनारायण-64)

उन्हों ने ऐसा साफ हाथ दिया कि मैंने उसका जमा का भालो

भाँति आना (फूल भुलैया- 14)

बेटा मेरे इन सफेद बालों पर तो रहम करो(श्रवणकुमार- 90)

विशेषण + संज्ञा परसर्ग + संज्ञा

निरा मिट्टी का ढीठा(छोटी बहू-88)

बेसिर पैर की बातें (उ०रा० -86)

उल्लुओं का घर-(सावित्री सत्यवान-26)

बिना दाम का गुलाम- -(,,- 32)

भले बुरे की पहचान (,,- 38)

विशेषण + संज्ञा + क्रिया

दो कौड़ी का होना (रा०का०कु०-111)

पुरानी लकीर पीटना (मदयमाला-127)

उलटा धारा बहना (सती चिन्ता-27)

कोरी डींग हाँकना (रायबहादुर- 34)

सौ- सौ आँसू रुलाना (सावित्री सत्यवान- 22)

उलटी गंगा बहना (भारती- 32)

विशेषण + क्रिया

हल्का जंचना (रणधीर प्रेम- 64)
नीचा देखना (,,- 114)
नाको होना (,,- 122)
नौ दो ग्यारह होना (शकुन्तला- 6)
लाल- पीला होना (बु0वि0-61)
पक्के होना --(,,- 18)
ठंडा होना -- (टा0का0कु0- 248)
कच्चे चबाना (मर0औ0-196)

प्रयोग:-

यह सब को नजरों में हल्का जंचने लगता है (रणधीर प्रेम-64)
जिसके कारण मुझे सब के आगे नीचा देखना पड़ा(रणधीरप्रेम- 114)
इस पर नाहक लाल पीली क्यों होती हो(बु0वि0-61)
मैं भी पिटते पिटते पक्के होगए हूं (,,-18)
तुम लोग हर बात में ठंडे हो (टा0का0कु0- 248)

5-1-क-3- धातु + क्रिया

भुन जाना (या0स0-3)
धो बैठना -(फूल भुलैया-52)
टूट पड़ना (,,- 70)
फूल उठाना (रायबहादुर- 70)
जल भुन जाना (,,- 28)
उबल उठना (टा0का0कु0-201)
भभक उठना(,,- 242)
उबल जाना (,,-247)
उछल पड़ना (,,- 250)
फूल पड़ना (प्रेमाश्रय -351)
डूब मरना(सुखमयजी0- 17)

प्रयोग/-

यह सुनते ही वे उबल पड़े (टा0का0कु0- 201)

वर्तमान कालिक कृदन्त + संज्ञा/क्रिया

रमते राम(ठ0ठ0गो0- 146)
बहता पानी(,,- 146)
चलता सो' चन्दोर ना0-87)
चलता बनना (टा0का0कु0- 217)
बराते फिरना(टा0का0कु0- 44)

प्रयोग:-

जै के ऐसो संसार को बराबर फिरते हैं (टा0का0कु0- 44)

मूल कृदन्त + संज्ञा/ क्रिया

खरी-खरी बातें (रावबहादुर- 131)

फूटो कोड़ो - -(,,- 165)

मारे - मारे फिरना (,,- 85)

फूलान समाना (उमा-61)

पहुँचो होना (यु0बि0-13)

यहका करना (भूलभुलैया-63)

फूटो आँखों न सुहाना (रा कुमारो- 4)

गड़े मुर्दे उखाड़ना (रैवासवन- 146)

पूर्वकालिक कृदन्त + संज्ञा /क्रिया

फूंक फूंक कर पाँव धरना (पु0ह0-16)

जल कर खाक होना (टा0का0कु0- 60)

फाड़ फाड़ कर देखना- (शा ले- 1)

संयुक्त क्रियाक क्रिया

सोना पड़ा (भूल भुलैया-52)

उछलने लगा (विवाह कु0- 123)

घूमने लगा (टा0का0कु0- 146)

5-1-ग- अर्थ की दृष्टि से मुहावरों के भेद

अर्थ की दृष्टि से मुहावरों का विभाजन मुख्य रूप से तीन आधारों पर किया जा सकता है :—

(1) शब्दगत आधार

(2) वाक्यांशगत आधार

(3) अर्थान्तरण का आधार

5-1-ग-1 शब्द गत लाक्षणिकता

इसके अन्तर्गत वाक्यांश में निहित प्रति शब्दों में से कौन से लाक्षणिक अर्थ रखते हैं इस आधार पर मुहावरों का विभाजन पुस्तक रचना काल से निम्नलिखित है :—

(1) संज्ञा:—

हुक्का पानी बन्द करना(छोटे भइ-66) पानी उतारना(धर्मोदय-66)
आँख खुलना (राजकुमारी-8) किस्सा ठंडा करना(,,-83)
आँख बिछाना(रायबहादुर-12) बिजली गिरना(मदन कु0-117)
पानी फिरना (डा0म0कु0- 122) पलस्तर बिगड़ना(सावित्री सत्य0-49)
बीड़ा उठाना (रायबहादुर- 82) रंग लाना - - - - -(-,,- 63)
चौका लगाना(सत्य नारायण-57) रंग जमना - - -(भारती-213)
नमक मिर्च लगाना(,,- 276)

(2) विशेषण:-

कोरी मोरी (रायबहादुर- 34) पूरा सोलह आना (मदन कुमार-127)
जली कटी (,,- 131) टेढ़ा -----(सावित्री-सत्य0-67)
पक्की —(धर्मोदय-24) मोटा होना(सत्यनारायण-98)
हरा भाग(,,- 135) खरा-खोटा (विश्वामित्र-49)
ठंडा करना(,,- 83) ऊँच-नीच —(प्रवण कुमार 45)
थके धरे से(भारती-39)

प्रयोग:-

अब समय टेढ़ा आया है (सावित्री- सत्यवान-67)
मैं अपने धर्म की पक्की हूँ (धर्मोदय-24)

(3) क्रिया:-

सिर घूमना(नरेन्द्र औ0-22) माथा चकराना (गंगावतरण- 47)
दिन काटना(रणधीर प्रेम-101) झख मारना (डा0म0कु0- 126)
किस्मत सोना (प्रेमयोगिनी-125) दिमाग चाटना (,,- 276)
मन मोदक उड़ाना(रायबहादुर-142) जान जाना(कालसुलैया -26)

अक्ल जलना (रायबहादुर- 83) लोट पोट होना (सत्यनारायण- 70)
"हल बजाना ([illegible] कुमार-32) माया खाना (,,- 50)
चाकरी बजाना(,,- 49) फली- फूली (,,- 98)
मन हरना (स्वामिभक्ति- 26) माथा खपाना (भारती- 10)
मन उछलना (विवाह कु0- 123) माथा मारना (,,- 25)

5-1-ग-2- वाक्यांशगत लाक्षणिकता

कभी कभी लाक्षणिकता का संबंध शब्द विशेष से न होकर पूरे वाक्यांश से होता है । अर्थात पूरा वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ के अतिरिक्त लाक्षणिक अर्थ देता है । निर्माणगत आधार पर इन्हें निम्नलिखित वाक्यांशों के अंतर्गत रखा जा सकता है —

(1) संज्ञावाक्यांश —

जिगर के टुकड़े (पू0ह0-14) चालू का चांद (उषा- 57)
आंख की पुतली- उषा- 61) फूलों की सेज (प्रेमयोगिनी- 122)
धर्म का अंधा (टा0का0कु0- -140) लोहे के चने (टा0का0कु0-153)
जी का आफत (,, - 165) आफत का पुड़िया (,,-174)
उल्लू का पट्ठा (,,- 502) हृदय की अग्नि (,,- 507)
तेली का बैल (होली -1) हृदय का टुकड़ा (होली - 8)
दिल के फफोले (,,-59) लात के देवता (विवाह कुसुम-24)
बछिया के ताऊ (रायबहादुर-41) गले की रस्सी (रायबहादुर- 84)
पैर की धूल —(भारत -रमणी-10) दूध की मक्खी (दुर्गावती-55)
चींटी की मूंछ —(प्र0या 0-55) मच्छड़ की टांग (प्र0या0-56)

अन्य के लिए रचना की दृष्टि से संज्ञा + परसर्ग + संज्ञा भी देखिए-

5-1-ख -1(ii)

(2) विशेषण वाक्यांश-

वज्र मूर्ख (आनन्दमठ-49)
बन्दर की सी (घुड़की) (माधवानल का 0-157)
पहाड़ का सा (दिन) (रणधीर प्रेम -101)
उल्लू का सा (मुंह) कुलमुलैया-55)

उल्लू का सा (मुंह) (भूलभुलैया-55)

मुर्दे का सा (चेहरा) (,,-57)

निरा मिट्टी का (लौंदा) (छोटी बहू-88)

कोरी- कोरी(डींग) (रायबहादुर- 34)

लाल -पीला - (पु0वि0-61)

झाड़ू सा (मुंह) ट0क0 कु0- 418)

बेसिर पैर की (बातें)(उ0रा0म0 च0 ना0-86)

बेदाम का (गुलाम) (सावित्री सत्यवान-22)

भले बुरे की (पहचान)(,,- 38)

(3) क्रिया विशेषण वाक्यांश

प्रयोग के अनुसार क्रिया विशेषण वाक्यांशों में भी लाक्षणिकता है। और विशेषण की अपेक्षा इस प्रकार के लाक्षणिक वाक्यांश अपेक्षाकृत अधिक हैं —

मन मार कर(राजकुमारी- 14)

हाथों हाथ (छोटी बहू- 68)

बक बक कर के (सर0 1907- 21)

फूंक फूंक कर पांव रखना (पू0क0- 16)

दो- दो पाँव चल कर (रणधीर प्रेम मो0-105)

[illegible] ठोंक कर ---(,, - 106)

तिनका बराबर --(,,- 110)

कच्चे धागे की तरह (,,-123)

हथेली पर जान लिए हुए(,,- 123)

सत्तू बांध कर पीछे पड़ना (रायबहादुर-3)

पानी की तरह -----(,,- 4)

आँखें चार होते ही ---(,,-11)

मुंह संभाल कर -- (रायबहादुर- 31)

हाथ पर हाथ धर कर(,,- 45)

कान खोल कर (सुनना) (,,- 168)

दूध में पड़ी मक्खी की तरह(दुर्गावती- 55)

हृदय के टुकड़े की तरह ((ज्योति- 8)

अपना सा मुंह ले कर -(,,-168)

घूर - अँकते- या कते—(आरण्यबाला-47)

(4) क्रिया_वाक्यांश

मुहावरे वाक्यांशों का यदि विश्लेषण किया जाय तो युग की भाषा में प्रयुक्त मुहावरों में सब से अधिक संख्या क्रिया की हो होगी किन्तु यह वास्तविकता वाक्यांश गत न हो कर बन्ध गत है। अतः क्रियावाक्यांशों के लिए रचना की दृष्टि से मुहावरों के भेद को देखिए- 5-1-क- 3)

5-1-ग-3 अर्थान्तरण का आधार

मुहावरों में अर्थान्तरण मुख्य रूप से चार आधारों पर हुआ है। इनमें अर्थ के विस्तार और उत्कर्ष वाले उदाहरण तो अपेक्षाकृत अधिक हैं किन्तु अर्थ के अपकर्ष एवं संकोच वाले उदाहरण बहुत ही कम हैं। ऐसा लगता है कि विस्तार तथा उत्कर्ष वाले मुहावरों की तुलना में ये मुहावरे कम से गए और इनके प्रयोग के प्रति भी अधिक ध्यान नहीं दिया गया यथा—

(1) अर्थ में विस्तारः-

गिरगिट की तरह रंग बदलना (रणधीर प्रेम मो०59)

कों का दूध - - - -(तारा-53)

बालू का बाँध - -(उम -57)

दाल में नोन के समान(संयोगिताहरण-99)

बछिया के ताऊ —(रायबहादुर-1)

रंगे सियार - --(,,- 80)

दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकालना (दुर्गावती-45)

ढोल के अन्दर पोल— (तुलसीदास-43)

तेली का बैल —(होली-1)

लोहे का चने चबाना(रा०का०कु०-153)

बगला भगत—(सत्यनारायण-102)

नमक की मक्खी (प्र०रा०-56)

आँख के अंधे गांठ के पूरे(महात्मा ता- 157)

कुम्भकरण की नींद- -(कृष्णार्जुन युद्ध- 55)

खट्टे अंगूर - - - - —(भारती-47)

बेपेंदी का लोटा —(बनी बिन्सा -24)

जंगल में रोना- - -(माधवानल काम०-115)

पानी की तरह बहाना(स्वामिभक्ति-3)

(2) अर्थ में संकोच

बिहार जंगल जाना (चौहानी तलवार-17)

पाँव भारी होना (रणधीर प्रेम 0- 47)

छातीफूल उठना (श्रवण कुमार -144)

वीणा उठाना (धर्मविजय-48)
कमर बाँधना (नरेन्द्र मोहिनी-3)

हृदय फूल उठना(होली- 6)

प्रयोगः-

राजकुमार और मंत्रीकुमार प्रातः कालीन बिहार- जंगल को समाप्त कर मृगया निमित्त पास के जंगल को चले - - - -(दो मित्र -19)

तुम्हारा शरीर शिथिल दिखाई देता है सो क्या तुम्हारे पाँव भारी है
(रणधीरप्रेम मो० -47)

(3) अर्थ में उत्कर्ष

आँख खुलना (राजकुमारी-8)

जिगर का टुकड़ा (पृ०ड०- 14)

आँख की पुतली (उमा- 61)

बत्ती दिखाना(रणधीर प्रेम मो०- 124)

गले की रस्सी जकड़ना(रायबहादुर- 84)

टेढ़ी खीर - - - -(कृष्णार्जुन युद्ध- 81)

ढँग का होना- - -(श्रवणकुमार- 94)

(4) अर्थ में अपकर्ष

आँख फड़कना (फूल कुलैया-63)

चाल चलना (सूर्यग्रहण -66)

मन चला ना-(टा०क्रा०कु०- 177)

पट्टी पढ़ाना(,,- 117)

चलता- पुरजा (सावित्री-सत्य0-34)
गत बनाना (,,- 66)
पेट में पानी न पचना(मानसरोवर-283)

5-2 लोकोक्तियाँ या कहावतें

लोकोक्तियाँ अथवा कहावतें लोक साहित्य(Folk Literature
को महत्वपूर्ण अंग है जिनका संबंध स्वाभाविक जीवन से है और जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उद्बोधन और चेतावनी के रूप में प्राचीन काल से ही उपयोग सिध्द होती रही है अर्थात् ये कहावतें अथवा लोकोक्तियाँ शाश्वत सत्य हैं जिनके माध्यम से संसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुध्दि का निर्देशन मिलता है। इनमें मानव जीवन का दीर्घकालीन अनुभव संचित रहता है जो पीढ़ी-दर पीढ़ी होता हुआ वर्तमान पीढ़ी को उत्तराधिकार रूप में मिलता है।

निर्धारण और सामान्यीकरण कहावतों की मुख्य विशेषताएं हैं। निर्धारित द्वारा कहावतों में निहित सत्य अथवा तथ्य एक निश्चयात्मक रूप ग्रहण करता है यही निश्चित रूप लोक मानस के सहज बोध से सम्बध होने के कारण लोकस्वीकृति प्राप्त कर सामान्यीकृत हो जाता है। सुविधा की दृष्टि से लोकोक्तियों का अध्ययन तीन दृष्टि से किया गया है यथा—

प्रयोग का आधार
संरचना का आधार
अर्थ का आधार

5-2-क प्रयोग का आधार

प्रयोग के आधार पर कहावतें या लोकोक्तियाँ अपरिवर्तित होती हैं। मुहावरे किसी भी शब्दभेद, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं तथा काल, अर्थ के अनुसार रूप धारण कर सकते हैं। पर कहावतें प्रायः वार्तालाप में प्रयुक्त होती है। उनके रूप में कोई विकार नहीं होता। मुहावरे जहाँ पदबंध कहे जा सकते हैं वहाँ लोकोक्तियाँ वाक्य के अन्तर्गत रखी जा सकती हैं। इस प्रकार के निम्नलिखित प्रयोग इस कथन को स्पष्ट करते हैं। यथा—

5-2-ब- संरचना का आधार

5-2-ब,-1 वाक्यांश मूलक--

वाक्यांश मूलक के आधार पर भी लोकोक्तियों के विभाजन में अन्तःकेन्द्रिक और बाह्यकेन्द्रिक स्तरों को दृष्टि में रखा गया है। अन्तःकेन्द्रिक वाक्यांश से तात्पर्य क्रिया पदों से रहित वाक्यांश से है यथा बाह्य केन्द्रिक से तात्पर्य क्रियापद समन्वित वाक्यांश से है। यहाँ पर इन्हीं आधारों पर लोकोक्तियों का रचनागत अध्ययन प्रस्तुत है।

(1) अन्तःकेन्द्रिक + अन्तःकेन्द्रिक

अंधेर नगरी + चौपट राजा
टके सेर भाजी + टके सेर खाजा(प्रेमयोगिनी- 78)
नक्कार खाने में+ तूती की आवाज(र0बेगम- 54)
गधे के सिर पर+ शक्कर की गोन(रायबहादुर- 80)
साठा + सो पाठा (आ0हि0- 21)
कहाँ राजा भोज + कहाँ गंगा तेली(आ0हि0-129)
काला अक्षर + भैंस बराबर(वि0कसौ0-9)
रेशम चोरी + परदेश भोज (वि0कसौ0- 181)
चमार की देवी का + जूतों से पूजा(,,-193)
मुख में राम+ बगल में छुरी (,,- 290)
एक पंथ + दो काज (,,- 318)
उतावला + सो बावला (,,- 368)
नई नवा नौ + भाआ ठोस (,,- 376)
दूध का दूध + पानी का पानी (,,- 410)
सोने में + सुहागा - - (दुर्गावती- 24)
आम के आम + गुठलियों के दाम(दुर्गावती- 100)
मुनियों में शेख + बहत्पत में मेवा (कृष्णार्जुन यु0-5)
बरहर का दट्टो + गुजराती ता ता } कौण्ड प्रतिज्ञा-27)
टेक का आदमी + राना का साला }
आँख का अंधा+ नाम नयन सुख - - -(,,- 61)

2- मिश्रवाक्य

यदि लगे लगा तो तीर नहीं तो तुक्का है (संयोगिताहरण-81)

बादल जितना गरजता है उतना बरसता नहीं(संत प्रेमयोगिनी-101)

जब गले में ढोल पड़ गया तो बजाना ही पड़ेगा(,, ,,- 120)

जिसके पांव न फटे बेवाई , सो क्या जाने पीर पराई(कुल-कुलेयन-13)

जब आयो संतोष धन सो सब धन धूरि समान(दुर्गावती- 28)

जो मन चंगा तो कठौती में गंगा (आ0ह0- 16)

जैसे कंता घर रहे वैसे रहे विदेश (कुं0वि0- 18)

मियां बीबी राजी तो क्या करेंगे काजी (वि0कौ0- 35)

जहाँ पड़ा मूसल वहीं क्षेम कुशल(सावित्री सत्य-240)

सबेरे का भूला संध्या समय घर आ जाय तो भूला नहीं कहाता(सत्यनारायण-12

अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत(सत्यनारायण-33)

जिसमें खाना उसी में छेद करना (धर्मोदय- 124)

जँह- जँह चरन पड़े सन्तन के, तँह तँह बंटाधार(ठ0ठ0गा0-175)

बिन विचारे जो करे सो पाछे पछताय(भारत प्र0- 18)

जिसने कुआँ खोदा उसी को आत्मा पानी को तरसे (मानसरोवर- 69)

जो दूसरों के लिये गड्ढे खोदता है उसके लिए कुआँ पहले ही से तैयार रहता है।,---------- (उलट फेर- 56)

(3) संयुक्त वाक्य

कुत्ते की पूंछ को बारह बरस दबा कर रखा तो भी टेढ़ी की टेढ़ी ही रही----------(रणधीर प्रेम मो0- 61)

जेवड़ी जल गई पर बल न गया(,, -61)

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (टा0भ0कु0- 64)

गुरु गुड़ ही रहे चेला शक्कर हो गए (चौ0ट0-80)

सांप मरे न लाठी टूटे (कु0वि0-74)

त्रिया चरित्र न जाने कोय, खसम मार कर सत्ती होय(वि0कौ0- 179)

दो एक संग न होहि भुआलू
हँसब ठठाइ फुलाउब गालू) (वि0कौ0- 191)

5-2-ग-1 अभिधार्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

सिद्धान्त, नीतिपूर्ण, उपदेशात्मक लोकोक्तियों का अर्थ प्रायः अभिधात्मक होता है। एक प्रकार से ये सूक्तियाँ ही हैं। ये कहावतें केवल उस निश्चित अर्थ में ही प्रयुक्त हो सकती हैं अन्य किसी अर्थ में नहीं यथा—

लालच बुरी बला------(तारा- 81)

करम रेखा न मिटै करो लाख चतुराई (सु०वि०-56)

अब पछताए होत का जब चिड़िया चुंग गई खेत (सत्य नारायण- 33)

रखनहारा साइयाँ, मारि न सकिहै कोय } (महात्मा विदुर- 130)
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय)

त्रिया चरित्र न जाने कोय, खसम मार कर सती होय-(वि०को०- 179)

पिकत पर भार नहिं कहिये---(वि०को०- 198)

एक पंथ दो काज--(वि०को०- 318)

साधु जन रमते भले, दाग न लागे कोय(ठ०ठ०गो०-43)

बिना विचारे जो करै सो पाछे पछताय-(प्रेम- 18)

5-2-ग-2 लक्षणार्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

कर्थन क्षमता के कारण इनका अस्तित्व बहुत समय तक रहता है। हिन्दी में इस प्रकार की कहावतों का बाहुल्य है। द्विवेदी युगीन साहित्य में भी अधिकांश लोकोक्तियाँ इसी दृष्टिकोण को रख कर प्रयुक्त की गई हैं यथा—

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का(हा०का०कु०- 264)

नौ सौ चूहा खा कर बिल्ली चली हज्जा को(वि०को०- 188)

मुख में राम बगल में छुरी(वि०को०- -290)

न नौ मन तेल होगा न राधाजी ही नाचेंगी(आ०हि०- 19)

खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग बदलता है (तुलसीदास-46)

न रहेगा बाँस न बजे गी बाँसुरी(कु०स०व०- 74)

गाँठ के पूरे, आँख के पूरे--(ठ०ठ०गो० 0- 189)

खोदा पहाड़ निकली चुहिया --(मानसरो०-8पु०- 9)

घर की मुर्गी साग बराबर (,, 2पु०- 98)

हाथी गई तो गई कुत्ते को भात पहचाना गई (मानसरो०- 74)

चिंता रस भरा कनक घट जैसे(भारती- 339)

भैंस के आगे बीन बजाना भैंस बैठी पगुराय(लम्बोवाड़ी-49)

5-2-ग-3- अभिधा- लक्षणा द्वयर्थ में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ

जब तक साँस तब तक आस - - - (प्रेमयोगिनी-52)

जिसके न पैर न फटे बेवाई सो का जाने पीर पराई (भूलभुलैया -13)

चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात(श्रवण कुमार-23)

बारह वर्ष के बाद घूरे का भी दिन लौटता है (सत्यनारायण- 12)

सवेरे का भूला शाम को भी घर लौट आए तो भी भूला नहीं कहाता

(सत्यनारायण- 33)

अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत (सत्यनारायण- 33)

दूध का दूध पानी का पानी (वि०को०- 410)

कहाँ राजा भोज कहाँ गंगा तेली (आ०हि०- 120)

कुत्ते की पूँछ बारह बरस दबा कर रखा तो भी टेढ़ी की टेढ़ी रही

(रणधीर प्रेम- 61)

पहले ही कडुवा करेला और फिर नीम चढ़ा(आ०हि०-103)

बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी(मानसरोवर- 18)

5-2-ग-4- धार्मिक, काल्पनिक, और ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत करने वाली लोकोक्तियाँ:-

इस वर्ग की लोकोक्तियों के मूल में कोई कथा, कल्पना , अथवा ऐतिहासिक तथ्य छिपा रहता है यथा—

अँधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा(प्रेम पा०-78)

करम रेखा ना मिटे करो लाख चतुराई (सु०वि०- 56)

कहाँ राजा भोज कहाँ गंगा तेली-(आ०हि०-129)

दो इक संग न होहि भुआलू)
हँसब ठठाई फुलाउब गालू } वि०को०- 191)

दूध का दूध और पानी का पानी (,,- 410)

लालच बुरी बला - -(तारा-81)

बिना विचारे जो करै सो पाछे पछताय(भो०क- 18)

करम गति टारे नाहिं टरे

विधि के लेख मिटत नहिं मेटे होनी होय परे (महात्मा विदुर - 80)

एक रावन हारा मारयौं , मारि न सकि है कोय

बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी होय (महात्मा विदुर- 130)

चोर की दाढ़ी में तिनका (स्वामिभक्ति - 93)

अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत- (सत्य नारायण- 33)

राजा करे सो न्याय (चन्द्रधर- 28)

राजा के घर में मोतियों का काल (सुधा- 1927- पृ0- 380)

कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा

भानुमति ने कुनबा जोड़ा (सुधा वर्ष -1 खण्ड-1संख्या 41, 927, पृ080)

उपर्युक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों के अध्ययन से स्पष्ट है कि अन्य शब्द भेदों के समान ही लाक्षणिक वाक्यांशों में भी एक क्रमिक विकास दिखाई पड़ता है, जहाँ प्रारम्भिक कृतियों में मुहावरों , लोकोक्तियों की झड़ी लगी है वहाँ भाषा में परिमार्जन, प्रौढ़ता और परिवर्धन के साथ ही साथ इनके प्रयोग में भी कमी आती गई है, यहाँ तक की युग की अन्तिम कृतियों में , जहाँ भाषा का सर्वत्र ही प्रौढ़ प्रांजल, परिमार्जित , परिष्कृत रूप ही प्रयुक्त है मुहावरे वाक्यों का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया गया है ।

6- वाक्य

भाषा में वाक्यों का अध्ययन उस भाषा की ध्वनि शब्दावली तथा वाक्यांश की अपेक्षा अधिक महत्व रखता है क्योंकि इससे भाषा के पूर्ण रूप का दर्शन होता है ।

यद्यपि इस युग के सम्पूर्ण वाक्य- विधान की शैली -आधुनिक खड़ी बोली की शैली के समकक्ष ही है फिर भी निर्माण युग होने के कारण कहीं कहीं पूर्ववर्ती वाक्य विन्यास की शैली का प्रभाव भी परिलक्षित हो ही जाता है ।

सामान्यतः इस युग के वाक्यों के सिंहावलोकन से विदित होता है कि वाक्य क्रमशः जटिल लम्बे और तत्सम प्रधान होते गए हैं । मतलब यह कि आगे चल कर कहीं -कहीं तो लेखकों ने इतने जटिल और लम्बे आलंकारिक वाक्यों का प्रयोग किया है कि जनसाधारण के लिए उनके विधान को समझना थोड़ा दुर्बोध्य नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है । ऐसे वाक्य अधिकांशतः उच्चकोटि के तत्सम प्रधान शैलीकारों की कृतियों में मिलते है । सामान्यतः व्याकरणिक दृष्टि से इस युग के वाक्य विधान शुद्ध परिष्कृत और परिनिष्ठित ही हैं ।

सुविधा की दृष्टि से इस युग के वाक्य-संरचना का अध्ययन दो पद्धतियों के आधार पर किया गया है :—

6- 1 संश्लेषणात्मक पद्धति- वाक्योत्तरीय)

6-2 विश्लेषणात्मक ,,- (खंडीय तत्व)

6-1 संश्लेषणात्मक पद्धति:-

संश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा हमारा प्रयत्न यह दिखाने का रहा है कि इस युग में वाक्य उत्तरीय रचनाएँ अर्थात् वाक्य- उपवाक्य , वाक्यांश आदि स्थितियाँ वाक्य से ध्वनित होने वाले अर्थ को संश्लिष्ट बनाने में कहाँ तक समर्थ हुई हैं :-

संश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से वाक्यों का विवेचन या मान्यतः दो आधारों पर किया गया है :-

6-1-क- रचना का आधार

6-1-ख- अर्थ का आधार

6-1-क रचना का आधार:-

रचना के आधार पर वाक्यों के सरल, मिश्र और संयुक्त तीन प्रमुख भेद हैं

यहाँ पर क्रमशः उनके संक्षिप्त और विस्तृत दोनों ही रूप दिए जा रहे हैं।

6-1-क-1 सरल वाक्य

सरल वाक्य सामान्यतः उद्देश्य और विधेय के योग से पूर्ण होता है, किन्तु नाटकों, कहानियों और उपन्यासों के वार्तालाप आदि में बहुधा या तो केवल कर्ता या केवल क्रिया से ही वाक्य पूर्ण हो जाता है। इसके साथ ही साथ वाक्यों का विस्तार उद्देश्य एवं विधेय के विस्तार के साथ भी हुआ है।

अस्तु, सरल वाक्य के संक्षिप्त रूप से ले कर विभिन्न शब्दभेदों के योग से निर्मित जो विस्तृत रूप मिले हैं उनका सौश्लिष्ट विवेचन निम्न रूप में प्रस्तुत है:-

6-1-क-1-क क्रिया से बने वाक्य

कहिए(शकुन्तला ना0-33)

सुनो (नागानंद' 37)

छोड़ (नवयनंदिनी-43)

चलिए(चाँदबीबी-148)

जाओ -(राणाप्रताप'-144)

(1) संयुक्त क्रिया द्वारा:-

आने दो -(मालविका0-7)

हो सकता है (सतोचिन्ता) 27)

देख लो (खरा सोना- 45)

मर गए (पंडित जी-83)

लाओ देखूँ -(राणाप्रताप- 146)

(2) द्विरुक्त क्रिया द्वारा:-

कहिए- कहिए (महावीर चरित ना0-79)

देखो - देखो (मालविकाग्निमित्र- 26)

जाओ- जाओ(संयोगिताहरण- 30)

छोड़ो - छोड़ो (पृथ्वीराज का बान पत्र-162)

चलो- चलो(सत्यनारायण- 114)

मारो- मारो(चाँदबीबी-148)

(3) क्रिया विशेषण द्वारा

तुरन्त आओ- शकुन्तला ना0-42)

इधर आइए-(मालविकाग्निमित्र- 23)

अवश्य चलिए- (कृष्णार्जुन युद्ध- 95)

शीघ्र कहो- (धरा सेना- 45)

(4) संयुक्त क्रिया विशेषण द्वारा:-

अभी आता हूँ (शकुन्तला ना0-42)

अच्छा , अब आओ-(नागानंद- 45)

फिर यहाँ क्यों आया? (छोटो बहू- 48)

अब कहाँ चले(स्वामिभक्ति- 31)

अन्दर हो न चले आओ(,,-77)

अभी आ हो रहा हूँ(पंडित जी-43)

हाँ, अवश्य बताये में (कोष म- प्र0- 95)

तो फिर चलो(राधाप्रताप-183)

6-1-क-1-ग- कर्ता तथा क्रिया से बने वाक्य

तुझो चल --(शकुन्तला ना0-36)

अम्मा ने भेज दिया है (छोटो बहू-48)

आप लोग चले (मनचोर ना0-9)

मैं नहीं जानता (कृष्णार्जुन युद्ध- 51)

तुम अब आ सकते हो(रणरंगकुरायोहान-36)

विस्तार:-

(1) कर्ता का विस्तार(समानाधिकरण शब्द एवं विशेषण द्वारा)

निमिकुल के राजा विदेह देश में राज्य करते हैं(महावीर च0- 4)

श्री मन् - राजाधिराज कुरुराज ने आप को यह पत्र भेजा है(द्रौपदीचीरहरण0-20)

कवि प्रसिद्ध वसन्त ऋतु को अभिन्न सहचरी कोकिलाएं पत्तों को ओट

में छिपी-छिपी अपने मधुर कंठ से सुरीली तानें छेड़ रही हैं-(नवायनविनोद-1)

बेईमानों का सरदार काफिर हुसैनी कटा हुआ पलंग पर पड़ा है-(कुसुम कुमारी -73)

ऊपर से वेदान्त की बातें मारने वाला यह सरदार पूरा जीवर भेज है

(दुर्गावती-34)

प्राचीन काल के चोर यहाँ अब नहीं रहे(दुर्गावती- 136)

नलिनी के पिता चिदानंद पांडे - सुदर्शनपुर के रहने वाले थे(वारमणि-92)

(2) क्रिया का विस्तारः-

(क्रिया विशेषण तथा कृदन्तों द्वारा)

कुन्कुन्निया बड़ी देर तक काठ की पुतली की तरह चुपचाप खड़ी रही(मृणमयी-91)

इन्हीं पर भरोसा किए हुए वे वीर का भांति विकट जंगलों और दुर्गम मार्गों से आगे चले जा रहे थे - - -(वारमणि-82)

वीरमणि इसी भांति सोचते हुए दिनों-दिन आगे बढ़ते जा रहे थे(वारमणि-84)

वह अभी तक वही भीगी धोती पहने चुपचाप खिड़की के पास खड़ी बाहर ताक रही है (पंडित जी-148)

बदन अत्यन्त संकोच के साथ धीरे धीरे पैर रखता हुआ आड़ से आकर कुन्दा बन के आगे खड़ा हुआ - -(पंडित जी-170)

युवती बिल्कुल बेखबर सोयी हुई थी(बरा साना- 127)

6-1-क-1-ग- कर्म तथा क्रिया से बने व्यंजन

उसे लाओ (शकुन्तला ना0-44)

क्या सोचते हो (भीष्म प्रतिज्ञा-55)

पानी पिला दो(उसने कहाया-53)

तलवार निकालकर(पाँचवी जी-129)

सदा न लगाकर(रणप्रताप-149)

विस्तार

(1) कर्म का विस्तार विशेषण द्वाराः-

यह आप के हीरों की अमरेश रंगशाला भस्म हो गई(दौलवी वीरहरण- 53)

निर्दोष नगरवासियों को तोपों से उड़ा देना चाहिए(भारत दर्पण-39)

मालती के बुरे , भुला व कम हो भी भुला लेना था किए(अंगू० नगीना -87)

आपने बाप दादों के सींचे हुए इस स्वतंत्रता के पेड़ को जड़ को काटने के लिए कुल्हाड़ी का बेंटा बन गया - -(दुर्गावती- 64)

उसकी भयंकरी मूर्ति देख कर सब लोगों को चुप-चुप लगा गई-(छोटी बहू-117)

सबेरे लौट कर 9 बजे नकली ब्रह्मचारी के साथ सब ताशियों को निकाल तहखाने में आना, वहाँ खाली संदूक देख कर अचेत हो जाना, इत्यादि कह सुनाया (राजकुमारी-31)

प्रेमलतराव स्टेशन के रास्ते पर जाते समय आधे रास्ते से ही चन्द्रकला की तरह काशी की सुन्दर आकृति दीख पड़ती है।--(उमा- 113)

अन्त में भविष्य के कार्य प्रणाली को स्थिर कर के सब लोगों ने किसी गुप्तस्थान पर निशा बिताने और भोजनादि से निवृत्त पाने का विचार किया (वारमणि-59)

आप के बिना मेरे कुम्हलाये हुए मुख को वसन्त ऋतु के प्रातःकाल में बहता हुआ मंद-मंद समीर भी नहीं खिला सकता (रणबांकुरा चौहा- 116)

6-1-क-2 मिश्रित वाक्य

साधारण वाक्यों में विषय का विस्तार अधिक होता है किन्तु मिश्रित वाक्यों में मुख्य उपवाक्य से आश्रित संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण उपवाक्य का विस्तार संयोजक शब्दों द्वारा होता है। साथ ही दो या दो से अधिक समानाधिकरण आश्रित उपवाक्यों के संयोग द्वारा भी मिश्रित वाक्यों का विस्तार होता है। अब क्रमशः मुख्य उपवाक्य के साथ विभिन्न उपवाक्यों के योग से बने मिश्रित वाक्यों के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं:-

6-1-क- 2-क संज्ञा उपवाक्यः-

यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मार रहे हो ----------(चन्द्रकांता संतति भाग-17- 64)

मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि आप की पत्नी और आप अंधे की लकड़ी बन कर यहीं जीवन बिताऊँगी (सावित्री सत्य- 11)

हाँ हाँ मैं जानता हूँ कि तुम वे पैसे के लोटे हो (ज्योतिचन्द्रा-24)

मैं डंके का चोट कहे देता हूँ कि परमेश्वर के यहाँ तुम्हें इस पातक का भयंकर प्रतिफल मिलेगा (राजबहादुर- 87)

अदालत को दूर भांकते - झांकते मुझे तो इसका पूरा विश्वास हो गया है कि कोई अरने वाले के लिए नहीं रोता --(आरण्यबाला-44)

संज्ञा उपवाक्य बहुधा स्वरूप वाचक समुच्चयबोधक 'कि' से ही आरम्भ होता है किन्तु कहीं कहीं 'कि' के बदले 'जो' का भी प्रयोग होता है जैसेः—

आज तुमको क्या हो गया है, जो ऐसी बेसिर पैर की बातें कर रहे हो?

(रायबहादुर- 115)

अच्छा हुआ जो परमेश्वर ने प्रार्थना सुन ली और थोड़ा कुछ धन बना दिया[1]

(सत्य नारायण-37)

दिल बहलाने के लिए कोई दूसरा स्थान नहीं था जो एक बाजारू वेश्या को मुंह दिखलाया- - (स्वामिभक्ति- 23)

: कर्म के स्थान में आने वाले आश्रित उपवाक्य के पूर्व 'कि' का बहुधा लोप कर देने पर भी संज्ञा उपवाक्य बनता है 'कि' के स्थान पर अर्धविराम सूचक चिह्न लगता है जैसे—

मैं जानती हूँ, यह शृंगार किस लिए हुआ है (मालविका०-52)

प्रजा रानी । आपने सुना, यह पापी किसकी ओर है (मालविका०-46)

: संज्ञा उपवाक्य कभी कभी प्रश्नवाचक होते हैं किन्तु ऐसी स्थिति में मुख्य उपवाक्य में बहुधा 'यह', 'ऐसा' जैसे सर्वनामों का प्रयोग होता है, इस प्रकार के उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

आपने यह कैसे जाना कि वह बड़ी है (सतीचिन्ता- 36)

आप को मालूम हो जायेगा कि ये अभागे दास दासी कैसी आपत्ति का पुड़िया है[2] (टा०ठकु०-174)

मैं पूछता हूँ, क्या तू हम लोगों की बात नहीं मानेगी?[3] (स्वामिभक्ति-78)

मैं ऐसी चीज बनाता हूँ कि उनको याद करने से सबको चूस के भी मुंह में पानी आ जाता है (रायबहादुर- 50)

- -

1- यह आश्रित उपवाक्य प्रधान संज्ञा उपवाक्य का समानाधिकरण उपवाक्य है।

2- मुख्य उपवाक्य में 'यह' सर्वनाम छिपा है ।

3- कर्म के स्थान पर आने के कारण आश्रित उपवाक्य के पूर्व संयोजक 'कि' का लोप हो गया है ।

मैं उसे ऐसी दवा पिलाऊँगी कि वह जन्म भर ब्याह का नाम ही न लेगी ------- (स्वामिभक्ति- 78)

(1) संज्ञा का समानाधिकरण उपवाक्य:-

काल की भी क्या ही कराल गति है कि कुछ दिन भी वह उसमें न रहने पाये थे कि नाना प्रकार के राजनैतिक संघर्ष में पड़ कर उन्हें बल सम्पन्न होना पड़ा (रमाबाई- 1)

तुम भी देखोगी कि इस अंगूठी की बदौलत मैं उसे कैसा धोखा देती हूँ और किस तरह अपने फंदे में फँसाती हूँ? (चन्द्रकान्ति संतति-भाग1 पृ0- 25)

कुँवर साहब फरमाते हैं कि वह ऐसी खूबसूरत है कि चौदहवीं रात का चाँद भी इस चेहरे के हुस्न को देख कर, शर्म से घट कर हिलाल हो गया ---- (रायबहादुर- 151)

तेरी यह आशा कभी पूर्ण न होगी कि मुन्नी तुझे तेरी दिल्लगी के रुपये देगी और तेरे प्रेम की भिक्षुक भिखारिणी बनेगी(स्वामिभक्ति-90)

6-1-क-2-ख- विशेषण उपवाक्य

यह बिल एक ऐसा कड़ा नियम हो जायेगा जिसके शासन में मुद्रण व छाप दोनों पर स्वतंत्रता की [illegible] व लेखनकला पर ताला लग जायगा- - - - - - - - - - - - - - - -(कौमोतलवार-67)

महारानी से जा के कह कि मैं कौन हूँ जो महारानी से ऐसे काम के लिये कहूँ ([illegible]0- 45)

मुनि वे लोग हैं जो मौन साध कर, संसार त्याग, किसी पहाड़ की गुफा में या मन्दिरों में धूनी रमाए हुए गाँजा और भंग की तरंगों के साथ परमार्थ चिन्तन किया करते हैं (कृष्णार्जुन युद्ध- 5)

उसकी भौंहों की मटक में कुछ ऐसा जादू भरा था कि* जिसने उसको पिंजड़े का तोता बना लिया था (रि0क्यो0- 161)

1: 'कि' संयोजक अव्यय फारसी रचना के अनुकरण पर लगाया गया है।

जिसने* सदा धोखा खाया, वह जगत पर कैसे विश्वास लाये? (सावित्री सत्य०-1

कौन है भला वह जिसने इस तरह हमारी आँखों में धूल झोंक कर हमारी इज्जत पर डाका डालने की कोशिश की है (बौछे- 43)

हम चाह आई ऐसी शिक्षा से जो हमारी आँखों का पानी मार दे (मरदानी औरतें- 18)

(1) विशेषण उपवाक्य का समानाधिकरण:-

संज्ञा उपवाक्य की तरह ही विशेषण उपवाक्य का भी समानाधिकरण होता है उदाहरणार्थ —

मुझे तुम्हारी बाप की बेमुरौवती का बड़ा रंज है जिसने हम लोगों को दूध की मक्खी की तरह एक दम निकाल कर फेंक दिया और पिछली मुहब्बत का कुछ भी ख्याल न किया --(चन्द्रकांता संतति- भाग-23-पृ० 25)

वह एक ऐसी भयंकर घटना थी कि उसने मेरे सारे नशे को बात की बात में मिट्टी कर दिया और मैं चैतन्य हो कर उसी दिन कलकत्ते का मुँह काला करके अपने घर, मुर्शिदाबाद चला गया(या०कु० ला०-2)

क्यों कि कुलकारिणी विलासिनी ने मेरे हृदय क्षेत्र में वह आग लगाई थी कि जिसकी ज्वाला से मैं ऐसा भुना जाता था कि घर पर एक मास से अधिक किसी भाँति न ठहर सकता (या०ला०- 3)

जो लोग पकड़े गए थे उनमें से कुछ दे दिला कर, कुछ सच्ची सिफारिश से और कुछ खुशामद मिन्नत से छूट गए और जो रहे थे उनमें से रोगी जिलों के यात्रियों को क्वारन्टाइन में और बीमारों को अस्पताल में पहुँचाने की पुलिस को आज्ञा दे कर डाक्टर डाक्टरिन अपने अपने घर चल गई।---------------)(सुशीला विधवा- 46)

अब क्या उपाय करूँ, जिससे दोनों ही प्रसन्न रहें और उचित न्याय की धुन कर, उलटी धारा न बहे? (सती चिन्ता- 20)

---

*इस प्रकार के वाक्य जिनमें पहले संज्ञा का उपयोग कर के बाद में उसका संबंध या वह सर्वनाम अथवा कभी कभी उस संज्ञा के बदले में निश्चय वाचक सर्वनाम प्रयुक्त किए जाते हैं, अंग्रेजी के संबंधवाचक सर्वनाम की रचना के अनुकरण का फल जान पड़ता है, हिन्दी में आजकल इस प्रकार की शैली का प्रयोग अधिकाधिक हो रहा है।

6-1-क-2-ग क्रिया विशेषण उपवाक्य

क्रिया विशेषण उपवाक्यों का प्रयोग मुख्य उपवाक्य के विधेय के काल, स्थान, रीति, परिमाण, कार्यकारण जैसे अवस्थाओं के सभी अर्थों में हुआ है। परन्तु यहाँ पर उनका अलग- अलग विवेचन न करके केवल रचना प्रक्रिया के विचार से कुछ ही उदाहरण दिए जायेंगे क्योंकि जिन क्रिया विशेषण अव्ययों के संयोग से ये उपवाक्य बनते हैं उनका विस्तृत विवेचन शब्दावली और व्याकरण प्रकरण में किया जा चुका है,— जैसेः—

अगर ऐसा नहीं होगा तो हमारे लिए सत्याग्रह का मैदान साफ है।
(भारत दर्शन- 79)

यदि मेरी सेवा से उनका अंतःपतन जाय तो मैं कठिन से कठिन पुरुषार्थ करने के लिए भी तैयार हूँ।- - - -(श्रवण कुमार- 9)

मेरा लड़का होता तो कभी ऐसा राजद्रोही, मालिक की आज्ञा न मानने वाला और कर्तव्य हीन नहीं होता—(नवाबनन्दिनी-27)

जिस प्रकार उस अनादि अनन्त ब्रह्म को किसी ने पार नहीं पाया, उसी प्रकार शास्त्र बल का भी कोई पार नहीं पा सकता (संयोगिता हरण-101)

पृथ्वीराज की अर्द्धांगिनी जब तक कन्ह काका के धोखे में दम है, तब तक तू किसी बात की चिन्ता न कर। - -(संयोगिता हरण- 102)

जब से हम लोगों ने विघ्नराज जी की क्रिया की है तब से तो पंचवटी से निकले बड़ी देर हुई (महावीर चरित- 64)

टाम जब भोजनागार में बैठकर पेट पूजा करने लगा तब सब दास-दासी वहाँ इकट्ठा हो कर बड़े चाव से उसके पुत्र के विषय में कुछ पूछ -पाछ करने लगे -(टा0का0कु0- 87)

लेकिन अफसोस, ज्यों ज्यों मैं आगे बढ़ता जाता था त्यों-त्यों पानी का वह गड्ढा भी आगे बढ़ता जाता था- --(चंद्रकांता- 155)

आप जितनी ही बड़ाई करेंगे प्रजा उतनी ही घर पर बढ़ती जायेगी
(भारती- 269)

एक रोज जैसे ही चवाल में हम लोग पहुँचे, वैसे ही पंडित जी भागवत के कहने लगे - - -(लम्बोदाढ़ी- 36)

(1) क्रिया विशेषण का समानाधिकरण उपवाक्य

तपस्वियों के आश्रम में विनीत भेष से आना कहा है इसलिए तो तुम ये लिए रहो और जब तक मैं तपोवन वासियों के दर्शन कर के आऊँ तुम घोड़ों की पीठ ठण्डी कर लो --- (शकुन्तला ना0- 11)

अपना यह बात खूब जानता था कि यदि लोग मेरे सती होने के मतलब को जान जायेंगे तो होशियार हो जायेंगे और तब मैं अपनी इच्छा कदापि पूरी न कर सकूँगी)-(राजकुमारी-13)

लेकिन जब हम जल बरसाते हैं, तभी मृत्यु लोकवासी एक-एक दाने के सौ-सौ दाने पाते और खाते हैं, फिर उन्हीं दानों की कमाई से यज्ञ में धर्म कमाते हैं (श्री गंगावतरण- 39)

जब पावस ऋतु वायु का प्रचण्ड प्रचार होता है तब वह मेघ की धारा बरस कर धरा पर प्रलय कर देता है , सो आज यह पृथ्वीराज मेघ कन्नौज का प्रलय करेगा —(संयोगिताहरण-163)

सोची सी बात यह है कि जब आप को कोई उपाधि नहीं मिली , और न आप का जन्म ही किसी धनी घरदार के यहाँ हुआ है, तब मेरी लड़की आपको इस जन्म में क्या, सात जन्म में भी नहीं मिलेगी(राय बहादुर-81)

अगर चार आदमियों में फँस गए तो मुँह खोल के खड़े हो गए, और अगर कहीं उनके सामने से किताब हटा ली फिर तो भड़के हुए बैल का मजा लीजिए- - -(लम्बोदादी-34)

: उपर्युक्त संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण उपवाक्यों का मुख्य उपवाक्यों के साथ योग का जो विधान हुआ है उससे स्पष्ट है कि संज्ञा और विशेषण उपवाक्य सामान्यतः मुख्य उपवाक्य के बाद ही आए हैं किन्तु क्रियाविशेषण उपवाक्य अधिकतर मुख्य उपवाक्य के पूर्व ही आए हैं । अब यहाँ पर तीनों उपवाक्यों के योग , से कुछ विस्तृत मिश्रित उपवाक्यों के उदाहरण दिए जा रहे हैं —

6-1-क-2-ब मिश्रित वाक्य का विस्तार

यदि आपने अपने ईश्वर के नाम धन धान्य न्यौछावर कर दिखाया है तो भारतवर्ष को देखो जिसने विदेशी सरकार के लिए राजा के नाम पर तन मन

धन सब लुटाया है और अपने आप को इससे भी दीन- दरिद्र बनाया है।

(भारत वर्ष- 58)

मंत्री ने हाथ जोड़ कर कहा है कि विदर्भ से दो कलावती स्त्रियाँ आई थी सो राह की थकी थीं इससे श्री चरणों के सामने नहीं गईं -- (मालविका0- !

कुबेर ने जो रावण के सौतेले भाई है जब गन्धर्वराज से यह हाल सुना तब हमको आज्ञा दी कि जाओ जो हमारे भाई बन्धु बचे हैं उनको समझा बुझा आओ ------------(महावीर चरित- 99)

मैं वहाँ का एक निरपराध जागीरदार हूँ जिसका सब कुछ छीन लिया गया है और जो दूध में पड़ी मक्खी की भाँति वहाँ से बाहर निकाल कर फेंक दिया गया है जिससे दुनिया भर में धूल चाटता फिरे -(दुर्गावती- 55)

पापी को प्राणदण्ड देने से बेहतर है, कि अपने एहसानों से उसके जीवन को अन्त में आदर्श बना दें, ताकि देश के इतिहास लेखक और नाट्यकारों को उसका नाम लिख कर अपनी पवित्र लेखनी को कलुषित न करना पड़े —(स्वामिभक्ति- 145)

6-1-क-3- संयुक्त वाक्य

एक से अधिक प्रधान उपवाक्यों के योग से बने संयुक्त वाक्यों का प्रयोग भी इस युग में बहुत ही विस्तृत रूप में हुआ है। संयुक्त वाक्यों के समानाधिकरण उपवाक्यों में संयोजक, विभाजक, विरोध दर्शक, और परिणाम बोधक संबंध पाया जाता है जो बहुधा समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्ययों द्वारा सूचित होते हैं। अब इन संबंध-क्रम संबंधों का अलग विवेचन किया जा रहा है —

6-1-क-3क संयोजक-

बहू छाती पीट-पीट कर रोने लगी और अपने सोए हुए दोनों बालकों को जगा, उन दोनों के हाथ पकड़ कर घर से बाहर निकल गई

(छोटी बहू- 5)

लहनासिंह ने दोनों गोले बोर कर बन्दक के बाहर फेंके और सब को घसीट कर सिगड़ी के पास लिटाया (उसने कहा था- 56)

केवल तुम जीवन दान ही के योग्य नहीं हो सो तुम्हारे निमित्त इतना प्रसाद और है ---(नागानंद- 100)

उसने एक ओर जाते ही अंगुली को काट कर सिर्फ जुर्म ही नहीं किया है लेकिन सदा ही में कुछ का भी सर्वनाश किया है (रस का कुरा धी0-27)

आप लोग विराजिए, मैं कोई पहुँचा हुआ साधू नहीं हूँ, केवल आप के सामने अपना दुखड़ा रोने आया हूँ -(दुर्गावती- 54)

6-1-क-3ख विभाजक

अब की या तो ये ही हमें जीत कर पैतृक कुल का वृहत राज्य भोगेंगे या हमीं लोग उनका सर्वस्व जीत उन्हें कानन निवासी बना कर छोड़ेंगे

(द्रौपदी चीरहरण- 17)

तो क्या ऐसे पापी जीव को अभी देह से बाहर करूँ अथवा इन दोनों को समझाऊँ (नागानंद- 81)

न तो गणित करने से कुछ फल निकलता है और न दर्शनशास्त्र से ही इसकी मीमांसा होती है ------(प्रतापसिंह -119)

दुनियाँ में सभी आपके हैं - न सब बुरे ही हैं न सब भले ही।-

(दुर्गावती- 57)

पर अब मुझे आशा राम जैसे आदमियों से दोस्ती का नाता न रखना चाहिए नहीं तो मेरी इज्जत में बट्टा लगेगा(रायबहादुर- 147)

अकेले कहानी कहने चले हो या दिल के फफोले फोड़ने (बुद्धू का काँटा-20)

6-1-क-3-ग- विरोध दर्शक

भोग विलास का बहु रंग रंजित चित्रमय जगत दृष्टि तल आ सकता है पर निरसहाय धूल धूसरित कुन्तला विधवा की करुणोत्पादक मूर्ति स्वप्न में भी दृष्टिगोचर नहीं हो सकती (——(भारत दर्पण-31)

उसके चेहरे पर चिन्ता का लेश नहीं है, किन्तु उसके बदले उमा के चेहरे से सौभाग्य की छटा फूट फूट कर निकल रही है ।(उमा- 9)

कुँज का ख्याल छोड़ कर मैं दरिया की ठीक करने चली लेकिन वह भी मेरी कलम से मरियम का सुहावना मुखड़ा ही निकला — -(चाँदबीबी-128)

शयनागार में कुम- आराधना होने पर बहुत कुछ विचार किया , परन्तु कुछ भी थाह - पत्थर उसकी समझ में न आया—(राजकुमारी- 88)

6-1-क-3घ परिणाम बोधक—

यहाँ पर रहते- रहते जी ऊब गया है, इसीलिए कुछ दिनों के लिए कन्नौज आ रहा हूँ (रणबाँकुरा- पी0-116)

द्रव्य ने इन लोगों को अंधा कर दिया है इसीलिए इनके सिर पर पुतलेनो सरदार बनने की धुन आठ पहर चौसठ घड़ी सवार रहती है -------------------(रावबहादुर- 36)

वह अकबर का दूत बेचारा तनिक मार्ग में भटक गया था, सो मैं उसको सीधा मार्ग बतला रहा था—(दुर्गावती- 4)

कभी कभी समानाधिकरण अव्यय बिना ही समुच्चयबोधक के जोड़ दिए जाते हैं, अथवा जोड़े से आने वाले अव्ययों में से किसी एक का लोप कर के भी संयुक्त वाक्य बनता है। इस प्रकार के संयुक्त वाक्य मात्र अर्धविराम लगाने से बनाया जाता है यहाँ पर कुछ इसी प्रकार के संयुक्त वाक्य के उदाहरण दिए जा रहे हैं:—

उमा ने अपनी साड़ी को मैली होते हुए देख, एक रोबदार सेनापति की तरह गुड़गुड़ी की ताबादार चिलम को पीकदान के ऊपर उलट दिया, घर के पूर्व ओर की खिड़की का किवाड़ खोल दिया एवं बच्चे के हाथ से साड़ी ले कर अरगनी पर रख दिया- --(उमा- 12)

भइया गोवर्धन, तुम्हारे जीजा जी के मारे तो मेरा नाम में दम है, न कुछ करते है न धरते हैं, घर में बैठे बातें बना या करते हैं।

(भीष्म- 86)

न कुछ करना, न धरना - बैठे बैठे बातें बनाना और कोई समझावे-बुझावे तो उसकी छाती पे चढ़ बैठना --- (भीष्म- 96)

आप का कहना काबिल इतमीनान है, आप सचमुच वैसे ही रणबाँकुरा हैं, लेकिन यह मौका बहादुरी दिखाने का नहीं है, यह मौका अक्लमंदी का है

(रणबाँकुरा-36)

6-1-क-3-ङ संयुक्त वाक्यों का विस्तार:-

संयुक्त वाक्यों के जो विस्तृत प्रयोग मिले हैं उनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:—

तुम तो अब राजभवन छोड़ इस भयंकर निरजन वन में बस कर अहेरियों के काम करोगे परन्तु मैं सत्य कहता हूँ कि जंगली पशुओं के पीछे दिन प्रतिदिन भागते - भागते मेरे अंगों के जोड़ हिल गए हैं इसलिए दया कर के मुझे एक दिन तो विश्राम कर लेने को छोड़ जाओ—

(शकुन्तला ना०- 33)

क्यों कि लोगों ने उसे कोचबक्स पर बैठने कहा था, सो वह एक छलांग मार कर ऊपर जा बैठा, और आनन्द से बाँए हाथ में घोड़ों की रास, और दाहिने हाथ में चाबुक ले कर आप ही गाड़ी हाँकने के लिए उतावली मचानें लगा- - - - - -(छोटी बहू- 81)

दीवान ने दिन भर तो सब्र किया, पर आधी रात को वहाँ जा कर एक ताली के सहारे से उस ताले को खोला और तहखाने के जरिए वह नीचे उतर गया पर वहाँ थोड़ी देर तक मोम बत्ती के उजाले में कुछ देर तक देखभाल कर चट वह ऊपर वापस आया और आप ही आप बोल उठा

(राजकुमारी- 96)

सोने के का कुंडनाल होंठ पर झूल रहा है, बच्चा उस कुंडनाल को पकड़ हथिया लेने के लिए बार बार चेष्टा करता है, पर विफल मनोरथ हो पिता की देह पर हंसता हुआ लोट जाता है और माँ की रंगीन साड़ी माथे पर रख ची का रूप बनाता है ।- -(उमा- 12)

6-1-ब अर्थ का आधार।-

व्याकरणिक अर्थ के अनुसार वाक्यों के आठ भेद होते हैं। इनमें से केवल संकेतार्थक वाक्य को छोड़ कर सभी वाक्य रचना की दृष्टि से साधारण , मिश्र और संयुक्त हो सकते हैं। अर्थ की दृष्टि से युग की भाषा में जो वाक्य मिलते हैं उनके कुछ ही रूप मात्र स्पष्टीकरण के लिए दिए गये हैं , क्यों कि इनका विस्तृत विवेचन रचना की दृष्टि से भेद के अन्तर्गत किया जा चुका है —

6-1-ब-1 विधानार्थक वाक्य:-

(क) साधारण:-

तुम्हारे उचित व्यवहार से हम अति संतुष्ट हुए(सतीचिन्ता- 27)

आप का कहना सच है - - -(रायबहादुरम 169)

ख- मिश्र—

जब हमारा और उनका जो भी युद्ध समाप्त हो जायेगा तब गोदान कर के कुमारों का ब्याह होगा।— --(महावीर चरित-17)

यद्यपि हमको पराजित हो होना पड़ा परन्तु हमारी वीरता की धाक संसार में बंध गई ---(कोमोतलवार- 60)

ग- संयुक्तः-

उस कटार को बांधती हूं और यह उछल कर गिर पड़ती है।- (रणबांकुरा चौहान- 121)

सुबह होते- होते वहाँ पहुँच जाये गें, इसलिए जल्दी पट्टी बांध कर एक गाड़ी में घायल लिटाए गए और दूसरी में लाशें रखी गईं। (उसने कहा था- 58)

6-1-क-2 निषेध वाचक वाक्य

क- साधारण—

यह वचन आप के मुख से निकलने योग्य नहीं है(द्रौपदी चीरहरण- 21)

उनकी इच्छा के विरुद्ध बात करने वाला संसार में कोई नहीं है। (नवाबनंदिनी- 7)

ख- मिश्रः-

मुझे इतना ही कहना है कि क्षमा करने में वार न लगा जो राम ~~जैसा~~ ऐसा वीर न होता ----(महावीर की रस- 32)

यह बदबख्त जब तक आप की नजरों से दूर नहीं होगी जब तक दोनों को तकलीफ नहीं दूर होगी।---(नवाबनंदिनी-97)

ग- संयुक्तः-

यह महा अधर्म हम चारों भाई नहीं स्वीकार कर सकते और न हम लोग इस प्रकार हार को ही स्वीकार करें गें (द्रौपदीचीर हरण-52)

देश का हित साधन वक्तृताएँ देने से होता है और न गोल माने से (राणाप्रतापसिंह-3)

6-1-क-3- आज्ञार्थक-

क- साधारणः-

बस अब अधिक बोलने का साहस न कर(सती चिन्ता-68)

सामंतों इस दुष्ट तातार को इसकी सेना सहित कुचल डालो।

(राजपूताना चौहान- 185)

ख- मिश्र-

महाबानो से कहो कि योगिनी जी के साथ यहाँ आ जांय (मालविका0-8)

अगर कोई भूल कर भी मेरे प्यारे हिन्दू धर्म को सर्वहीन करे तो उसी दम गोली से उड़ा दिया जाय।--(दुर्गावती- 93)

हे वैनतेय! मैं कहता हूँ सो सुनो। (नागानंद- 92)

ग- संयुक्त:-

अच्छा तू अभी जा कर कोटपाल से कह कि शीघ्र ही आगे से जा कर उनका स्वागत कर आदर सहित उन्हें लिवा लावें और सेना को उस लोह मंडित दुर्ग में उतारे (द्रौपदीचीरहरण- 25)

प्रधानजी! ले जाओ और साधारण रीति से विवाह कार्य सम्पूर्ण कर, इन दोनों को नगर के बाहर छोड़ आओ।(सती चिन्ता- 110)

6-1क- 4 प्रश्नार्थक:-

क- साधारण:-

तुमको यह कहाँ मिली? (नवाब नंदिनी- 86)

यह सब आप ही के यहाँ के लोग हैं?(मालविका 0-55)

ख- मिश्र:-

क्या तुम चाहते हो कि तुम और तुम्हारी संतान दासता की बेड़ियों में जकड़ी जाय और पराधीनता के दुख भोगा करे?(दुर्गावती-98)

क्या मैं जान सकती हूँ कि यह दुष्टता भरी कलंक का टीका उनके मस्तक पर कैसे लगा?- - - - - - -(प्रेम योगिनी- 95)

ग- संयुक्त:-

मैं क्या कर रहा हूँ अथवा क्या सोच रहा हूँ सो तू सुन कर क्या करेगी?

(प्रेमयोगिनी-67)

अरे, क्या फिर भी ये हारे हुए योध्दा साहस कर के युध्द के लिए लौट आए हैं और मुझ पर प्रहार करना चाहते हैं?--(उत्तरा0 चर0105)

6-1क-5अ विस्मयादि बोधक:-

क- साधारण:-

ओह! आज बड़ी चिंतित दिखती रही हो(उमा- 63)

आहा, देखा अच्छा रुका था(रावबहादुर- 57)

ख- मिश्र

मैं नहीं जानता था कि तुम्हें इतना रूप है, इतना लावण्य है।

(उमा- 53)

महाराज मैंने तो सोचा था यह सकुशल है(राणाप्रतापसिंह-106)

ग-संयुक्तः-

मैंने सब कुछ पाकर भी अपने वंश का गौरव नष्ट किया है और तुमने सब कुछ भी खो कर उसे बनाए रखा है।(राणाप्रतापसिंह-133)

तोप खाने के आने में देर हुई, इसीलिए अहुलो बार मैदान हमारे हाथ से निकल गया, वरना भला कोई बात थी।(दुर्गावती- 113)

6-1-ख-6- इच्छा बोधक:-

क- साधारणः-

देवी तेरा कल्याण करें। (वनवीर नाटक- 61)

भगवान मेरे दोनों लड़कों को जीवित रखें(कुमा - 66)

ख- मिश्रः-

कहीं रहें सुख से रहें (छोटी बहू- 136)

भगवान करें, यही हो। (दुर्गावती- 122)

ग- संयुक्तः-

संसार में तेरा नाम अमर हो और भारत वर्ष के बच्चे तुझे अपना पथ प्रदर्शक और आदर्श मान कर तेरा अनुकरण करते हुए स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का मोह छोड़ कर इसी प्रकार युद्ध करें।(दुर्गावती- 130)

6-1ख-7- संदेह सूचक

क- साधारणः-

नौकरानियाँ आती होंगी --(नवाबनन्दिनी- 87)

अब उसकी उम्र 20 वर्ष के लगभग होगी(रावबहादुर- 43)

ख- मिश्रः-

तब भी उसकी बनावट, उसकी मजबूती और उसके विस्तार को देख कर यह ख्याल होता है कि जो इस मकान का मालिक होगा उसका दौर- दौरा उस समय खूब रहा होगा—(पां०८०-2)

ग- संयुक्तः-

आज यहाँ सब ग्रामीणों का जमघट होता होगा, और वे सब मेरी

यह आदमी उन्हीं के साथ का होगा और किसी सबब से पीछे रह गया होगा
(दुर्गावती-71)

6-1-क-8 संकेतार्थः-

अगर आप झुक कर सलाम करें तो मैं आप को झुक कर सलाम करूँगा। अगर आप मुझे गाली देंगे तो मैं आप के कत्ल का इन्तजाम करूँगा (भारतदर्पण-89)

यदि मैंने तुम्हारी तरह पूर्व जन्म में बलि दान किया होता तो डेढ़ हाथ और लम्बा हो गया होता—(सती चिन्ता-25)

6-2 विश्लेषणात्मक पद्धतिः-

संश्लेषणात्मक पद्धति के वाक्य, उपवाक्य तथा वाक्यांश नामक वाक्यस्तरीय रचनाओं की अन्विति में जिन लघुतत्वों अर्थात अन्वय, शब्द क्रम, स्थानान्तरण, अध्याहार का सक्रिय योगदान है उन्हें विशिष्ट रूप में रख कर वाक्य योजना के मूल में सक्रिय व्यवस्था की ओर निर्देश कर के वाक्यों का अध्ययन करना ही विश्लेषणात्मक पद्धति का लक्ष्य है।

विश्लेषणात्मक पद्धति के आधार पर इस युग के वाक्यों का अध्ययन निम्नलिखित अंशीय तत्वों के आधार पर किया गया है -

6-2-क अन्वय
6-2-ख शब्दक्रम
6-2-ग - स्थानान्तरण
6-2-घ- अध्याहार-

6-2-क अन्वयः-

विश्लेषणात्मक दृष्टि से किसी भी साहित्यिक भाषा में वाक्य संरचना के मुख्य तत्व शब्दान्वय तथा शब्दक्रम है। शब्दों के लिंग, वचन तथा कारकादि के आधार पर वाक्य में शब्दों के परस्पर संबंध का निर्णय करना ही अन्वय का विषय है

अस्तु स्पष्टीकरण के लिए व्याकरणिक नियमानुकूल निर्मित इन संबंधों के कुछ उदाहरण प्रयोग सहित निम्नलिखित रूप में दिए जा रहे हैं —

6-2-क-1 कर्ता और क्रिया का अन्वयः-

1 परसर्ग रहित कर्ताकारक के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार ही क्रिया के भी

लिंग, वचन और पुरुष हैः-

हथियार बन्द बनचोर गुप्त पत्र पढ़ता देवा के सामने आता है (बनचोर ना0- 58)

कोई सुन्दर नारी वीणा को बजाती है (नागानंद- 11)

उनके पेट में चूहे कूदने लगते हैं (मतीचिन्ता- 22)

राजा विदूषक, इरावती प्रतिहारी बाहर आते हैं (मती भक- 48)

मैं शहजादा मुराद आप को अदाब करता हूँ(चांदबीबी- 364)

मैं ऐसा सवाल क्यों न करती (स्वाभिमानित-93)

1- सम्भाव्य भविष्यत तथा विधि काल के कर्तृवाच्य में और स्थिति दर्शक होना'

क्रिया के सामान्य वर्तमान काल में लिंग के कारण क्रिया में कोई रूपान्तर नहीं होता।

हम लोग भी देव मंदिर के दर्शन करें (नागानंद-11)स्त्रीलिंग)

हम लोग भी तमाल वीथिका को चलें (,,- 51) पुलिंग)

मैं अपना सर्वस्व उसे दे डालूँ(गंगावतरण-67)

पुत्र भगीरथ- तुम अपने साठ हजार पितरों का स्थान बताओ, मैं तुम्हारे- तुम्हारे साथ चलती हूँ, तुम आगे आगे राह दिखाओ(श्री गंगावतरण-63)

कौशल अरुण कुमार। देखते क्या हो, चाबो और स्वर्ग का मजा उड़ाओ। (रणबांकुरा चौहान- 16)

इस कार्य में विघ्न है (प्रेमयोगिनी- 113)

आदर के अर्थ में एक वचन कर्ता के साथ बहुवचन क्रिया का प्रयोग सामान्य है।—

पिता जी मुझे बुलाते हैं (नागानंद- 61)

कुछ तो राज की ड्योढ़ी से उतर चुके हैं (संयोगिताहरण-75)

मदन जी इन दूसरी पगडंडी से चलने लगे(वी0द0- 66)

अब आप युद्ध को ललकारते हैं (भीष्म प्रतिज्ञा-90)

उद्देश्य पूर्ति के लिंग, वचन पुरुष उद्देश्य से भिन्न होते हैं फिर भी क्रिया उद्देश्य के लिंग वचन के अनुसार होती है।—

मैंने बहुत परोपकारी साधु देखे हैं (नागानंद-67)

तुम दिन रात महाराज चौपट्ट के दरबार में बैठे कर मक्खियाँ मारा करते हो और मैं यजमानों के प्रताप से लड्डू और पेड़ों पर हाथ मारा करता हूँ(सती चिन्ता-23)

ये लोग एक- एक पैसे के यत्न में आहें भर रहे हैं , यहाँ की विचित्र लीला देख कर धर्मनीति, राजनीति , शास्त्रनीति और शास्त्रनीति पशुनीति पशु रूप धारण कर के [illegible] की भाँति घास चर रहे हैं। गौतमबु0-58)

मालूम होता है कि आप अपनी बुद्धि घर पर रख आये हैं(गौ0बु0-30)

[illegible]- समुच्चय बोधक शब्दों से जुड़े हुए भिन्न लिंग के कर्ताओं की क्रिया बहुवचन पुल्लिंग में होती है :-

यहीं फाटक चन्द्र और सवेरी हैं। ([illegible]-141)

राजाओं में इन्द्र और नक्षत्रों में चन्द्र, पशुओं में मृग और पर्वतों में (जिस प्रकार) कैलाश शोभायमान हैं([illegible] कुमार-65)

शक्ति और दौलतुन्निसा यहाँ से नीचे उतरते हैं (राणाप्रताप सिंह- 186)

भिन्न भिन्न लिंग, वचन के एक से अधिक अप्रत्यय संज्ञाओं के कर्ता कारक में आने पर क्रिया का लिंग वचन अन्तिम कर्ता के अनुसार होता है —

पृथ्वीराज तथा संयोगिता दो चार सामंतों के सहित आती है।

(संयोगिताहरण- 106)

कुमार और समस्त कुमारियाँ आ पहुँची हैं -(गौतम बुद्ध- 5)

पन्ना , कर्मचन्द राव, जगमलराय, जयसिंह देव और अन्य बहुत से सरदार प्रवेश करते हैं - - - (बनवीर नाटक - 120)

: इसी प्रकार अन्य कर्ता शब्दों की अन्विति क्रिया के साथ सामान्य रूप से हुई है । चूंकि इस काल में भाषा संबंधी सुधार की तरफ लेखकों का अधिक ध्यान था अतः अन्विति संबंधी त्रुटि नहीं के बराबर हो हुई है ।

6-2-क-2 कर्म तथा क्रिया का अन्वयः-

सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त से बने हुए कालों के साथ जब सप्रत्यय कर्ताकारक और अप्रत्यय कर्म कारक आता है तब कर्म के लिंग वचन पुरुष के अनुसार क्रिया के लिंगादि में परिवर्तन होता है :—

मेरी प्यारी रानी ने जिसे अपना प्यारा पुत्र माना था और मैंने एक दिन जिसके नाम अपनी सारी सम्पत्ति लिख दी थी -(राजकुमारी- 164)

राधे मोहन ने पिता के कम में पुत्र बनने में संकोच न किया([illegible]-99)

उस दुष्ट ने हमारो मात पुश्त की इज्जत बरबाद कर दी - कुल में कलंक लगा दिया - - - - - - - - - (रायबहादुर- 47)

नीच जयचन्द ने मेरा भयंकर अपमान किया है -(रणबांकुरा चौहान- 112)

महलों पर पताकाएं उड़ रही हैं.। (प्रतापसिंह- 167)

: सकर्मक क्रिया के उद्देश्य और मुख्य धर्म (कर्म) दोनों के परसर्ग युक्त होने पर क्रिया पुलिंग एक वचन , अन्य पुरुष में आती है :—

कपिल ने उन सब को क्रोध दृष्टि से भस्म किया। (गंगावतरण- 11)

मैंने जब रमाबाई को देखा था - - -(रायबहादुर- 43)

बुढ इब्राहिम शाह को पहरेदारों ने उनके महल में घुसने नहीं दिया (चाँदबीबी- 106)

: यदि दो या अधिक संयोजक समानाधिकरण वाक्य 'और' संयोजक समुच्चयबोधक शब्द से जुड़े हों और उनमें भिन्न भिन्न रूपों के — अर्थात अप्रत्यय सप्रत्यय कर्ताकारक आवे तो बहुधा पिछले कर्ताकारक का अध्याहार हो जाता है किन्तु क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष यथा नियम अर्थात कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार हो रहते हैं :—

मैंने चश्मा रुमाल से पोंछा और ( ) उसका मुंह देखा(सुखमय जी०-13)

तुम्हारे मिलने के लिए मैंने कितना तप किया है फिर प्राणों का संयम ऐसा किया - - - - - - - - -(मा मार्कंड- 48)

उसने अपने हाथों से रसोई बनाई और अपने हा आप परोस कर सब को खाना खिलाया - - - - - - -(उमा- 105)

अब मैं आप के चरणों को साक्षी बना कर प्रतिज्ञा करती हूँ कि आज से अपने सास श्वसुर को शंकर और पार्वती समझूंगी तथा अपने पति को परमेश्वर का स्वरूप मान कर पूजूंगी —(श्रवणकुमार- 68)

- -

टिप्पणी- कर्म- क्रिया लिंग, वचनादि के अन्वय संबंधी अन्य सामान्य प्रयोग कर्ता, क्रिया संबंधी अन्वय की भांति ही इस काल में भी प्रयुक्त हुए हैं इसी प्रकार विभिन्न कारकों का अन्य शब्द के साथ अन्वय का समुचित विवेचन व्याकरण अध्याय के संज्ञा सर्वनाम के कारक प्रकरण में किया जा चुका है ।

6-2-क-3 विशेषण विशेष्य का अन्वयः-

युग में प्रयुक्त विशेषण विशेष्य की अन्विति भी सामान्य रूप से ही हुई है, अर्थात विशेषण प्रायः विशेष्य के अनुसार ही अन्वित है। सामान्यतः यदि विशेष्य विकृत रूप में आता है तब आकारान्त विशेषणों में भी उसी के लिंग वचन, और कारक के अनुसार विकार होता है। यहाँ पर स्पष्टीकरण के लिए कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं :—

अच्छे कार्यों के लिए कठिन तपस्या और परिश्रम करने की आवश्यकता है
(संयोगिताहरण-16)

सब लोग भूलो-भटको राहों से अच्छे मार्ग पर आ रहे हैं(प्रेमयोगिनी-10)

ये कम्बख्त पुराने चावलों और पुराने पान का मजा क्या जानें?(चांदबीबी-51)

उसकी बड़ी बड़ी दोनों आँखों से आँसू की धारा बहने लगी(...मा-91)

यदि अनेक विशेष्यों का एक ही विकारी विशेषण हो तो वह प्रथम विशेष्य के लिंगवचनानुसार ही बदलता है :—

मैंने अपना सारा धन, विद्या और सम्मान भी गवाया(गंगावतरण-73)

काल, दूरत, माप, धन दिशा और रीतिवाचक संज्ञाओं के पूर्व जब संख्यावाचक विशेषण आता है और उन संज्ञाओं से समुदाय का बोध नहीं होता है तब बहुधा विशेषण विकृत कारकों में भी एक वचन के ही रूप में आता है :—

उसने पन्द्रह दिन में चुन कर हुक्म भी दे दिया (बुढु का काटा-26)
तीन मील का सामना है ((उसने कहा था-50)
कोई चार पाँच बरस की लड़की कुवारी अवधेगी। (सुखमय जीवन- 23)
सोचा कि मेरे घर सिताबपुर से पन्द्रह मील पर का लानगर है
(सुखमय जीवन-11)
इस कमरे की लम्बाई तीस फीट से कुछ कम है और चौड़ाई 23 फीट से कुछ ज्यादा है - --(धी०द०- 23)

इसी प्रकार विशेषण विशेष्य के अन्वय अन्विति सामान्य रूप से ही हुई है।

6-2-क-4- भेदक (संबंधकारक) एवं भेद्य (संबंधी शब्द) का अन्वय:-

व्याकरणिक नियम के अनुसार भेदक का रूप संबंधी शब्द के अनुसार होता है क्यों कि ये संबंधी शब्द के विशेषण होते हैं जैसे,—

निपुण कारीगरों की बुद्धि चक्कर खाने लगती है(रस०1904-15)

ब्रह्मा ने जहाँ पनाह का आँखों को बिल्कुल अन्धा बनाया है (चांदबाबा-103)

सम्प्रदायों की पूर्तियाँ करने से अनेक व्याध रह गए(र०र०-24)

केवल मुझे दूध को मक्खी समझ लिया है (मानसरोवर-149)

घोड़ों का हाल महाबाभनों से पूछिए(कुमदा र- आ०-5)

किन्तु कहीं -कहीं ऐसा भी देखा गया है कि संबंध कारक की अन्विति संबंधी शब्द के अनुसार नहीं हुई है । इस प्रकार के शब्दों का विवेचन इसी अध्याय के विशिष्ट वाक्य रचना की अन्वय संबंधी विशिष्टता में दिया गया है देखिए--6-2-क-6

6-2-क-5 अव्ययों का अन्य शब्दों से संबंध:-

व्याकरण प्रकरण में अव्ययों के रूप तथा प्रयोगों का विस्तृत विवेचन किया जा चुका है यहाँ पर उनका विवेचन करना पुनरावर्तन ही होगा। (अतः वाक्य में अव्ययों का अन्य शब्दों से संबंध के लिए देखिए व्याकरण प्रकरण-3-5)

6-2-क-6 अन्वय संबंधी विशिष्टताएँ:-

यह स्पष्ट है कि इस समय तक भाषा काफी सम्पन्न और विकसित हो गई थी फिर भी संक्रांति काल होने के कारण अन्वय संबंधी त्रुटियाँ वाक्यों में यथास्थान आ ही गई हैं। वाक्यों में अन्वय संबंधी ये दोष अधिकांशतः अनुवादित कृतियों में ही उपलब्ध हैं जो निम्न लिखित हैं :—

(1) कर्ता + क्रिया का अन्वय

क- लिंग संबंधी:-

कर्ता के अनुसार क्रिया का लिंग नहीं है :—

आँचल के नीचे क्या छिपाए हो देखपाला(ठ०हि०८०- 16)

वह रमणी रत्न गाढ़ी नींद में सो रहा था(वि०क्यो०- 147)

होनहार किसी के रोके नहीं रुकती (रणधीर प्रेम0- 12)

लाज के पर्दे को हटा कर रखा को प्रार्थना करने के लिए मेरी आत्मा आप के सामने इस प्रकार बोला है - - - -(ऊषा अनिरुद्ध- 4)

ऐसा मैं कभी नहीं करूँगी: कदाचित ऐसा करने से आप मुझे न प्राप्त कर सकें यदि ऐसा हो देव तो मेरे मन में कुछ उत्पन्न होगी कि मैं क्यों नहीं नियम त्यागी (पैनिस न0 का व्या0-43)

यह सोचती थी कि सामने पड़ने पर क्या कहूँ गा(चौ0द0'- 96)

रानी लक्ष्मी बाई ग्वालियर की ओर से घोड़े पर सवार हो कर , अपनी तलवार चमकाते हुई अपने सेना भाग के आगे हुई (वीनता विलास- 63)

ख - वचन संबंधी:-

कर्ता के अनुसार क्रिया के वचन नहीं हैं । और इस प्रकार के प्रयोग इस काल में बहुत अधिक हुए है व्याकरण प्रकरण के सर्वनाम प्रयोग में इस प्रकार के रूप दिखाए जा चुके हैं स्पष्टी करण के लिए यहाँ पर निम्न प्रयोग उल्लेख नीय है :—

दूकानें फूल चुन-चुन कर देते हैं - - -(रजनी-4)

हमारे लड़का औषधि वितरण करने फिरते हैं (कौंसिल की मेम्बरी-39)

ऐसे करोड़ों बन्दर सुग्रीव के साथ हैं (महावीर चरित ना0- 81)

और लोग भी मन में लज करता है - -(कौंसिल की मे0-29)

ये इस काम से कभी को हुआ(रणधीर प्रेम मो0- 79)

ये भीड़ में छिप कर आ गया होगा (,,- 78)

यह प्रभु को नाई लिखते हैं (महावीर चरित ना0-19)

यह समझ गई - ---- - - -(कौंसिल की मे0-27)

यह क्यों ऐसा कहते हैं - -(,,, - 15)

यह अपने घर के पितरों की प्रतिष्ठा का बड़ा आदर करते थे(सु0चि026)

उसी दिन ये प्रसन्न होगी (आनन्दमठ- 19)

तुम सच कहता है (श्रीमती मंजरी- 46)

इस बात को हम भी जानता है तुम भी जानता है और सब जानता है
(कौंसिल की मैं0-30)

वह तो हमारे ही जोविका पर पानी फेरना चाहते हैं(संयोगिताहरण-64)

मैंने बहुतों को देखा है कि वह केवल ज्योतिष के भरोसे व्यापार करते-
फिरते हैं - - - - - - - - - - - - - -(गद्यमाला- 127)

ग- पुरुष संबंधी:-

वचन और लिंग के समान ही कर्ता के पुरुष के समान क्रिया का पुरुष नहीं है। यह विशेषता अधिकांशतः मध्यम पुरुष के साथ ही घटित होती है । आदर सूचक 'आप' के साथ क्रिया अन्य पुरुष बहुवचन में आती है । इस समय बहुत से प्रयोग ऐसे हुए हैं जिनमें कर्ता के पुरुष और क्रिया के पुरुष में भिन्नता है ।—

आप ऐसा वचन मत कहो- - -(रणधीर प्रेम0 73)

आप क्या भाँव से प्रीति करके मित्र की प्रीति भूलते हो(रणधीर प्रेम0108)

आप अपने यश की रक्षा करने के लिए जब उठो -(रणधीर प्रेम-108)

आप लोग अब मन कर हम को बचाओ- - - - -(,, - 111)

क्या आप को कुछ घर की भी खबर है कि रण ही रण में मग्न
रहते हो - - - - - - - - - - - - - - - - - -(संयोगिताहरण- 29)

आप हमारा पराक्रम देखना - --(माधवानल काम-150)

यह बात तुम मुझसे मत कहिए (सूर्यग्रहण-65)

आप को क नहीं भेजना है तो मत भेजिए-(मालतीमाधव- ना0-19)

आप कृपा करके बताओ तो - --(तुलसीदास-116)

सरकारी वकील साहब पूछता है --(श्रीमती मंजरी-88)

राजा परिध्वज तुम ऐसा पुरोहित पाके धन्य हैं(महावीरचरित ना0-35)

(2) कर्म + क्रिया का अन्वय:-

क- लिंग संबंधी:-

कर्म के अनुसार क्रिया का लिंग नहीं बदला है ।-

उनको सूर्य भगवान को किरणें खोजने लगे(आनंदमठ-19)

एक बात और कहना रह गई (उषा अनिरुद्ध-28)

इन दोनों ने रात भर रह कर उनको चाकरी करना चाहता था
(सु0चि0- 49)

इस बात को शुद्धि मन से परोक्षा करना चाहिए(चौमित को मै0-59)

यज्ञ पूर्ण होने हो नहीं पाती - --(धनुष यज्ञ ना0- 54)

गरीब की लड़की का ब्याह क्यों नहीं होतो(संसार-12)

ख- वचन संबंधीः-

आप के मुख से ये वचन अच्छा नहीं लगता(रणधोर प्रेम मो0-110)

यह बातें सब सत्य हैं --------(माधवानल086)

सूर्य के समान दो रिजुआ नहीं हैं--(,,- 91)

चार घोड़े और डेढ़ बहू थीं - --(रजनी-4)

ये तो क तपी बर्षो की कन्या हैं (शकुन्तला ना0- 12)

क्या यहूदी के आंखि नहीं हैं (वेनिस न9 का0 व्या0- 48)

आंख की पुतली पौर कृष्ण वर्ण की थीं--(सावित्री-19)

(3) विशेषण तथा विशेष्य का अन्वयः-

सामान्यतः विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार हो विशेषण के लिंग और वचन में भी परिवर्तन होता है किन्तु इस समय अनेकों ऐसे रूप तथा प्रयोग हैं जिनमें विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार विशेषण का लिंग और वचन भिन्न हैं जो अन्वय संबंधी विशेषता हो है यथा--

क- लिंग संबंधीः-

तुम्हारे आंखें है --------(रजनी-12)

अपना शिकार बनाने के लिए मेरा सामर्थ्य नहीं है(रणधीर प्रेम मो0-8)

जिसमें मेरो चित्र है ------(वेनिस न0 का0 व्या0- 35)

जो मेरो समान पापो हो --(मोराबाई -73)

जो सदा अपनो निमीलित नेत्रों से देखते हुए- - -(वेनिस न0 का व्या02

थोड़ा सा दही लाने कहा था- --(संसार-85)

राम ही यह भी कहा है, कि आज कल बहुत उपद्रव आरम्भ हो गया अतः बड़ा सावधानो से रहना होगा , - - -(हेमलता - 138)

इसके बाद उस रक्षराज ने राजपुत्र को अपना माता विशाखिनो के पास ले जा कर सौंप दिया- - -(सर0 1909- 206)

(4) भेदक संबंधी (कारक) तथा भेद्य संबंधी शब्द का अन्वय:-

संबंध कारक के रूप कई स्थलों पर भेद्य के लिंग, वचन के अनुसार नहीं हैं कहीं भेद्य के स्त्रीलिंग होने पर भी भेदक पुलिंग है तो कहीं भेद्य पुलिंग है तो भेदक स्त्रीलिंग, इसी प्रकार कहीं भेद्य बहुवचन में है तो भेदक का परसर्ग एकवचन में । इस प्रकार यह भिन्नता भेदक भेद्य संबंधी अन्वय की विशेषता ही कहा जायेगा यथा:—

क- लिंग संबंधी:-

जल से निकलने की जी नहीं चाहता—(माधवानल 0-66)
स्त्रियों को आगे या पीछे कहीं पैरों की आश्रय प्राप्त हुआ है (उ०रा० च०-24)
हमारे नलपत्तन के दो भाई है —(धनुषयज्ञ- 75)
वियोग से अपनी प्रारब्ध को दोष दे रही है -(माधवानल 54)
राजाओं की प्रीति रेत की भीत की समान होती है (मोरध्वज- 31)
परन्तु कुबेर जी को पता नहीं ---------(,,- 56)
या आज की खबर की कारण --(वेनिस न० का व्या०-74)
अंगुलीयक लेने की उपाय करो -(,,- 72)
योग्यता प्राप्त करने की साहस न कर(,,- 36)
अतिथि सत्कार का आज्ञा दे कर उसी की प्रबन्ध किया करने के लिए आई है
(शकुन्तला ना०- 9)
रुपये पैसे और अन्न की लड़ाई है (कौंसिल की मैं०- 29)
हक के वीरता को प्राप्त करने के लिए आया है(कौंसिल की मैं०-10)
अपना प्राण रक्षा करो --------(आनन्दम०- 68)
ईश्वरेच्छा का शपथ है -------(,,- 75)
पाषाण के मूर्ति के समान क्यों बैठे रहे(वेनिस न० का व्या०-4)
उसके आत्मा का परामर्श का ---(,,- 75)
तुम्हारे आंखें हैं --------(रजनी-12)
अपना शिकार बनाने के लिए मेरा सामर्थ्य नहीं(रणधीर प्रेम०-8)
परशुराम जी के हथियार पाने की रीति के हांसी सी कर रहे हैं
(महावीर चरित ना०-27)
बड़ों के आज्ञा पालन करने की शीघ्रता में तुम्हारी यथोचित सेवा किए
(उत्तर रा० च० ना०46)

इसमें सिर्फ किसी के रुचि के बात है (मझा और चरित्र ना0-59)

हम लोगों को भाग से लड़के लौट आए (,,- 110)

हजूर हो या खिदमत में अन्नते माना करती है—(तारा भा0ना-पु081)

मैं अपना भाग्य को धन्य मानता हूँ —(वेनिस ना0 का व्या0-8)

ब- वचन संबंधीः-

हमारे लड़का औषधि वितरण करते फिरते हैं(कौसिल की मैं0-38)

मैं और मेरे गुलाम हमेशा तैयार हैं- - - -(47) ,,- 47)

- -

शेष अरकों तथा उनके संबंधी कक द के साथ जो अन्वय हुआ है वे गत प्रकरण में परसर्ग की अनियमितता के अन्तर्गत किया जा चुका है देखिए— 3-3-ग(2)

यहाँ पर कुछ पुनरावृत्ति वृत्ति करना मात्र पिष्ट पिष्टपेषण होगा।

- -

शब्दों की अन्विति से अधिक वैविध्य सम्पूर्ण वाक्यों की अन्विति में है। इस काल में हो ऐसे प्रयोग प्रारम्भिक कृतियों में अधिक है। कर्ता और क्रिया के अन्वय में पुरुष संबंधी अन्वितियों उद्देश्य और विधेय की अन्विति को देखा जा सकता है यथा- - - -

(5) उद्देश्य आदर सूचक - विधेय मध्यमपुरुष बहुवचनः-

आप ऐसा वचन मत कहो —(रणधीर प्रेम-110)

आप हो मेरे पूज्य हो आप हो मेरे सर्वस्व हो —(रणधीर प्रेम-11)

आप किसी प्रकार का संदेह मत करो - - -(माधवानल का0- 39)

आप हमारा पराक्रम देखना - - - - - -(,,- ,,150)

आप अपने वंश की रक्षा करने के लिए जल्दी उठो- -(रणधीर प्रेम - 108)

क्या आप मुझे पहिचानते हो - - (वेनिस नगर का व्या0- 20)

(6) वाक्य- वाक्य की अन्वितिः-

कहीं कहीं एक ही व्यक्ति के संदर्भ में एक वाक्य आदरसूचक है तथा अन्य वाक्य दूसरे पुरुष और वचन में है :—

~~कहीं कहीं एक ही~~

यह तो बताओ कि कानपुर में जा कर क्या- क्या देख आये, वह मुझे भी तो बतलाइये - - - -(पुनर्जन्म ना0- 102)

आप को नहीं भेजना है तो मत भेजो —(माधोबसन्त० 19)

आप मुझे मनुष्य नहीं ज्ञात होते , देवता हो? या किन्नर हो?
(माधवानल० 143)

आप बात कहते- कहते कभी- कभी नेत्रों में जल भर लाते थे और तुम्हारे
कंठ से गद्-गद् वचन निकलते थे और तुम दीर्घ श्वास भरते थे
(माधवानल काम० 91)

हाय-हाय हे युवा नायक मैं तो तुमको नहीं पहचानता तथापि मैं आप की
प्रार्थना करता हूँ- - - - -(बैनिस न० का कथा -20)

आप अपनी परिचायक पावक बर्षाओं से शान्त रहें और मुझे आप अपना
आशीर्वाद देवें मैं तो लारसेलेट हूँ, जो तुम्हारा पुत्र था(बैनिस न० का कथा० 21)

तुम इस पिटारे को पकड़ो , यह अन्न के योग्य है मैं रात्रि होने के कारण
प्रकट न हूँ कि आप मुझे नहीं देख सकते - -(बैनिस न० का कथा०-30)
यदि तुम उसको जाओगे तो मैं उसी के साथ आप को हूँ(बे०न० का कथा034)
प्रथम तुम मिर्जा में चल कर मुझे कभी बना के शीघ्र अपने मित्र की रक्षा के
लिए चले जाव क्यों कि पोर्शिआ के निकट आप ऐसी व्याकुल दशा में नहीं
रहेंगे - - - - - - - - - - - - - -(बैनिस न० का कथा०- 51)
मेरी प्रार्थना है कि आप इसका प्रयोग भोजन के समय करें क्यों कि
जो कुछ तुम कहो गो उसको औरों के साथ पचा डालूँगा (बे० न० का कथा057)
यदि आप उसको स्वीकार न करें तो तुम्हारा शासन पत्र और पौरजनाधिकार
दूषित होंगे- - - - - - - - - - - - - -(बे० नगर का कथा०-59)
महाराज ऐसी बात न कहो । मैं अपना काम हुए बिना आप को न
जाने दूँगो । मैं दिन रात आप के यहाँ धरना दे दूँगो तब कहाँ से
जाओगे - - - - - - -) (वि०को०- 163)
अच्छा, आप को ऐसी ही इच्छा है तो पधारो परन्तु मुझे वचन दे कर जाओ
शायद तुम न आए तो मैं घर को रहूँ न घाट को - (वि०को०- 163)

6-2-ब शब्दक्रम

द्विवेदी युग के वाक्य-रचना में शब्दों का क्रम प्रायः हिन्दी भाषा के व्याकरणिक नियमों के अनुसार होते हुए भी कहीं ,कहीं विशिष्ट रूप में मिलता है। यद्यपि व्याकरण प्रकरण में शब्दों के नियमानुसार रूप के साथ शब्दों का क्रम स्पष्ट को भी दिखाया गया है । अन्य भी इस प्रकरण में भी रचना की दृष्टि से

पिछले सरल वाक्यों के विवेचन में प्रमुख शब्दों की स्थिति को दिखाया जा चुका है। अतएव यहाँ पर विशेष स्पष्टीकरण हेतु कुछ ही वाक्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं :-
: वाक्यों में पदक्रम का सामान्य नियम यह है कि अकर्मक वाक्य में पहले उद्देश्य फिर क्रिया और सकर्मक वाक्यों में पहले कर्ता, फिर कर्म और अन्त में क्रिया का स्थान होता है जैसे:—

6-2-क-1 अकर्मक वाक्य:-

राजा और विदूषक आते हैं (नागानंद- 26)
केदार आया था - - -(भारत रमणी- 9)
अमात्य आता है ——(गौतम बुद्ध -5)
आप आ गईं - - -(चंद्रावती- 62)
जयसेना आती है - -(मालविका-39)

6-2-क-2 सकर्मक वाक्य:-

हमने गाना सीखा है - - - -(मालविका- 54)
तुम क्या समझते हो? - - (कृष्णार्जुन युद्ध-5)
राजा सगर ने यज्ञ रचाया—— (गंगावतरण- 11)
मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ - -(दुर्गावती-122)

कर्ता, कर्म के अतिरिक्त अन्य कारक प्रायः अपने संबंधी शब्द के पूर्व आते हैं:

इन सजीव पत्तों पर छुरा फेरते हो(सर01904-119)
हमारी जातीय उन्नति के पथ पर काँटे बो रहे हैं(सर0 1913-448)
रक्त से अपने हाथ रंगने को नाचता दिखाने में नहीं हिचकता था
(जु0 से0-41)
यह काम त्रिपाठी जी को चिकित्सा से ही प्रारम्भ हो जाय।
(1652/14 पद्मसिंह शर्मा)

महानगरी कलकत्ता की भौगोलिक स्थिति उसका प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास उसकी जनसंख्या इत्यादि के वर्णन करने का न तो हमारे पास अवसर है। (या0 त0 -34)

6-2-क-3 विशेषण विशेष्य का स्थान

संज्ञा विशेषण प्रायः संज्ञा के पूर्व और क्रिया विशेषण प्रायः क्रिया के पूर्व आते हैं इस विधान के अनुसार इस युग के प्रयोग निम्न हैं :-

उसके द्वारा दस हजार रुपये कमाऊँगा (प्रेमयोगिनी-8)
वो परम दयालु ईश्वर ऐसे अभिमानी, अधर्मी और आलसी पुरुषों के पक्ष में हम पर दया ही नहीं करेगा बल्कि हमारी तरफ से आप लड़ेगा।
(रणधीर प्रेम मो0-105)

अच्छे कपड़े पहन कर मैं निहाल सिंह का बाट जोहने लगा(या०ता०75)

मेरा जीवन व्यर्थ हो जा रहा है ---(टा०का०कु०- 264)

निदान सोचते- सोचते अकस्मात् द्वार के आँगन में आ पहुँचा।

(छोटी बहू-20)

मैं अपने निश्चय को कभी नहीं बदल सकता (रायबहादुर- 89)

आप सदा मेरे पास रहा कीजिए --(सूर्यग्रहण- 73)

6-4-5-4 अन्य विभिन्न अव्ययों का स्थानः-

'न' ,'नहीं' और मत' निषेध के अर्थ में क्रिया के पूर्व अथवा अन्त में, अथवा संयुक्त क्रिया या संयुक्त काल होने पर ये अव्यय मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में आते हैं :—

मेरे उत्तर का आसरा न देख कर स्वयं आगे बढ़े(या०त०-60)

तुम्हारा दिल दुःख की माला फेरते न बैठेगा (आशीर्वाद- ना०)

बाल ब्रह्मचारी भीष्म पर ऐसा बोहतान लगाना अच्छा नहीं(भीष्म प्र०-69)

इसी से श्रीमति नवदुर्गादेवी फूली नहीं समाती थीं(उषा -61)

बाबू जी क्या जाने कि घर भर के दिमाग ही नहीं मिलते(गृहपञ्चदश-115)

मित्र ऐसा मत कहो ---------(नागानंद- 7)

प्यारे घबराओ मत----------(राजकुमारी- 123)

अच्छा तो मत सुनो-------(प्रतापसिंह- 111)

समुच्चयबोधक के रूप में निषेध के अर्थ में वाक्य अथवा वाक्यांश के पूर्व ही 'न' का प्रयोग हुआ है :—

जब आँखें खोल कर देखा तो न वह वन है न गुफा है, न अभिन्न हृदय मित्र हैं और न रजनी है ------(मणिसंज्ञा देवी-32)

न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी(कु०ब०ब०- 74)

जिससे न साँप मरे और न लाठी टूटे(सु०सि०ब०- 74)

न नौ मन तेल होगा, न राधारानी नाचेगी(आ०सि०- 19)

अवधारण के अर्थ में 'न' वाक्य के अन्त में ही आता है :—

वह मुगल तो भाग गया न ?(बाँ बीबी- 72)

यह भी तो सम्मुख की ही बात है न ? (प्रतापसिंह'-43)

इस ब्याह के लिए वह राजी तो नहीं है न? (भारत रमणी- 43)

देखिए, बड़ी बात हुई न? --------(दुर्गावती- 50)

'ही', 'भी', 'भर', आदि अव्यय अपने संबंधी शब्द के बाद आ कर अवधारण का बोध कराते हैं:—

चतुरा का बोझ मोल कर देने ही से तो ऐसा हुआ है (वनवीर ना०-105)
बीज ही उत्पत्ति का कारण है----(भारत र०णी- 13)
मैं यहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकती --(भीष्म प्रतिज्ञा- 34)
तप और व्रत भी महाविकट है----(गौतम बुद्ध-85)
घंटे भर दिन चढ़ा ---(वि०सी०- 36)
मुंह भर हिल कर रह गया--(अ०बु०- 149)
(शेष अव्यय के लिए देखिए अव्यय प्रकरण- 3,5,1,2)

उपर्युक्त शब्दों का स्थानान्तरण प्रायः अर्थ में परिवर्तन लाता है परन्तु 'ही', 'भी' का कुछ शब्दों में प्रकृति और प्रत्यय के बीच में आना बोल-चाल की भाषा में भी सामान्य है किन्तु शिष्ट भाषा में इनका यह रूप प्रयुक्त नहीं होता। द्विवेदी युग की भी कृतियों में कहीं 2 कृतियों में ऐसा प्रयोग मिल जाता है यथा—

तू अपनी स्त्री को सब बातों में हाँ, हाँ की तान और बात- बात में कुर्बान होवे होगी और नहीं में सही देवे ही गी। (प्रेमयोगिनी-55)

: प्रश्न वाचक अव्यय क्रिया विशेषण और सर्वनाम के अवधारण के लिए मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में भी आया है। इसी तरह प्रश्नवाचक अव्यय 'क्या' भी बहुधा वाक्य के आदि, बीच, और अन्त में आ कर अर्थ में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन लाता है उदाहरणार्थ :—

तू कौन है मुझको रोकने वाला?--(भीष्म प्रतिज्ञा- 41)
यहाँ के लोग जाने ही क्यों देंगे (भारतरमणी- 100)
समय पर अपना काम ऐसा निकालते हैं—कि कोई लख नहीं सकता है कि निष्कर्ष भी मैंने किया क्या।---(संयोगिताहरण- 64)
आप कहते क्या हैं महाशय -(भारत रमणी- 12)
होगी क्यों नहीं? (राणाप्रताप सिंह-44)
क्या उसको तुम दोनों मार-मार कर घर से तो नहीं निकाल दिया?
(अजय कुमार-47)

पलट दिया क्या ? ---(भारतरमणी- 114)

संबंध वाचक और उसके अनुसंबंधी सर्वनाम के कर्माधिकारक बहुधा वाक्य के आदि में आते हैं इसी विधान के अनुसार द्विवेदी युगीन प्रयोग निम्नलिखित हैं:-

देखो यह प्रस्रवण नाम पहाड़ जनस्थान के बीच में है जिसका नीला रंग बार-बार पानी के बरसने से मैला सा हो गया है और जिसको घने हरे पेड़ों के ऊंचे वनों के किनारे नदी गोदावरी के हलोरों ~~के ऊंचे वे~~ से गूंज रही है ----------- (महावीर चरित -64)

उसकी माता का क्रोध भी तब तक नहीं उतरा था(छोटी बहू-5)

इसका पुरस्कार उसको क्या मिलेगा- - -(भारत दर्पण- 59)

6-3-ग स्थानान्तरण:-

अवधारण के लिए उपर्युक्त शब्द क्रम में बहुत-कुछ अन्तर भी पड़ गया है। यह स्थानान्तरण बहुधा अर्थ पर बल देने के लिए अथवा अर्थ में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन लाने के लिए किया गया है जैसे—

6-2ग-1 कर्ता तथा कर्म का स्थानान्तरण:-

अब जो जी आप लोग चाहे सोई-सोई करें - -(द्रौपदी चीर-16)

मेरे वीर सरदारों, तुम्हें परमात्मा ~~...~~ वैसा उत्साह दो, शूरवीर, वे तेजस्वी बनावें ।-------------(रणबांकुरा-42)

सभी गोल तो मैंने बना लिया —(शकुन्तला ना0- 59)

कुछ इब्राहिम शाह की पहरेदारों ने उनके महल में घुसने नहीं दिया

(चांदबीबी- 108)

6-2-ग-2 क्रिया का स्थानान्तरण:-

आधुनिक खड़ी बोली के समान द्विवेदी युग में क्रिया के स्थानान्तरण का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में मिलता है :—

कहिए अपना हाल, - - - -(भाग्य प्रति0- 24)
रोक लो अपना क्रन्दन - -(,,- 41)

सोचती क्या हो? - - - -(भारत रमणी- 80)

आया तेरा बाप- - - - -(भीष्म प्रतिज्ञा- 25)

यहाँ तो कुछ दीखता है दाल में काला- - -(तुलसीदास-45)

मैं आया था ब्रजेश्वर बाबू की तलाश में (भारतरमणी- 17)
लो यह घड़ा , तुम भरो पानी ।- - -(कृष्णार्जुन युद्ध- 7)

तुम संयत करो अपने मन को प्रिय ।—(राठौड़ वीर-25)

अरे कर न तब, नहीं तो मैं करता हूँ। दुर्गावती-80)

आए थे आनन्द उठाने , हो यह गया (भिखारिणी- 141)

6-2-ग-3 क्रिया विशेषण का स्थानान्तरण :-

महाराज आज किधर है ध्यान? (श्री गंगावतरण- 45)

हम इसका जरूर बदला लेंगे, इसीलिए हम मेम्बर होंगे जरूर करके
(बुधवार आदि- 78)

उसने दमयन्ती से यह वचन तक ले लिया कि मर जाऊँ पर नल को छोड़ कर और किसी से विवाह न करूंगी--(रसरंजन-86)

बावजूद मेरे सैकड़ों बार मना करने के तुमने फिर से कहानियों का लिखना अब तक नहीं छोड़ा?- -(मरदानी औरत- 46)

अब यह तो आपकी आज्ञा पर निर्भर है, पर आऊँगा अवश्य (निर्झरिणी-112)

6-2-ग-4- अन्वय:-

किसी शब्द विशेष पर या कथन विशेष पर बल या जोर देने के लिए सम्पूर्ण वाक्य के शब्दों के क्रम में परिवर्तन या स्थानान्तरण किया गया है जैसे—

खाने को अवश्य रख देना, नहीं मारे भूखों के मर जायेंगे। (निर्झरिणी-125)

क्यों साहित्य की उन्नति क्यों अपनी सेवा-टेवी में भी इस काल कुछ खाने को खिलवाते हैं आप? —(मरदानी औरत-29)

दोहाई । दोहाई । दोहाई । सम्पादक जी, पुकार पर करो अब क मेरे दया- - - - - - - - - - - - -(मरदानी औरत-81)

परन्तु भगवान । ऐसी दशा में किस प्रकार होगा भारत का कल्याण?
(कर्मवीर-2)

6-2-ग-5 शब्दक्रम संबंधी विशिष्टताएँ:-

द्विवेदी युग के वाक्य-रचना में कहीं-कहीं पर शब्दों अथवा पदों में क्रमबद्धता का भी अभाव खटकता है। अवधारण के लिए अथवा अपवादस्वरूप शब्दों के जो स्थानान्तरण सामान्य रूप से हिन्दी में होते हैं उनका विवेचन तो सामान्य शब्दक्रम में किया गया है किन्तु जहाँ कहीं अनुवादों के प्रभाव स्वरूप अथवा लेखकों की असावधानीवश आकस्मिक रूप से शब्दों के क्रम में स्थानान्तरण हुआ है उनको यहाँ दिखाने का प्रयत्न किया गया है। अन्वय संबंधी विशिष्टता की अपेक्षा इनकी संख्या अपेक्षाकृत कम ही है यथा:—

क- संज्ञा के कारकों का स्थानान्तरण -

क- संज्ञा के कारकों का स्थानान्तरण:-

कारकों के स्थान परिवर्तन से कई वाक्य अव्यवस्थित हो गए हैं, क्योंकि वाक्य में एक शब्द के स्थानान्तरित हो जाने से परस्पर कई शब्दों का स्थानान्तरण हो जाता है यथा:—

इसको तो वियोग का रोग हमारी समझ में आता है (माधवानल का0 135)

संशो0,:- हमारी समझ में इसको वियोग का रोग आता है - - - -(

मेरी विवेक शक्ति ने मेरे हृदय को प्रश्न कर मुझे दृढ़ता से यह उपदेश देती है (वेनिस नगर का0 व्या0- 19)

संशो0:— मेरी विवेक शक्ति मेरे हृदय को दृढ़ता से प्रश्न कर मुझे यह उपदेश देती है ।

और अधिक आप का सर्वदा ऋणी हूँ प्रेम और जो आपकहें उसे करने को - - - - - - - - - (वेनिस नगर का व्या0- 70)

संशो0- प्रेम और आप जो कहें उसे करने को मैं सर्वदा आप का और अधिक ऋणी हूँ

: इस पिटारी को पकड़ो, यह श्रम के योग्य है मैं रात्रि होने के कारण प्रसन्न हूँ कि आप मुझे नहीं देख सकते इस वेश में छिपाने में लज्जित हूँ (वेनिस न0का0व्या030)

संशो:-
—— मैं रात्रि होने के कारण प्रसन्न हूँ कि आप मुझे इस वेश में छिपाने में लज्जित हूँ न नहीं देख सकते ।

: मैं आप पर विदित नहीं करूँगी जिस देवगति से यह पत्र आया (वे0 न0 का व्या0- 80)

संशो0:-
—— जिस देवगति से यह पत्र आया उसे मैं आप पर विदित नहीं करूँगी

: उनका मकान ~~अर्थ-अर्थात~~ प्रयाग से दो तीन घंटे की राह है (मर्यादा- 1911- 240)

संशो0- प्रयाग से उनके मकान ~~का~~ राह दो-तीन घंटे का है ।

: यह सब संदेशा पृथ्वीराज का शहबुद्दीन गोरी बराबर रखता था (जीहरानी तलवार-89)

संशो0:- ~~न~~ पृथ्वीराज का यह सब संदेशा शहाबुद्दीन गोरी बराबर रखता था।

: नहीं तो आजकल मियाँ बीबी गले में हाथ डाले चले हैं बाजार से((मुनादफ़न्स- 19)

संशो0:- नहीं तो आज कल मियाँ बीबी बाजार से गले में हाथ डाले चले हैं।

: ऐसा तो सिद्ध हो नहीं सकते आप की अवस्था में कि बसन्त आ गया है इसलिए शारदा को मौज दो- - (मानोवसन्त-48)

संशोधित:- आज की अवस्था में ऐसा तो लिख हो नहीं सकते कि बसन्त आ गया है इसलिए शारदा को भेज दो।

घ) विशेषण विशेष्य का स्थानान्तरण :-

: तेरे दुष्ट स्वभाव के समान कौड़िया का था जो जीव हत्या के कारण सूली पर टाँगा गया ------(वेनिस न0 का0 कथा0- 62)

संशो0:- कौड़िया के समान तेरा दुष्ट स्वभाव था जो जीव हत्या के कारण सूली पर टाँगा गया ।

: सर्वदा उसकी यह रीति है कि वह निर्भय हो कर मनुष्य को जोने देता है टेढ़ी आँखें और सिकुड़न पड़े हुए ललाट देखने को (वे0 न0 का कथा066)

संशो0:- सर्वदा उसकी यह रीति है कि वह मनुष्य को निर्भय हो कर टेढ़ी आँखें और सिकुड़न पड़े हुए ललाट देखने को जोने देता है ।

: दिन आठ था दस हुए एक अद्भुत चरित हुआ(माधवानलकाम0-137)

: किन्तु मेरी समझ में उन लोगों को उत्साहित करने का सब से अच्छा मार्ग यह होगा कि उनके लड़के जो हैं वे आवश्यकताओं की पूर्ति के न होने के कारण से मरने न पावें

(वैवाहिक अत्या0- 53)

संशो0:- उनके जो लड़के हैं वे -----

: एक उनमें से प्रसिद्ध डाक्टर है (वैवाहिक अ0- 106)

संशो0:- उनमें से एक प्रसिद्ध डाक्टर है ।

पुलिस में रिपोर्ट कर दो नोटिस छपवा दो और उसके मित्रों को मैं खास लिख देता हूँ (मानोजरूपन- 121)

संशो0:- उसके खास मित्रों को मैं लिख देता हूँ ।

: इस तरह साहब ने जुनोर को कैसे सिंह को डरा कर एक ऐसे पिंजड़े में बंद कर दिया -----(चि0प्रबो0-142)

संशो0:- इस तरह साहब ने सिंह जैसे जुनोर को डरा कर ऐसे पिंजड़े में बंद कर दिया ।

: फिर अवसर बिना सेना पाकर जाले था इलों ने तारागंज पर अपना राज्य जमा लिया था---(चि0प्रबो0-337)

संशो0:- फिर बिना अवसर को सेना पा कर ---

: हमारी हरदेवी तो ठीक जैसे गंगाजल पवित्र होता है टटका जैसा अनसूँघा फूल जो महादेव जी की पिंडी पर चढ़ता है(ठा0ठ0बो0-30)

संशो:- हमारी हरदेवी तो ठीक गंगाजल जैसी पवित्र और अनसूँघा फूल जैसी टटका है जो महादेव जी की पिंडी पर चढ़ता है ।

: उसका बनाया हुआ एक ग्रंथ प्रबंध कोश नामक है (नैषध च0 030)

संशो0- उनका बनाया हुआ प्रबंध कोश नामक ग्रंथ है ।

: क्यों कि नाहर दुष्ट रात में आ कर हम लोगों को वार्तालाप करते हुए सुन करता है (चौहानी तलवार- 46)

संशो0:- क्यों कि दुष्ट नाहर रात को - - - -

: बिचारा दो टुकड़ों में वह परास्तायो हुआ(चौहानी तलवार-88)

संशो:- वह बिचारा दो टुकड़ों में परास्तायो हुआ ।

ग- विशेषण - विशेषण का स्थानान्तरण:-

: ये कोई किरानी होंगे जो सरकारी किसी दफ्तर में काम करते हैं(सर01903-81)

संशो0:- ये कोई किरानी होंगे जो किसी सरकारी दफ्तर में काम करते हैं।

: मुझे सब तेरी बातें मालूम हैं (मानोवसन्त- 54)

संशो0:- मुझे तेरी सब बातें मालूम हैं ।

तब तेरी यह लोगों की बातें कहाँ गई थीं(मानोवसन्त- 55)

संशो0- तब तुम लोगों की यह बातें कहाँ गई थीं ।

: सेनापति तथा अन्य कुछ सामन्तों की राय से मकवाना नामो एक चतुर सभासद इस कार्य के लिए चुना गया - - (चौहानी तलवार-86)

संशो0:- सेनापति तथा कुछ अन्य सामन्तों की राय से मकवाना नामो एक- - - -

:- उसने अपने मन में पक्का यह विचार कर लिया था कि किसी न किसी प्रकार दोनों से बदला लेना है - - - (चौहानी तलवार- 91)

संशो0:- उसने अपने मन में यह पक्का विचार कर लिया था- - -

घ- अव्ययों का स्थानान्तरण:-

अर्थ आदि पर बल देने के लिए अव्ययों के जो स्थानान्तरण हुए हैं उनका उल्लेख अव्ययों के सामान्य स्थान परिवर्तन में दिखाया गया है, किन्तु कुछ कृतियों में 'भी' और 'ही' अव्ययों का स्थानान्तरण सामान्य रूप से नहीं हुआ है । कहीं कहीं तो 'भी' का यह स्थानान्तरण अटकने लगता है यथा,—

'भी' 'भी' का यह अनुचित प्रयोग एक ही पुस्तक में मिला है । हो सकता है यह अनुवाद के प्रभाव स्वरूप हुआ हो :—

परन्तु प्रेम तो भी कोश से प्यारा है (मानोवसन्त- 25)

मेरा भाग्य कि उनका तो भी मुझ पर अटल प्रेम है (मानोवसन्त-26)

निदान , मेरी आयुष्य मर्यादा तो भी इतनी कम नहीं होती(,,-31)

और कमाई भी साथ में लेते आया हूँ(मनोवसन्त भा0- 48)

कैसे तो भी पचीस पचास मिला ही लेते हैं (,,- 49)

कर्ज तो भी कितना करें मैं --------(,,- 50)

ऐसो दशा में जाता तो भी कहाँ ----(,,- 50)

: कोई बोलने चालने को भी नहीं तो भला काल तो भी कैसा कटे (मानो वसन्त- 47)

संशो0:- कोई बोलने चालने को भी नहीं तो भला काल कटे तो भी कैसे?

ही :- इस युग की कृतियों में निश्चय सूचक 'ही' का प्रयोग बहुत ही रोचक है—

नियमानुसार इसका योग(मूल अथवा प्रकृति प्रत्यय से बने शब्द के पश्चात् होना चाहिए परन्तु इस युग में कई लेखकों ने व्युत्पन्न शब्दों में प्रकृति तथा प्रत्यय के बीच में ही इसका प्रयोग किया है यथा:—

संज्ञा शब्द में :-

अमुक अमुक का जमात अपनी पत्नी बेटे ही पन से साथ ले आया (मानोवसन्त- 11)

बालक ही पन से हमारा आचरण और विचार पवित्र नहीं रखे जाते हैं ------------(तरलतरंग- 59)

क्रिया रूपों में :-

'ही' का यह योग क्रिया के भविष्यतकालिक रूप के साथ अधिक हुआ है यथा:-

इतने मिले ही गे कहाँ? बचे ही गा कौन? लावे ही गा कौन? (आनंद म0- 38)

सो तो हो ही गा ------(अस्तित्व- 65)

कभी न कभी तो जीते ही गे (महाभारत भा0- 84)

मैं सुनू ही गा* नहीं ------(सु0 वि0-18)

कम से कम वहाँ भोजन और रहने का स्थान तो मिले ही गा (वैवाहिक अत्याचार-95)

('ही' युक्त ऐसे प्रयोग पुरानी हिन्दी में कहीं- कहीं मिलते हैं परन्तु अब इनका प्रचलन शिष्ट भाषा में नहीं होता है)

---

* यहाँ बहुवचन अनुस्वार भी 'ही' पर ही लगाया गया है ।

6-2- च अध्याहार (वाक्य संक्षेपीकरण)

भाषा में अध्याहार या वाक्य संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति भी वाक्य रचना के विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का विषय है जो स्पष्ट करती है कि व्याकरणिक व्यवस्था की अपेक्षा भाषा सामाजिक बोधगम्यता पर अधिक निर्भर रहती है । अर्थात् वाक्यों के अध्याहृत हो जाने पर भी उनके अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता, क्यों कि अध्याहार हो जाने के बावजूद भी वाक्य के अनिवार्य तत्व इनमें अदृश्य रूप से विद्यमान रहते हैं । नाटकों , उपन्यासों , कहानियों के संवादों में और व्यंग्यपूर्ण तथा वर्णनात्मक निबंधों में भी इसी शैली का अधिक प्रयोग हुआ है ।

साहित्यिक विधाओं के विकास की दृष्टि से द्विवेदी युग स्वर्ण -युग ही कहा जा सकता है अतः अध्याहृत वाक्य प्रयोग इस युग की अपनी विशेषता है, व्याकरणिक दृष्टि से अध्याहृत वाक्यों के अध्याहार को स्वतः अनुमित और प्रसंगानुमित दो प्रकृतियों में विभक्त किया जा सकता है । चूंकि इस शैली के प्रयोग आधुनिक खड़ी बोली में सामान्य रूप से पाए जाते हैं अतः स्पष्टीकरण के लिए कुछ ही उदाहरण यहाँ पर दिये जा रहे हैं :—

6-2-च-1 स्वतः अनुमित :—

6-2-च- 1-क पद लोप :-

मैं तो पहले ही से(*) जान गई थी, कुछ झूठे थोड़े ही थी

( ) कहती है कि महारानी ने कहा है , कोई बात नहीं (मालती बकुल- 31)

(मालविकाग्निमित्र- 30)

अब जब तक स्वामी जी मेरी जान की जान का ठीक नहीं कर देंगे तब तक ( ) कैसे अपने जी से कोई बात कहूं । - -(नवाबनंदिनी-29)

( )कहाँ रहें कुछ दे रहें ।- - - - - -(छोटी बहू - 136)

तो आज अटपट देखा कर के ( ) यहाँ क्यों भाग आए हो ?

(मा मा नंद- 27)

() इतना न घबराइए ---(भीष्म प्रतिज्ञा- 95)

मैंने माथा रूमाल से पोंछा और () उसका मुँह देखा-(सुखमय जी 0-13)

- -

* कोष्ठक लुप्त शब्द के स्थान संकेत के लिए हैं ।

अब यदि आप की आज्ञा हो तो कुमारियाँ अपनी अपनी भेंट लेने के लिए
आप के चरणों के पास आवें? (आनन्द पूर्वक(——)(शीलमबुध-11)

तो क्या मुझे बैठक करना हो पड़ेगा? अवश्य(- - -) (गंगावतरण-13)
सखी! क्या समाचार लाई? शुभ (- - - -) (गंगावतरण- 42)
मैं आप से पूछता हूँ कि क्या वह चिट्ठी इतनी भारी थी कि उस आदमी
से उठ नहीं सकती थी? शायद(- - - -) (दुर्गावती- 44)
जिसके भय से आज सारा बंगाल थर थर काँपता है, क्या सचमुच वे भी
मेरा सम्मान करते हैं? जी हाँ महाराज। (- - - - -) (स्वामिभक्ति- 49)
मुझे आप का प्रस्ताव स्वीकार है, आप की पत्नी बनने को यह दासी
तैयार है किन्तु - - -(भीष्म प्रतिज्ञा- 23)
हानि तो नहीं किन्तु - - - - - - - (भीष्म प्रतिज्ञा- 52)
ज्ञात होता है कि दुःख ने तुमको बहुत दीन कर दिया है, और- —
(दुर्गावती-60)
ना, मैं नहीं पहनता, चार दिन से तुम मेरे लिए (उसने कहा था-53)
हुकुम तो यह है कि यहीं - - - - -(उसने कहा था - 55)
जो आत्मा चैतन्य है परन्तु मन - - - -(कर्मवीर- 64)
जिस प्रकार मन की दशा बिगड़ जाने पर संगीत की मधुर आलाप कोमल
स्वर की प्रेम भरी झंकार से मिल कर भी उसे शान्ति नहीं पहुँचा सकती,
उसी प्रकार- - - - -(कर्मवीर- 71)
हृदय काँप उठा, छाती दहल गई जब मैंने - - - -(कर्मवीर- 123)

6-2-क-3 अवशिष्ट पदः-

प्रश्नोत्तर या संवाद काल में स्वतः अनुमित और प्रसंगानुमित अध्याहार से इतर एक दूसरे प्रकार का अध्याहार विधान भी बहुधा बोली में पाया जाता है। अर्थात् प्रश्न का उत्तर देते हुए वाक्य का सब से महत्वपूर्ण पद ही अवशिष्ट रह जाता है। युग विशेष में उपलब्ध अवशिष्टपद वाले वाक्य निम्न लिखित हैं :—

तुम्हारा नाम क्या है?
भागवन्ती।
रहती कहाँ हो?
मामी के पास- - -(बुद्धू का काँटा-39)
तेरे घर कहाँ हैं?
आगरे में, और तेरे?

थाने में,--- यहाँ कहाँ रहता है ?

अमर सिंह की बैठक में,---(उसने कहा था-49)

मैंने तो सुना था कि तुम सब लोग शहीद हो गये हो ?

कहाँ?
आगरे ।
आगरे?
हाँ ।
क्यों ?
यह न पूछो ---
क्या यह सच है ?

बिल्कुल ।
क्या मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ?

नहीं --------(दुर्गावती- 61)

ए गुजरी। तुम्हारे पास क्या है ?
दही ।
कहाँ ले जाती हो?
राजा साहब के लिए ।
एक मटकी का क्या मिलता है ?
एक अशरफी ।------(रणबाँकुरा - 24)

6-2-क-4 अध्याहार संबंधी विशिष्टताएँ:-

भाषा में अध्याहार या वाक्य संक्षेपीकरण की प्रवृत्ति जहाँ सामाजिक बोधगम्यता का गुण मानी गई है वहाँ इस युग के लेखकों द्वारा बहुत से वाक्यों में शब्दों अथवा पदों के अध्याहार से अनन्वितता भी आ गई है। बिना आवश्यकता के अथवा बिना किसी नियम के शब्दों को अध्याहृत कर देना वाक्य रचना का दोष ही माना जायेगा। संक्षेपीकरण की यह प्रवृत्ति विशेष रूप से अनुवादित कृतियों में ही मिली है। इसके अन्तर्गत केवल स्वतः अनुमित प्रवृत्ति वाले अध्याहृत वाक्य ही मिले हैं यथा:---

6-2-क-4-क पदलोप -- कर्ता का लोप:-

( ) मुझे तो इस विरञ्चयायी दुःख से हटा देती है (बै० न० कथा 066

यदि कोई यहाँ नहीं आता तो ( ) ऐसी अप्सराओं से अधिक रागिनी गाती ---------------(बै० न० कथा-73)

कैसी सुन्दरता है ये चन्द्रमा की किरणें इस ऊँची भूमि पर पड़ रही हैं। यहाँ बैठ कर ( ) बाजे का मधुर शब्द सुने ।(बै० न० कथा 74)

"विराम चिन्ह"

शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने तथा किसी विषय को भिन्न भिन्न अंशों में बाँटने और पढ़ने में ठहरने के लिए रचना में जिन चिन्हों का उपयोग होता है वे विराम चिन्ह से अभिहित किए गए हैं, ये विरामचिन्ह अवधि-सापेक्ष होते हैं ।

हिन्दी में विरामचिन्हों का आगमन अंग्रेजी भाषा के सम्पर्क के कारण आ तो गया था किन्तु अभी तक उसमें सुव्यवस्थितता और व्यापकता का प्रायः अभाव हो था । यद्यपि भारतेन्दु काल में इसके प्रयोग में थोड़ी वृद्धि अवश्य हो गई थी किन्तु सुव्यवस्थितता अपेक्षाकृत कम ही थी । फिर भी विरामचिन्ह के प्रयोग की दृष्टि से द्विवेदी युग भारतेन्दु युग का ऋणी ही कहा जायेगा क्योंकि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने इसके प्रयोग में जो सतर्कता दिखाई उसी का उत्तरोत्तर विकास होता गया और द्विवेदी युग तक आते आते अपनी पूर्णता को पहुँच गया ।

भाषा का स्वर्ण-युग होने के कारण इस युग के पूर्वार्ध में यद्यपि अपेक्षाकृत कुछ विरामचिन्ह संबंधी त्रुटियाँ मिल जाती हैं किन्तु अधिकांशतः उनके प्रयोग में सामान्यता ही है । फिर भी प्रयोग की विशेषता और वाक्य गठन पर प्रभाव आदि की दृष्टि से द्विवेदी युग में प्रयुक्त विराम चिन्हों का अध्ययन निम्नलिखित वर्गों में किया जा सकता है ——

(1) सामान्य प्रयोग
(2) दोषपूर्ण प्रयोग
(3) विरामचिन्हों की अनियमितता के कारण वाक्य वैचित्र्य ।

सामान्य प्रयोगः-

सामान्यतः हिन्दी में आठ प्रकार के विराम चिन्ह प्रयुक्त होते हैं, अब उनके क्रमशः सामान्य प्रयोग का विवेचन किया जा रहा है ।

अल्प विराम —(,)

आवश्यकतानुसार शब्दों, वाक्यांशों आदि के पश्चात् किंचित यति देने के लिए इस चिन्ह का प्रयोग किया गया है —

> अच्छा आप की बात मानता हूँ, वैसा ही करूँगा, पर आप के समय का भी तो मूल्य है, रुपये की जरूरत भी है, बिना फीस के रोगियों को देखने से आप का रोजगार किस तरह चलेगा ?- -(संसार- 111)

सुन्दर नील आकाश में चाँद और तारे भी उसी तरह हँसते, खेलते, नाचते,
थिरकते हुए बादलों के बीच छिप-छिप कर आँख-मिचौनी कर रहे हैं ।—

(नवाबनंदिनी- 1)

उसके सुभाव की लायकी और चतुराई तो अलग रही, उसके मुख की ज्योति
पल पल में, चन्द्रकला सी बढ़ती है । उसके शरीर के लावण्य से एक एक
गहने के, तीन तीन, चार चार रूप दिखाई देते हैं (रणधीर प्रेम० 2)

आने पर, यदि उनकी इच्छा न भी होगी तो वे अवश्य ही खेल खेलेंगे ,
तब हम छल कर उनका सारा राज पाट तुम्हारे लिये जीत लेंगे, पर
कठिनता यह है कि इस विषय में पहले तुम्हें अपने पिताजी को राजी करना
होगा, जो एक असम्भव सी बात है , वे इस प्रस्ताव को कभी न मानेंगे

(महाभारत ना०- 68)

अस्तु, जो कुछ हो, कल की बात कल गई - -(सावित्री- 3)

सुन्दर नासिका के ऊपर दो बड़ी बड़ी आँखें जब खुल पड़ती है, तो खंजन की
चंचलता, हरिण की मधुरिमा और यामिनी की चमक को भी मोल लेती है

(उमा- 3)

अतएव इस पर कृपा रखिओ, इसकी शादी किसी योग्य पात्र से कराओ,
क्योंकि इसकी भलाई से हमारी भी भलाई है ।—(प्रेमयोगिनी- 4)

भागो भैया, गौरागिरि, यहाँ हम तुम दो ही हैं, उधर से चार आदमी
आ रहे हैं ---------(ऊषा अनिरुद्ध-61)

कौन ऐसा उत्पन्न न हुआ कि इस छोटे से हृदय में हर घड़ी , हर के शब्द
पर, हरेक अक्षर पर, सुख दुख की जो लहरें उठ रही है, उसे समझ सके?

(रजनी- 33)

अर्द्धविराम— (;)

अर्द्ध विराम का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत ही कम हुआ है। पूर्व की
कृतियों में तो इसका नहीं के बराबर प्रयोग हुआ है किन्तु उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़ता
ही गया है , यहाँ पर कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

उसे देख कर पहले तो बहुत बिगड़ा, पर जब जमना ने उसे इस बात
का विश्वास दिला दिया कि , " मुझसे तुम्हारी बुराई कभी न होगी; "
तब वह चुप हुआ; पर तिस पर भी उसने उन कागजों के बंडल या पुजारी
का भेद जमना को नहीं बतलाया था, और न कभी अपने पापकर्म का हाल
उससे कहा था; जमना भी दीवान के स्वभाव और पाप कर्म का बहुत

बहुत कुछ हाल जानती व समझती थी, पर बेचारी लाचार थी; क्योंकि उसका कोई चारा नहीं चलता था। --------(राजकुमारी- 76)

एक आता, तो दूसरा आ जाता; दूसरा आता तो तीसरा आ जाता और इस तरह यह सिलसिला इस तरह चलता रहता, कि वह खड़ी-खड़ी बस देखा ही करती।------(शैले- 182)

विनोद तो केवल यही जानती है कि '' मैं विधवा हूं; मुझे मांस, मछली नहीं खाना चाहिए; मांग में सिन्दूर नहीं लगाना चाहिए; धारीदार रंगीन कपड़े और बेशकीमती वर्जित पहने भी नहीं पहनने चाहिये(कथा-18)

उनके बारे में मौसी — जाने क्या- क्या बकती रहती है; पर वह अभी तक यह नहीं जानता कि उनके झगड़ने के क्या-क्या कारण हैं।

(रायबहादुर- 57)

मैं उसी की खोज में निकला और इस दुर्दशा को प्राप्त हुआ; परन्तु आपने मुझ पर बड़ा ही उपकार किया है जो अपना अमूल्य रत्न दान किया है, आप धन्य हैं(सतीचिन्ता- 134)

वे शिक्षित नहीं, केवल स्कूल- कालेज से परीक्षोत्तीर्ण हैं, वे धार्मिक नहीं कुतार्किक हैं; वे सदाचारी नहीं, सदाचार की ओट में दुराचार करने वाले हैं। ------------(भारती- 302)

अब रही यह बात कि इस संगठन से परस्पर में द्वेष बढ़ता है; सो यह बात भी नहीं है---(ऊषा अनिरुद्ध- 18)

पूर्ण विराम:- (., 0, ।, ।।, —,)

वाक्य के अन्त में निश्चित ठहराव के लिए युग की भाषा में कई प्रकार के पूर्ण- विराम - संकेत प्रयुक्त हैं। सामान्यतः एक या दो खड़ी पाई (।, ।।) का प्रयोग ही हुआ है इनमें से दो खड़ी पाई का प्रयोग कतिपय लेखकों ने ही किया है। जहाँ तक बिन्दु(.) रूप का प्रश्न है इसका रूप मुद्रित रचनाओं में तो कहीं भी नहीं मिला है किन्तु हरिहर प्रसाद मिश्र के एक हस्तलिखित पत्र साहित्य में इस विराम संकेत का भी प्रयोग मिलता है। इससे पता चलता है कि इस काल में भी अभी इसका प्रयोग था किन्तु मुद्रण के प्रचारवश खड़ी पाई का ही प्रयोग हुआ है, अब यहाँ पर इस प्रकार के कुछ विरामसंकेतों को दिया जा रहा है:—

(2) हे महात्माओं ! तुम्हारे पुत्र का आज्ञाकारी दुष्यन्त प्रणाम करता है।।

(शकुन्तला नाटक- 168)

प्रजा पतियों की कृपा का यही प्रभाव है ।। (शकुन्तला ना0-170)

यदि पाण्डुओं को राज्य सिंहासन मिल जायगा तो सदा उन्हीं के वंश वाले राजा होते रहेंगे और आप के पुत्र पौत्र दीन हीन तुच्छ हो कर द्वार द्वार टुकड़े मांगते फिरेंगे ।। —(महाभारत ना0- 19)

यद्यपि अवस्था में मैं बड़ा हूं किन्तु बुद्धि में आपसा इस संसार में कोई नहीं है, सो जैसी आप अनुमति दें वही किया जाय।।- महा0 ना042)

हम लोग श्रीमान् की सविनय जुहार करते हैं ।।—(द्रौपदीचीरहरण-26)

और हम भी आप का स्वागत करते हैं ।। - - - - (,,- 26)

(.) —

—— कई प्राचीन मथुर चौबों की कविता, वृतान्त, प्रणालियाँ, रीतिभाँति इत्यादिक मेरे पास लिखीरखी हैं. लेख चतुर्वेदी पत्रिकायें मैंने 6 भेजे 4 छपे हैं 2 अभी वहीं के कई महीनों से पड़े हैं कभी छपते हैं कभी नहीं. एक एक भी छपे तो छप सकते हैं. वहीं लेख पड़े रहने के कारण और लेख भेजना रोकना पड़े हैं जल्दी 2 छपें तो जल्दी 2 भेजे जाय. जाति के उपयोगी हैं.*,*

(1949-27-12-18 चतुर्वेदी पंडित हरिहर प्रसाद मिश्र डि0सा0स0)

(1) बात चीत में बहोत रात हो गइ । (संसार- 96)

मैदान में किस तरह कोई हम लोगों की बात सुनेगा(राजकुमारी-30)

देखिए, देखिए इसकी सुन्दरताई चित्र से कम नहीं है।(मालविका0-14)

इसकी कोई चिन्ता मत करो । (राजा शिविका- 23)

कारिन्दा आता है । - - -(कौंसिल की मेम्बरी- 33)

प्रश्नचिन्ह (?)

यह चिन्ह प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में लगाया जाता है । हस्तलिखित पत्र साहित्य में इसका प्रयोग नहीं के बराबर हुआ । मुद्रित कृतियों में इसका प्रयोग निम्नलिखित है :—

" क्या तुमने उस नकली ब्रह्मचारी से भी ये बातें कहीं थीं?"

(राजकुमारी-31)

इसमें तुम्हारा क्या मत है? (सावित्री- 78)

क्या आप इनके रक्षक हैं? (प्रेमयोगिनी- 48)

सो उसका क्या हुआ ? - -(उ0रा0 च0 ना0- 51)

तो आप मुझसे क्या चाहते हैं? (काम्य प्रति0-48)
क्या मुझ पर अचानक वज्र आ पड़ा है ? (मनोविज्ञान- 70)

विस्मयादि बोधक (!)

यह चिन्ह विस्मयादिबोधक अव्ययों और मनोविकारसूचक शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अन्त में लगाया जाता है, इस समय कहीं- कहीं इनके प्रयोग में अनियमितता भी पाई जाती है अर्थात एक ही स्थान में पर कहीं भावातिरेक से एक साथ तीन-तीन कहीं दो- दो विस्मयादि बोधक चिन्ह का प्रयोग हुआ है:—

हाय केकयी के लड़कों के शिरोमणि! हाय भाई बन्धों के चाहने वाले! हाय अब मैं तुम्हें कैसे कृ देखूं! कहाँ पाऊं! हाय कुमार कुम्भकर्ण! हाय प्यारा मेघनाद कहाँ हो बोलते क्यों नहीं! --(महावीर चरित ना0- 98)

अहह!!! बड़ा दुष्कर कर्म करता है -(नागानंद- 59)

अनर्थ! अनर्थ!! अनर्थ!!! ---(हीo वीरo ह0- 70)

हाय! तुम सरीके रत्न को मैंने कांच समझकर फेंक दिया, अब भीम बिना सांप का जीना वृथा है!!! (रणधीर प्रेम- 142)

अहा! यह तो महारानी चारिणी कौशिकी को आगे किए हुए आ पहुँची '(मालविका0-9)

सम्भव है कि देवीजी ने अभी पत्रिका पर पूरी दृष्टि न डाली हो! आज्ञा हो तो मैं फिर देखो!-----(अभिज्ञान- 27)

यह कौन सो कांप निकली बाबा! (कृष्णार्जुन युद्ध- 24)

किस देवता का आराधन करूँ!!! (सती चिन्ता-61)

उफ! बड़े खटमल! बड़े खटमल!! (भाग्यवतरण- 17)

नमस्कार! नमस्कार!! नमस्कार!!! (श्री गंगावतरण-14)

ओह! कर्मडाकिनी! तेरो कर्म डाकिनी से भी अधिक दुष्कर्म है —
(काम्य प्रति0- 31)

निर्देशक (—) डैश)

समानाधिकरण शब्दों वाक्यांशों या वाक्यों के बीच में, अचानक भावपरिवर्तन के अवसर पर, किसी विषय पर तत्संबंधी अन्य बातों को सूचना देने में, किसी के वाक्यों को उद्धृत करने के पूर्व, बात चीत में रुकावट सूचित करने के लिए उदाहरण वाले वाक्यों के पूर्व या उस विवरण के पूर्व जो पदार्थ व्याख्यान न लिखा हो। इस चिन्ह का प्रयोग होता है:——

। किन्हीं किन्हीं कृतियों में विराम चिन्ह के स्थान पर भी इनका प्रयोग हुआ है यह प्रयोग स्थान की लोपता को क्रमशः प्रभावहीन करने के उद्देश्य से हुआ हो—
जैसे——

पहाड़ से हथियों पर उसकी तलवार बिजली सी गिरती——(रणधीर प्रेम-107

हाय! हाय !! कोई भी नहीं सुनता——(महाभारत ना०- 99)

दुर्यो० दुःशासन तू भी निरा मूर्ख है इन बातों में क्या रखा है बाँध ले साड़ी——- - - - - - - - - - - - - - - - - -(महाभारत- 108)

मुझको कुछ भी खबर नहीं कि गजनीनाथ कब यहाँ आया, और चौहानों ने कब मेरा राज्य बचाया था —— सब सविस्तार कहो——(संयोगिताहरण-88)

जब तलब खाते हैं तब मालिक का हुकुम बजाना होगा लेकिन इसके वास्ते क्या मालिक का खून करें- - -(बनवीर नाटक-82)

कान में साँय साँय फुस फुस करने में भी आफत——(बनवीर नाटक-82)

हाय ! इस बुढ़ौती में यह बदनामी , यह नाकामी । चल दूर हो शैतान- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -(भीष्म प्रतिज्ञा-113)

कोष्ठक ( ) [ ]

विवेच्य युग की भाषा में इन दोनों प्रकार के कोष्ठकों का प्रयोग सामान्य रूप से हुआ है, मध्याकार कोष्ठक({ }) का प्रयोग नहीं के बराबर मिला है , एक या दो स्थान पर जहाँ मिला भी है वह कोष्ठक रूप में नहीं वरन् इस चिन्ह रूप में । मुद्रित रचनाओं में भी अपेक्षाकृत छोटे कोष्ठक (()) का ही प्रयोग हुआ है । बड़ा कोष्ठक कहीं-कहीं प्रयुक्त हुआ है ।

इन कोष्ठक चिन्हों का प्रयोग कुछ विशेष स्थितियों में ही हुआ है जैसे— एक शब्द अथवा वाक्यादि की व्याख्या दूसरे शब्द अथवा वाक्य के द्वारा करने में, कुछ कहते समय उससे संबंधित किन्तु वाक्य से भिन्न किसी दूसरे प्रसंग को मध्य में लाने में अथवा नाटकादि में वार्तालाप से अलग दृश्य , पात्र की मनोदशा , अभिनय आदि को व्यक्त करने में विशेष रूप से होता है । अब क्रमशः इनका उल्लेख किया जा रहा है ।——

जिनमें पाँच चार डाब(कच्चे हरे नारियल) लगे हुए हैं (संसार-7)

समाज संस्कारक(सोशल रिफार्मर) असली संस्कार(रिफार्म) का तत्व समझाने और समाज संरक्षक (सनातन धर्मी) सनातन धर्म की बुराई देने देवनाथ जी के घर आ सके ।- - - -(संसार- 169)

मंत्री —हाँ महाराज ! इस समय उनके रत्नों की झलक से रंगभूमि दिवाली की रात के समान जगमगा रही है ।

* * * * * * * * * * * * * * *

प्रेम मोहिनी —(मालती से) क्यों सखी !—(रण धीर प्रेम०-66)

यदि आप भी - - - - - - - - - - (कौंसिल की मे०- 42)

महारानी , देखो 2, यह महाराज ने दीप के धर्म — -(उ०रा०च०ना०-1)

कहीं वह सब हमारी बात सुन न रहे हों, वरना- + अच्छा, लो आओ,

(होते-158)

लड़का भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया

× × × × × × × × × × × × ×

लड़का का सिर अपनी गोदी पर रखे बजीरासिंह बैठा है ।

बजीरासिंह के आँसू टप टप टपक रहे थे ।

× × ×

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा(उसने कहा था - 61)

पुनरुक्ति सूचक चिन्ह—

1- खरीद बार -- पन्द्रह रुपया ।
2- ,, —,, बीस रुपया ।
3 ,, ,, पच्चीस रुपया। } श्री मती मंजरी -79)

टीका सूचक (* ,। ।)

पृष्ठ के नीचे अथवा हाशिये में कोई सूचना देने के लिए तत्संबंधी शब्द के साथ कोई चिन्ह , अंक अथवा अक्षर लिख देते हैं , टीका सूचक चिन्हों में इस युग की भाषा में (* ‡ †) ये चिन्ह तथा अंकों का प्रयोग भी हुआ है । अधिकांश लेखकों ने अंकों का ही प्रयोग किया है । यहाँ पर रचना क्रम से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

इस आम को देखो स्वयंवरवधू बनी है क्या तू इसे भूल गई *।।

(शकुन्तला नाटक- 15)

प्रतिष्ठानपुर प्रयाग के राजकीय प्रचण्ड दुर्ग ‡ का मंत्रणा गृह]

माता हा कुन्ती और सहायक कर्ण आते हैं ‡ (द्रौपदी चीर हरण- 5)

छिप या प्रकाश रूप से जो दुष्ट जुआ खेलता है, राजा उसे पूरा (यथेष्ठ) दण्ड देवो ।।* (द्रौपदी चीर हरण-41)

इसे अब भीमसेन इस नराधम दुःशासन की छाती से रुधिर ले कर अपने हाथसे बाँधेंगे ।। * ---------(द्रौपदी चीरहरण- 72)

यह तीन भाजी खुडाल थे, परन्तु युद्धस्थल* से भी बुरे थे ।

राजा हरिश्चन्द्र द्वितीय-60)

उधर नगेन्द्र ने झट एक पुड़िया में से "भस्म सी"* उसके थाली में डाल दी ।------------ (भा०द०- 26)

बगैर आग राख के धोम कभी नहीं निकलता ।[1]

(रणधीर प्रेम मो०-122)

किन्तु भवभूति के नाटकों में विदूषक का नाम भी नहीं* (उ०रा०च०23)

चौधरी के बहू के नीचे मंथा[1] बिछा कर हुक्का पीता रहता था---

(उसने कहा था-57)

संयोजक चिन्ह (—)

इस चिन्ह का प्रयोग आरम्भिक कृतियों में नहीं के बराबर हुआ है किन्तु उत्तरोत्तर इसके प्रयोग में सावधानी बरती जाने लगी है :—

तुमने तो आज तक अपना जीवन अच्छे कामों में और विद्या-प्राप्ति में बिताया है ,------------ (प्रेमयोगिनी-32)

यह बात धीरे- धीरे मेरी समझ में उतरती जा रही है ।—(सौते- 46)

अर्जुन धार्मिक की प्राण- रक्षा से कभी पीछे नहीं हटेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है ---------------(कृष्णार्जुन युद्ध- 53)

यह मूर्ति हृदय- मन्दिर को शोभा बढ़ाने वाली है (भीष्म प्रतिज्ञा- 20)

मैं एक परित्यक्ता बन चला हूँ । (दुर्गावती- 60)

कार्य - कार्य में ऐसे विचार योग्य नहीं --(सतीचिन्ता-64)

इस विषय में ब्रजभाषा के हिमायतियों से लिखा- पढ़ी कर के संगठन कीजिए।-------(1652/14 पद्मसिंह शर्मा)

रमाबाई -जैसी वरांगना तेरे-जैसे बंदर को अपने दरवाजे फटकने भी न देगी ।-------------------(रा बबहादुर- 41)

हंस पद (^)

इस चिन्ह का प्रयोग मुद्रित कृतियों में कहीं भी नहीं मिला है किन्तु हस्तलिखित पत्रसाहित्य में छूटे हुए शब्दों को लिखने के लिए सामान्य रूप से हुआ है —

आशा है दोनों बलवाले ^ (लिखो झुककर) त्रिवेदी जो पतो लोग इसे ध्यान से देखेंगे और लिखा देंगे ।

नैषध चरित चर्चा ^ (पृ044) में आप एक जगह लिखते हैं ।

अच्छा यह सोचता इये कि "रीति" आदि लिखने के कारण पं० प्रतापनारायण की संस्कृतज्ञता पर तो ^ (इतना शोर) शंका हो गई पर अपने अंगीकार पर ^ (पर आप के) लघुमित भी नहीं हुई । -----(1637/14 जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी साहित्य में हाईकोर्ट)

बिन्दु (0)

समय की बचत अथवा पुनरुक्ति के निवारण के लिए किसी शब्द को संक्षेप में लिखने के निमित्त इसका प्रयोग हुआ है । नाटकों के पात्रों के नामों को संक्षेप में लिखने में इसका विशेष प्रयोग हुआ है —

रा0रि0 शिव0—7 (राजा रिचर्ड शिवतीय-97)

वि0प0 रि0 अब पहुँचते है -- (कौंसिल की मे0- 18)

ती0 —(कुछ रुक कर)— पर —है—आप उन पं0जी को जानते हैं?
(कौंसिल की मैं0-43)

जो रुप0 म0 में पढ़ता है , ----(पो0ट0- 17)

बहुत से बी0ए0 एम भी ऐसे विद्वान् नहीं हैं --(संसार- 35)

डोरा0---" इतनी हिम्मत तो नहीं।"(रजनी -29)

दुर्गा0— (लड़खड़ाती आवाज से)डं0 अ0क0 आ0 में सन्नाटा गया।

(बहारा रिस ना0-59)

अब लछमीसंह नं077 राईफल्स जमादार हो गया है --

(उसने कहा था-60)

तुल्यतासूचक (=)

शब्दार्थ अथवा गणित को तुल्यता सूचित करने के लिए इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है, किन्तु इसका प्रयोग मात्र एक स्थान पर मिलता है —

1- शब्दब्रह्म = जो ब्रह्म अनुभव में नहीं आता केवल शब्दों में बतलाया जा सकता है। ------(उत्तर रा० च०ना०- 26)

दोषपूर्ण प्रयोग

इस युग की कृतियों में जहाँ तक विराम चिन्हों के प्रयोग में दोषों का संबंध है वह भी पूर्व की या आरम्भिक कृतियों में ही अधिकांशतः पाई गई है, इसका कारण यह था कि भारतेन्दु युग में, उनका प्रयोग अंग्रेजी के प्रभाव तथा गद्य के प्रचार स्वरूप हो तो गया था किन्तु उनके प्रयोगों में परिमार्जन नहीं हो पाया था। क्योंकि उस समय तक विराम चिन्हों का प्रयोग परम्परागत नहीं था भारतेन्दु के पूर्व गद्य रचना की ही प्रधानता थी जिसमें अधिक विराम चिन्हों का प्रयोग नहीं होता है। इन्हीं सब कारणों से द्विवेदी युग का पूर्वार्ध भाषा की दृष्टि से उथल-पुथल का ही युग रहा हो किन्तु आगे भी कुछ लेखकों की असावधानी के कारण विरामचिन्हों के प्रयोग में त्रुटियाँ दिखाई पड़ती हैं, इस युग के दोषपूर्ण विराम संकेतों के अध्ययन की सुविधार्थ निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है :—

अनुपयुक्त विराम चिन्ह का प्रयोग पूर्ण विराम के स्थान पर अल्पविराम:-

इस प्रकार के प्रयोग बहुत कम मिले हैं —

नहीं बीबी जी, गुस्से मत हो, तुम लोगों के लिए जो कैसा कैसा तो करे है, इसलिए आई हूँ, नहीं तो दूसरे के लिए क्या आता, आहा अम्ब बीबी को एक दिन नहीं देखूँ हूँ तो मन कैसा कैसा —(संसार- 64)

सास पतोहू दोनों सदा बसन्तो के यहाँ आया जाया करतीं और जब कभी बसन्तो के बच्चे बिमार होते या उसका हाथ नहीं रहता तो घर का बहुत सा धन्धा भी कर देती थीं, बसन्तो कुछ ऐसी धनवान तो थी ही नहीं जो इन लोगों को विशेष सहायता करती, पर हाँ साल आसरी में जब धान कट के आता तो थोड़ा सा पड़ोसन के यहाँ भिजवा देती, कभी कभी बुढ़िया के लिए दो एक पुरानी धोती पर से

निकाल देती या बुढ़ि कभी बिमार होती तो कभी मरा का सा बहाना,
मिसरी या क्यूनाइन की पुड़िया भिजवा देती थी-- (संसार-60)
आते ही बोली बाबी जी, अब की तुम्हारे जमाई के हाथ में दो चार
रुपया आया है , बहोत दिनों से घर की मरम्मत नहीं हुई थी , सो
अब की सब नई छावनी करवाई है, और देखो बच्चे के लिए बाज़ार
से यह नया कुरता लाई हूँ, बच्चों ने लड़के को आशीर्वाद दे के विदा
किया ।---------------- (संसार-68)
उनके पौत्र और पवित्रकीर्ति नीलकंठ और-- जातूकर्णी देवी के पुत्र
भवभूति नाम हुए, जिन्हें श्री कंठ की पदवी मिली थी, (महावीरच.रत-2
उस अपूर्व ग्रंथ का श्री अवधवासी भूप उपनाम लाला सीताराम जी ने
यथामति सरल भाषा में अनुवाद किया है, उसे आप लोग सुन कर
हमें कृतार्थ करें , भवभूति जी ने कहा भी था, --(महावीरचरित-1)

प्रश्नसूचक अथवा विस्मयादि के स्थान पर पूर्ण विराम:-

प्रश्न सूचक विरामों के स्थान पर पूर्ण विराम का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है । प्रायः अधिकांश नाट्यकृतियों में ऐसे प्रयोग मिलते हैं, इससे भी यही लगता है कि उस समय तक अभी हिन्दी में विराम चिन्हों के प्रयोग में कोई स्थिरता नहीं थी इसीलिए प्रश्नवाचक स्थलों पर भी पूर्ण विराम से ही काम लिया जाता था । अथवा लेखकों की विराम चिन्हों के प्रति असावधानी भी हो सकती है ।

महावीर चरित नाटक, प्रेमयोगिनी, उत्तररामचरित नाटक, संयोगिता हरण, रणधीर प्रेम मोहिनी, कौंसिल की मेम्बरी, रत्नावलि, ऊषा अनिरुद्ध, महाभारत नाटक, नागानंद जैसे नाट्यकृतियों में ऐसे प्रयोग सर्वत्र ही मिलते हैं। अब क्रमशः रचना काल के अनुसार इनको दिखाया जा रहा है :--

यह और भी बुरा है ।
कैसे । (महावीर चरित ना०- 20)
कहाँ गये भैया । (महावीर च०ना०- 48)
यह भोजू क्यों इतराई जा रही है।(,,-50)
महात्मा वशिष्ट जी क्या कहते हैं।(महावीर चरित ना०- 51)
हाय माँ दादा को तू बन भेजना क्यों मांगती है । (महावीर चरित-55
अरी क्यों घबड़ा रही है क्या विपत पड़ी ।(महावीर च०- 80)

अरे क्या नगर जल गया और अक्षयकुमार मार डाला गया। यह कब डर कौन है। -- (महा0 च0 ना0- 80)

बेटी इतना क्यों डरती है।--(महा0 च0 ना0- 81)

वत्स तुम क्यों उदास बैठे हो। (,, -110)

महात्मा मेघावस्थि अब किसका आसरा देख रहे हो(महा0 च0ना0-112)

गुरु जी क्या आज्ञा है। ------------(,, - 113)

साफ 2 कहिए, क्या समाचार है। --- (प्रेम यो0- 10)

हाँ जी बिहारी कहो क्या कहते थे।-(कौंसिल का मेम्बरी- 21)
क्यों भाई क्या बात है क्यों नहीं समझते। भाई में तो प्रेम होना चाहिए
न कि लड़ाई। -------(कौंसिल की मेम्बरी- 21)

कहिये प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन अच्छी प्रकार सकुशल समाप्त हो गया।
(कौं0 की मे0-23)

आप के प्रस्तावों में से कितने प्रस्ताव कार्य रूप में परिणत हो सके।
(कौं0 की मे0-24)

क्यों ? आपने भी तो कौंसिल की मेम्बरी स्टार्ट कर के राजनीति क्षेत्र
में पैर रखा है ------(कौं0 की मे0- 40)

आप इसको कैसे समझते हैं।---(,, - 46)

कहिए। उन सब बातों का प्रबंध हो गया।(,,- 32)

भला तुमने यह कैसे समझा कि मैं मिथ्या वादिनी हूँ। (नागानंद- 98)

अहा। क्या बढ़ी देवी शिवा है जिसके दर्शन निष्फल कभी नहीं होते।
(नागानंद- 99)

पर मानिनी राधा " मानिनी राधा" करके क्यों प्रसिद्ध हैं।
(संयोगिता हरण-3)

बेटी संयोगिता तू कुछ समझ बूझ कर बात करती है या ऐसे ही उन्मत्त
उटपटांग बातें बक देती है। -----(संयोगिताहरण- 31)

बेटी तू। किसकी राजकुमारी है क्या तुझे खबर है। क्या तू नहीं जानती
कि वह शुद्र कुल में उत्पन्न है। - (संयोगिता हरण- 48)

तो क्या वास्तविक में संयोगिता मुझे अपना प्राणपति बनाया चाहती है।
(संयोगिता हरण- 50)

क्यों क्या आप जी सम्मती नहीं है। --(संयोगिताहरण- 70)

क्या एक अबला के लिए जान जावेगी। मैं वासना जीवित थई है।
(संयोगिता हरण- 70)

अरे क्या सारा संसार क्षत्रिय शून्य हो गया जो तुम इस प्रकार इनको हाँक रहे हो । (उ0रामच0ना0-100)

अरे महाराज राम चन्द्र के सामने कौन क्षत्री है । (उ0रामच0ना0-100)

क्या ये हो जो रामायण की कथा के नायक और वेदरत्नागार के रक्षा करने वाले हैं । (उ0रामचरित्र ना0- 128)

क क भगवती तुम कौन हो और ये कौन हैं ।(,, 141)

तो क्या यह बालक मेरा पुत्र हो है । (,, -151)

उस विषय में आप की क्या सम्मति है । (,,-150)

क्या यहाँ तात जनक भी हैं । (,, -152)

हूँ ? तो वशिष्ट आये हैं । (,, -80)

अरे जोम्भ कंकाल , यह क्या कहता है । (,,-80)

भगवती अरून्धती आप जानती हैं यह किसका बालक है।(,,-91)

यह आप क्या कहते हैं । (,,-9)

क्यों भरत की स्थापित की हुई अटलकीर्ति को संसार से उच्छिन्न करने में कटिबद्ध हो रहे हैं ।------------(महाभारत ना0-22)

क्या यहाँ का प्रजाजाध्यक्ष। (राजसिंह -70)

तुमने लगान के रुपये क्यों नहीं दिये । (राजसिंह- 79)

क्यों रे भिखारी ? तू मेरी पूजनीय भगिनी का इतना तिरस्कार करता है ।------- -(राजसिंह 78)

शिवि- क्या भूमि । }
ब्राह्मण — नहीं । } (राजसिंह-102-103)
शिवि — नगर, धीन आदि । }
ब्राह्मण — नहीं }
शिवि — मेरे स्त्री , बालक । }
शिवि — मुझे । }
ब्राह्मण -- नहीं । }

अब तक तुझे कौन सो क्षार जेड़ी है जो आगे के लिए धमकी दे रहा है। (आत्मनिरुद्ध)-29)

तब तक कौन ऐसा मार्ग का लाल है जो युद्ध में मुझे परास्त कर सकता है । (आत्मनिरुद्ध-29)

अहा, कैसा मनोहर दृश्य है ! —(कृपा अनि0-40)

तेरा यहाँ कौन मददगार है ! —(,,- 61)

प्रहलाद का नाम मेरे सामने लेना बेकार है ! वह वैष्णव न था !

(कृपा अनिरुद्ध - 97)

क्या ये मतवाले हाथी की तरह इस समय जिसको देखेंगे, मार डालेंगे !

(रणधीर प्रेम0-50)

पूर्ण विराम के स्थान पर प्रश्न सूचक, विस्मयादि सूचक — अर्ध विराम और डैस जैसा :-

रक्षक ! सेनापति कनककुञ्ज को सभा में बुला ओ ?(संयोगिताहरण-23)

मुझे यकीन है कि रणधीर सिंह उसको देखते ही एक बार हिरन की तरह चौकन्ने हो कर चौकड़ी भरें में ! (रणधीर प्रेम मो -28)

अरे ओ विदेह राज के दास दासियों; रामचन्द्र कन्या के महल में घुसा बैठा है, उससे जाके कहो तो; - - - (महावीरचरित ना0- 21)

आप जो दुःख देख कर घबराना उचित नहीं। आप महत् कुल—की पुरुष हो —

(रण धी प्रेम0-72)

पहाड़ से हाथियों पर उसकी तरवार बिजली सी गिरती —(,,-109)

सखियों इस सन्तप्त हृदय संयोगिता को सम्हालो —(संयोगिताहरण- 33)

धीरज धरो बेटी, धीरज के घ रो —(उत्तरामचरित्र ना0-51)

धैर्य्य धरो बेटी, धैर्य धरो— (,,- 53)

महाराज, भूल हुई , क्षमा कीजिए, अपराधिनी हूँ-- कृष्णार्जुनयुद्ध-65)

इसके अतिरिक्त भी अल्पविराम के स्थान पर अर्धविराम , पूर्णविराम तथा विस्मयादि और संबोधन सूचक, प्रश्न सूचक के स्थान पर भी पूर्ण विराम और अर्ध विराम अल्पविराम आदि का प्रयोग अनुपयुक्त है किन्तु ऐसे प्रयोग इतने कम हैं कि कोई निश्चित निष्कर्ष नहीं निकला जा सकता, हो सकता है यह मुद्रण की त्रुटि हो या लेखकों की जल्दबाजी के कारण हो । इस प्रकार के प्रयोग निम्नलिखित हैं :—

अरे अरे विदेह के दास दासियों; रामचन्द्र कन्या के महल मे घुसा बैठा है

(महावीर च0-21)

प्राण प्यारी ! तुमने क्यों मुझे अपना पति बनाया, (संयोगिताहरण -51)

अहा रम्य है यह सभा ! - - - - - - - - - -(,— 83)

अहा ! मित्र! बहुत दिनों में दिखा पड़े हो ?(नागानंद- 50)

राजा सुहोत्र सात दिन से एक महात्मा; वैराग्य- पन्था और धर्मपथ पर वादविवाद कर रहा है ? (राजर्षि-20)

अहा! क्या बड़ी देवी सिद्धि है -----(नागानंद- 99)

धन्य भाग्य ! आज मेरी तपस्या सफल हुई । जो मेरे पुत्र का मांस एक ब्राह्मण के उदर में जा कर उनको कुछ तृप्त करेगा(राजर्षि-105)

अहा, कैसा मनोहर दृश्य है । —(उषा अनिरुद्ध- 40)

चाहे जो हो । मेरा बिल अवश्य स्वीकार हो जायगा(भारतदर्पण 68)

यदि आपने अपने कैसर के नाम दान स्वरूप न्योछावर कर दिखाया है । तो भारतवर्ष के वीरो --------(भारतदर्पण 58)

कब गाड़ी ठहरे और कब उतरू । क्यों कि चाहे उसके साथियों ने उसे न पहचाना हो -------(वि०च्यौ०- 55)

शायद किसी अंग्रेज बहादुर का हो तो । क्यों कि वर्दी और फैशन उसका बिल्कुल नये ढंग पर है ।-------(दी०ट०ट०-3)

पूर्ण विराम के स्थान पर अल्पविराम का प्रयोग अथवा अल्प के स्थान पर पूर्ण विराम या अन्य विरामों का प्रयोग कोई अधिक महत्व नहीं रखता क्यों कि इससे अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता किन्तु प्रश्न सूचक के स्थान पर पूर्ण विराम के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में अन्तर आ जाता है अतएव ऐसा प्रयोग आधुनिक हिन्दी में विशेष दोषपूर्ण माने जाने चाहिए ।

अनावश्यक प्रयोग

प्रायः कितनी ही कृतियों में आवश्यकता न रहते हुए भी लेखकों ने कहीं कहीं विराम चिन्हों का प्रयोग किया गया है जो खटकती है उदाहरणार्थ समुच्चयबोधक अव्ययों के लगने पर कोई विराम चिन्ह नहीं लगना चाहिए फिर भी लगा है, रचना क्रम से निम्नलिखित प्रयोग हैं—

जो बातें अपने कानों सुनीं, और जो हाल अपनी आँखों से देखा, (राजकुमार-10)

पत्थर, लकड़ी और मिट्टी के ढेर के, या जंगली पेड़, पीपर, करील और झरबेर के, और कोई ऐसी जगह नहीं बची है,- -(राजकुमारी-21)

कई ऊबड़- खाबड़ टीले, और कटीले जंगल को लांघता उतरता चढ़ता-(,,-21)

मगर यह तो बताओ, कि तुम मेरी जोरू बनोगी, या खसम । (राजकुमारी-101)

मैं भी ऐसे पहरे में रखा गया हूँ कि मैं तुम्हें, या तुम मुझे, न देख सको।
(राजकुमारी-102)

आप के पुत्र यदि आत्मा की सच्ची हुंकार सुनकर देशभक्ति के विचारों पर पानी फेरने वाली विद्या को छोड़ते हैं । तो आप उनका उत्साह क्यों तोड़ते हैं—
(भारतदर्पण-130)

अप्रिय वचन बोल कर मैंने थोड़ी इन्हें दुखित किया। अथवा विष के सिवाय विषधर के मुख से और क्या निकलेगा ? ---(नागानंद- 80)

तो फिर क्या ऐसे पापी जीव को अभी देह से बाहर करूँ? अथवा दोनों के समझाऊँ ।--------------(नागानंद- 81)

कहीं चौबे जी को रास्ते में इसी कारण देर लगी हो, अथवा पण्डित जी ने जान बूझ कर उसके आने को विदा मिलाई हो , अथवा गुलाबीलाल ने मुझको जाल में फँसाने के लिए ये चाल चली हो, अथवा इन सब ने मिल ~~मिलकर-करना~~ मिला कर ये करतूत रची हो, कुछ नहीं जाना जाता । (रणधीर प्रेम मोहिनी- 51)

क्यों हिन्दू ऐसी शुभलग्न में, शुभ दिन में, और वैशाखी पूर्णिमा की तिथि पर कन्यादान करके पुण्य- संचय क्यों न करेंगे ? (सावित्री-2)

चण्डीचरण की जो कुछ विषय सम्पत्ति थी, सभी उन्हों ने खरीद ली, और अपने अपमान का बदला ले लिया । ------(सावित्री -130)

क्या यह अभिमान तेरा नाश न होगा? या शायद यह तो नहीं समझती कि

तुझे तेरी सखी का प्यारा माधव बचाने आयेगा ? (प्रेमयोगिनी-101)

सिपाही सब आजकल, हर रोज सलाम बजाने आते ही हैं, या शायद सेठ जी शादी का इनाम तो नहीं माँगने आये हैं ? (प्रेमयोगिनी-132)

जो बहलाते थे, या अपने को माया के जाल में फँसाते थे,----(गंगावतरण-23)

तो क्या जो नहायेगा, या जल का आचमन कर लेगा, वह मुक्त हो जायेगा?
(गंगावतरण-78)

पर आप क्यों , न पधारें —(संयोगिताहरण 70)

उनके परिवार में कितने हाथी घोड़े हैं , अथवा उनकी सेना में कितने सूरमा हैं, और वे कैसे कैसे पहलवान और पराक्रमी हैं ।---(संयोगिताहरण-91)

सत्तर हजार हाथी हैं, और दस लाख अश्व घुड़सवार और पैदल चले हैं।

(संयोगिताहरण -101)

नारकी मैंने तेरा विश्वास कर तुझे इस प्रदेश का अध्यक्ष बनाया था। या दीन दुखियों को मार कर खाने के लिए बाघ बनाया था। —(राजसिंह-80)

देखो ऐसे देवता, द्वार पर आते हैं और हार-मानकर लौट जाते हैं

(राजसिंह- 106)

क्या भजन सुनकर मगन हो रहे हो, या कोई दूसरा विषय मनन कररहे हैं।

(राजसिंह- 116)

इन तीन सिनरी पर्दों के बीच में रहने वाला, तथा राजा महाराजा, नौवाब दीवान, मंत्री, जागीरदार, सेठ साहूकार, श्री, अमीर, थानेदार, सूबेदार तथा कल्लू चुड़िहार, आदि अनेक प्रकार का रसलोभी कुछ नर भ्रमर के लिये संसार में यदि कोई दूसरा स्थान होता ---(महाभारत- ना0-1)

वह बिना मेरी आज्ञा के कोई काम नहीं करता था, और युधिष्ठिर भी पिता ही के समान धर्मपरायण और राजनीतिज्ञ है—(महाभारत- 20)

मैं किसे 2 समझाऊं सुकुमारी युवक-कुमारों को कि चारों छोटे भाइयों को, अथवा स्वयं अपने ही को समझाऊं। ---(महाभारत-ना0- 61)

अरे भाई, कोई कारण भी तो होना चाहिए, अथवा व्यर्थ ही आत्महत्या के इच्छुक हो रहे हो -- (महाभारत ना0-70)

रग 2 में वीररस का संचार होता है, और ऐसा मालूम होता है कि वीरता का समुद्र उमड़ा हुआ चला आ रहा है (ऊषा अनिरुद्ध-28)

जब तक पृथ्वी पर मेरा एक पाँव है, इस पाँव के ऊपर यह छाती है, इस छाती के ऊपर यह हाथ है, और इस हाथ में यह सर्वदमन गदा है,

(ऊषाअनिरुद्ध- 29)

महन्त अवधदास के साथ साथ गोमतीदास, सरयूदास, कौशिकीदास, आदि2 शिष्यगण अन्दर से "सच्चा आरती श्री जय जय सीताराम" कहते हुए आते हैं ----------(ऊषाअनि0- 31)

सचमुच ऐसे ही दुष्टों ने वैष्णव धर्म का झंडा गिराया है, और अपने आप ही अपने इष्टदेव का हास्य कराया है। और यह श्लोक तो भी वाल्मीकीय रामायण का नहीं है -------(ऊषा अनिरुद्ध- 35)

क्या यह स्वप्न था, या अनुभूति? -(ऊषा अनि0- 41)

क्या संसार में और भी कोई ऊषा है? अथवा मैं स्वप्न में अपना ही अभिनय देख रही थी ।---(ऊषा अनि0- 41)

अरे क्या तू वैष्णव सम्प्रदाय में था? या विलम्ब ज्यादा बढ़ गई है(ऊषा अनि0-59)

काले काले बादलों चंचला जो बिजली की थिर नहीं रहती। जैसे दुष्ट स्वभाववाले सेवों की मीत ।---------(ऊषा अनिरुद्ध -76)

जो सावन सघन श्यामल तरुण तरुओं की सुख शोभा से सर्वत्र का उपद्रव न होने के कारण निर्भय विचरते हुए कुरंगों को कौतूहली बना है।

(उत्तरराम0चरित्र ना0- 41)

क्यों कि प्रबल आँधी के जोर से चारों ओर उमड़ते घुमड़ते घूम 2 कर घनघोर मचाते काले कलवाले मेघों के सघन गाढ़ान्धकार में बँधा हुआ, किंवा मानो सम्पूर्ण विश्वासनार्थ फटे हुए विकराल कालके की मुखकंदरा में जकड़ कर डाला हुआ, अथवा युगान्त की योगनिद्रा में मग्न निश्चेष्ट सोये नारायण के उदर में पड़ा हुआ सा सम्पूर्ण जीव लोक काँप रहा है (उत्तर राम0-121)

:- पुस्तकों में सर्वत्र इस प्रकार में पद-पद पर इनका संकेत है । और फिर वह जमाना भी ऐसा नहीं था जिसमें भगवान का भजन भी झूठा ढकोसला ख्याल किया जाय ।-------(जु0तै0- 43)

: इन कृतियों में सर्वत्र ही इसी प्रकार के अनावश्यक विराम चिन्हों का प्रयोग है कहीं कहीं दुहरे विरामों का प्रयोग भी अनावश्यक ही प्रतीत होता है, इस प्रकार के प्रयोगों को प्रयोग की अनियमितता के अन्तर्गत दिखाया जायेगा :-देखिये:—— 469

विराम चिन्हों का अभाव

भारतेन्दु युगीन भाषा के समान ही इस समय भी विराम चिन्हों के अभाव के प्रयोग भी मिलते हैं । किसी किसी रचनाओं में तो आवश्यक स्थलों पर भी विराम चिन्ह नहीं लगाये गए हैं, यही नहीं कई रचनाओं में तो पूरे के पूरे परिच्छेद अथवा पूरे पृष्ठ में विराम चिन्हों का प्रयोग नहीं मिलता। उदाहरणार्थ अनुवादित कृतियों में शकुन्तला नाटक, महाभारत नाटक, अभिज्ञानशाकुन्तल, महावीरचरित ना0 आदि में तो विराम ~~चिन्ह~~ चिन्हों का बहुत अभाव है ।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि अंग्रेजी के प्रभाववश भारतेन्दु युग में विराम चिन्ह का प्रयोग हो तो चुका था किन्तु अभी तक सभी विरामों का प्रयोग नहीं

हो सका था, द्विवेदी युग के पूर्वार्द्ध में भी इस तरह का रूप या परिस्थिति थी जिससे विराम के प्रयोगों में अभाव होना स्वाभाविक ही है —

पूर्ण विराम का अभाव—

इस कुलवाड़ी के समीप और भी आलाप सा सुनाई देता है मैं भी वहीं चलूं (।) (चारो ओर फिर कर और देख कर) ये तो तपस्वियों की कन्या है जो —

(शकुन्तला ना०-12)

आप को सखी का विवाह मेरे साथ गान्धर्व रीति से हुआ था (।) फिर कुछ काल बीते आपके के लोग इसे मेरे पास लाये (।) उस समय मेरी ऐसी सुध भूली कि इसे पहचान न सका और इसका त्याग कर के मैं आप के सगोत्री कण्व का अपराधी बना (।) पीछे अंगूठी देख कर मुझे सुध आई कि कण्व की बेटी से मेरा ब्याह हुआ था (।) यह वृत्तान्त अचरज सा दीखता है ।।(शकुन्तला ना०- 170)

जब शकुन्तला मेरे सामने आई मैंने कहा कि इससे मेरा ब्याह कभी नहीं हुआ फिर जब वह मेरे पास से चली तब मुझे कुछ शंका हुई कि कदाचित इससे मेरा ब्याह हुआ होगा (।) निदान जब अंगूठी देखी तब ब्याह का निश्चय हुआ जैसे सामने हाथी देख कर कोई कहे कि यह हाथी नहीं है फिर जब चला जाय तब कहे कि हाथी होगा अथवा नहीं होगा और जब उसकी खोज देखे तब निश्चय कर जाने कि हाथी ही था ।। ----------(शकुन्तला ना०- 170)

जब अप्सरा तीर्थ पर जाकर मेनका ने शकुन्तला को व्याकुल देखा तो उसे ले कर देवतों के पास आई (।) मैंने उसी समय ध्यान शक्ति से जान लिया किया तैंने अपनी धर्मपत्नी को केवल दुर्वासा के शाप का त्यागा है और इस शाप की अवधि मुंदरी के दर्शन तक रहेगी ।।---(शकुन्तला ना०-171)

संसार में यदि कोई दूसरा स्थान होता तो मैं आज ही इस कार को छोड़ देता (।) कुछ सोच कर । आहा !! हा !!! बड़ी देरी भी हई ।(महाभारत ना०-

नारद । देखिये ऐसी कुसमय समय उपस्थित है और आप पड़े सो रहे हैं (।) कैसे शोक की बात है ।------(महाभारत नाटक- 2)

महाराज । इस नीच बुद्धि दुर्योधन की मूर्खता और शकुनि के कारण कुरुकुल एक दिन ध्वंस हो जायगा (।) हम अनेक बार आप से कह चुके हैं, और फिर भी कहते हैं कि ऐसे दुष्ट को त्याग कर निश्चिन्त हो जाइये ।—(महाभा०- ना०

आओ मेरी लाड़िली बेटी(छाती से लगाती है)(।) -(उत्तरा०च०-ना०-141)

अब तो देखा नहीं जाता??8 (रोते हुए दूसरी जगह बैठते हैं)- - - -
(उत्तरा०च०-ना०- 62)

बड़े आनन्द की बात है कि बात है कि महाराज दशरथ के लड़के हमने देख लिये (।) (गले लगा के)- - - -(महावीर चरित ना०-6)

भैया तुम्हारी मझली माँ ने बड़े प्यार से तुम्हें गले लगा के यह कहला भेजा है '' बहुत दिन हुए महाराज ने दो वर देने को कहे थे , सो बेटा तुम हमारी ओर से कहना । यह तुम्हारे पिता के नाम चिट्ठी है इस में सब लिखा है ।''(।)- - (महावीरचरित ना० 55)

नहीं तो पीछे पछताना पड़ेगा (।) -(राजाविक-110)

किसी ने ठीक कहा है कि ,''—— त्रिया चरित्र जाने नहीं कोय, धति मार के सती होय '' - -(राजाविक-41)

महन्त माधोदास के साथ साथ गोमती दास, रघुदास, ओखियोदास आदि 2 शिष्यगण अन्दर से '' संध्या आरती की जय जय सीताराम'' कहते हुए आते हैं (।)- - - - —(उषा अनिरुद्ध- 31)

अल्प विराम का अभाव

अल्प विराम का अभाव अपेक्षा पूर्ण सँख से अधिक मिला है । उपर्युक्त पूर्णविराम के अभाव वाले उदाहरणों में भी बहुत जगह अल्पविराम का अभाव है, जैसा कि कोष्ठक में दिखाया जा चुका है शेष अल्प विरामों के उदाहरण निम्नलिखित हैं - - - - - -

राजा ने केवल एक कँगन बाँये हाथ में रख कर और सब बड़े बड़े गहने उतार डाले हैं और राज रँग के साज सब दूर कर दिए हैं (,) लम्बी उसांसों से उनके होठों का रँग फीका पड़ गया है (,) रात में नींद नहीं आती (,) जागते ही रात बीतती है (,) आँखों में लाली छा गई है परन्तु तेज के कारण दुबला शरीर भी शोभायमान दीखता है (,)जैसे सान पर चढ़ा हीरा ।।- - - - - - - - - -(शकुन्तला ना०- 123)

मेरी जान तो वही शकुन्तला होगी जिसका चैत्ररथ ढीला हो कर बालों से फूल गिरते हैं (,) शरीर कुछ थका हुआ सा दीखता है (,) पसीने की बूँदे मुख पर झलक रही हैं (,) निराली भाँति बाँह फैला रही है और

इस सींचे हुए नई कोंपलों वाले आम के पास खड़ी है(।) अवश्य य दोनों की सखी होगी ।।-------------- -----(शकुन्तला नाटक-133)

। इस सम्पूर्ण कृति में सर्वत्र ही विराम चिन्हों का अभाव है । पूर्ण विराम को छोड़ कर अल्प विराम का प्रयोग कहीं कदाचित हो गया है अन्यथा पूरा का पूरा परिच्छेद विरामचिन्ह रहित है जो खटकता है ।

गन्धर्वराज(,) हमें जानपड़ता है कि राजा ने हथियार चला दिए(,) क्यों कि देखो(,) बन्दरों की सेना कैसी तितर बितर भाग रही है (,) कुछ ऐसा मचा है (,) मानों समुद्र की बड़ी लहर तट की पहाड़ी पर टक्कर खा रही है।

(महा वीर चरित -89)

कुबेर ने (,) जो राजा के सौतेले भाई हैं (,) गन्धर्व राज से यह हाल सुना तब हमको आज्ञा दी कि जाओ(—) जो हमारे भाई बंधु बचे हैं उनको समझा बुझा आओ ।----(महावीरचरित -99)

देखो (,) यह प्रस्रवण नाम पहाड़ जन स्थान के बीच में है जिसका नीला रंग बार बार पानी के बरसने से मैला सा हो गया है और जिसकी कन्दरा घने पेड़ों के अच्छे वनों के किनारे गोदावरी के हिलोरों से गूंज रही है ।

(महावीरचरित ना0- 65)

भीष्म(,) द्रोण (,) कृप आदि के लिए कौरव पाण्डव दोनों ही बराबर हैं(,) राजकर्मचारी और प्रजा ये धन से वश में हो गये हैं (,) खजाना अपने वश में ~~हो गये में (,)~~ हुई है, देश विदेश के करद राजाओं को वश में लाने का यत्न हो रहा है ।(-----(महाभारत ना0- 20)

दुर्योधन तथा शकुनि का आश्चर्य से अन्ध की ओर संकेत करना(,) पांडवों का घुटनों के बल बैठ कर हाथ जोड़ कर कृष्ण के चरणों की ओर सिर नीचा कर लेना (,) सभा के लोगों का उचक कर आश्चर्यमयी दृष्टि से देखना।

(महाभारत ना0- ~~अंक~~ 109)

जो कुछ थोड़ा सा गला घुमाये खड़े हुए हैं (,) जिनके चरते समय मुख से कुशों के कौर कट 2 कर गिरते हैं(,) जो कभी एक कान उठाकर मुख से आँसों को पोंछते और कुछ सुनने की सी चेष्टा करते हैं ।--(नागानंद-18)

मैं सब भैदों को खोल देता(,) किन्तु लखनऊ के नवाब के चोंठी का इंतजार है।

(चौपट चपेट-108)

और जो मनुष्य अभिमान करते हैं वे स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारते हैं (,) क्योंकि दुर्योधन ऐसे वीर और प्रतापी तथा बाणासुर ऐसा तेजस्वी राजाओं का अभिमान पद-दलित हुआ तो हम क्षुद्रों का क्या कहना है ।

(प्रेमयोगिनी- 25)

नहीं नहीं लेखक(,) जो मैं वंचक और विद्रोही हूँ तो मेरा नाम संसार के लेख से मिटा दिया जाय और जैसे यहाँ से निकाला जाता हूँ वैसे ही स्वर्ग से भी निकाला जाऊँ ।------(राजा रिचार्ड द्वितीय -17)

मैं अपनी विपत्ति एक ओर और सुख एक ओर रख कर कहती हूँ कि यह लोग राज को बातचीत करें (,) क्योंकि जब राज उलट पलट होता है तो सब लोग उसी की चर्चा करते हैं और दुख के पहले सुख की बातें होती हैं ---------(राजा रिचार्ड द्वितीय-73)

अस्तु (,) फिर सब लोगों से प्रार्थना कर पात्रों को सजावें (,) क्योंकि नाटक का नाम सुन कर दर्शक गण मन ही मन अकुलाते होंगे —

(संयोगिता हरण :- प्रस्तावना)

और फिर (,) दूसरी ओर तो देखो (,) तुम्हारा भाई जयचन्द बन कर स्वयंवर के मण्डप को ठीक बनाने की आज्ञा दे रहा है —

(संयोगिता हरण :- प्रस्तावना)

हठ न कर देव(,) हठ करने से भारत(,) नहुष और राजा वेणु ने बड़े 2 संकट सहे हैं ------------ (संयोगिता हरण - 40)

देखो तो सही(,) कैसे विनीत भाव से कंचुकी की बातें सुन यह बालक और कुमारों का साथ छोड़ के इधर ही को आ रहा है (उत्तर राम ना0-92)

जिससे वीर का आदर और क्षत्रिय धर्म का यथावत पालन हो (,) क्योंकि युद्ध शास्त्र वेत्ताओं के मतानुसार रथी को पदाति के साथ लड़ना कहाँ उचित लिखा है (------------(उत्तर रा0च0ना0- 110)

आयुष्मन(,) तुमने ठीक विचार किया है ।—(उ0 राम0 च0ना0111)

देखो (,) ये श्री रघुनाथ जी बैठे हैं (,) यह हम दोनों पर बड़ा स्नेह रखते हैं ---------(उत्तर राम चरित नाटक 128)

नहीं (,) नहीं (,) अभी तक उसके यह दोष बाकी है (श्रीमती कुंवरि

अस्तु (,) अब आप कृपा करें और मेरा उत्तर भरें ।--(राजसिंह-104)

पिता जी मैं आप जैसे योगी, प्रतिभाशाली(,) प्रतापी और दानी नरेश का पुत्र हूँ ।---------(राजसिंह-106)

विस्मयादि सूचक चिन्ह का अभाव --

सखियों (!) मैं अकेली रही जाती हूँ तुममें से एक तो यहाँ आओ।।
(शकुन्तला ना0- 63)

हे वृक्षों(!) जो शकुन्तला तुम्हें सींचे बिन जल नहीं पीती थी-
(शकुन्तला ना0- 80)

बेटी(!) मैं जानता हूँ तेरा इसमें सहोदर का सा प्यार है ।(शकु. ना0- 82)

हाय(!) हाय(!) दुहरी कहाँ गई?-----------(शकुन्तला ना0-105)

अहा (!) उस तपस्विनी के बड़े भाग्य हैं ।। (,, -124)

हाय (!) यह दुहरी भी अभागी है ----------(,, 129)

इस प्रकार के अभाव पूरी कृति में हैं ।

हाय(!) मैं अभागी कहाँ जाऊँ (महावीर चरित ना0-61)

अहा(!) जब से पृथ्वीराज की चर्चा मेरे कर्ण गोचर हुई तब से हृदय चंचल है।------------(संयोगिता हरण-29)

हैं(!) यह बात आपने कैसे जानी-----(संयोगिता हरण-50)

रे मूढ़ (!) तू नहीं जानता कि तेरे बुरे दिन आने वाले हैं, (महाभारत81)

अरे(!) क्या सारा संसार क्षत्रिय शून्य हो गया --(उत्तररामचरित ना0- 100)

हैं (!) यह किसकी आवाज है ? (ऊषा अनिरुद्ध -65)

उद्धरण चिन्हों का अभाव

फिर क्या (') आप मेरे बस हुआ (') --(संयोगिताहरण- 81)

काम ऐसा होना चाहिए (') साँप मरे न लाठी टूटे (')(महाभारत ना0-9)

पूर्ण चन्द्रोदय देख बोली (--) (') हे चन्द्र देव । तुम कहाँ के रहने वाले हो ? (') -- (चन्द्रप्रभा बाई -3)

• उद्धरण चिन्हों के अभाव वाले प्रयोग अधिक नहीं मिले हैं

संयोजक चिन्हों के अभाव

संयोजक चिन्हों के प्रयोग में भी बहुत से लेखकों ने ध्यान नहीं दिया है —

जैसे पावस का दिन पहले पशु(-) पक्षियों को व्याकुल करता है -(शकुन्तला-56

अँगुलियों से होंठ छुपा कर बार (-) बार नहीं (-) नहीं कहती हुई का मुख मैंने कुछ उठा लिया - - - - - - -(शकुन्तला ना0- 66)

इतने सवेरे (-) क्या महाराज जी से मुलाकात होती है - -(संसार-127)

दाढ़ी (-) मूँछें भी छुटी हुई हैं (नवाबनन्दिनी -11)

केवल आप मेरे भले (-) बुरे किसी काम में बाधा न दें -(भीष्म प्रतिज्ञा-22)

कुछ देर तक इधर(-) उधर की बातें सुनाओ।—(भीष्म प्रतिज्ञा- 95)

वेद(-) पाठ से जो थोड़ा भी अवकाश मिला(महावीर चरित ना0- 108)

गुरु जी राम(-) लक्ष्मण तुमको दण्डवत करते हैं।- - -(महावीरचरित-111)

मेरे चित्त से चिन्तन(-) पक्षियों को स्वतंत्रता के स्वतंत्रता का राग गाने का अवसर ही न मिले गा - - - - - - -(भारत दर्पण-67)

दुकानों (-) दुकानों के ऐसे (-) कैसे चक्कर में मत आया को जिये।

(कौंसिल की मेम्बरी-11)

देश (-) विदेश के करद राजाओं को वश में लाने का यत्न हो रहा है

(महाभारत ना0- 20)

पिता जी औषध (-) पाँच नहीं मैं सच कहता हूँ —(महाभारत ना0-70)

इन्हीं के साथ (-) साथ देश की सच्ची सेवा की जा सकती है —(राजसिंह वि -100)

दो(-) चार सहेलियों के साथ कर्नाटी का प्रवेश - - (संयोगिताहरण 97)

दो(-) चार के टूटे (-) फूटे घरों के सिवाय ईंट, पत्थर लकड़ी, और मिट्टी के ढेर के,- - - - - - -(राजकुमारी- 21)

उन सभी के डेरे और खाने(-) पीने का पूरा प्रबंध किया गया था,

(राजकुमारी- 141)

इन अठारह बरसों में जो(-) जो दगाबाजियाँ इस देश में हुई हैं

(राजसिंह वि0-4)

तो जान पड़ता है, कि तुम्हें दुःख (-) सुख से अधिक प्रिय मालूम है।

(सती चिन्ता-32)

: संयोजक चिन्हों का अभाव भी बहुत अधिक मिला है किन्तु उनका सबों को न तो यहाँ प्रस्तुत किया हो जा सकता है और न अपेक्षित ही है।

इसी प्रकार अन्य विराम चिन्हों के अभाव के उदाहरण नहीं के बराबर मिले हैं।

विराम चिन्हों के प्रयोग की अनियमितता

द्विवेदी युग की भाषा में जहाँ विराम चिन्हों के प्रयोग में अधिकता हुई वहाँ हो जहाँ प्रायः सभी प्रकार के विराम चिन्हों का प्रयोग अधिकाधिक होना शुरु हुआ वहीं भाषा के निर्माण युग होने के कारण प्रारम्भ में विराम चिन्हों के प्रयोग में निश्चित नियम का अभाव भी मिलता है। विरामचिन्हों के प्रयोग की अनियमितता से मेरा अभिप्राय —— कहीं एक ही प्रसंग में विराम चिन्हों का प्रयोग है तो कहीं नहीं है, कहीं उपयुक्त विराम विरामचिन्ह हैं तो कहीं अनुपयुक्त अथवा कहीं दोहरे विराम चिन्हों तक के प्रयोगों से जो अस्थिरता उत्पन्न हुई है, उसी से है।

विराम चिन्हों के अभाव, और अनुपयुक्त प्रयोग को तो पहले ही दिखाया जा चुका है यहाँ पर कुछ दोहरे विराम चिन्हों के प्रयोग तथा एक तरफे कोष्ठक के प्रयोग वाले रूप रचनाक्रम से दिखाए जा रहे हैं ——

: कोष्ठकों के संबंध में विशेष बात उल्लेखनीय है कि नाटकों में संकेत के लिए जो बातें कही गई हैं उनमें वर्गाकार कोष्ठकों का एकतरफा प्रयोग हुआ है फिर एक ही संकेत वाक्यों में दो भिन्न कोष्ठकों का प्रयोग हुआ है अर्थात एक तरफ वर्गाकार और दूसरी तरफ छोटा कोष्ठक इस प्रकार का प्रयोग निश्चय हो विशेष है — जहाँ पर एकतरफा कोष्ठक का प्रयोग हुआ है वहाँ पूर्ण विराम का भी प्रयोग नहीं हुआ है ——

[दोनों रंगभूमि से जाते हैं - --(शकुन्तला ना0- 4)

[वृक्ष की ओर चलती है - - - -(,,- 15)

[ऋषि कुमारी कान लगा कर सुनती है और चौंकती है -(शकुंतला ना0-27)

[अनसूया जाती है और प्रियम्वदा माला उतारती है (,,- 75)

[दुष्यन्त रथ पर चढ़ता है और सब जाते हैं   (,,- 147)

: विराम चिन्ह संबंधी अभाव मात्र '' शकुन्तला नाटक कृति में ही मिला है। वनवीर नाटक ' में दोनों ही तरह के प्रयोग मिले हैं ——

[विक्रम की छाती में खंजर मारना —— -(वनवीर ना0-73)

[सिर पर टोकरा लिए कामर का प्रस्थान(,,- 77)

[झांक कर विराम कुआ देती है। - - -(,,-77)

[वनवीर का प्रस्थान।- - - - - - - - - - (,,- 99)

[दोनों भील आते हैं ।- - - -(बनवीर नाटक- 111)

[पत्र लाने के लिए बैठक में आता है ।—(रावबहादुर- 46)

[कल्लू आता है - - - - - - - - - - - - - (,,- 56)

[दर्जी और उसका बेटा, दोनों बड़े अदब के साथ झुक कर सलाम करते और आते हैं। इसके दूसरी ओर से नौकर सहित रावबहादुर का भी प्रस्थान - - - - - - - - - - - - - - - - - - -(रावबहादुर-73)

[सब आते हैं - - - - (रावबहादुर- 142)

(सब पाण्डव अर्जुन के घर में] (महाभारत ना0-44)

दो चार सहेलियों के साथ कर्नाटी का प्रवेश कर्नाटी पृथ्वी राज को देख कर घूंघट काढ़ती हैं । सकल त सभा में सन्नाटा आ जाता है । जयचन्द्र के दरबारी परस्पर वार्तालाप करने लगते हैं ।)(संयोगिताहरण- 97)

सहेलियां होली की खुशी मनाती हैं , रायबहादुर आनकीनाथ अपनी स्त्री लक्ष्मी के साथ शराब पी रहे हैं) - - - -(श्री मती मंजरी- 21)

चाभी खोजने के बहाने जा कर लक्ष्मी को चिकोटी काट लेती है। लक्ष्मी की नींद खुल जाती है) - -(श्री मती मंजरी -27)

चम्पा का जाना नैना जी का वस्त्र बदले आना)(श्री मती मंजरी-32)

कमालउद्दीन खुदा से दुआ के लिये हाथ उठा कर बैठ जाता है)

(श्रीमती मंजरी- 49)

आनकीनाथ का पाँव पर- - - - - - - - - (,,- 58)

नैना जी का जाना- - - - - - - - - - - - (,,- 59)

(आकर (श्रीमतीमंजरी- 64)

अलमारी से जामा चाहता है) (,,- 79)

(हंस कर (महाभारत ना0-14)

1 कोष्ठकों के ये विविध रूप इस पुस्तक में सर्वत्र हैं , किन्तु ऐसे प्रयोग किसी किसी पुस्तक में ही हैं अन्यत्र इनका रूप न मिलने से यह निश्चित नहीं हो पाता कि यह प्रयोग उस समय चलता था अथवा लेखकों की स्वच्छन्दता है । फिर भी यह कहा जा सकता है कि कोष्ठकों का एकतरफा प्रयोग तो होता होगा किन्तु एक ही वाक्य में विविध कोष्ठकों का प्रयोग भाषा की अस्थिरता तथा लेखक की स्वच्छन्दता अथवा विरामचिन्ह के प्रति असावधानी ही है ।

: परिच्छेदों के अतिरिक्त एक ही प्रसंग में विविध विराम चिन्ह अप्रयोग भी विराम चिन्ह प्रयोग की अनियमितता ही है - ---

क्यों तुमको देखना था वो देख लिया न, ?(नागानंद-20)
अभी तो राजकुमारि ने चन्दन लता घर को प्रस्थान किया है न, ?
(नागानन्द - 22)
विदूषक — अहा । ———— (,, - 40)
प्रसन्न हो जा नवमालिका प्रसन्न ! । (नागानंद-43)
कुपद! मत जाना ! ।। ---- (महाभारत ना0-12)
है ये क्या व्यापार !।। ----(,, - 30)
विदुर ने तुमको एकान्त में ले जा कर क्या कहा (?।)
वह क्यों इतनी शीघ्रता से आप ओर चले गये ? ।।(महाभारत ना0-29)
गृहस्थी चलाने की बातें सदा भूल जाया करते हो यह क्या बात ? ।
(महाभारत नाटक-55)
क्यों विकर्ण फिर भी तुम अकेले ही आये !।! (महाभारत ना0-92)
क्या कहोगे अथवा क्या समझाते हो अपना सिर (महाभारत ना0-96)
हाय! हाय!! :—— (महाभारत ना0- 97)
महाराज ! :—— (,, - 99)
बिना अपराध के कारण मेरे साथ यह घोर अन्याय किया गया है ? ।
(महाभारत ना0- 102)
क्यों आज यही न ? ।। (,, - 102)
देखाव तो क्या किसी भी जीव के पास तक उसकी इच्छा नहीं पहुँचाई
जाये भी ।:— (उषा अनिरुद्ध - 30)
क्या है ? क्या है ? ? (,, - 78)
हाँ महाराज , माता जी की आज्ञा मान कर हट गया।—(उषाअनिरुद्ध-83)
राजा है तो क्या अमर हो कर आया है ? ——--(,, -94)

(एक बड़े जोर के शब्द के साथ कृष्ण का प्रकट होना तथा द्रौपदी के सिर पर हाथ रख देना, दुःशासन का द्रौपदी को अग्नि जान कर भयभीत हो दोनों हाथ पीछे हटा कर हट कर खड़े हो जाना, दुर्योधन तथा शकुनि का आश्चर्य से कृष्ण की ओर संकेत करना पाण्डवों का घुटनों के बल बैठ कर हाथ जोड़ कर कृष्ण के चरणों की ओर सिर नीचा कर लेना तथा

के लोगों का उचक कर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखना।--(महाभारत ना0-109)

: विराम चिन्हों की उपर्युक्त अनियमितता तात्कालीन भाषा के अविकार रवरूप की तरफ संकेतक करता है।

7-3-- विराम चिन्हों की अनियमितता के कारण वाक्य के अर्थ में त्रुटियाँ --

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि उचित स्थान पर उचित विराम चिन्हों के न लगने से पूरा वाक्य का अर्थ ही बदल जाता है उसी प्रकार विरामचिन्हों की अनियमितताके कारण वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों के आपसी संबंध को भी ठीक तरह से जानना असम्भव हो जाता है जिससे वाक्यों के अर्थ में अनेक भ्रम, त्रुटियाँ और अस्पष्टता आ जाती है। यहाँ पर उदाहरण के लिए कुछ ऐसे ही विचित्र वाक्य दिए जा रहे हैं ----

> हे राजा! जिस मुनि की कन्या को तुमने छल कर दूषित और जिसने कुछ दुराम्न न मान कर वही कन्या तुम्हारी ~~स्वाभाव~~ व्याहता स्वीकार कर ली और तुम्हारे पास ऐसे भेज दी जैसे कोई चोरी की वस्तु पा कर फिर वही वस्तु चोरको साह बनाने के लिए उसे दे देता है तो क्या ऐसे अपमान के योग्य है जैसा तुम उसके साथ करते हो ।। (शकुन्तला ना0-104)

> जब तक इस भगवती के बालक न जन्म हो जब तक यहीं मेरे घर रहे क्यों कि अच्छे अच्छे ज्योतिषियों ने आगे ही ~~कह~~ कह रखा है कि आप के चक्रवर्ती पुत्र होगा सो कदाचित इस मुनि कन्या के ऐसा ही पुत्र हो जिसके लक्षण चक्रवर्ती के से पावे ओंव तो इसे आदर से रनवास में लेना और न होवे यह अपने पिता के आश्रम को चली जाये गी ।।

> (शकुन्तला नाटक-111)

> हाय! इस समय इसकी ऐसी दशा है जैसे सन्मुख दीपक होते हुए भी ऊपर अंचल आ जाने से किसी को अँधेरा ही दीखता हो अभी इसका दुःख दूर कर देती परन्तु क्या करूँ इन्द्र की माता के मुख से शकुन्तला को यों समझाते सुन चुकी हूँ कि यज्ञ भाग के अभिलाषी देवता ऐसा करें गे जिससे तेरा भरता थोड़े ही काल में तुम धर्म पत्नी को आनन्द देगा इसीलिये जब तक यह शुभ घड़ी आवे तब तक मुझे कुछ न करनाचाहिए हाँ इतना तो करूँ गी कि अपनी प्यारी सखी को इन वृत्तांतों से धीरज बधाऊँ ।।

> (शकुन्तला नाटक- ~~(ना)~~.143)

जब हरी जाजम से होगा , तो मूल मतलब को वह तत्काल भूल जायेगी।
तो उसकी दृष्टि एकमात्र उस मोटा बात पर ही जा गिरेगी ।

(सर0 1907- पृ0-146)

थोड़ी दूर चलने के बाद एक पुल मिला पुल के पार होने पर एक
शाल का वन था घना अंधकार अपना प्रभाव फैलाये हुए था । (मर्यादा-1911-
139)

किन्तु छाया आये न उनरे बैरी बस पड़ियाँ ।''

यह लोकोक्ति उसके दिमाग में चक्कर काट रही थी ।- - -(पु0सै0-36)

इस गायन में पद-पद पर इसका संकेत है । और फिर वह जमाना भी
ऐसा नहीं था जिसमें भगवान का भजन भी झूठ ढकोसला ख्याल किया जाय

(पु0सै0- 43)

सवेरा होते ही जो चना खा- पी कर उसी पहाड़ की ओर चले । जिसकी
चोटी पर कुछ शाल के आदमी बैठा था । - - - - - -(ठक0 मो0-130)

मैं अब उठी उस क्षण मुझे ऐसी वेदना हुई कि समग्र अन्तर सहस्त्र टुकड़ों
में टूट नहीं गया यही आश्चर्य था । - - - - - - - - (कल्पकुसु0- 74)

रात्रि के प्रथम प्रहर के स्थान पर दूसरे प्रहर में लगभग एक घन्टा पूर्व
अधिकार कर लिया था । - - - - - - - - -(मनोरमा-309)

मनुष्य जाति के विषय में भी अनेक ज्ञातव्य बातें लिखी है । क्यों कि
इन लोगों की सहायता के बिना अन्य देशवासी ध्रुव प्रदेश में अधिक दूर तक
नहीं जा सकते - - - - - - - - - - - - - - - - - -(लेखांजलि -59)

संस्कृत में जैसे पद्य ग्रंथों की बहुलता और गद्यग्रंथों की प्रायशः अभाव
सा ही है । तदनुसार ही हिन्दी में भी पद्य ग्रंथों का प्रचार ही दिनोंदिन
परिपुष्ट होता आया ।- - - - - - - - - - - - -(जे0 नि0- 15)

रामेश्वर प्रसाद अपने कमरे में बैठे? आकाश पाताल की सोच रहे थे ।

(गल्प मंजरी-84)

उपर्युक्त उद्धरणों में विराम संबंधी जो अनियमितता दिखाई पड़ रही है उनमें से कुछ
तो मुद्रण की भूल भी हो सकती है । किन्तु जहाँ पर लम्बे लम्बे उद्धरणों
के आवश्यक स्थलों पर भी विराम चिन्हों का अभाव वास्तव में ही विचारणीय है।
फिर अनुपयुक्त विरामों के प्रयोगों से तो पूरे वाक्य का ही अर्थ बदल जाता है।
जैसे कि अनुपयुक्त विराम प्रयोग में प्रश्न सूचक और विस्मयादि सूचक उद्धरण से

स्पष्ट हो जाता है —देखिए ------- (प्रश्न सूचक अथवा विस्मयादि के स्थान पर पूर्ण विराम ।)

खण्ड-2

द्विवेदी युगीन गद्यभाषा का शैलीगत अध्ययन

द्विवेदी युगीन गद्यभाषा के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के पश्चात् शैलीगत अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है । शैली की दृष्टि से भी द्विवेदी युगीन गद्यविधाओं में एक क्रमिक विकास मिलता है । निबंध , कहानी, उपन्यास नाटक, आलोचना, पत्रकारिता आदि जितनी भी द्विवेदी गद्यविधाएँ हैं उनके आद्योपान्त अध्ययन से स्पष्ट है कि इन विधाओं में व्यवहृत भाषा क्रमशः सरलता से जटिलता: अपरिमार्जित से परिमार्जित और शैशवावस्था से प्रौढ़ता को प्राप्त होती गई है । इन विधाओं की आरम्भिक भाषा से ऐसा प्रतीत होता है मानों लेखकों का मुख्य ध्येय हिन्दी का येन केन प्रकारेण प्रचार करना था । भाषा परिष्कृत, परिमार्जित या प्रौढ़ है या नहीं इस ओर उनका ध्यान नहीं के बराबर था, यह कार्य तो उत्तर द्विवेदी युगीन लेखकों द्वारा सम्पादित किया गया । अब यहाँ पर क्रमशः विभिन्न गद्य विधाओं को ले कर उनकी भाषा शैली का विवेचन किया जा रहा है—

1- निबंध विधा:-

जहाँ तक निबंध विधा की भाषा शैली का प्रश्न है लेखकों ने जनभाषा तक हिन्दी के प्रचारार्थ व्यावहारिक भाषा को ही निबंधों में आवश्यक प्रश्रय दिया है । इसके लिए सरल , सुबोध प्रवाहमयी भाषा का ही अधिक प्रयोग किया है । बालमुकुन्द गुप्त , पद्मसिंह शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी पार्वतीनंदन, जनार्दन भट्ट आदि की भाषा इसी प्रकार की है । इनकी भाषा शैली में जनसामान्य में प्रचलित उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग हुआ है । उदाहरणार्थ बालमुकुन्द गुप्त का मेले का ऊँट'' नामक निबंध उपयुक्त गद्यांश प्रस्तुत है — यथा —

'' किसी को पुरानी बात यों खोलकर कहने से आजकल के कानून से हतक-इज्जत हो जाती है । तुम्हें खबर नहीं कि अब मारवाड़ियों ने '' ''एसोसियेशन' बना ली है । अधिक बलबलाओगे तो वह रिजोल्यूशन पासकर के तुम्हें मारवाड़ से निकलवा देंगे । अतः तुम उनका कुछ गुणगान करो जिससे वह तुम्हारे पुराने हक को समझें और जिस प्रकार लार्ड कर्जन ने किसी जमाने के

'ब्लैक होल' को उस पर लाठ बनवा कर और उसे संगमरमर से मढ़वा कर शानदार बनवा दिया है उसी प्रकार भारवाड़ी तुम्हारे लिए अबकी कोठी, जरी की गद्दियाँ, हीरे- पन्ने की नकेल और सोने की पीटियाँ बनावा करुन तुम्हें बड़ो करेंगे और अपने बड़ो की सवारी का सम्मान करेंगे '' --(मेले का ऊँट- बालमुकुन्द गुप्त, निबंध पूर्णिमा पृ0-11)

आरम्भ के निबंधों की भाषा में व्यंग्य विनोद, मुहावरों लोकोक्तियों आदि- की प्रचुरता है जिससे लेखकों की भाषा शैली में उन्मुक्तता, स्वच्छन्दता और गति में प्रवाहमयता है ओजन सामान्य में सहज हो आह्लादकारी- हो जाती है। तीखे और मार्मिक व्यंग तथा लोकोक्तियों युक्त भाषा शैली के लिए पंडित बालमुकुन्द गुप्त का साहित्यिक निबंध 'भाषाकी अनस्थिरता' नामक शीर्षक से उध्दृत निम्नलिखित गद्यांश पर्याप्त होगा। प्रस्तुत गद्यांश में लेखकों ने जिन शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया है वे अपने स्थान पर इतने सटीक हैं कि उनमें थोड़ा सा भी हेर-फेर कर देने से हास्य और व्यंग्यादि का पूरा मजा ही किरकिरा हो जाता है यथा ——

'' जो लोग समझते थे कि हिन्दी भाषा एक दम से लावारिस है कोई उसका मुरब्बी या सरपरस्त नहीं — वह यह खबर सुन कर खुश होंगे कि अब तक में उक्त भाषा माता-पिता विहीन नहीं है। गत नवम्बर मास की 'सरस्वती' के देखने से विदित हुआ कि उक्त पत्रिका के सम्पादक पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी भाषा के संरक्षक या वारिस दो में से एक कुछ हुए हैं। इसके लिए हिन्दी के प्रेमियों और द्विवेदी जी महाराज को हम बधाई देते हैं।

कहावत है कि बारह वर्ष के पीछे घूरे के दिन भी फिरते हैं। उसके अनुसार अन्त को हिन्दी के दिन भी फिरे। बड़े ही अच्छे अवसर पर द्विवेदी जी ने सरस्वती की उस संख्या में 'भाषा और व्याकरण लिख कर अपनी हिन्दी दानी के झंडे गाड़ दिए हैं। आप ने साबित कर दिया है कि हरिश्चन्द्र से ले कर आज तक जितने हिन्दी लिखने वाले हुए हैं सब की हिन्दी अशुध्द है। उन सब की इसलाह के लिए आप को स्वयं खलीफा या उस्ताद बनना पड़ा है और सब को एक ही उलटे उस्तरे से मूड़ना पड़ा है। सच है इस तरह बिना ठीक सफाई भी नहीं हो सकती '.'

(गुप्त निबंधावली- भाषा की अनस्थिरता

~~जैसे~~ इसी प्रकार पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी अपने निबंधों की भाषा सरल और व्यवहारिक ही रखा है, अपने साहित्यिक निबंध' ~~कवि~~ 'कवि बनने के सापेक्ष साधन' में उन्होंने अपनी इसी भाषा शैली के माध्यम से आधुनिक साहित्य में कवि बनने की होड़ तथा उससे उत्पन्न साहित्यिक कुपरंपरा के प्रति बड़ा ही सुन्दर कटाक्ष किया है यथा -----

आज कल हिन्दी कवियों ने बड़ा हो और मचाया है। जिधर देखिए उधर कवि ही कवि। जहाँ देखिए वहाँ कविता ही कविता। कवि बनाने के कारखाने भी रातदिन जारी हैं। कोई कहता है, हमारे पिंगल के प्रचार से चौक-चौक में कवि हो सकते हैं। कोई कहता है हमारा काव्य कल्पद्रुम पढ़ लेने से सैकड़ों कालिदास पैदा हो सकते हैं। कोई कहता है, हमारा काव्य प्रभाकर ही कवि बनने के लिए एक मात्र साधन है, उसकी एक ही झाँकी मनुष्य को कवित्व की प्राप्ति करा सकती है। कोई कहता है- हमारी सभा की दी हुई समस्याओं की पूर्तियाँ करने से अनेक व्यास और वाल्मीकि फिर जन्म ले सकते हैं। शायद इन्हीं लोगों के उद्योग का फल है जो हिन्दी में आजकल इतने कवियों का एक ही साथ प्रादुर्भाव हो गया है। पर इन कविता- कुबेरों के प्रादुर्भाव से सहृदय सज्जन बहुत तंग हो रहे हैं। जो काम बहुत कठिन समझा गया है वह इन कवियों के लिए खेल हो रहा है। (कवि बनने के सापेक्ष साधन 'रसज्ञ रंजन पृ०-24)

किन्तु जैसे जैसे विचारों में प्रौढ़ता, तार्किकता और विवेचनात्मक शक्ति का विकास होता गया भाषा शैली में भी गंभीरता , प्रौढ़ता और जटिलता का समावेश होता गया है। यही कारण है कि सरदार पूर्ण सिंह के निबंधों से विकसित हो कर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, गुलाबराय , श्यामसुन्दर दास के निबंधों में भाषा को यह प्रौढ़ता और विवेचनात्मक शक्ति अपनी चरमावस्था को प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दों में उत्तर द्विवेदी युगीन निबंधों की भाषा शैली मात्र मनोरंजन की ही सामग्री नहीं रही वरन् वह विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी हुई। एक - एक शब्द और एक-एक वाक्य में लेखकों के गूढ़ विचार निहित होने लगे। उत्तरकालीन निबंधों में भाषा की यह प्रौढ़ता विवेचनात्मकता और गंभीरता यहाँ तक बढ़ी कि यदि एक ही वाक्य से एक भी शब्द इधर -उधर कर दिया जाय तो लेखक के समस्त विचारों में महान उलट -फेर हो जाता है। यथा——

'' जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है उसी प्रकार मुक्तातंक होने का भी। पर कार्य क्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़ कर जिस प्रकार सुखी होना प्रयत्न साध्य होता है उसी प्रकार निर्भय रहना भी। निर्भयता के सम्पादन के लिए दो बातें अपेक्षित होती हैं — पहली तो यह कि दूसरों को किसी प्रकार का भय या कष्ट न दे, दूसरी यह कि दूसरे हमको कष्ट या भय पहुँचाने का साहस न कर सकें। इनमें से एक का संबंध उत्कृष्ट शील से है और दूसरी का शक्ति और पुरुषार्थ से।''

(भय- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,- चिन्तामणि- भाग-1 पृष्ठ-104)

उपर्युक्त भाषा शैली के अलावा इस युग के कई निबंधकारों ने अपने निबंधों में संस्कृत के शब्दों का ही मात्र प्रयोग किया है। गोविन्द नारायण मिश्र, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी जैसे निबंधकारों की भाषा में ऐसी ही शैली का प्रयोग हुआ है, इसमें शब्दाडम्बर चमत्कार और प्रयत्न की मात्रा ही अधिक दिखाई पड़ती है। सुबोधता, सरलता व्यवहारिकता तथा स्वाभाविकता जो साहित्यिक भाषा के गुण है इस शब्दाडम्बर और चमत्कार प्रदर्शन भावना के कारण नष्ट हो गए हैं यथा——

''मनस्वी मर्मज्ञ सुविमल ज्ञान- विज्ञान सुशोभित सुजनमन सुमनदल ही इन अनोखे शिल्पी शिरोमणि अद्भुत चित्रकार कुल उजागर चतुर नरवरकुल कमल कमलाकर दिवाकर कविवरों का सुन्दर सुविशाल सुयोग्य, सर्वोत्तम सर्वगुण सम्पन्न द्वितीय चित्रपट है। - - - - - (कवि और कविता- गोविन्द नारायण मिश्र)
(श्री गोविन्द निबंधावली पृ0-8)

2- कहानी विधा

कहानी विधा वस्तुतः द्विवेदी युग की ही देन है। इस युग की कहानियों में प्रयुक्त भाषा शैली के दो रूप देखने को मिलते हैं :—
(1) वर्णनात्मक भाषा शैली (2) भावात्मक या आलंकारिक भाषा शैली।
वर्णनात्मक भाषाशैली जन सामान्य की भाषा से प्रभावित है प्रेमचन्द, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, वृन्दावनलाल वर्मा, विश्वम्भर नाथ 'कौशिक', सुदर्शन, ज्वालादत्त शर्मा आदि की कहानियों में इसी प्रकार की भाषाशैली का प्रयोग हुआ है। इनकी कहानियों की भाषा में उर्दू फारसी अंग्रेजी के जन प्रचलित शब्दों तथा

लोकोक्तियों और मुहावरों का निःसंकोच रूप से प्रयोग किया गया है ऐसा करने में लेखकों का उद्देश्य भाषा में सरलता, सुबोधता और प्रवाहमयता लाना ही रहा है । शब्द चयन और वाक्य विन्यास के प्रति लेखकों की दृष्टि उदार ही रही है । कहानियों में इन लेखकों की भाषा शैली पात्रों के अनुसार ही उर्दू वाँ, संस्कृतनिष्ठ, सामान्य या ठेठ रूप में बदलती गई है ।

इनमें भी उर्दू-फारसी तथा मुहावरेदानी वाली भाषा का प्रयोग ही अधिक हुआ है यथा ——

'' घनश्याम '' क्यहाँ तो वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है , न सावन हरे, न भादों सूखे। गिनी रोटी और नपा शोरबा । आप अपनी कहिए।'' (संतोषायन- विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' चित्रशाला2पृ0

इसमें भाषा की सरलता प्रवाहता और मुहावरेदानी देखते ही बनती है। इसी तरह ठेठ भाषा शैली तथा उर्दू प्रधान भाषा शैली का रूप प्रेमचन्द की कहानियों से स्पष्ट है यथा——

'' क्या मिलती है । नकदा जिया बुरा हवाल दिन भर कल में मजदूरी करते हैं, तो चूल्हा जलता है । चाँदी तो आजकल बुध्दू की है । रखने को ठौर नहीं मिलता। नया घर बना, भैंसे और ली हैं । अब गुड़ी परदेश की धूम है । सातों गाँवों में सुपारी जायेगी ।

(मुक्ति मार्ग- प्रेमचन्द- मानसरोवर
भाग-3 पृ0- 251)

सरल, व्यवहारिक और व्यंग्यमय वर्णनात्मक भाषा शैली का सुन्दर प्रयोग गुलेरी जी की कहानियों में देखते ही बनता है। उसने कहा था' कहानी में लेखक ने अमृतसर के बम्बूकोर्ट वाले इक्के तांगे वालों की खबर लेने के लिए व्यंग्यमय भाषा शैली का बहुत ही सुन्दर प्रयोग किया है । उपरी तौर पर यद्यपि लेखक उनके व्यवहार की बड़ाई ही करते हुए दीखते है किन्तु उस बड़ाई के पीछे जो तीखा व्यंग्य और कटाक्ष है वह देखने ही योग्य है यथा——

'' बड़े - बड़े शहरों के इक्के गाड़ी वालों की जबानी के कोड़ो से जिनकी पीठ छिल गई और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकोर्टवालों की बोली का मरहम लगावे । जब बड़े बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी

घोड़े की नानी से संबंध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदल की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों को चीथ कर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लड्ढीवाले के लिए ठहर कर, सब्र का समुद्र उमड़ा कर बचो खालसा जी हटो भाई जी, ठहरना भाई, आने दो लाला जी, हटो बाछा कहते हुए सफेद फेटों खच्चरों और बत्तखों गन्ने और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं, चलती है, पर मीठी छुरी की तरह मीठी मार करती है।

(उसने कहा था- गुलेरी जी की अमरकहानि
पृ०- 48)

वर्णनात्मक भाषाशैली वर्ग के कहानी लेखकों की भाषा में उन्मुक्त उभार और भाषा का व्यावहारिक चलतापन विशेष उल्लेखनीय है। वास्तविकता तो यह है कि इस वर्ग के समस्त कहानीकारों ने मध्यममार्गी भाषा को ही अपनाया है। इनकी कहानियों में प्रयुक्त भाषा यद्यपि क्रमशः प्रौढ़ और परिष्कृत होती गई है किन्तु भाषा को जनसामान्य में ग्राह्य बनाने के हेतु शब्द चयन, वाक्य-विन्यास आदि में सर्वत्र ही उदार दृष्टिकोण को अपनाया गया है। सहजता, सरलता, और प्रवाहता के लिए अनेकों स्थल पर लेखकों ने ग्रामीण, देशज, तद्भव तथा उर्दू-फारसी और अंग्रेजी आदि विदेशी भाषा के व्यावहारिक शब्दों को भी निःसंकोच अपनाया है। यद्यपि ऐसा करने में कहीं-कहीं व्याकरणगत त्रुटियाँ भी आ गई हैं। किन्तु इससे व्यावहारिकता, सरलता, सुबोधता में कहीं भी अन्तर नहीं आ पाई है। इसके साथ ही लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग ने भाषा की व्यावहारिकता में चार-चाँद लगा दिया है।

भावात्मक और अलंकारिक भाषाशैली वर्ग की कहानियों की भाषा चुने हुए अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रह जाती है। इनमें प्रयुक्त, शुद्ध तत्सम, संस्कृत शब्दावली सम्पन्न भाषा कुछ अधिक बुद्धि की अपेक्षा रखती है। इस वर्ग के लेखकों ने अपनी कहानियों में भावात्मक स्थितियों को ही स्थान दिया है जिससे भाषा स्वतः ही भावप्रधान और तत्सम शब्द युक्त हो गई है। लोकोक्तियों, मुहावरों और तद्भव, देशज आदि शब्दों का पूर्णतया बहिष्कार किया गया है।

जयशंकर प्रसाद, रायकृष्ण दास , चण्डीप्रसाद हृदयेश विनोद शंकर व्यास' और कुछ सीमा तक राधिकारमणसिंह भी इसी वर्ग के कहानीलेखक हैं। इनकी कहानियों में संस्कृत की कोमल कांत पदावली , लाक्षणिकता प्रतीकात्मकता और सूक्तिप्रधान भाषा शैली की ही प्रधानता है । प्रकृति के विभिन्न चित्रण में भाषा भी अत्यधिक भावप्रधान और अलंकारिक हो गई है । ऐसी भाषा का रूप प्रसाद की छाया संग्रह से उद्धृत निम्न गद्यांश में देखा जा सकता है —

'' उत्ताल तरंगों की फेनोमाला अपना अनुपम दृश्य दिखा रही है। नीलाम्बु शिखर के समान तरंगों पर चन्द्र दर्शक ध्रुवों की प्रभामयी किरणावली का प्रकाश नीलगगन में विद्युत सौदामिनी को भी लज्जित कर रहा है चारों ओर जल ही जल है, चन्द्रमा अपने पिता की गोद में क्रीड़ा करता हुआ आनन्द दे रहा है लहरों के घात - प्रतिघात से अतीव भयंकर गर्जन ध्वनि होती है। जान पड़ता है कि वर्षा-ऋतु ने इसी समुद्र में ही अपना डेरा जमाया है ।'' — (मदन मृणालिनी- जयशंकर प्रसाद 'छाया' पृ0-53)

इसी प्रकार शुद्ध संस्कृत के शब्द युक्त अलंकारिक भाषा - शैली की सुन्दर छटा चण्डीप्रसाद हृदयेश की भाषा शैली में देखते ही बनती है यथा। —

'' नील नभोमंडल में चन्द्रमंडल से निःसृत हो कर चन्द्रिका समस्त पृथ्वीमंडल में सुधा- धारा की भांति फैली हुई है । प्रकृति निस्तब्ध है, धीर-समीर आमोद परिपूर्ण हो कर चतुर्दिक बह रही है । शैलेन्द्र की एक शिला पर बैठे हैं । उनके चरण तल के समीप एक गिरि निर्झरिणी मंद-मंद गति से नवयौवन नायिका के मधुर पद झंकार की भांति मनोहर कल-कल शब्द करती हुई अपने निर्दिष्ट पथ की ओर अग्रसर हो रही है । सामने विशालकाय नगेन्द्र कुसुमभूषित लताओं का शीशमुकुट धारण किए हुए खड़े हैं ।

(प्रेमपरिणाम- चण्डीप्रसाद हृदयेश, नंदन निकुंज- पृ0 10)

3- उपन्यास विधा

कथा साहित्य के समान ही उपन्यास विधा का उद्भव और समुचित विकास भी द्विवेदी युग में ही सम्पन्न होता है । भाषाशैली की दृष्टि से इस युग के उपन्यासों को दो वर्गों में इस युग के उपन्यासों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है भाषा शैली का यह विभाजन प्रेमचन्द्र की औपन्यासिक कृतियों में निहित भाषा के आधार पर ही किया गया है ।

प्रेमचन्द्र के पूर्वकालीन लेखकों में देवकी नंदन खत्री किशोरीलाल गोस्वामी गोपालराम गहमरी अयोध्यासिंह उपाध्याय, ब्रजनंदनसहाय, गंगाप्रसाद गुप्त आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।

उपन्यासों की रचना में इनका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन का सृजन करना था जिसकी पूर्ति के लिए बहुत ही सरल और व्यवहारिक भाषा के अपनाया गया। इसी समय उर्दू-फारसी , अंग्रेजी, मराठी गुजराती, बंगला आदि अनेक भाषाओं के अनुवाद भी बहुत ही हुए परिणाम स्वरूप इन भाषाओं के अनेकों शब्द इन उपन्यासों की भाषा शैली में स्वभावतः ही आ गए हैं । भाषा की दृष्टि से प्रारम्भिक युग संक्रांति युक्त था जिससे औपन्यासिक कृतियों में भाषा का मनमाना प्रयोग भी दिखाई पड़ता है । अनेकों उर्दू-फारसी शब्दों में विसर्ग लगा कर संस्कृत के समान शब्द बनाने की प्रवृत्ति किशोरीलाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त, और देवकीनंदन खत्री में विशेष रूप से दिखाई पड़ती है — यथा

प्राजिलः , शहलाः, तोबः , अजाब, आदि ।

पूर्वप्रेमचन्दकालीन प्रायः समस्त लेखकों पर ब्रजभाषा का प्रभाव यथेष्ठ मात्रा में दिखाई पड़ता है । यथा——

वह बंधु मदक पीके सदा सोया करें और अंगरेज रुपया कमाकर विलायत लिया करें, बंगाली रोया करें , और सत्यानाश में मिला करें, बंग देश के लिए तो यह साधारण नियम था । (आनन्द मठ- 9)

ग्रामीण , देशज, तद्भव और संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ ही साथ बहुत सीमा तक लोकोक्तियों मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी हुआ है । ' कलियुगी परिवार का एक दृश्य नामक उपन्यास में से उद्धृत भाषा शैली इसके लिए पर्याप्त होगी यथा——

" अच्छा मैं आऊँ हूँ तू उसे भी जगा आ मुझे रात बुखार हो आया था इससे कुछ उठने को जी ना करता ।

अच्छा आऊँ हूँ कह राम दुलारी अपनी प्यारी जिठानी के कमरे () जा बोली जिठानी जी कैसो तबियत है आज तो मैं सबेरे 2 शनीचर का औतार बन चुकी हूँ ।

मुझपे तो रोज चौका बर्तन नहीं होता एक दिन रोटी न मिले तब ही आटा- दाल का भाव मालूम हो गा । आज बिना खाये कचहरी चले जायेंगे ।

(कलयुगी परिवार का एक दृश्य-पृ०-4)

उपर्युक्त गद्यांश में व्यवहारिक भाषा के साथ ही साथ व्याकरणगत त्रुटियाँ भी दर्शनीय हैं ।

शुद्ध संस्कृत और समास युक्त अलंकारिक भाषा शैली का रूप किशोरी लाल गोस्वामी के उपन्यासों में देखा जा सकता है यथा——

पूर्ण निशीथकाल में नि नीलाकाश का वक्षःस्थल विदीर्ण कर करोड़ों तारागण मुख निकाल के पृथ्वी की ओर देखते और तम को दूर करने में व्यर्थ प्रयास करते थे । क्यों कि जब तम के भय से तारानाथ ही ने पराजय स्वीकार कर गृहगृह का अवलंबन किया था, तब तारागणों का तम नाश के लिए उद्योग करना विडम्बना मात्र ही था । कृष्णाभिसारिका रजनी तिमिरावगुंठन करके संसार में एकछत्र विचार रही थी, उस समय तमतमिस्त्रा का तामस समागम दर्शनीय था - - - - -(अर्थलतादेवी -किशोरी लाल गोस्वामी-पृष्ठ- 42)

इसी समय अयोध्यासिंह उपाध्याय ने अपने उपन्यासों की भाषा ठेठ हिन्दी रखी जो बहुत ही सरल, व्यवहारिक और कौशियों से प्रभावित है -यथा——

" रूप ही इस तिरियों में से कई एक ने देवहुती के पानी में उतराते हुए कपड़ों को दिखला कर कहा— रूप ही कपड़ों को कींचने के लिए देवहुति पानी में बैठी थी, अभी नहाने और कपड़ा फींचने भी नहीं पाई थी — इसी बीच घड़ियाल आन पहुंचा है, उसको पकड़ ले गया ।"

(अधखिलाफूल- अयोध्यासिंह उपाध्याय-पृ०-136)

कहीं कहीं तो भाषा में उर्दू फारसी के शब्दों की भरमार है फिर भी उनके अभिव्यक्ति में कठिनाई नहीं होती । इस प्रकार की भाषा में

लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग ने उनके प्रवाह में और भी जान डाल दी है। '' चौहानी तलवार '' नामक उपन्यास से उद्धृत निम्न गद्यांश इसी प्रकार का है यथा—

'' वल्लाह आफ़रीं है आप के इन ख्यालातों पर। सुभानअल्लाह। कहाँ तक आपने शेख़ मारी है कि हमको भी ~~सक-आपने~~ मात कर दिया। आओ जनाब। आप पहले पहल न जंग में चल रहे हैं? इसी वजह से इतनी बड़की-बड़की बातें कर रहे हैं। अगर आप को कभी इन राजपूतों या क्षत्री कौमों से वास्ता पड़ा होता तो कदर आफ़ियत हो जाती। क्योंकि शरअ'' कदर आफ़ियत आँ कसे दानद, कैश मुसीबत गिरफ्तार आयद' (जो मनुष्य विपत्ति में पड़ जाता है वही सुख की क़दर को जानता है।) किसी आला ख़्यालात ने क्या अच्छा कहा है। ' ऊँट जब तक पहाड़ के नीचे नहीं आता, तब तक वह किसी को अपने से ऊँचा नहीं देखता। -----(चौहानी तलवार- हरिदास माणिक-पृष्ठ-344)

उपन्यासों की भाषा शैली में प्रौढ़ता, गंभीरता, परिमार्जन आदि का समावेश प्रेमचन्द के औपन्यासिक क्षेत्र में पदार्पण के साथ ही शुरू होता है। इस समय तक भाषा में बहुत अधिक परिमार्जन और परिष्कार हो गया था। प्रेमचन्द के बाद की परम्परा में लिखने वालों में विश्वम्भरनाथ शर्मा-'कौशिक' वृन्दावन लाल शर्मा, जयशंकर प्रसाद, चंडीप्रसाद, हृदयेश' आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी औपन्यासिक कृतियों का भाषा - शैली प्रौढ़ परिष्कृत सरल सुबोध और व्यवहारिक है। मुहावरों, कहावतों, तद्भव प्रयोग देशज उर्दू फ़ारसी अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी यथा सम्भव उपयोग में आये गए हैं। ऐसा करने में लेखकों का मुख्य उद्देश्य भाषा को जनसामान्य की वस्तु बनाना तथा शब्द चयन के प्रति उदार दृष्टि कोण ही रहा है। प्रेमचन्द 'कौशिक' और वृन्दावनलाल वर्मा ने इसी तरह की भाषा शैली को अपनाया है। स्पष्टीकरण के लिए प्रेमचन्द की प्रसिद्ध औपन्यासिक कृति सेवासदन से निम्न गद्यांश प्रस्तुत है —

क्या मालूम हो जाता कि हमारी जिन्दगी का क्या मकसद है, हमें जिन्दगी का लुत्फ़ कैसे उठाना चाहिए। हम कोई भेड़ बकरी तो हैं नहीं कि माँ-बाप जिसके गले मढ़ दे बस उसी के हो रहे। अगर अल्लाह को मंजूर होता कि तुम मुसीबतें झेलो तो तुम्हें परियों की सूरत क्यों देता? यह बेहूदा रिवाज यहीं

है लोगों में है कि औरतों को इतना जलील समझते हैं, नहीं तो और सब मुल्कों में औरतें आजाद हैं, अपनी पसन्द से शादी करती हैं और जब उससे राय नहीं आती तो तलाक दे देती हैं। लेकिन हम सब वही पुरानी लकीर पीटे चली जा रही हैं। (सेवासदन- प्रेमचन्द-पृ0- 54)

उपर्युक्त गद्यांश में उर्दू और फारसी के उन्हीं शब्दों को प्रयोग किया गया है जो जन सामान्य के अत्यधिक निकट हैं। भाषा में सरलता, सुबोधता और प्रवाहता कूट-कूट कर भरी है। इससे भिन्न प्रसाद और चण्डीप्रसाद हृदयेश ने तत्सम प्रधान अलंकारिक भाषा शैली को अपनाया। इनके उपन्यासों की भाषा अपेक्षाकृत अधिक अलंकारमयी ~~अलंक~~ भावप्रधान और अभिजात्यवर्गीय है -- कंकाल' में प्रसाद जी ने प्रकृति के चित्रण में इसी भाषा का प्रयोग किया है यथा--

'' एक चाँदनी रात थी। गंगा के तट पर अखाड़े से मिला हुआ उपवन कोठा। विशाल वृक्ष की विरल छाया में चाँदनी उपवन की छाया में अनेक चित्र बना रही थी। बसन्त समीर ने कुछ रंग बदला था। निरंजन मन के उद्वेग से वहीं टहल रहा था।''

(कंकाल - जयशंकर प्रसाद- प्रथम खण्ड- पृ0- 19)

तत्सम प्रधान आलंकारिक भाषा शैली का सुन्दर रूप चण्डीप्रसाद 'हृदयेश' की औपन्यासिक कृति' मनोरमा' से उद्धृत निम्न गद्यांश में देखते ही बनता है यथा ------

'' सांध्य वायु सेवन करने के लिए ठाकुर कालन्दीसिंह और रामेश्वर निकले। सूर्य देव पश्चिम सागर में पतित हो रहे थे। उनकी स्वर्ण- वर्ण किरण माला आम्रकानन को सम्प्रीतराशि को देदीप्यमान कर रही थीं। उनमें कोमल सौन्दर्य था, उनमें प्रखर विलास नहीं था। संध्या समीर परिहासमय पुष्प-पुंज से क्रीड़ा कर रहा था। प्रकृति परिवार संगीत गा रहा था और परिमल मयी - शांति ताल दे रही थी।''

(मनोरमा- चण्डीप्रसाद हृदयेश-पृ0-158)

इस प्रकार किशोरीलाल गोस्वामी के उपन्यासों से ले कर प्रेमचन्द , कौशिक वृन्दावनलाल वर्मा, आदि के उपन्यासों में विकसित होती हुई उपन्यास विधा की भाषाशैली जयशंकर प्रसाद हृदयेश के उपन्यासों तक आते, आते पूर्णतः परिष्कृत व प्रौढ़ और परिमार्जित हो गई है।

नाट्य विधा—

अन्य विधाओं की अपेक्षा द्विवेदी युग का आरम्भिक दस वर्ष नाट्यविधा के लिए बहुत ही दयनीय सिद्ध हुआ, किन्तु इसके युग के उत्तर काल में प्रौढ़ नाट्यकृतियों का सृजन हुआ। भाषा शैली की दृष्टि से इस युग की नाट्य कृतियों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है जिनमें भाषा के तीन स्तर मिलते हैं यथा—

प्रथम कोटि के नाटक वे हैं जो पारसी कम्पनियों को लक्ष्य कर के लिखे गए हैं इनकी भाषा बहुत ही निम्नकोटि की है आद्योपान्त त्रुटिपूर्ण होने पर भी भाषा भाव और पात्रों के भी अनुकूल नहीं है साहित्यिक दृष्टि से इन नाटकों का कोई महत्व नहीं है। इस वर्ग के नाटक कारों में नारायण प्रसाद बेताब, राधेश्याम कथावाचक, कृष्ण चन्द्र जेबा, तुलसीदत्त शैदा, किशोरी लाल गुप्त, राधेश्वरी प्रसाद राय आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी कृतियों की भाषाशैली ग्रामीण बोलियों से प्रभावित है तथा हास्य और व्यंग्य को उत्पन्न करना ही इनका प्रधान लक्ष्य है। यथा—

अरे राम राम। इस मिस्टर बाबू से तो बचाना श्याम। क्यों कि मिस्टर बाबू की ऐसी आदत है कि इनके लिए किसी का माल व दौलत लेना एक अदनी बात है। मगर जनाब। हिन्दुस्तानियों को तो मिस्टर के नाम से मैंने आज तक नहीं सुना, खैर माफ कीजिए, इस मिस्टर रूपी राक्षस को आपने कहाँ पाया था खुद आप ही ने कहीं से चोरी करके अपने नाम से लटकाया मगर देखिए जनाब आप नाराज न होंगे, बन्दर की तरह उछल न पड़ें, क्यों कि मैं पुराने वक्त का आदमी हूँ इसलिए जब मैं किसी के नाम में मिस्टर, शर्मा, सिंह वगैरह लटका हुआ देखता हूँ तो सचमुच ही बहुत डर जाता हूँ, और वैसे शर्मा, सिंह बाबू और मिस्टर शर्मा के पास जाकर कदम तौल कर रखता हूँ"

(प्रेमयोगिनी- राधेश्वरी प्रसाद पृष्ठ-46)

भाषा में हास्य को उत्पन्न करने के लिए शब्दों की तोड़ मरोड़ भी किया गया है जिससे भाषा का स्तर बहुत ही निम्नकोटि का हो गया है यथा—

"देखो वलास्टर साहब। यह हमारी बही है, इसमें जो हमको बोलना है, वा जो कोर्ट में पूछना है, सो साफ साफ लिख दो, मैं अपनी जबान की नोक पर रख लेऊँ। फिर तुम पूछो या संकराती वकील पूछे, मैं बगाबप, अगाबप, सटासट पटापट बोलता जाऊँ रामभरोसे।" (श्रीमती मंजरी शिवराम दास पृ० 98)

दूसरी कोटि के नाटक वे हैं जो साहित्यिक स्तर के होते हुए भी पारसी थियेटरों के प्रभावों से प्रभावित हैं । इस प्रकार के नाटककारों में गोपालराम गहमरी, बद्रीनाथ भट्ट, ईश्वरी प्रसाद शर्मा, जयगोपाल श्रीवास्तव, माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशेष उल्लेखनीय है । इनमें गहमरी, भट्ट, ईश्वरीप्रसाद चतुर्वेदी जी की भाषा जन सामान्य के अधिक निकट है, उर्दू -फारसी , देशज तद्भव , अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्द मुहावरों और कहावतों का प्रयोग यथावसर किया गया है । ये नाटक मूलतः रंगमंच की दृष्टि से लिखे गए हैं जिससे भाषा बहुत ही सहज, सरल, और जनसामान्य के निकट प्रतीत होती है यथा- - - - - - -

" राजपूत का क्रोध और तोप की बारूद जब आग पावे तब बाप रे बाप उनका कहाँ ठिकाना है। एक दम धमाधम । अहा। के मारे ढकोदाह करके तो छोड़ेगी । और कच्चा विक्रम की तो वह पट्टी दी कि सर्दारों की फूटी आँख से भी नहीं देख सकता । ऐसी पट्टी बिना कहीं अपना मतलब गढ़ता है। उधर बनवीर की माँ शीतलसेनी भी बड़ी चतुरा निकली । बाबा रे बाबा कहाँ का पानी कहाँ जा कर तो उतारा। भला किसी देवता को भी इसका पता है कि उसका और मेरा दोनों का मतलब त्रिवेणी में संगम हो कर घुम धार बहा रहा है । बनवीर के राजा होते ही शीतलसेनी मुझे तीन-तीन सो बड़े बड़े गाँव लाखराव दे देगी तब मैं एक बड़ा सर्दार हो कर राव-रावल या रावत का खिताब पाऊँगा। अहहा अब जरा छिप कर विक्रम का मकरकन्द होना तो देखें । फिर तो घोड़े पर जीन और एक ही बाग में सरपट दौड़ ।"

(बनवीर नाटक- गोपालराम गहमरी-पृ0-15)

नाटकों में व्यंग्य और कटाक्षों को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त भाषा भी सरल है, जो ऊपर से तो सामान्य लगती है किन्तु उसके उसके मूल में निहित व्यंग्य या कटाक्ष से जिस पर कटाक्ष किया जाता है वह तिलमिला उठता है । ' दुर्गावती नाटक में बद्रीनाथ भट्ट ने एक षड्यंत्रकारी और देश द्रोही के प्रति इसी प्रकार के व्यंग्य की योजना की है यथा——

" ठीक है, आप हर एक प्रश्न का उत्तर क्यों दें , आप क्या कोई उत्तर बाँड हैं ? पर हाँ, एक बात निश्चित है कि अकबर से आप चुपचाप कलिखापढ़ी कीजिए, और फिर देखिए कि उसके दरबार में आप को कैसी बड़ी नौकरी मिलती है। वहाँ बीरबल और मुल्ला दो प्यादे के बराबर बैठने

पर आप का धाम्रियपन और भी चमक जायेगा।''

(दुर्गावती- बद्रीनाथ भट्ट पृ०- 45)

हास्य और प्रहसन लेखकों में गंगाप्रसाद श्रीवास्तव का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी भाषा में आद्योपान्त हास्य, व्यंग्य और विनोद का पुट बना रहता है जिसमें भाषा का हल्कापन, व्यवहारिकता और प्रवाहमानता है। हास्योत्पत्ति के लिए शब्दों का विचित्र संयोग, अशुद्ध प्रयोग विदेशी शब्दों तथा वाक्यों में हेर-फेर करके या शब्दों को तोड़-मरोड़ कर रखा गया है। पात्रों के नाम भी हास्योत्पादक ही है यथा—

'' कहो बुरघा हुसेन, सुनो कहहारेओ? धन्य हो महाराज धन्य हो? अपने अल्ला खुदाय से यही दोआ माँगो कि फाँसी केरे हुकुम होवे। नाहीं जिन्दगी अकारत जाई। जीके का करबो? नकटा जैसे बुरा हवाल। कहो भाई है न ठीक। -----(उलट-फेर, जी०पी० श्रीवास्तव- पृ० 118)

उपर्युक्त अंश में भाषा को व्यवहारिक और सरल रूप देने के लिए उर्दू-फारसी, अंग्रेजी मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का निःसंकोच प्रयोग किया गया है। संस्कृत के तत्सम सामासिक शब्दों का पूर्णाभाव है। किसी शब्द विशेष पर जोर देने के लिए वाक्यों के शब्द-विन्यास में भी परिवर्तन हुआ है यथा—

यह साला कूकुर लोग बड़ा पाजी हालता है। जहाँ-जहाँ चोरी-चोरी रात को वोट पकड़ने जाता है यह साला लोग भूँक-भूँक कर भण्डाफोड़ देता है। क्या, जहाँ-जहाँ तुरन्त गब्बू लाल और पीली परसाद ? जा कर सब चौपट कर देता है। हम इसका जरूर बदला ले लेगा। इसीलिए हम मेम्बर होगा जरूर करके। फिर खूब कोशिश करके ' कुत्ताबिल'' होगा।''

(दुमदार आदमी- जी०पी०श्रीवास्तव-पृ०-78)

इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं पर प्रौढ़ गंभीर और तर्कपूर्ण सम्भाषणों की उद्भावना भी मिलती है किन्तु इनकी संख्या बहुत ही कम है। माखनलाल चतुर्वेदी और विश्वम्भरनाथ शर्मा आदि का हास्य व्यवहारिक है। सम्भाषणों में पात्रों की भाषा ही इस हास्य को उत्पन्न करती है यथा—

'' सीताराम -'' क्यों महोदय, जब आपको दूसरा काम था तो पहले ही क्यों न कह दिया। वाह! मुझे भी कोई उल्लू समझा कि इतनी देर हँसी में टालते रहे। चल चले तो चले पानी पिलवा दूँ।

बाबू—
अजी महाशय, आपने मुझे बोलने तो दिया नहीं अपनी ही कहते रहे फिर भला मैं कैसे कहता,

सोताराम— बोलने क्यों नहीं दिया? क्या मैं तुम्हारा मुँह दाबे था?

बाबू— अजी, आप तो अपनी ही ओटते रहे; मेरी तो सुनी ही नहीं।''

(भंडाफोड़- विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक
पृ०- 30)

तीसरे कोटि के नाटकों में शुद्ध साहित्यिक नाटकों की गणना होती है। जयशंकर प्रसाद वियोगीहरि, गोविन्द वल्लभ पन्त, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र और माखनलाल चतुर्वेदी इसी वर्ग के नाटककार हैं। इन्होंने रंगमंच की दृष्टि से नाट्यकृतियों का सृजन नहीं किया है जिससे इनकी भाषा शैली शुद्ध, परिष्कृत और तत्समप्रधान है। भावों और पात्रों के अनुकूल भाषा भी भावात्मक अभिव्यक्ति तथा शुद्ध तत्सम है उर्दू-फारसी, अंग्रेजी या इसी तरह के अन्य विदेशी शब्दावली का अभाव है। प्रसाद की भाषा इसी तरह की है यथा——

'' हृदय नीरव अभिलाषाओं का नीड़ हो रहा है। जीवन के प्रभात का वह मनोहर स्वप्न ~~विश्व~~ विश्वभर की मदिरा बन कर मेरे उन्माद की सहकारिणी कोमल कल्पनाओं का भंडार हो गया है। मल्लिका! तुम्हें मैंने अपने यौवन के पहले ग्रीष्म की अर्धरात्रि में आलोकपूर्ण नक्षत्र-लोक से कोमल हीरक-कुसुम के रूप में आते देखा। विश्व के असंख्य कोमल कंठों की रसीली तानें पुकार बन कर तुम्हारा अभिनंदन करने, ~~तुमको~~ तुम्हें सम्हाल कर उतारने के लिए नक्षत्र लोक को गई थी।''

(अजात शत्रु- जयशंकर प्रसाद- पृ०- 55)

वस्तुतः प्रसाद ने सर्वत्र ही अपने नाटकों की भाषा में संस्कृत शब्दों की अधिकता के साथ सदुक्तियों की लयात्मकता, दार्शनिक की दार्शनिकता, कवि की भावुकता को स्थान दिया है। उर्दू-फारसी और मुहावरों के बहिष्कार के बावजूद भी उनकी भाषा में सर्वत्र ही प्रवाह है। एक लय है गति है जो सहज ही पाठकों के मन को मुग्ध कर लेती है। इसी कारण कहीं-कहीं भावात्मक अतिरेक के कारण वाक्य लंबे और ~~भाव~~ भाषा लयात्मक हो गई है यथा——

'' युद्ध क्या गान नहीं है? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य और शस्त्रों का वाद्यमिलन कर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए अपनी आँखों से देखने, जीवन रहस्य के चरम

सौन्दर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे वीर हृदय को होता है। ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरन्तर के संगीत है। उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का, शिव का, सत्य सुन्दर संगीत का समारम्भ होता है।''

(स्कन्दगुप्त- जयशंकर प्रसाद-पृ0-46)

इसी कोटि के दूसरे नाटककारों की कृतियों की भाषा प्रसाद की तरह कुछ तत्सम और संस्कृतनिष्ठ तो नहीं है फिर भी उसमें कुछ साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। 'कृष्णार्जुन युद्ध' में प्रयुक्त माखनलाल चतुर्वेदी की भाषा इसी प्रकार की है।

'' द्रौपदी — '' ज्योतिष। ज्योतिष मूर्खों को बहकाने की एक छल विद्या है। राजनीति के दाँव चन्द्रसूर्य की गति देख कर नहीं चले जाते किन्तु ये राष्ट्र के सारे मानवों के अभ्युत्थान या पतन का विचार करके चले जाते हैं।''

(कृष्णार्जुन युद्ध- माखनलाल चतुर्वेदी- पृ0-50)

इसी प्रकार उग्र, गोविन्द वल्लभ पन्त, वियोगीहरि आदि नाटककारों ने भी इसी तरह की भाषा को अपनाया है। यद्यपि पन्त जी की भाषा भी कहीं-कहीं भावों के आवेग में कुछ तत्सम - संस्कृतनिष्ठ हो गई है किन्तु अधिकांश स्थलों पर शुद्ध, साहित्यिक खड़ी बोली का ही प्रयोग किया गया है। नाटकों में भी भाषा का क्रमशः विकास हुआ है। इस प्रकार नाट्यविधा की भाषा शैली बोलचाल से शुरू हो कर प्रौढ़ संस्कृत निष्ठ भाषा में समाप्त होती है। अतः वस्तु इस युग के उत्तरार्द्ध के नाटक की भाषा प्रौढ़ प्रांजल परिष्कृत आदि गुणों से समन्वित हो गई है।

समीक्षा—

समीक्षा या आलोचना विधा की दृष्टि से द्विवेदी युग प्रौढ़ और परिष्कृत काल रहा है। इसके पूर्व जो भी समीक्षाएँ हुईं उनमें प्रायः प्रशंसा और परिचय का हल्कापन ही था। आलोचना की गंभीरता और प्रौढ़ता के दर्शन तो यत्र-तत्र ही दिखाई पड़ते हैं। इसके साथ ही भाषा संबंधी त्रुटियाँ भी बहुत अधिक मात्रा में थीं। द्विवेदी युग के आरम्भिक - काल में प्रायः ऐसी ही आलोचनाओं के रूप दृष्टिगोचर होते हैं। स्वयं द्विवेदी जी के आरम्भिक समीक्षात्मक लेख 'कालिदास की आलोचना' में भाषा संबंधी अनेक दोष मिल जाते हैं। इस युग में

महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोपालराम गहमरी, बालमुकुन्द गुप्त, मिश्रबंधु, पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवान दीन 'दीन', श्याम सुन्दर दास, पदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन समस्त लेखकों ने अपने व्यक्तित्व के अनुसार ही आलोचना के विभिन्न रूपों यथा--- परिचयात्मक, व्यंग्यात्मक तुलनात्मक, विवेचनात्मक, गवेषणात्मक, विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक आदि रूपों को विकसित किया। आलोचना के इन रूपों के अनुसार ही भाषा के स्तर में भिन्नता दिखाई पड़ती है।

परिचयात्मक आलोचना में कदाचकों की इतिवृत्तात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार की समीक्षात्मक टिप्पणियों और निबंधों में बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग हुआ है। इसके लिए उर्दू-फारसी के शब्दों, मुहावरों, शेरों आदि तक का खुल कर उपयोग किया गया है किन्तु शेरों मुहावरों आदि का प्रयोग कहीं-कहीं ही हुआ है। सामान्यतः इस प्रकार की आलोचनाओं में भाषा जनसामान्य को दृष्टि में रख कर ही प्रयोग की गई है। गोपालराम गहमरी और महावीर प्रसाद द्विवेदी के समीक्षात्मक कृतियों में इसी तरह की भाषा का रूप मिलता है यथा-------

"कवि यदि अपनी या और किसी की तारीफ करने लगे और यदि वह उसे सचमुच ही सच समझे, अर्थात यदि उसकी भावना वैसी ही हो तो वह भी असलियत से खाली क नहीं फिर चाहे और लोग उसे उलटा ही क्यों न समझते हों। किन्तु इन बातों में भी स्वाभाविकता से दूर न जाना चाहिए क्योंकि स्वाभाविक अर्थात नेचुरल (Natural) उक्तियाँ ही सुनने वाले के हृदय पर असर कर सकती हैं, अस्वाभाविक नहीं"

उपर्युक्त गद्यांश में भाषा की सहजता सरलता और शब्द चयन में लेखक की उदारता सहज ही दर्शनीय है।

व्यंग्यात्मक समीक्षाओं की भाषा में विचित्रता और विदग्धता का भी समावेश हुआ है। आवेश में आ कर कहीं-2 लेखकों के अनगढ़ शब्दावली का भी प्रयोग किया है। व्यंग्यों के सहज, सरल और प्रवाहमय बनाने के लिए विदग्ध उक्तियों कटु उक्तियों, मुहावरों, कहावतों उर्दू फारसी अंग्रेजी के शब्दों और आलंकारिक शब्दावली का निःसंकोच प्रयोग हुआ है, बालमुकुन्द गुप्त के समीक्षात्मक निबंधों में इसी तरह की भाषा का प्रयोग हुआ है, यद्यपि कहीं

कहीं ओज और प्रखरता के साथ ही साथ प्रसाद गुण समन्वित भाषा का भी प्रयोग मिल जाता है। किन्तु अधिकांशतः भाषा में ओज की ही प्रधानता है यथा——

" यदि द्विवेदी जी सामने होते, तो पूछते कि महाराज! यह जो आपने गड़बड़ कई एक वाक्य आगे-पीछे मियाँ मदारी के गोलों की भाँति उछाल दिए हैं इसका कुछ सिर-पैर है या खाली हिन्दी के वालों को हैरान करने के लिए यह लीला दिखाई है "। ।*

अथवा

" आप की लंबी चौड़ी डाँफनी चढ़ी हुई बातों को सुनकर लोग घबरा उठे थे कि न जाने हिन्दी वालों की कैसी कैसी भूलें और व्याकरणविरुद्ध बातों का गट्ठर लाद कर आप लाये हैं। पर देखा तो कुछ नहीं, वही ढोल के अन्दर पोल। कहाँ तो आप की यह घबराहट और बौखलाहट कि जिस अखबार को उठाते हैं, सब में वाक्य रचना का भेद पाते हैं और कहाँ यह फिसड्डीपन कि एक पुरानी पोथी के साढ़े तीन पंक्तियों के विज्ञापन पर गिर कर रह गए। वाह! इतनी जोरा - जोरी पर यह बेबसी। दो चार अखबारों की भाषा का मुकाबिला करके दिखाना था, दो चार पोथियों की वाक्य रचना का भेद बताना था। पर यह जरा समझदारी का काम था, इतनी समझ शायद आप में है ही नहीं। होती तो दूर जाना न पड़ता अपनी रचना में ही सब रचना भेद देख लेते।---------- खैर अब यह उदाहरण देख लीजिए जिसे बड़ी धूमधाम से झंडे पर चढ़ कर द्विवेदी जी महाराज अपनी व्याकरणदानी की लीला दिखाने लगे हो। सरस्वती के मैदान में आए हैं और जिसके घमंड के मारे आप ऐंठासिंह बने जाते हैं।"

आलोचना विधा की तुलनात्मक समीक्षा पद्धति में शुद्ध परिष्कृत भाषा शैली का प्रयोग किया गया है। किन्तु इसके प्रारम्भिक रूप में भाषा का सहज, सरल सुबोध और सजीव रूप ही दिखाई पड़ता है। उर्दू अरबी ब्रज अवधी, और ठेठ भाषा का प्रयोग भी यथा उचित हुआ है। तुलनात्मक समीक्षा के प्रवर्तक पं० पद्मसिंह शर्मा तथा लाला भगवान दीन 'दीन' के तरह की है ने भाषा के इसी रूप को अपने समीक्षाओं में स्थान दिया है, मुहावरों और उक्तियों के प्रयोग से भाषा में जीवन ही नहीं चपलता और जिन्दादिली भी आ गई है——

फड़कती हुई भाषा का प्रयोग निम्न गद्यांश में दर्शनीय है——

1- गुप्त निबंधावली- बालमुकुन्द गुप्त- भाषा की अनस्थिरता (आलोचना-प्रत्यालोचन)

"स्वामी जी महाराज । इनके तो बिहारी के इस दोहे को सुनकर छूटते हैं, ठहरिए, जरा संभलकर, धैर्य धर कर सुनियेगा वाक्य समाप्ति के पूर्व ही कहीं समाधि न लगा जाइये । हाय रे निष्ठुर बिहारी तेरी विकराला ने तो किसी तरह भी कहीं का न छोड़े, एकदम सारे साधन ही बेकार कर दिये ।

"छिप- छैल छाया ग्राहिनी गहै बीच ही आय"।

हरे हरे । इससे भला कोई कैसे बचने पायेगा यह तो ऊपर उड़ते हुए हवाई जहाजों की भी छाया पकड़कर— अनायास नीचे खींच कर निगल जायेगी । इस छाया ग्राहिनी के पंजे से छूटना तो सिर्फ 'पवन सुत' महायोगी महावीर का ही काम था। पर महावीर तो एक ही थे, सब कोई तो महावीर नहीं है। नहीं तो फिर पड़ो माया ग्राहिनी के माया जाल में । देखो? डराने वाले भय का कैसा भयानक रूपक बांधा करते हैं, छिप छैल छाया ग्राहिनी, '—दुस्तरा मेरी माया — छिप छैल छाया ग्राहिनी है ।"1

किन्तु इसके विपरीत परवर्ती तुलनात्मक समीक्षात्मक कृतियों में गंभीर शुद्ध परिष्कृत खड़ी बोली का ही प्रयोग हुआ है उर्दू फ़ारसी, आदि के व्यवहारिक शब्दों तक को दूर रखने का प्रयत्न किया गया है। मिश्रबंधुओं ने अपनी तुलनात्मक आलोचनाओं में इसी तरह की भाषा का प्रयोग किया है । यद्यपि इनके पूर्व की आलोचनाओं में भाषा का लचरपन और हल्कापन भी दर्शनीय है किन्तु क्रमशः भाषा प्रौढ़, परिष्कृत और शुद्ध होती गई है—

"इनकी कविता में अजायबघर की भाँति भ्रष्ट से भ्रष्ट छंद देखते चले जाइए, परन्तु इसमें बिहारी की भाँति उतने दोष नहीं मिलते। किन्तु इसके साथ ही साथ इनके साहित्य में अभूतपूर्व कोमलता रसिकता, सुन्दरता आदि गुण कूट-कूट कर भरे हैं । ऐसे उत्कृष्ट पद्य किसी अन्य की कविता में स्वप्न में भी नहीं देखे जाते । इनके उत्कृष्ट पद्यों के बराबर किसी भाषा में कोई पद्य पाना कठिन है ।"2

आलोचना विधा की विवेचनात्मक और गवेषणात्मक पद्धतियों में भाषा इतिवृत्तात्मकता और व्यवहारिकता से ऊपर उठ कर प्रौढ़ प्रांजल और परिष्कृत है । शब्दचयन भी संस्कृतोन्मुख तथा सुगठित और गंभीर है,

---

1- बिहारी की सतसई— पद्मसिंह शर्मा- सतसई का संहारक पृ०- 77)

2- हिन्दी नवरत्न— मिश्र बंधु — (महाकवि देव) पृ०- 291

उर्दू - फ़ारसी के अति व्यवहारिक कतिपय शब्दों को ही अपनाया गया है अन्यथा इनके बोल-चाल के शब्द तथा उक्तियों मुहावरों आदि तक का बहिष्कार ही हुआ है। भाषा में सर्वत्र ही नीरसता, शुष्कता है। इतना होने पर भी संस्कृत के कठिन , दुरूह और सामासिक शब्दावली और अलंकारिकता का प्रयोग नहीं के बराबर हुआ है । इसके साथ ही जहाँ कहीं भी कुछ विदेशी और विजातीय शब्दों का प्रयोग हुआ उन्हें उसी रूप में न अपना कर शुद्धिकरण करके अपनाया गया है । डा० श्याम सुन्दर दास के गवेषणात्मक और विवेचनात्मक आलोचना पद्धतियों में इसी प्रकार की भाषा का प्रयोग है ——

" मधुमती भूमिका में पहुँचा कवि का मन जब उल्लसित होकर नवीन सृष्टि का आरम्भ करता है और अपनी ही सृष्टि की सुन्दरता पर मुग्ध हो कर रीझता है उस समय उसकी समस्त वृत्तियाँ एकतान एक लय हो जाती हैं । इसीलिए उसकी रचना भावों का संगीत है । मन की इस एक विषया-वगाहिनी निरोधावस्था से चित्त (= ज्ञान) का आवरण-भंग होता है, अर्थात् मन जब विक्षिप्त हो कर इधर-उधर अनेक विषयों पर दौड़ता है उस समय अपनी इस विक्षेपावस्था से वह निरंतर धुंध-धुंध युक्त - स्वभाव चित्त पर एक प्रकार का पर्दा सा डालता रहता है, पर जहाँ उसकी यह सब अवस्था रुकता है, पर ज्यों उसकी यह विक्षेपावस्था निरोधावस्था में बदली कि उसका आवरण डालना बन्द हो जाता है और चित्त निरावरण हो कर चमकने लगता है। "।

सैद्धान्तिक , व्यवहारिक और वैज्ञानिक आलोचनात्मक पद्धतियों की भाषा प्रौढ़ मार्मिक तथा प्रांजल होने के साथ ही साथ विशुद्ध - परिष्कृत तत्सम शब्दावली से युक्त है। भावावेश के कारण यद्यपि कहीं कहीं उर्दू-फ़ारसी और मुहावरों तथा कटु व्यंग्योक्तियों तक का प्रयोग दिखाई पड़ता है किन्तु कहीं भी भाषा हल्की और लचर नहीं होने पाई है । हिन्दी और संस्कृत के विशुद्ध और तत्सम शब्दों का ही बाहुल्य है फिर भी भाषा दुरूह और जटिल नहीं है वरन् इसके विपरीत उसमें मार्मिकता, सहजता, प्रौढ़ता, गंभीरता और प्रवाह है। शब्दों का चयन भी ऐसा है जिसमें भाव कूट कूट कर भरे हुए हैं । अंग्रेजी के मूल शब्दों के साथ ही उनका हिन्दी पर्यायवाची शब्द कोष्ठकों में रखे गए हैं । इस प्रकार की भाषा हमें आचार्य शुक्ल , गुलाबराय, पदुमलाल-पुन्नालाल बख्शी आदि के आलोचनात्मक कृतियों में दिखाई पड़ता है ——

(रस और शैली — डा० श्यामसुन्दर दास— साहित्यालोचन पृ० 287)

"" मंगल अमंगल के द्वन्द्व में कवि लोग अंत में मंगलशक्ति की जो सफलता दिखा दिया करते हैं उनमें सदा शिक्षावाद (डिडैक्टिसिज्म) या असम्भाविकता को ढूंढ समझ कर नाक- भौं सिकोड़ना ठीक नहीं । अस्वाभाविकता तभी आयेगी जब बीच का विधान ठीक न होगा अर्थात् जब प्रत्येक अवसर पर सत्पात्र सफल और दुष्ट पात्र विफल या दण्डित दिखाए जायेंगे । पर सच्चे कवि ऐसा कभी नहीं करते ""।

इस प्रकार द्विवेदी युगीन आलोचना विधा में भाषा का आरम्भिक रूप जहाँ सरल सुबोध व्यंग्य हास्ययुक्त कहावतों मुहावरों से युक्त था वहीं उसका परवर्ती रूप प्रौढ़ गंभीर और तत्सम प्रधान है भाषा के स्तर में इस विभेद का कारण सम्भवतः दो ही दिखाई पड़ता है। प्रथमतः तो द्विवेदी युग का आरम्भ अभी भाषा के प्रचार, प्रसार का ही युग था जिससे भाषा के प्रति लेखकों का उदार दृष्टि कोण होना स्वाभाविक था। दूसरा सम्भवतः अभी तक आलोचना के क्षेत्र में लेखकों का दृष्टिकोण निष्पक्ष न होकर प्रतिद्वन्द्विता से युक्त था इसके साथ ही इसी समय साहित्यिक क्षेत्र में भाषा - व्याकरण को ले कर एक विवादग्रस्त समस्या उत्पन्न हो गई थी जिसका फल यह हुआ कि एक दूसरे को पछाड़ने के लिए आपत्तियों- कटूक्तियों का खुल कर प्रयोग हुआ । इस समय जो भी आलोचनाएं - प्रत्यालोचनाएं होती थी उसमें भाषा की सरलता, सुबोधता को ही प्रधानता रहती थी क्यों कि सीधी सरल और सामान्य भाषा ही उनके व्यंग्यबाणों को विपक्षी तक पहुंचाने में समर्थ हो सकती थी । किन्तु आलोचना की दृष्टि जैसे-जैसे निष्पक्ष होती गई उसकी भाषा शैली में भी गंभीरता, प्रौढ़ता, प्रांजलता तत्समता और परिष्कार का क्रमशः समावेश होता गया। जिसका फल यह हुआ कि एक-एक शब्द अनेक - अनेक भावों विचारों के संवाहक बने ।

पत्रकारिता :-

भारतेन्दु युग में आविर्भूत पत्रकारिता विधा द्विवेदी युग में ही विकसित हुई । द्विवेदी युगीन पत्रिकाओं के प्रकाशित होने में स्थिर प्रौढ़ परिष्कृत भाषा शैली ही सहायक सिद्ध हुई । दूसरे शब्दों में हम

1- सूरदास — आचार्य राम चंद्र शुक्ल — काव्य में लोकमंगल पृ० 102

कह सकते हैं कि द्विवेदी युग के साहित्यिक विधाओं में भाषा संबंधी जो स्थिरता, प्रौढ़ता, परिष्कार और संस्कृत दिखाई देती है उसको एक प्रमुख कारण ये पत्रिकाएं ही थीं क्योंकि इन पत्रिकाओं की जो सम्पादकीय टिप्पणियाँ हुआ करती थी वे विशेषतः भाषा विवेचनदृष्टिकोण से ही सम्बन्धित रहती थी। इस युग तक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक सभी प्रकार की पत्रिकाओं का प्रचार और प्रकाशन हो चुका था। इन पत्रिकाओं में 'आज' (दैनिक)। मतवाला (साप्ताहिक) व्यापार(कलकत्ता) समालोचक प्रभा, सरस्वती मनोरंजन मर्यादा, माधुरी, शारदा, चाँद, लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी, इन्दु (मासिक) आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिकाओं की भाषा में भी एक स्तर का विकासक्रम दिखाई देता है।

इस युग के आरम्भ में ही प्रकाशित सरस्वती की भाषा अपने समकालीन पत्रिकाओं के लिए आदर्श रूप थी, इसकी भाषा में सरलता, सुबोधता, प्रवाह और विषयानुकूल शब्द चयन के प्रति सजगता है, परवर्ती पत्रिकाओं में प्रभा, आज,लक्ष्मी, श्री शारदा, चाँद, गृहलक्ष्मी, माधुरी आदि पत्रिकाओं में भाषा का जो विकास मिलता है वह बहुत सीमा तक सरस्वती की भाषा संबंधी आदर्श से ही प्रभावित हैं। इनमें भाषा की सरलता सुबोधता प्रौढ़ता वर्णनीय है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के शब्दों के प्रति विशेष संकोच न होने के कारण उसे बहुत ही कम प्रयोग में लाया गया है। फिर भी कहीं-2 स्फुट रूप में इन भाषाओं के अति व्यवहारिक शब्दों को अपनाने में लेखकों ने संकुचित शब्दों को अपनाने में लेखकों ने संकुचित दृष्टि नहीं अपनाई है यथा- आज' की भाषा इसी तरह की है ——

आप अपने घरों के अन्दर बैठी हुई हैं आप के शरीर पर बाहरी हवा की गन्ध तक नहीं लगी, पर आपके कान में जो बाली लटकी हुई है और आपके हाथों में जो चूड़ियाँ पड़ी रहती हैं उनके कारण आप का देश पराधीन है। आप को इसका ख्याल भी नहीं पर जर्मनी के हाथों में आप बिकी हुई हैं। इन चूड़ियों और बालियों से कोई लाभ भी नहीं है। उलटे इनके कारण कितनी अड़चन पड़ती है। ऐसी सुन्दरता मोल लेना जिससे अपने शरीर को कष्ट पहुँचे, उसका कोई उपयोग न हो और उलटे काम काज करने में अड़चन हो, बुद्धिमत्ता नहीं जान पड़ती।

इतना होते हुए भी हम आपके इस प्रिय वस्तु के छूने का कदापि प्रयत्न न करते पर जब हम यह सोचते हैं कि इस साधारण सी विलासिता की चीजके द्वारा देश का बहुत सा धन विदेश चला जाता है और जब हम यह देखते हैं कि देशके लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं और लाखों आधा पेट खाकर रह जाते हैं और लाखों को काफी कपड़ा पहिनने को नहीं मिलता तो हम भयंकर चिन्ता में पड़ जाते हैं''। किन्तु जहाँ पर गंभीर, सूक्ष्म विषयों का विवेचन हुआ है वहाँ पर व्यंग्य, मुहावरों, उर्दू-फ़ारसी आदि के व्यावहारिक शब्दों तक का बहिष्कार किया गया है। ऐसे अवसर पर भाषा अधिक, प्रौढ़, प्रांजल- परिष्कृत, गंभीर हो गई है। वाक्य कहीं-2 लम्बे भी हो गए हैं किन्तु शब्द चयन में तत्समता की ओर विशेष ध्यान रखा गया है यद्यपि कहीं-कहीं शब्दों की स्पष्टता के लिए कोष्टक में अंग्रेजी के शब्दों को भी उपयोग में लाया गया है 'प्रभा की सम्पादकीय टिप्पणियों से उद्धृत निम्नांश इसी प्रकार की भाषा शैली को स्पष्ट करता है—

'' मस्तिष्क और हृदय एक दूसरे से बिलकुल पृथक नहीं किये जा सकते इसलिये विश्वासों पर युक्तियों का और उक्तियों पर विश्वासों का प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप विश्वास और उक्तियाँ एक-दूसरे से संकीर्ण्य और संदीर्ण होते हैं जिससे युक्ति-युक्त और उक्तियाँ विश्वास जन्य होती है। व्यक्ति और समाज अपने विश्वासों के अनुसार कार्य करते हैं यद्यपि अपने जीवन की युक्तिवाद (Rationalism) की अवस्था में पहुँच जाने पर वे अपने विश्वासों को युक्तियों की कसौटी पर कसते हैं और इस प्रकार उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं परन्तु वे युक्तियाँ भी बहुत कुछ विश्वास जन्य होती हैं।''2

1- सम्पादकीय- वृद्ध खादी(सं0 श्री प्रकाश) किरण सोर 20 वैशाख- सं01979)

2-प्रभा - सम्पादकीय टिप्पणियाँ(युक्तियाँ और विश्वास) । मार्च, 1921, पृ0187)

आदि में जहाँ भाषा सशक्त, प्रौढ़, प्रांजल और अपेक्षाकृत परिष्कृत तथा परिमार्जित है वहीं पर मनोरंजन 'मर्यादा' समालोचक 'मतवाला' आदि की भाषा में लचरपन है। व्याकरण की दृष्टि से भी अनेक त्रुटियाँ पाई जाती है। 'मनोरंजन' की भाषा में कृत्रिमता है। इस श्रेणी की अन्य पत्रिकाओं में उर्दू-फारसी शब्दों की भरमार तथा शब्दों की अशुद्धियाँ विशेष उल्लेखनीय है। व्याकरण की अशुद्धियाँ तथा विरामचिह्नों के दुरुपयोग से कहीं-कहीं भाषा में ऊब उलझन हो गई है। इस प्रकार की भाषा 'मर्यादा' में देखा जा सकता है ——

"[1]किसी स्कीम या सुधार को यदि पायोनियर, मद्रास मेल, स्टेट्समैन आदि एंग्लो इंडियन पत्र तथा स्वयं एंग्लो इण्डियन लोग अच्छा समझें, प्रशंसा के पुल बाँधे और प्रयत्न करे कि भारतवासी भी हाँ में हाँ मिला दें तो बिना कुछ भी सोचे विचारे किसी भी हिन्दुस्तानी को समझ लेना चाहिए कि दाल में कुछ काला है और जिसे ये अच्छा कह रहे हैं वह उसके लिए भी उतना ही अच्छा नहीं हो सकता। मांटेगू चेम्सफोर्ड - स्कीम सहज ही में इस कसौटी पर कसी जा सकती है। हम देख रहे हैं कि एंग्लो इण्डियन पत्र तथा कितने ही एंग्लो इण्डियन सज्जन और हमारे वे अफसर विशेष कर जिनको हम पहिले से जानते हैं एक स्वर से स्कीम की प्रशंसा कर रहे हैं ऐसी अवस्था में हमको यह समझने में संकोच न करना चाहिए कि स्कीम से हमारा बहुत बड़ा हित नहीं हो सकता। स्कीम के समर्थक कह सकते हैं कि एक ओर से यदि हमारे विपक्षी समर्थन कर रहे हैं तो यह भी तो सत्य है कि हमारे विदेशी शुभचिन्तक भी - जिनकी हित चिन्ता में उनके हमको संदेह नहीं हो सकता— तो समर्थन कर रहे हैं"।

इसी कोटि की पत्रिका 'मतवाला' की भाषा में ओज, मस्ती और भावावेश की प्रधानता है। भावावेश के कारण शब्द चयन की शुद्धता पर भी ध्यान नहीं दिया गया है। मुहावरों, लोकोक्तियों, अनुप्रास प्रधान भाषा शैली में सरलता, सुबोधता, मस्ती प्रवाह आदि का स्वभावतः ही समावेश हो गया है। उर्दू-फारसी, अंग्रेजी आदि के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग हुआ है——

---

1. "मर्यादा- भाग-16, संख्या-1 जुलाई सन् 1918, सम्पादकीय टिप्पणी स्कीम की भुलभुलैया) पृ० 50-51)

करने वाले साहित्यिकों की संख्या उंगलियों पर गिनने भर को भी नहीं है। हम पश्चिम में डूबते हुए पाश्चात्यदिवाकर की शोभा को देखने में इतने भूल गए हैं कि, हमें अपने पूर्वीय स्वर्णिम - प्रभात के स्वर्ण- युग, की सौरभ की सुधि तक भी नहीं रह गई है ''।

इसमें भाषा की मधुरता , कमनीयता सरलता, भावुकता के साथ ही साथ भाषा की आलंकारिता और तत्समोन्मुख शब्द चयन भी दर्शनीय है। इतना होने पर भी भाषा में कहीं भी दुरूहता और भ्रामकता नहीं आने पाई है ।

- -

1- कु कु अम्बिका प्रसाद गुप्त(सम्पादक) अप्रैल-1927, कला-8 किरण-4 विविध विषय- पृ०- 157)